यं शैवाः समुपासते शिव इति ब्रह्मेति वेदान्तिनो बौद्धा बुद्ध इति प्रमाणपटवः कर्त्तेति नैयायिकाः ❖ तिथिर्वारश्च नक्षत्रं योगः करणमेव च ❖ श्रीगणेशाय नमः ❖ लक्ष्मीः स्यादचला तिथिश्रवणतो वारात्तथायुश्चिरं नक्षत्रं कृतपापतापशमनं योगो वियोगापहः ❖ गणाधिपोऽर्कश्च शशी धरासुतो बुधो गुरुर्भार्गवसूर्यनन्दनौ ❖
अर्हन्नित्यथ जैनशासनरताः कर्मेति मीमांसकाः सोऽयं वो विदधातु वाञ्छितफलं त्रैलोक्यनाथो हरिः ❖ पञ्चाङ्गस्य फलं श्रुत्वा गङ्गास्नानफलं लभेत् ❖ मकरन्दानुसारि ❖ सर्वाभीष्टकरन्तथैव करणं पञ्चाङ्गमेवं स्फुटं श्रोतव्यं गणकाननात्प्रतिदिनं श्रेयस्करं सिद्धिदम् ❖ राहुश्च केतुश्च परं नवग्रहाः कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथान् सदा ❖

❖ श्रीसीतारामाभ्यान्नमः ❖



दक्षिणे लक्ष्मणो यस्य वामे च जनकात्मजा ।
पुरतो मारुतिर्यस्य तं वन्दे रघुनन्दनम् ।।

शकाब्दः १९२७-२८

विश्वविद्यालय-पञ्चाङ्गम्

राजा-शनिः

विक्रमसंवत्	२०६२-६३
लक्ष्मणसंवत्	८९६-९७
कलिसंवत्सरः	५१०७

तिथ्यम्बुवृद्धं करणारविन्दं पर्वप्रवालं सुकरावतारम्।
योगोपबन्धं मनुजैरजस्रं सरोऽवगाह्यं तिथिपत्रमेतत्।।
विदेहजाजन्मभुवोऽन्तराले कामेश्वरीये सदनेऽतिरम्ये।
गिरो निकेते निरतैर्निबद्धं बुधैर्बिवृद्धिं लभतां सदेदम्।।
अपेक्षितं सर्वमिहोपदिष्टं विसृष्टमन्यत्र नृणां यदिष्टम्।
ततोऽधिदेशं विततं मुदेऽदो विपश्चितामर्चनमातनोतु।।

वर्षा १७ — धान्यम् १३

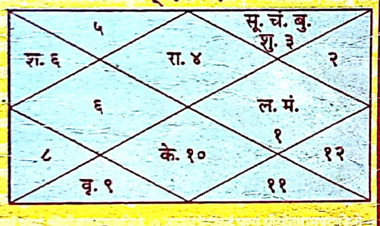
सन् १४१३ साल

मन्त्री-मङ्गलः

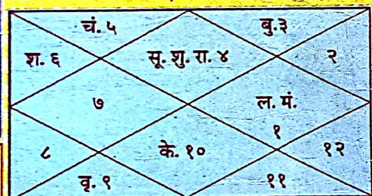
शालिवाहनशकाब्दः	१९२७-२८
भारतीयस्वतन्त्राब्दः	५८-५९
खृष्टाब्दः	२००५-२००६ ई०

प्रवर्त्तकः- डॉ. रामकरण शर्मा, पूर्वकुलपतिः
संरक्षकः- डॉ. कीर्त्यानन्द प्रचेता ताँती, कुलपतिः
निदेशकः प्रधानसम्पादकश्च- पं. श्रीरामचन्द्र झाः
गणितकर्त्ता सम्पादकश्च- पं. श्रीभारतेन्दुनाथ ठाकुरः
पं. श्रीशिवाकान्त मिश्रः

❖ वर्षलग्नम् ९।०९।००।०० ❖



❖ जगल्लग्नम् ९।११।००।०० ❖



संवत् २०६२-६३

कामेश्वरसिंहदरभङ्गा
संस्कृतविश्वविद्यालयप्रकाशितम्

❖ प्राप्तिस्थानम्- पञ्चाङ्गविभागः, कामेश्वरसिंहदरभङ्गासंस्कृतविश्वविद्यालयः, कामेश्वरनगरम्, दरभङ्गा ८४६००८ ❖ सूचना- १९२८-२९ शकाब्दस्य विश्वविद्यालयपञ्चाङ्गम् १९२८ शकाब्दस्य ज्येष्ठमासे प्रकाशमेष्यति ❖ मूल्यम् २०.०० रूप्यकाणि ❖ मुद्रकः- शुभम् प्रिंटर्स, वाराणसी, दूरभाष- (०५४२) २२७६८७२ ❖

आनन्दादियोगचक्रम्

योगनाम	सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.	फलम्
आनन्दः	अश्वि.	मृग.	आश्ले.	ह.	अनु.	उषा.	शत.	सिद्धिः
कालदण्डः	भ.	आ.	म.	चि.	ज्ये.	अभि.	पूभा.	मृत्युः
धूम्रः	कृ.	पुन.	पूफ.	स्वा.	मू.	श्रव.	उभा.	दुःखम्
धाता	रो.	पु.	उफ.	वि.	पूषा.	ध.	रे.	शुभः
सौम्यः	मृ.	आश्ले.	ह.	अनु.	उषा.	श.	अ.	सुखम्
ध्वांक्षः	आ.	म.	चि.	ज्ये.	अभि.	पूभा.	भ.	हानिः
केतुः	पुन.	पूफ.	स्वा.	मू.	श्रव.	उभा.	कृ.	दुःखम्
श्रीवत्सः	पु.	उफ.	वि.	पूषा.	ध.	रे.	रो.	सम्पत्तिः
वज्रः	आश्ले.	ह.	अनु.	उभा.	श.	अ.	मृ.	हानिः
मुद्गरः	म.	चि.	ज्ये.	अभि.	पूभा.	भ.	आ.	नाशः
छत्रम्	पूफ.	स्वा.	मू.	श्रव.	उभा.	कृ.	पुन.	सम्मानः
मित्रम्	उफ.	वि.	पूषा.	ध.	रे.	रो.	पु.	पुष्टिः
मानसम्	ह.	अनु.	उषा.	श.	अ.	मृ.	आश्ले.	सुखम्
पद्मः	चि.	ज्ये.	अभि.	पूभा.	भ.	आ.	म.	लाभः
लुम्बः	स्वा.	मू.	श्र.	उभा.	कृ.	पुन.	पूफ.	हानिः
उत्पातः	वि.	पूषा.	ध.	रे.	रो.	पु.	उफ.	नाशः
मृत्युः	अनु.	उषा.	श.	अ.	मृ.	आश्ले.	ह.	मृत्युः
काणः	ज्य.	अभि.	पूभा.	भ.	आ.	म.	चि.	क्लेशः
सिद्धिः	मू.	श्र.	उभा.	कृ.	पुन.	पूफ.	स्वा.	सिद्धिः
शुभः	पूषा.	ध.	रे.	रो.	पु.	उफ.	वि.	शुभः
अमृतम्	उषा.	श.	अ.	मृ.	आश्ले.	ह.	अनु.	सम्मानं
मुशलम्	अभि.	पूभा.	भ.	आ.	म.	चि.	ज्ये.	लाभः
गदः	श्र.	उभा.	कृ.	पुन.	पूफ.	स्वा.	मू.	हानिः
मातंगः	ध.	रे.	रो.	पु.	उफ.	वि.	पूषा.	वृद्धिः
राक्षसः	श.	अ.	मृ.	आश्ले.	ह.	अनु.	उषा.	कष्टम्
चरः	पूभा.	भ.	आ.	म.	चि.	ज्ये.	अभि.	सिद्धिः
सुस्थिरः	उभा.	कृ.	पुन.	पूफ.	स्वा.	मू.	श्रव.	शुभः
प्रवर्द्धमानः	रे.	रो.	पु.	उफ.	वि.	पूषा.	ध.	सुखम्

पञ्चाङ्ग देखने की विधि

इस पञ्चाङ्ग में सर्वप्रथम तिथि उसके बाद सूर्यादि दिन का नाम एवं तिथि का दण्डपलात्मक मान, तिथि का घंटा मिनट, उसके बाद नक्षत्र का नाम, दण्डपल एवं घंटा मिनटात्मक मान, उसके बाद क्रमशः योग एवं करण के दण्डपलात्मक मान, मेषादि राशि में चन्द्रमा की अवस्थिति दण्डपल एवं घंटामिनटात्मक समय, उसके बाद क्रमशः सूर्य का मिश्रमानकालिक (मध्यरात्रिकालिक) स्पष्टराश्यादि, दण्डपलात्मक दिनमान, घण्टामिनटात्मक सूर्योदयास्त तथा राष्ट्रीय, सौर (गते) एवं अंगेजी तिथियाँ हैं। उसके बाद उस दिन के मुहूर्त्त एवं पर्वादि दिये गए हैं। यथा- श्रावणकृष्ण १ शुक्र को प्रतिपदा का दण्डपलात्मक मान २२।५४ (दिन घंटा २ मिनट २६) तक, श्रवणा का दण्डपल ४८।४० (रात्रि घंटा १२ मिनट ४४) तक आदि सारी बातें इसी तरह जाननी चाहिये। पञ्चाङ्ग के निचले भाग में निशीथ (मिश्रमान) कालिक दैनिक स्पष्टग्रह एवं दण्डपलात्मक मिश्रमान दिया गया है। यथा- श्रावणकृष्णप्रतिपदा शुक्र को मिश्रमानकालिक स्पष्टमंगल राश्यादि ११।२८।००।१४ तथा स्पष्ट बुध राश्यादि ३।१८।२३।३०आदि। दो दिनों के स्पष्टग्रहों का अन्तर ग्रह की दैनिक गति होती है। यथा- श्रावणकृष्ण प्रतिपदा शुक्र एवं द्वितीया शनि के स्पष्ट मंगल का अन्तर ३३।२२ कलादि दैनिक गति मंगल की हुई। इसी तरह अन्य ग्रहों की भी गति समझनी चाहिये। इसके बाद इसी चक्र के अन्तिम भाग में दैनिक लग्नसारिणी दी गई है। सुविधा की दृष्टि से प्रतिदिन मेष से आरम्भ कर मीन तक के लग्नों का मान रेलवे घड़ी के अनुसार लिखे गये हैं। अर्थात् १३,१४ आदि घण्टे से दिन के १,२ आदि घण्टे तथा शून्य घंटे से २४ यानि १२ बजे रात्रि समझना चाहिये। यथा- श्रावणकृष्णप्रतिपदा शुक्र को रात्रि २३।०९ बजे से ०।४५ तक मेष, ०।४६ बजे से २।४१ तक वृष, २।४२ से ४।५४ तक मिथुन, ४।५५ से ७।१२ दिन तक कर्क, ७।१३ से ०९।२८ तक सिंह, ०९।२९ से ११।४३ दिन तक कन्या, ११।४४ बजे दिन से १४।०१ तक तुला, १४।०२ से १६।१९ तक वृश्चिक, १६।२० दिन से १८।२४ सायं तक धनु, १८।२५ से २०।१० रात तक मकर, २०।११ से २१।४१ रात्रि तक कुम्भ एवं २१।४२ से २३।०८ रात्रि तक मीन लग्न रहेगा। इसी तरह प्रतिदिन समझना चाहिये। पाक्षिक विषयों के साथ-साथ अन्य उपयोगी विषय '**विविधविषयाः**' में दिये गये हैं। उसके बाद पाक्षिक वातावरण एवं ग्रहस्थिति (ग्रहों के उदय, अस्त, वक्र या मार्ग) लिखी गई है। शुद्धादि विषयों की सुविधापूर्वक जानकारी केलिए प्रत्येक पक्ष में पञ्चाङ्ग के ऊपरी भाग दाईं ओर गुरु और शुक्र के उदयास्त एवं शुद्धादि विवरण दिये गये हैं, ताकि सामान्य जानकारी रखनेवालों को भी सुविधा हो। यात्रादिमुहूर्त्त अर्द्धप्रहररहित नहीं है। अतः अर्द्धप्रहर एवम् आनन्दादियोग का विचार कर लेना चाहिए। शमिति।

मिश्रमान (निशीथ) कालिकग्रह से इष्टकालिकग्रहस्पष्टीकरण, यथा- श्रावणकृष्ण ०२ शनिवार को ३०।२५ दण्डादि पर स्पष्ट मंगल बनाना है तो मिश्रमानवारादि ६।४६।४८ एवं इष्टकालवारादि ६।३०।२५ का अन्तर १६।२३ मिश्रेष्टान्तर ऋणदण्डादि। तथा (११।२८।३३।३६)-(११।२८।००।१४)= ३३।२२ मंगल की गति कलादि। अतः (१६।२३) × (३३।२२)=०९।०७ कलादि फल। अव ११।२८।३३।३६ - (०९।०७) = ११।२८।२४।२९=इष्टकालिक मंगल। इसी तरह सभी ग्रह बनाना चाहिये।

समर्थका विद्वांसः

पं श्री उपेन्द्र झा, वेद - विभागाध्यक्षः
पं श्री लक्ष्मीनाथ झा, साहित्य - विभागाध्यक्षः
पं श्री भगीरथ मिश्रः, दर्शन - विभागाध्यक्षः
पं श्री रामचन्द्र झा, ज्यौतिष - विभागाध्यक्षः
पं श्री सुरेश्वर झा, व्याकरण - विभागाध्यक्षः
पं श्री श्रीपति त्रिपाठी, धर्मशास्त्र - विभागाध्यक्षः

पं. श्री. देवचन्द्र झा
पं. श्री. कृष्णानन्द झा
पं. श्री. शशिनाथ झा
पं. श्री. राधाकान्त मिश्र
पं. श्री. शिवाकान्त झा
पं. श्री. रत्नेश्वर झा
पं. श्री. शिवकान्त झा
पं. श्री. वासुदेव झा
पं. श्री. रामजी ठाकुर
पं. श्री. उमाकान्त झा
पं. श्री.राधाकान्त ठाकुर
पं. श्री. कमलाकान्त झा
पं. श्री. रमाकान्त मिश्र
पं. श्री. चन्द्रनाथ मिश्र

पं. श्री. श्यामानन्द झा
पं. श्री. दामोदर झा
पं. श्री. दिगम्बर झा
पं. श्री. श्रुतिधर झा
पं. श्री. नारायण मिश्र
पं. श्री. शुकदेव पाठक
पं. श्री. बौआनन्द झा
पं. श्री. कमलेश झा
पं. श्री. विकाऊ झा
पं. श्री. देवनारायण झा
पं. श्रीमती मीना कुमारी
पं. श्री. वाचस्पति त्रिपाठी
पं. श्री. विलट झा
पं. श्री. काशीनाथ मिश्र

पं. श्री. कीर्त्यानन्द झा
पं. श्री. कालीकान्त मिश्र
पं. श्री. श्यामनन्दन मिश्र
पं. श्री. उपेन्द्र झा
पं. श्री. महाकान्त पाठक
पं. श्री. किशोरनाथ झा
पं. श्री. उमारमण झा
पं. श्री. चन्द्रकिशोर झा
पं. श्री. देवनारायण शर्मा
पं. श्री. हरिहर झा
पं. श्री. गणेशकान्त झा
पं. श्री. त्रिलोकनाथ झा
पं. श्री. अदितनारायण झा
पं. श्री. सत्यदेव झा

पं. श्री. विदेश्वर झा
पं. श्री. हेमनारायण चतुर्वेदी
पं. श्री. सत्यनारायण झा
पं. श्री. ताराकान्त झा
पं. श्री. वटेश झा
पं. श्री. शोभाकान्त मिश्र
पं. श्री. विद्यानाथ मिश्र
पं. श्री. रामगुलाम मिश्र
पं. श्री. सर्वनारायण झा
पं. श्री. अमरनाथ झा
पं. श्री. चतुरानन मिश्र
पं. श्री. धनेश्वर झा
पं. श्री. शिवकुमार शर्मा
पं. श्री. रामजीवन मिश्र
पं. श्री. राजेन्द्र प्रसाद दूबे
पं. श्री. रामनारायण झा
पं. श्री. चित्रधर झा
पं. श्री. गंगाधर मिश्र
पं. श्री. सिंहेश्वर झा
पं. श्री. धीरेन्द्र झा
पं. श्री. चण्डेश्वर झा
पं. श्री. षडानन मिश्र
पं. श्री. अच्युतानन्द झा
पं. श्री. इन्दुनाथ झा
पं. श्री. गुणानन्द झा
पं. श्री. ललन झा
पं. श्री. भगवानदत्त मिश्र
पं. श्री. फूलेन्द्र झा
पं. श्री. कृपाकान्त ठाकुर
पं. श्री. तारकेश्वर त्रिपाठी
पं. श्री. विद्याधर मिश्र
पं. श्री. थानेश्वर झा
पं. श्री. शक्तिधर झा

पं. श्री. खगेश झा
पं. श्री. महेश झा
पं. श्री. गंगाधर झा
पं. श्री. हरिश्चन्द्र झा
पं. श्री. सूर्यकान्त झा
पं. श्री. अजबलाल झा
पं. श्री. तारणीश झा
पं. श्री. महेश मिश्र
पं. श्री. श्रीधर त्रिपाठी
पं. श्री. वैद्यनाथ मिश्र
पं. श्री. गंगाधर राय
पं. श्री. लक्ष्मीश्वर झा
पं. श्री. सच्चिदानन्द मिश्र
पं. श्री. शशिधर मिश्र
पं. श्री. हरेराम शर्मा
पं. श्री. हरिकान्त झा
पं. श्री. देवकान्त झा
पं. श्री. पालन झा
पं. श्री. नन्दकिशोर पाण्डेय
पं. श्री. रामलखन झा
पं. श्री. राजकुमार झा
पं. श्री. मनोरंजन दूबे
पं. श्री. राधारमण झा
पं. श्री. कुलानन्द झा
पं. श्री. ओंकारनाथ मिश्र
पं. श्री. विद्येश्वर झा
पं. श्री. कालिकादत्त झा
पं. श्री. ब्रह्मदेव मिश्र
पं. श्री. महेश शर्मा
पं. श्री. गोविन्द झा
पं. श्री. उग्रानन्द प्रतिहस्त
पं. श्री. रामलखन शर्मा
पं. श्री. रविकान्त मिश्र

पं. श्री. दुर्गानाथ झा
पं. श्री. शंकरजी झा
पं. श्री. गोलोकनाथ झा
पं. श्री. गुंजन चौधरी
पं. श्री. योगानन्द चौधरी
पं. श्री. हरेन्द्रकिशोर झा
पं. श्री. घनेश झा
पं. श्री. कुलानन्द झा
पं. श्री. कामेश्वर मिश्र
पं. श्री. रामविलास चौधरी
पं. श्री. भोलानाथ मिश्र
पं. श्री. रामकृष्ण झा
पं. श्री. इन्द्रदेव झा
पं. श्री. कपिलेश्वर झा
पं. श्री. लक्ष्मीकान्त झा
पं. श्री. मधुकान्त झा
पं. श्री. शिवानन्द झा
पं. श्री. देवनन्दन मिश्र
पं.श्री.भक्तिनाथसिंह ठाकुर
पं. श्री. मदनमोहन पाठक
पं. श्री. जगन्नाथ मिश्र
पं. श्री. सदानन्द झा
पं. श्री. मदन कुमार झा
पं. श्री. मुनीन्द्र झा
पं. श्री. शुकदेव शर्मा
पं. श्री. गणेश चौधरी
पं. श्री. प्रेमकान्त झा
पं. श्री. ह्षीकेश झा
पं. श्री. खगेन्द्रनाथ झा
पं. श्री. बबुआजी झा
पं. श्री. हंसधर झा
पं. श्री. महानन्द ठाकुर
पं. श्री. उमेश मिश्र
पं. श्री. उमानन्द मिश्र

पं. श्री. चिरंजीव झा
पं. श्री. गणेश झा
पं. श्री. वटोही झा
पं. श्री. कमलाकान्त मिश्र
पं. श्री. श्रीरामकुमार शर्मा
पं. श्री. भूपनारायण मिश्र
पं. श्री. तेजनारायण झा
पं. श्री. राजेन्द्र झा
पं. श्री. रतीशचन्द्र झा
पं. श्री. विष्णुदेव झा
पं. श्री. दिनेश झा
पं. श्री. हर्षनाथ झा
पं. श्री. योगेश्वर झा
पं. श्री. रामदेव झा
पं. श्री. वैद्यनाथ झा
पं. श्री. कौशलेन्द्र झा
पं. श्री. राजेश्वर झा
पं. श्री. चन्द्रनाथ झा
पं. श्री. कृष्णकान्त झा
पं. श्री. भुवनेश्वर झा
पं. श्री. फलचन्द्र मिश्र
पं. श्री. मदनानन्द झा
पं. श्री. श्रीकान्त प्रतिहस्त
पं. श्री. कमलाकान्त ठाकुर
पं. श्री. भागवत ठाकुर
पं. श्री. वीरचन्द्र राय
पं. श्री. कलाधर झा
पं. श्री. दिवाकर शास्त्री
पं. श्री. रघुवीर झा
पं. श्री. विश्वनाथ झा
पं. श्री. हरिनारायण ठाकुर
पं. श्री. कृष्णमोहन पाठक
पं. श्री. श्री इन्दुनाथ ठाकुर
पं. श्री. शक्तिनन्दन झा
पं. श्री. मायानन्द झा.

श्रीमङ्गलमूर्त्तये नमः * श्रीसरस्वत्यै नमः

कलिसंवत् ५१०७, शकाब्दः १९२७-२८, विक्रमसंवत् २०६२-६३, सन् १४१३ साल, लक्ष्मणसंवत् ८९६-९७, खृष्टाब्दः २००५-०६ ई. तत्र प्रभवादिवार्हस्पत्यगताब्दादयः ३१।१०।२३।३१।१२।। भोग्याब्दादयश्च २८।०१।०७।२८।४८।। अत्र विद्यमाने मुनिनेत्रनवेन्दुमिते शकाब्दे विष्णुविंशतिकायां पितृदैवतयुगे द्वात्रिंशद् बिलम्बनामकमध्यमगुरुसंवत्सरफलम् -

तस्करैः पार्थिवैर्देवि ह्यभिभूता वसुन्धरा। अन्नं भवति सामान्यं बिलम्बिनि महाभयम्।।

वर्षेश (राजा) शनिफलम्

सर्पोपद्रवतो नरः क्षतमना नश्यन्त्यथो जन्तवो
राष्ट्रोपद्रववाच्यता निगदिता विप्रेषु साधुष्वपि।
पीड्यन्ते च समीरणाद्बहुजनाः प्रासादहर्म्यादयो
निःशब्दा वसुधा निहन्ति च जलं न स्युः शनौ शालयः।।

संवाहक (मन्त्री) मङ्गलफलम्

वायुर्वाति महीरुहस्य पतनं भूकम्पसंक्षोभिता
पृथ्वीशैलमहातिशृंगपतनं लोकस्य नाशः सदा।
पीडा गोमहिषाश्वकुंजरपशोर्घोरा महाभीतिदा
सस्यानां च विंनाशदारुणतरा सम्बाहके भूमिजे।।

पालक-सूर्यफलम्

सूर्ये लाघवतां व्रजन्ति जलदा मन्दान्नयुक्ता मही
रोगैः पित्तज्वरातिसारसहितैः सस्यैर्विनष्टा हठात्।
राजानो राष्ट्रवादाः पुरजनसहिता यान्ति युद्धैकचित्ता
अर्कज्वालाभितप्ता चलति वसुमती पालके तीक्ष्णरश्मौ।।

मेघेशशुक्रफलम् - शुक्रे सस्ययुता पृथ्वी जलदास्तोयवर्षिणः।।
तोयेशशनिफलम् - मन्दे मन्दजला मेघा मन्दसस्ययुता मही।।
सस्येशगुरुफलम् - अनेकधनसम्पन्ना नन्दन्ति नरपालकाः। सस्यवृद्धिकरी वृष्टिर्देवपूज्ये सदा भवेत् ।।
लोकेशचन्द्रफलम् - स्वस्थाः कीर्त्तियुता लोका धनाम्बरविभूषिताः। हर्षोत्सवक्रियायुक्ताः शीतांशौ च नराधिपे।।
सांवर्त्तकमेघफलम् - संवर्त्तके महावृष्टिः सस्यवृद्धिकरी शुभा। जलपूर्णा मही नित्यं जलदैर्वेष्टितं नभः।।

तटगतरोहिणीफलम् - तटे वृष्टिस्तु शोभना।।
चैत्रशुक्लप्रतिपच्छनिफलम् - वारो यदा सूर्यतुतस्य दैवादुर्भिक्षदुःखैर्विकला धरित्री।।
पौषामावास्या शनिफलम् - बहुधनैर्धरणी परिपूरिता सकलसस्ययुता मुदितप्रजा।।
आर्द्राप्रवेशफलम् - वाय्वग्निवृष्टिकरम् ।। होलिकाफलम् - मध्यमम् ।। दीपावलीफलम् - मध्यमम् ।।
मेषसङ्क्रान्तिफलम् - शोभनम् ।। शकाब्दफलम् - महार्घमतिवृष्टिश्च।। वायुः- उद्वहः।। ग्रहणफलम् - न शुभदम्।।
विक्रमाब्दफलम् - विपुलसुखं सुभिक्षञ्च।। शारदीयनवरात्रफलम् - क्षत्रभङ्गकरं वृष्टिप्रदञ्च।।
जलाढकमानम् - ९६।। तत्र समुद्रे ४८, पर्वते २८।४८, भूमौ १९।१२।।

वर्षादिविश्वाः

वर्षा १७ धान्यं १३ शीतं ९ तृणं १५ उष्णं ११ उत्सवः १३ प्रजावृद्धिः १५ प्रजाक्षयः १५ विग्रहः ११ क्षुधा ३ तृष्णा ३ निद्रा ७ आलस्यं ३ उद्यमः ३ शान्तिः १३ क्रोधः ११ दण्डः ३ मैत्री १ पुण्यं ९ रसादि ९ उग्रत्वं १९ रसोत्पत्तिः १७ फलोत्पत्तिः ३ रोगः १७ रोगक्षयः १३ आचारः ११ अनाचारः १५ मरणं ११ जननं १९ चौरभयं ७ चौरशान्तिः ११ अग्निभयं ९ अग्निशन्तिः ९।।

मेषादिराशीनां सफलमायव्ययचक्रम्

राशिः	मेषः	वृषः	मिथुनं	कर्कः	सिंहः	कन्या	तुला	वृश्चिकः	धनुः	मकरः	कुम्भः	मीनः
आयः	१४	८	११	५	८	११	८	१४	२	५	५	२
व्ययः	१४	८	५	५	१४	५	८	१४	८	२	२	८
फलम्	क्लेशः	विजयः	विजयः	लाभः	लोकापवादः	विजयः	विजयः	क्लेशः	लाभः	सम्मानं	सम्मानं	लाभः

सन् १४१३ साल, १९२७-२८ शकाब्दीय शुद्ध्यशुद्धी

श्रावणकृष्णप्रतिपच्छुक्रवासराच्छ्रावणशुक्लद्वादश्यां बुधे १८।२९ यावच्छुद्धस्तन्मानं मासादि ००।२६।१८।२९।। ततः सिंहादित्यदोषाद् भाद्रशुक्लचतुर्दश्यां शनौ १८।४७ यावदशुद्धस्तन्मानं मासादि १।१।०।१८।। तत आश्विनकृष्णचतुर्थ्यां बुधे ५६।१२ यावच्छुद्धस्तन्मानं मासादि ००।०४।३७।२५।। ततो गुरुक्षैण्यास्त-त्रयोदशदिनकपक्ष-गुरुबाल्यदोषेभ्य अग्रहायणकृष्णपञ्चम्याञ्चन्द्रे ३१।२६ यावदशुद्धस्तन्मानं मासादि २।००।३५।१४।। ततः पौषकृष्णप्रतिपच्छुक्रवासरे ६।९ यावच्छुद्धस्तन्मानं मासादि ००।२४।३४।४३।। ततो धनुरादित्य-भृगुक्षैण्यास्तबाल्यदोषेभ्यो माघकृष्णप्रतिपद्रवौ ६।६ यावदशुद्धस्तन्मानं मासादि ००।२९।५९।५७।। तत आषाढीं यावच्छुद्धस्तन्मानं मासादि५।२७।५३।५४।। अतो वर्षे शुद्धसमयमानं मासादि७।२३।२४।३१।। अशुद्धसमयमानं मासादि ४।१।३५।२९।। तेन वर्षपूर्त्तिदिनानि ३५५।।

सन् १४१३ साल, १९२७-२८ शकाब्दीयशुद्धादि

मार्गमाघाद्याषाढान्तमासेषु शुद्धसमयस्तेषु बहवो विवाहमुहूर्त्ताः। माघादिषूपनयनमुहूर्त्ताः। गुरुस्तदानीं तुलाराशौ। माघफाल्गुनवैशाखज्येष्ठेष्वेकादशीव्रतोद्यापनानि। मार्गे पश्चिमोदितः फाल्गुनवैशाखयोः पूर्वोदितः शुक्रः। तेन मार्गे पूर्वोत्तरदिशोः, फाल्गुनवैशाखयोः पश्चिमदक्षिणदिशोस्तृतीयादिविषमवर्षीयद्विरागमनदिनानि बहूनि। तदितरदिशोस्तृतीयादिविषमवर्षीय (मार्गे पश्चिमदक्षिणदिशोः, फाल्गुनवैशाखयोः पूर्वोत्तरदिशोः) द्विरागमनदिनानि शुक्रान्धनक्षत्रेषु (रे.अश्वि.रो.मृग.) एव।

सन् १४१४ साल, १९२८-२९ शकाब्दीय संक्षिप्तशुद्धादि

माघाद्याषाढान्तमासेषु समयशुद्धिः। तेषु विवाहोपनयनादिमुहूर्त्ता बहवः। गुरुस्तदानीं वृश्चिके। माघ-फाल्गुन वैशाखज्येष्ठेष्वेकादशीव्रतोद्यापनानि। कार्त्तिकमार्गयोः समयाशुद्धिः। कार्त्तिके कार्त्तिकादिव्रतोद्यापनं नैव। मार्गे पूर्वास्त-शुक्रत्वात्तृतीयादिविषमवर्षीयद्विरागमनदिनाभावः। फाल्गुनवैशाखयोः पश्चिमोदितशुक्रत्वात्तृतीयादिविषमवर्षीयपूर्वोत्तर-दिशोर्द्विरागमनदिनानिबहूनि, तदितर (पश्चिमदक्षिण) दिशोस्तु शुक्रान्धनक्षत्रेषु (रे. अश्वि. रो. मृ.) एव। ज्येष्ठे मलमासः।

वर्षफलम्

इस वर्ष के राजा शनि, मन्त्री मंगल, पालक सूर्य, मेघपति शुक्र, जलपति शनि, सस्यपति वृहस्पति, लोकपति चन्द्रमा, सांवर्त्तक नामक मेघ तथा रोहिणीवास तट में है। वर्षा १७, धान्य १३, जलाढक विश्वा १९।१२ तथा उद्वहनामक वायु है। वर्षारंभ में बिलम्बनामक वार्हस्पत्यवर्ष तथा गतवर्षीय आषाढ शुक्ल द्वादशी सोमदिन ४८।४० दण्डादि से तुलाराशि में मध्यम गुरु का प्रवेश एवं विकारी नामक तैंतीसवें वार्हस्पत्य वर्षारंभ हुआ है। जगल्लग्न जगल्लग्नेश, वर्षलग्न-वर्षलग्नेश, राजा-मन्त्री में समभाव (तटस्थभाव) अधिकारियों में पापग्रहों की अधिकता, वर्षलग्नेश-जगल्लग्नेश शनि षष्ठस्थ एवं कर्मस्थ केतु और भाग्यस्थान में गुरु हैं। अतः वर्ष मिश्रितफलप्रद रहेगा। आर्थिक, शैक्षणिक, तकनीकी, प्राकृतिक गैस-तेल आदि ऊर्जास्रोत मूलककार्य, कृषि एवं जलसम्बद्ध क्षेत्रों में प्रगति की संभावना रहेगी। सुरक्षामूलक कार्य तथा पारस्परिक सहयोग की भावना विभिन्न देशों के बीच बढेगी। शनि-मंगल के प्रभाव से मेघगर्जन, वायुवेग, तूफान, अग्निकाण्ड, हिमपात, रोगवृद्धि, गर्मी की अधिकता, विद्युत या ओलापात, यान-दुर्घटना, भूकम्प, अपहरण-अपराध-शस्त्राघात-कलह आदि अमानवीय कृत्यों में वृद्धि, शासक वर्ग में मतैक्याभाव क्षत्रभङ्ग या नेतृत्वपरिवर्तन आदि संभावित है। वर्षा की स्थिति विषम रहेगी, खण्डवृष्टि, वाढ एवं सुखाड़ से कृषि की आंशिक क्षति होगी। भादी, अगहनी एवं चैत्री फसल की उपज क्रमशः ६०,६०,८० प्रतिशत होगी। विघ्ननिवारणपूर्वक कल्याणकामनया यज्ञ, संकीर्त्तन, दान एवं विभिन्न प्रकार के शास्त्रोक्त धर्मकृत्य करना चाहिये।

मासफलम्

श्रावण- इस मास में ५ शनिदिन, सूर्यसंक्रान्तिमुहूर्त ४५ एवं चन्द्रदर्शनमुहूर्त ३० है। अतः अन्नादि के भाव में सस्ती एवं फिर साम्य का क्रम रहेगा। गृहोपकरण, रस एवं फलादि के भाव में थोडी तेजी हो सकती है। खण्डवृष्टि एवं वाढ से कृषि को क्षति, दुर्घटना, रोगवृद्धि प्रवलवायुवेग, अग्निभय, प्राकृतिकप्रकोप एवं राजनैतिक उत्थल-पुत्थल संभव है। शुक्लपक्ष का तिथिक्षय कार्त्तिक में नेतृत्व परिवर्तन करा सकता है। कल्याणार्थ धर्माचरण अपेक्षित है।

भाद्रव- इस मास में ५ बुधदिन, सूर्यसंक्रान्तिमुहूर्त ४५ तथा चन्द्रदर्शनमुहूर्त भी ४५ है। अतः सभी खाद्यपदार्थों, रस-तैल-गैसीयपदार्थों, फलादि एवं गृहोपकरण में सस्ती का क्रम रहेगा। खण्डवृष्टि एवं वाढ से कृषि की आंशिक क्षति संभव है। पूर्वापेक्षया अनुकूलता की स्थिति बनेगी। तथापि शासकवर्ग में मतभेद, गर्मी की अधिकता, दुर्घटना एवं उपद्रव संभावित रहेगी।

आश्विन- इस मास में ५ शनिदिन, सूर्यसंक्रान्तिमुहूर्त १५ तथा चन्द्रदर्शनमुहूर्त भी १५ है। अतः सभी खाद्यपदार्थों, रसादि, धातुपदार्थों तथा फलादि के मूल्य में तेजी आयेगी। काले पदार्थ, तेल-गैस आदि अपेक्षाकृत तेजी की ओर बढेंगे। खण्डवृष्टि एवं वाढ से कृषि को क्षति संभावित है। उपद्रव, वैमनस्य, हडताल, महामारी प्रकोप, अग्निभय तथा सत्तापरिवर्तन या नेतृत्व परिवर्तन संभव है। प्राकृतिक उत्पात एवं दुर्घटनाएँ होंगी। शान्त्यर्थ धर्मकृत्य करना चाहिए।

कार्त्तिक- इस मास में ५ सोमवार, सूर्यसंक्रान्तिमुहूर्त ३० तथा चन्द्रदर्शनमुहूर्त भी ३० है। शुक्लपक्ष त्रयोदशदिनात्मक है। अतः पूर्वापेक्षया खाद्यपदार्थों, रसपदार्थों, धातुपदार्थों, गृहोपकरण एवं फलादि के भाव में सस्ती का क्रम आएगा। उपद्रव, संघर्ष, दुर्घटना, प्राकृतिक प्रकोप, महामारी तथा शासकवर्गों में वैमनस्य से नेतृत्व परिवर्तन या सत्ता परिवर्तन भी संभावित रहेगा। छिट-फुट वर्षा भी संभावित है। कल्याणार्थ धर्माचरण अपेक्षित है।

अगहन- इस मास में ५ बुधदिन, सूर्यसंक्रान्तिमुहूर्त ३० तथा चन्द्रदर्शनमुहूर्त भी ३० है। अतः पूर्व की तरह खाद्यपदार्थों, धातुपदार्थों, रसपदार्थों, वस्त्रादि एवं फलादि के भाव में साम्य रहने की संभावना है। उपद्रव, दुर्घटना एवं उत्पातादि में पूर्वापेक्षया कमी आएगी।

पौष- इस मास में ५ शुक्रदिन, सूर्यसंक्रान्तिमुहूर्त ३० तथा चन्द्रदर्शनमुहूर्त भी ४५ है। अतः अन्न, वस्त्र, खाद्यसामग्री, धातुपदार्थ, रसपदार्थ, गृहोपकरण एवं फलादि में सस्ती से क्रमशः तेजी का रुख रहेगा। श्वेतपदार्थ अपेक्षाकृत सस्ते होंगे। वैमनस्य, उत्पात, वायुवेग-छिटफुट वृष्टि-ओलापात, शीतवृद्धि, राजनैतिक उत्थल-पुत्थल एवं उपद्रव संभावित है। कल्याणार्थ धर्माचरण अपेक्षित है।

माघ-इस मास में ५ शनिदिन, सूर्यसंक्रान्तिमुहूर्त ४५ तथा चन्द्रदर्शनमुहूर्त १५ है। अतः श्वेतपदार्थ अपेक्षाकृत मँहगे होंगे। कृष्ण-रक्तपदार्थ, धातुपदार्थ, तेल, गैस एवं फलादि के भाव में अपेक्षाकृत साम्य रहेगा। प्राकृतिक उत्पात (हिमपात, तूफान, भूकम्प आदि) यानदुर्घटना, हडताल, उपद्रव एवं कलहकर स्थिति संभावित है। वायुवेग-ओला के साथ छिटफुट वर्षा हो सकती है। कल्याणार्थ धर्मकृत्य करना चाहिये।

फाल्गुन- इस मास में ५ रविदिन, सूर्यसंक्रान्तिमुहूर्त १५ तथा चन्द्रदर्शनमुहूर्त ४५ है। अतः श्वेतपदार्थ, फल एवं वनस्पतिवस्तु के भाव में सस्ती का क्रम रहेगा। कृष्णरक्तपदार्थ मँहगे होंगे। खाद्यपदार्थ, वस्त्र धातुपदार्थ एवं रसादि के भाव में तेजी-मन्दी का क्रम रहेगा। वैमनस्य, उपद्रव, हडताल या कलह, ज्वरादिरोगवृद्धि, दुर्घटना एवं छिट-फुट वृष्टि के साथ वायुवेग-ओलापात संभावित है। शान्त्यर्थ धर्माचरण अपेक्षित है।

चैत्र- इस मास में ५ मङ्गलदिन, सूर्यसंक्रान्तिमुहूर्त ४५ तथा चन्द्रदर्शनमुहूर्त १५ है। अतः श्वेतपदार्थ, फल, सब्जी एवं वानस्पतिक सामान मँहगे होंगे। कृष्णरक्तपदार्थ खाद्यपदार्थ, धातुपदार्थ एवं रसादि में तेजी-मन्दी- समता का क्रम रहेगा। पाँच मङ्गलवार प्राकृतिक उत्पात, वैमनस्य, उपद्रव, रोगवृद्धि, वायुवेग एवं अग्निभयकारक है। तूफान, झंझावात एवं ओलापात संभावित है। कल्याणार्थ धर्मकृत्य संपादन करना अपेक्षित है।

वैशाख- इस मास में ५ शुक्रवासर, सूर्यसंक्रान्तिमुहूर्त ३० तथा चन्द्रदर्शनमुहूर्त भी ३० है। अतः पूर्वापेक्षया सभी वस्तुओं के भाव में समता आएगी। तेजी से मन्दी का क्रम रहेगा किन्तु धातुपदार्थ, कृष्णरक्तपदार्थ एवं फलादि में तेज-सम का क्रम रहेगा। अग्निभय, गर्मी की अधिकता, रोगवृद्धि एवं झंझावात की संभावना है। गुरु-शुक्र का अन्योन्य गृहाश्रितत्व नवीनकार्य में सफलता तथा प्रभाववर्द्धक है। पूर्वापेक्षया अनुकूलता की स्थिति रहेगी।

ज्येष्ठ- इस मास में ५ सोमवार, सूर्यसंक्रान्तिमुहूर्त १५ तथा चन्द्रदर्शनमुहूर्त ३० है। अतः खाद्यपदार्थ, धातुपदार्थ, वस्त्र, रसादिपदार्थों के भाव तें तेजी आएगी। श्वेतपदार्थों के भाव में साम्य रहेगा। मङ्गल-शनि की युति अपराधवृद्धि, रोगवृद्धि एवं वैमनस्यकारक है। तूफान एवं अग्निभय संभावित रहेगा। गुरु-शुक्र का सप्तमस्थत्व लोककल्याणकारी है।

आषाढ- इस मास में ५ वृहस्पतिदिन, सूर्यसंक्रान्तिमुहूर्त ३० तथा चन्द्रदर्शनमुहूर्त भी ३० है। अतः सभी वस्तुओं के भाव में तेजी से साम्य की ओर क्रम रहेगा। श्वेतपदार्थ अपेक्षाकृत सस्ते होंगे। शनि-मङ्गल के योग दुर्घटना, वैमनस्य, अग्निभय, खण्डवृष्टि, वाढ एवं प्राकृतिक उत्पात के सूचक हो सकते है। शान्त्यर्थ धर्माचरण करना चाहिए।

राशिफलम्

मेष (चु, चे, चो, ल, लि, लु, ले, लो, अ) वर्षफल सामान्यतया शुभद रहेगा। अभीष्टकार्य में विलम्ब से सफलता, परिवार-सन्तान की अभ्युन्नति (आंशिक रूप से) होगी। शिक्षा, व्यापार, उद्योगधन्धे, राजनीति एवं कृषिकार्य में सफलता मिलेगी। मांगलिककार्य, भ्रमण एवं तीर्थाटन का योग लगेगा। रक्तवायुविकार या उदर पीडा संभव है। हनुमदुपासना, शनि एवं राहु की उपासना लाभकर होगी।

वृष (इ, उ, ए, ओ, व, वि, वु, वे, वो) वर्षफल शुभद रहेगा। स्वास्थ्य अनुकूल किन्तु रक्तदोष-उदरपीडा संभव, पारिवारिक स्थिति अभ्युन्नतिकर, सन्तान को लाभ, शिक्षा में प्रगति, राजनीति में लाभ, कृषि, उद्योग, व्यापार एवं नवीन कार्यारंभ में सफलता मिलेगी। पुराने झंझट से मुक्ति मिलेगी। शत्रु पर विजय प्राप्त होगी। मंगल की उपासना अथवा हनुमदुपासना करनी चाहिए।

मिथुन (क, कि, कु, घ, ङ, छ, के, को, ह) शनि की साढे साती चल रही है। अतः रोग-शत्रु से थोडी परेशानी रहेगी। व्यय, श्रमाधिक्य एवं विलम्ब से कार्य में आंशिक सफलता मिलेगी। शिक्षा, उद्योग, व्यापार आदि में साधारण लाभ होगा। सन्तान की स्थिति एवं पारिवारिक स्थिति सामान्यतः बाधित रहेगी। अतः शनि शान्त्यर्थ हनुमत्पूजन-दर्शन, कृष्णगोदर्शन, मंगलव्रत, सुन्दरकाण्ड अथवा दुर्गापाठ, शनिपूजन-स्तोत्रपाठ-मन्त्रजप, शनिदिन अश्वत्थ मूल में जल-तिल-गुडदान, तिलतैल से हनुमद्दीपदान करना चाहिए। काले घोडानाल के लोहे की अथवा वषोत्सर्ग दगनीलोहे की अथवा नाव के माङ्ग् भाग के लोहे की अंगूठी (गंगाजल अथवा पवित्रजल से धोकर तथा कम से कम दशवार शनि मन्त्र से अभिमन्त्रित कर) शनिदिन वामहाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करना श्रेयस्कर होगा।

कर्क (हि, हु, हे, हो, ड, डि, डु, डे, डो) शनि की साढे साती चल रही है। अतएव रक्तवायुकफ जन्यबाधा से स्वास्थ्य में न्यूनता, पारिवारिक एवं सन्तान सम्बन्धी स्थिति सामान्यतया अनुकूल, शिक्षा, राजनीति, व्यापार, उद्योग एवं कृषि कार्य में अधिक श्रम एवं व्यय के वावजूद लाभ में कमी, नवीन कार्यारंभ में हानि, भ्रमण एवं परेशानी संभव है। अतः मिथुनराशिवत् शनि की शान्ति अपेक्षित है।

सिंह (म, मि, मु, मे, मो, ट, टि, टु, टे) शनि की साढेसाती चल रही है। स्वास्थ्य (रक्तवायुपीडा-उदरपीडा से) बाधित, सन्तान की स्थिति प्रतिकूल, पारिवारिक स्थिति अनुकूल, शिक्षा, उद्योग, व्यापार एवं कृषि कार्य में अधिकश्रम एवं व्यय के बावजूद अल्प लाभ या हानि की संभावना, व्यर्थभ्रमण एवं शत्रु से परेशानी संभव है। अतएव मिथुनराशिवत् शनि की एवं राहु-केतु की उपासना करनी चाहिए।

कन्या (टो, प, पि, पु, ष, ण, ठ, पे, पो) वर्षफल शुभद है। स्वास्थ्य (वायु-उदरपीडा) में थोडी न्यूनता रहेगी। शिक्षा, उद्योग, व्यापार एवं कृषि के क्षेत्र में लाभ होगा। राजनीति एवं नवीनकार्यारंभ में सफलतादायक स्थिति रहेगी। सन्तान का समय बाधायुक्त रहेगा। पत्नी का स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहेगा। सद्व्यय होगा तथा विजयश्री मिलेगी। राहु-केतु की उपासना (गोमेदधारण, राहुमन्त्रजप-दान-स्तोत्रपाठ, सुन्दरकाण्ड या दुर्गापाठ आदि) लाभकर होगी।

तुला (र, रि, रु, रे, रो, त, ति, तु, ते) वर्षफल अनुकूल है। स्वास्थ्य अनुकूल, पारिवारिक सुख एवं सनतान सम्बन्धी सुख की प्राप्ति होगी। शिक्षा, उद्योग, व्यापार, कृषि, नूतन कार्यारंभ एवं राजनीति के क्षेत्र में सफलता मिलेगी, सत्कार्य, भ्रमण एवं तीर्थाटन का योग लगेगा। चिरप्रतीक्षित कार्य में सफलता मिलेगी। केतु की एवं भाद्रव तक गुरु की उपासना लाभकर होगी।

वृश्चिक (तो, न, नि, नु, ने, नो, य, यि, यु) वर्षफल सामान्यतया अनुकूल रहेगा। पारिवारिक सुख मिलेगा। सन्तान सुख सामान्यतः शुभद होगा। कृषि, व्यापार, उद्योग, शिक्षा एवं राजनीति के क्षेत्र में स्थिति अनुकूल एवं लाभकारक रहेगी। शत्रु वर्ग से थोडी परेशानी रहेगी किन्तु विशेष हानि की संभावना नहीं रहेगी। नवीनकार्यारंभ में विलम्ब एवं अधिक परिश्रम से सफलता मिल सकती है। शनि की साढे साती के कारण थोडी बाधक स्थिति वनी रहेगी। अतः मिथुन राशिवत् शनि की शान्ति करनी चाहिए।

धनु (ये, यो, भ, भि, भु, ध, फ, ढ, भे) वर्षफल सामान्यतः अनुकूल रहेगा। स्वास्थ्य में वायु-रक्तदोष से थोडी न्यूनता, सन्तान की अभ्युन्नति, पारिवारिकसुख में थोडा व्यवधान, शिक्षा, उद्योग, व्यापार, राजनीति एवं कृषि सम्बन्धी क्षेत्रों में मध्यमरूप से लाभ, रोग-शत्रुकोप के कारण व्यय एवं परेशानी संभव है। भ्रमण, मंगलकृत्य एवं तीर्थाटन का अवसर प्राप्त होगा। शनि की साढे साती चल रही है। अतः शनि की शान्ति मिथुनराशिवत् करनी चाहिए।

मकर (भो, ज, जि, जु, जे, जो, ख, खि, खु, खे, खो, ग, गि) वर्षफल सामान्य रहेगा। स्वास्थ्य अनुकूल, सन्तान की अभ्युन्नति, पारिवारिक सुख में कमी, शिक्षा एवं कृषि के क्षेत्र में लाभ, उद्योग, व्यापार एवं राजनीति के क्षेत्र में बाधा एवं विलम्ब से साधारणलाभ होगा। मांगलिक कार्यों में व्यय तथा तीर्थाटन या भ्रमण का अवसर मिलेगा। शनि की साढे साती चल रही है। अतः मिथुनराशिवत् शनि की शान्ति अपेक्षित है।

कुम्भ (गु, गे, गो, स, सि, सु, से, सो, द) रक्तवातविकार या उदरविकार से स्वास्थ्य बाधायुक्त रहेगी। सन्तान की अभ्युन्नति में बाधा तथा पारिवारिक सुख में भी थोडी न्यूनता रहेगी। कृषि, उद्योग, व्यापार एवं राजनीति के क्षेत्र में सफलता मिलेगी तथा लाभ होगा। शिक्षा के क्षेत्र में सफलतादायक स्थिति रहेगी। नवीन कार्यारंभ से लाभ होगा। तीर्थाटन एवं मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे। राहु-केतु की उपासना लाभकर रहेगी।

मीन (दि, दु, थ, झ, ञ, दे, दो, च, चि) वातरक्तदोष से स्वास्थ्य में कमी, सन्तानसुख मध्यम, पारिवारिक सुख अनुकूल, शिक्षा में सफलता, कृषि, उद्योग एवं व्यापार में बाधा एवं विलम्ब के वावजूद आंशिक लाभ होगा। भ्रमण, तीर्थाटन तथा मंगलकृत्य सम्पादन का अवसर लगेगा। साधारणरूप से मानसिक तनाव रह सकता है। शनि एवं गुरु की उपासना लाभकर होगी।

❋ अथ ग्रहाणां तान्त्रिकमन्त्राः ❋

सूर्यस्य–ओम् घृणिः सूर्य आदित्य ।। चन्द्रस्य-ओम् सों सोमाय नमः । कुजस्य-ओं अं अंगारकाय नमः । बृधस्य-ओम् बुं बुधाय नमः ।। गुरोः-ओम् वृं वृहस्पतये नमः ।। शुक्रस्य-ओम् शुं शुक्राय नमः । शनेः-ओम् शं शनैश्चराय नमः । राहोः-ओं रां राहवे नमः । केतोः-ओम् कें केतवे नमः ।।

ग्रहाणां समिधः—अर्कः पलाशः खदिरस्त्वपामार्गोऽथ पिप्पलः । औदुम्बरः शमी दुर्वा कुशाश्च समिधः क्रमात् ।

शाकल्यनिर्माणम्—तिलार्द्धं तण्डुलाः प्रोक्ताः तण्डुलार्द्धं यवाः स्मृताः । यवार्द्धं शर्करा प्रोक्ता सर्वार्द्धन्तु घृतं स्मृतम् ।

छन्दोगप्राण-प्रतिष्ठामन्त्रः—ओम् वाङ्मनः प्राणापानौ व्यानश्चक्षुः श्रोत्रं शर्म्मवर्म भूतिः प्रतिष्ठा ।। वाजसनेयिनां **देवताप्राण-प्रतिष्ठामन्त्रः**—ओम् मनोजूतिर्जुषता-माज्यस्य वृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनो त्वरिष्टं यज्ञग्वं समिमं दधातु । विश्वेदेवा स इह मादयन्तामोम् प्रतिष्ठ ।

अथ शुभदिनानि—चन्द्रबुधगुरुशुक्रदिनानि । **शुभतिथयः**—२. ३. ५. ७. १०. ११. १२. १३. १५. ।

शुभनक्षत्राणि—अश्वि. रो. मृ. पुन. पुष्य. ह. चि. स्वा. अनु. श्र. रे. । **शुभलग्नानि राशयश्च**—वृष. मिथुन. कर्क. कन्या. तुला. धनु. मीन ।

ग्रहकृतारिष्टशमनाय सौषधजलस्नानम्

लज्जावती, कुष्ठः (कुढ़), बला (बरियार), प्रियंगु (काउनी) घनः (मोथा) सर्षपः हरिद्रा देवदारु, पुंखा (सहरफोंका) लोध्रं एतैरौषधैर्युतजले पुष्पाक्षतदूर्वाश्रीखण्ड-रक्तचन्दन-धान्य-शतावरी-तीर्थोदक-सप्तमृत्तिका-तिल-यव-पञ्चगव्य-ताम्बूल-पञ्चपल्लव- पञ्चरत्नादीनि प्रक्षिप्य तैर्जलैः स्नायात् । एवं कृते दुष्टग्रहसूचितारिष्टनाश इष्टसिद्धिश्च ।

अर्द्धप्रहराबोधकचक्रम्

दिन	सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.
दिने	४।५	२।७	२।६	३।५	७।८	३।४	१।६।८
रात्रौ	४।६	४।७	०।२	५।७	५।८	०।३	१।६।८

ग्रहाणामरिष्टहरत्वम्

राहुदोषं बुधो हन्यादुभयोस्तु शनैश्चरः । त्रयाणां भूमिजो हन्ति चतुर्णां दानवार्चितः । पञ्चानां देवमन्त्री च षण्णां दोषन्तु चन्द्रमाः । सप्तदोषं रविर्हन्ति विशेषादुत्तरायणे । शुक्रो दशसहस्राणि बुधो दशशतानि च । लक्षमेकं तु दोषाणां गुरुर्लग्ने व्यपोहति ।

योगिनीवासो युद्धयात्रायाम्

तत्र वामपृष्ठगता योगिनी शुभा, दक्षिणसम्मुखगा चाशुभा

तिथयः	१।९	३।११	५।१३	४।१२	६।१४	७।१५	२।१०	८।३०
दिशा	पू०	अ०	द०	नै०	प०	वा०	उ०	ई०

गर्भाधानमुहूर्त्तः

रो. मृ. उत्तरा ३ ह. स्वा. अनु. श्र. ध. श. चि. पुन. पु. अश्वि. नक्षत्रेषु. १।२।३।५।७।१०।११।१२।१३ तिथिषु । चं. बु. वृ. शु. वारेषु । रात्रौ, रजोदर्शनानन्तरं चतुर्थरात्रितः १२ रात्रि यावत् । शुभैः केन्द्रत्रिकोणगैः पापैस्त्र्ययारिगैः पुंग्रहदृष्टलग्ने, चन्द्रे विषमांशगे युग्मराशौ शुभम् ।

सीमन्तपुंसवनमुहूर्त्तः

पुंसवनं गर्भतस्तृतीये मासि कार्यम् । सीमन्तोन्नयनं च षष्ठेऽष्टमे वा मासि मासाधिपतौ सवले कार्यम् । मृ. पुष्य. श्रव. मू. पुन. ह. रो. रे. उत्तरा ३ (जन्मर्भंविना) नक्षत्रेषु १।२।३।५।७।१०।११।१३ तिथिषु, शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत् । सू. मं. वृ. वारेषु, मतान्तरेण शु. च. अपि. पूर्वाह्णे, पुंभस्यांगे तदंशे शुभम् । तत्र पापैः ३।६।११ स्थितैः, शुभैः १।४।५।७।९।१० स्थितैः, चन्द्रे २।३।४।५।९।१०।११ स्थिते, ४।८।१० पापरहितैः शुभम् ।

जातकर्ममुहूर्त्तः

जातकस्य ग्रहदोषनाशाय आयुःश्रीवृद्धये च जन्मकाल एव जातकर्म पिता कुर्यात् । तदतिक्रमे एकादशे द्वादशेऽह्नि, चि. अनु. रे. उत्तरा ३ रो. अश्वि पुन. पु. स्वा.. श्र. ध. श. भेषु, पूर्णिमां विहाय शुभतिथिदिनलग्नेषु शुभम् ।

शिशोर्दुग्धपानमुहूर्त्तः

अश्वि. रो. मृ. ह. पुन. उत्तरा ३ पुष्य चि. अनु. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु शुभतिथिषु शुभदिनेषु वृष-सिंह-वृश्चिक कुम्भलग्नेषु स्तनपानं शुभं शिशोः । अन्नप्राशनोक्त-दिनतिथिनक्षत्रेषु सूतिकापथ्यं शुभम् । भैषज्योक्तनक्षत्रेषु औषधिभक्षणञ्च शुभं वेद्यम् ।

सूतिकास्नानमुहर्त्तः

अश्वि. रो. मृ. स्वा. अनु. उत्तरा ३. रे. नक्षत्रेषु रवि, मङ्गल, वृहस्पति वारेषु शुभलग्नेषु शुभदृग्युतेषु १।२।३।५।७।१०।११।१३।१५ तिथिषु सूतिकास्नानं शुभम् । आश्ले, पूर्वा ३, ज्ये. ध. श. नक्षत्रेषु मध्यमम् ।

प्रसूतिनखच्छेदनमुहूर्त्तः

अश्वि. रो. मृ. पुन. पु. उत्तरा ३ ह. चि. स्वा. वि. अ. ज्ये. श्र. ध. श. नक्षत्रेषु, ३।५।७।१०।११।१३ तिथिषु, ३।५।६।७।८।११ लग्नेषु शुभदिनेषु पूर्वाह्णे शुभम् ।

स्त्रीणां लाक्षाभरणधारणमुहूर्त्तः

भ. आ. श्ले. म. वि. श. रहितनक्षत्रेषु शनिमंगलरहितदिनेषु शुभतिथौ स्त्रीणां लाक्षाभरणधारणं (लहठीधारणं) शुभम् ।

शिशुनिष्क्रमणमुहूर्त्तः

जन्मतश्चतुर्थे मासि यात्रोक्तदिनतिथिनक्षत्रेषु द्वादशे दिवसे वा शुभं स्यात् ।

शिशोर्भूम्युपवेशनमुहूर्त्तः

आदौ पृथ्वीं वराहञ्च सम्पूज्य कुजवले पञ्चमे मासि उत्तरा ३ रो. मृ. ज्ये. अनु. अश्वि. ह. पुष्य अभि नक्षत्रेषु रिक्तामारहिततिथिषु शुभदिनेषु वृष, सिंह, वृश्चिक, कुम्भलग्नेषु शिशोः कटिप्रदेशे कटिसूत्रं बद्ध्वा पृथिव्यामुपवेशयेत् । तन्मन्त्रः—रक्षैनं वसुधे देवि सदा सर्वगतं शुभम् । आयुः प्रमाणं सकलं निक्षिपस्व हरिप्रिये । अत्रैव शिशोरग्रे वस्त्रं, शस्त्रं, लेखिनीं, पुस्तकं, सुवर्णं, रौप्यं च स्थाप्यम् । तेषु बालो यं गृह्णाति तैस्तस्य वृत्तिः ज्ञातव्येति ।

शिशुविलोकनमुहूर्त्तः

तृतीये मासि शुभतिथिदिननक्षत्रेषु पुष्पफलवस्त्रद्रव्यादिना शिशुदर्शनं शुभम् ।

नामकरणमुहूर्त्तः

विप्राणां ११ क्षत्रियाणां १३ वैश्यानां १६ शूद्राणां ३१ तमे दिने नामकरणं शुभम् । अथवा स्वा. पुन. श्र. ध. ह. अश्वि. पुष्य, अभि. उत्तरा ३, रो. मृ. रे. चि. अनु. नक्षत्रेषु, १।२।३।५।७।१०।११।१२।१३ तिथिषु, चं. बु. वृ. शु. दिनेषु, पूर्वाह्णे शुभम्, मध्याह्ने मध्यमम् । शुभलग्ने, शुभैः १।४।५।७।९।१० स्थितैः, पापैः ३।६।११ स्थैः, ८।१२ गृहे शुद्धे, चन्द्रे २।३।५।९।१० स्थिते । लग्ने शुभांशे पितृपुत्रयोश्चन्द्रतारानुकूले उत्तरायणे शुद्धसमये शुभं नामकरणम् ।

अन्नप्राशनमुहूर्त्तः

कन्यकानां पञ्चममासतो विषममासेषु बालकानां षष्ठात्सममासेषु रो. उत्तरा ३ मृ. रे. चि. अनु. स्वा. पुन. श्र. ध. श. ह. अश्वि. पुष्य. अभि. नक्षत्रेषु २।३।५।७।१०।१३।१५ तिथिषु, च. बु. वृ. शु. दिनेषु, शुक्लपक्षे, पूर्वाह्णे २।३।४।५।६।७।९।१०।११ लग्नेषु, एषु जन्मलग्नराश्योरष्टमलग्नमंशं च त्यजेत् । शुभैः १।४।५।७।९।१० स्थितैः, पापैः ३।६।११ गतैः, दशमस्थाने ग्रहरहिते, शुभदृग्युतलग्ने, ४।८।६।१२ रहिते चन्द्रे अन्नप्राशनं शुभम् ।

कर्णवेधमुहूर्त्तः

१।२।३।५।६।७।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु, शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत् च. बु. वृ. शु. दिनेषु जन्मतारां विहाय श्र. ध. पुन. ह. अश्वि. पुष्य, अभि. मृ. रे. चि. अनु. नक्षत्रेषु १२।६ मासे वा विषम वर्षे चैत्रपौषहरिशयनरिक्तासमवर्षाणि त्यक्त्वा २।३।४।६।७।९।१२ लग्नेषु, शुभैः १।४।५।७।९।१० गतैः, पापै ३।६।११ गतैः, लग्नस्थे गुरौ शुद्धसमये शुभः ।

चूड़ाकरण (मुण्डनाद्यकचकर्त्तन) मुहूर्त्तः

चैत्ररहितमाघादि ६ मासे, ज्येष्ठाग्रहणयोः ज्येष्ठसन्तानं विना, विषमवर्षे, अश्वि, मृ. पुन. पुष्य ह. चि. स्वा. ज्ये. अभि. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु च. बु. वृ. शु. वारेषु २।३।५।७।१०।११।१३ तिथिषु शुक्लपक्षे कृष्णे ५ यावत्, २।३।४।७।९।१२ एतद्राशेर्लग्नांशे शुक्रवर्जिताष्टमशुद्धे, पापैः ३।६।११ गतैः, शुभैः १।४।५।७।९।१० गतैः, जन्मराशिलग्नयोरष्टमेतरलग्ने ४।६।८।१२ रहितचन्द्रे शुभम् ।

अक्षरारम्भमुहूर्त्तः

उत्तरायणे पञ्चमवर्षे (वालो यदि क्षमस्तदा तत्पूर्वमपि) गणेशविष्णुसरस्वतीलक्ष्मीकुलदेव-ग्रामदेवान् विधिवत्सम्पूज्य प्रथमाक्षरारम्भो विधेयः । अश्वि. आर्द्रा पुन. पुष्य ह. चि. स्वा. अनु. अभि. श्र. रे. नक्षत्रेषु, २।३।५।६।१०।११।१२ तिथिषु, शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत् । च. बु. वृ. शु. दिनेषु, वृष मिथुन कन्या धनु मीन लग्नेषु तत्रवांशे चोत्तमः, कुम्भांशकं विनाऽष्टमशुद्धे, खेऽस्ते गुरुबुधे, शुक्रे लग्ने ग्रहवलाढ्ये शुभः ।

विद्यारंभमुहूर्त्तः

उत्तरायणे गणेशं विष्णुं लक्ष्मीं सरस्वतीञ्च सम्पूज्य अक्षरग्रहणे दृढ़े सञ्जाते विद्यारम्भः कार्यः सूर्यबुधगुरुशुक्रवारेषु, २।३।५।६।१०।११।१२ तिथिषु, अश्वि. मृ. आर्द्रा, पुन. पुष्य, आश्ले. ह. चि. स्वा. मूल, पूर्वा.३ श्र. ध. श. नक्षत्रेषु, शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत्, लग्नाष्टमशुद्धे, शुभैः १।४।५।७।९।१० गृहगतैः, पापैः ३।६।११ गतैः, वृषमिथुनकन्याधनुर्मीनान्यतमलग्ने तदंशे वा विद्यारंभः शुभावहः।

उपनयन (व्रतबन्ध) मुहूर्त्तः

शुद्धसमये, उत्तरायणे, माघादिषण्मासेषु, सू.च.बु.वृ.शु. वारेषु (सामवेदिनां मंगलवारेऽपि), जन्ममासनक्षत्रादौ व्रतं शुभम्। २।३।५।१०।११।१२ तिथिषु शुक्लपक्षे, पूर्वाह्णे च शुभम्। मकरार्के पौषे ११।१२, मकरार्के माघे १२, चैत्रे वैशाखे च तृतीया, वैशाखभिन्नमासानां द्वितीया, आषाढ़े १०।११ चोपनयने निषिद्धाः। अश्वि. रो. मृ. आ. पुष्य आश्ले. पूर्वा ३, उत्तरा ३, ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्र. ध. श. रे नक्षत्रेषु (क्षत्रियवैश्ययोः पुनर्वसावपि) शुभम्। ब्राह्मणानां पुनर्वसुनक्षत्रे उपनयनं निषिद्धम्। मन्वादियुगादिषु, अपराह्णे, सायं, प्रदोषेऽनध्याये, कृष्णपक्षे चोपनयनं निषिद्धम्। त्रिषडस्थाः खलाः सर्वे चन्द्रो द्विद्यूनदिक्त्रिगः। सौम्याः केन्द्रत्रिकोणस्थाः लाभे सर्वे व्रते शुभाः। लग्नेशचन्द्रशुक्रगुरवश्च षडष्टगाः न शुभाः। चन्द्रशुक्रौ लग्नात् १२ गतौ न शुभौ १।५।८ स्थाः पापाः न शुभाः। ६।८।१२ गताः शुभाः न शुभप्रदाः। ३।६।११ गताः पापाः शुभदाः, पूर्णचन्द्रो वृषकर्कलग्नगतो शुभो नान्यथा। लग्नेऽर्कः शुभः। **गुरुशुद्धिः**—जन्मराशितः उपनयनकाले २।५।७।९।११ स्थानगतः गुरुः शुभः, ४।१०।१२स्थानगतः शान्त्या शुभः, १।३।६।८ स्थानगतो निषिद्धः। रामाचार्यमतेन १।३।६।१० स्थानगतो गुरुः शान्त्या शुभः, ४।८।१२ स्थनगतो निषिद्धः। ब्राह्मणानां पञ्चवर्षतः षोडशवर्षपर्यन्तं, क्षत्रियाणां षड्वर्षादारभ्य द्वाविंशतिवर्षपर्यन्तं, वैश्यानामष्टवर्षादारभ्य चतुर्विंशतिवर्षपर्यन्तमुपनयनकालः। तत्रोपनयनारम्भकालात्सर्वेषां यथोत्तरं गौणकालोऽतः समये प्राप्ते सति यथापूर्वमुपनयनं कार्यम्।

प्रदोषनिर्णयः— यदा तृतीयायां प्रहररात्र्यभ्यन्तरे चतुर्थी, द्वादश्यां यदा मध्यरात्र्यभ्यन्तरे त्रयोदशी, षष्ठ्यां यदा सार्द्धप्रहररात्र्यभ्यन्तरे सप्तमी तिथिर्भवेत्तदा प्रदोषोऽवगन्तव्यस्तत्रोपनयनं निषिद्धम्।

विवाहमुहूर्त्तः

मार्गमाघफाल्गुनवैशाखज्येष्ठाषाढ़मासेषु सौरक्रमेण (आषाढ़े हरिशयनात्प्रागेव) १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु, सू.चं.बु.वृ.शु.वारेषु,अश्वि.रो.मृ.म.उत्तरा३,ह.चि.स्वा.अनु.मू.श्र.ध.रे. नक्षत्रेषु पंचशलाकावेधरहितेषु, वृष, मिथुन, कन्या, तुला,धनु,मीन,लग्नेषु,शुभग्रहेषु १।४।५।७।९।१० स्थितेषु, पापेषु ३।६।११ गतेषु शुभः। विवाहे यदि गुरुर्वा शुक्रो १।४।५।७।९।१० गतो भवेत्तदा सकलदोषं नाशयति। ज्येष्ठ कन्या, ज्येष्ठो वरः ज्येष्ठमासश्च त्रिज्येष्ठसंज्ञकस्तत्र विवाहो न कार्यः। ज्येष्ठकन्यावरयोः ज्येष्ठमासे विवाहो निषिद्धः। ज्येष्ठद्वयं मध्यमं स्यात् । आवश्यके कृत्तिकास्थं सूर्यं त्यक्त्वा ज्येष्ठमासेऽपि ज्येष्ठवरकन्ययोर्विवाहः शुभः।

वरवरणमुहूर्त्तः— शुभतिथिदिनलग्नेषु कृत्तिकापूर्वात्रयविवाहोक्तभेषु पुष्पफलवस्त्रादिभिः वरवरणं शुभम्।

कन्यावरणमुहूर्त्तः— शुभतिथिदिनलग्नेषु कृत्तिकापूर्वात्रयविवाहभेषु च पुष्पफलवस्त्रादिभिः कन्यावरणं शुभम्।

विवाहोपनयनादौ मण्डपादिनिर्माणमुहूर्त्तः— चन्द्रतारानुकूले दिने विवाहमुहूर्त्ते वैवाहिककार्यमुपनयनादिमुहूर्त्ते चोपनयनादिकं सर्वं कार्यं विधेयम्।

महामृत्युंजयमन्त्रस्य जपविधिः— श्रीगणेशस्मरणपूर्वकं शान्तिपाठं कृत्वा कुशत्रयतिलजलान्यादाय संकल्पः— ऊँ अद्य अमुके मासि अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकगोत्रस्यास्य श्री अमुकशर्म्मणः उपस्थितशरीराविरोधेनाखिलारिष्टझटितिप्रशमनपूर्वक—दीर्घायुष्टवबलपुष्टिनैरुज्यप्राप्तिकामः अद्यारभ्य यथाकालं यजुर्वेदान्तर्गतमाध्यन्दिनशाखीय ऊँ हौं ऊँ जूं सः ऊँ भूर्भुवः स्वः त्रयम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् भूर्भुवः स्वरों जूं सः हौं ऊँ'' इति महामृत्युंजयमन्त्रस्य एतत्सहस्रसंख्यकजपमहं करिष्यामि। ॐ हौं ॐ जूं सः (समस्तमन्त्रः) अस्य श्री महामृत्युञ्जयमन्त्रस्य वामदेवकहोलवशिष्ठाऋषयः, पंक्तिर्गायत्र्यनुष्टुप्छन्दांसि सदाशिवमहामृत्युञ्जयरुद्रदेवता हौं बीजं जूं शक्तिः सः कीलकं महामृत्युञ्जयप्रीतये ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः। ऋष्यादिन्यासः— वामदेवकहोलवशिष्ठऋषिभ्यो नमः शिरसि। पंक्तिर्गायत्र्य—नुष्टुप्छन्दोभ्योनमः मुखे। सदाशिवमहामृत्युञ्जयरुद्रदेवताभ्यो नमः हृदि। हौं बीजाय नमः नाभौ। जूं शक्तये नमःपादयोः। सः कीलकाय नमः सर्वाङ्गे। ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा हृदयायनमः। ॐ हौं ॐ जूं सःभूर्भुवः स्वः यजामहे ॐ नमो भगवते रुद्राय अष्टमूर्त्तये मां जीवय शिरसि स्वाहा। ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्रशिरसे जटिने स्वाहा शिखायै वषट्। ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वःउर्व्वारुकमिव बन्धनात् ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय ह्रां ह्रीं ह्रौं कवचाय हुम्। ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुःसाममन्त्रयाय नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मामृतात् ॐ नमो भगवते रुद्राय अग्नित्रयाय उज्ज्वलज्ज्वालाय मां रक्ष रक्ष अघोराय अस्त्राय फट्। इति षडंगन्यासः। ततः— चन्द्रोद्भासितमूर्द्धजं सुरपतिं पीयूषपात्रं बहद्धस्ताब्जेन दधत्सुदीप्तममलं हास्यास्यपंकेरुहम्। सूर्येन्द्वग्निविलोचनं करतले पाशाक्षसूत्रांकुशाम्भोजं विभ्रतमक्षयं सुरपतिं मृत्युञ्जयं संस्मरेत् इत्यनेन ध्यात्वा यथोपचारैः सम्पूज्य मन्त्रं जपेत्। जपसमाप्तौ च शाकल्यादिभि—र्दशांशक्रमेण होमतर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनञ्च कारयेत्। **लघुमृत्युञ्जयमन्त्रः**— ॐ जूं सः।

वधूप्रवेशमुहूर्त्तः

विवाहदिवसात्षोडशदिनमध्ये समदिने पञ्चम—सप्तम—नवमदिने च ततो मासमध्ये विषमदिने ततो वर्षाभ्यन्तरे विषममासे, चैत्रपौषभाद्र—क्षयमास—मलमासभिन्नसमये वधूप्रवेशः प्रशस्तः। नात्र शुक्रविचारः कालविचारो वा। १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु. चं. वृ. शु. श. वारेषु, मन्तान्तरेण बुधेऽप्यावश्यके। अश्वि. रो. मृ. पुष्य, उत्तरा ३, ह. चि. स्वा. मू. श्र. ध. रे. अनु. नक्षत्रेषु। २।३।५।६।७।८।९।११।१२ लग्नेषु। शुभैः १।२।५।७।१०।११ स्थितैः। पापैः ३।६।११ स्थितैः। चतुर्थाष्टमशुद्धे शुभः।

नववध्वाः पाकारम्भमुहूर्त्तः

रो. मृ. उत्तरा ३, पुष्य, कृ. वि. ज्ये. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु, बु. वृ. श. वारेषु, शुभतिथिषु, शुक्लपक्षे। कृष्णे ५ यावत्, २।५।८।११ लग्नेषु। लग्नात् चतुर्थाष्टमगृहे शुद्धे, शुभे बलान्विते सप्तमस्थे शुभः।

द्विरागमनमुहुर्त्तः

अश्वि. रो. मृ. पुन. पुष्य, उत्तरा ३, ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु, १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु, शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत्। सू. चं. बु. वृ. शु. वारेषु मृत्युयोगादिरहितेषु, २।३।६।७।१२ लग्नेषु शुभयुतेक्षितेषु। शुक्रे १।४।७।१० गते,जीवे ३।६।१०।११गते। पापैः ३।६।११ स्थितैः शुभम्। विषमवर्षे सौरक्रमेणाग्रहणफाल्गुनवैशाखमासेषु शुक्रबाल्यास्तवृद्धत्वभिन्नकाले वामपृष्ठगते शुक्रे, शुक्रोदिते द्विरागमनं शुभम्। प्रथमवर्षे न शुक्रविचारः कार्यः। तृतीयादिविषमवर्षे शुक्रविचारो विधेयः। शुक्रान्धविहित (रे, अश्वि. रो. मृ.) नक्षत्रेषु सम्मुखदक्षिणशुक्रेऽपि द्विरागमनं शुभम्। व्यतीते पञ्चमे वर्षे न शुक्रविचारो न वा मुहूर्त्तविचारः। तदानीं यस्मिन् कस्मिन्नपि शुभतिथिदिननक्षत्रयुक्तकाले द्विरागमनं शुभम्।

वापीकूपतडागादिखननमुहूर्त्तः

विचैत्रोत्तरायणे शुक्लपक्षे शुद्धसमये, रो. मृ. पुष्य. म. उत्तरा ३, ह. अनु. पूषा. ध. श. रे. नक्षत्रेषु, पृथ्वीशयननक्षत्ररहितेषु,शुभतिथिदिनेषु ४।१०।११।१२ लग्नेषु राशिषु च। शुक्रे दशमस्थे। गुरुबुधयोरन्यतरस्थलग्ने, पापैः निर्वलैः, शुभैः सुबलिभिः शुभम्।

जलाशयवाटिकादेवादिप्रतिष्ठामुहूर्त्तः

चैत्ररहितउत्तरायणे शुद्धसमये शुक्लपक्षे सू. चं. बु. वृ. शु. वारेषु, १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५तिथिषु। मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्वि. पुष्य, स्वा. पुन. श्र. ध. श. रो. उत्तरा ३ नक्षत्रेषु। अथवा प्रतिष्ठाप्यदेवताकतिथि—दिननक्षत्रेषु देवादिप्रतिष्ठा शुभा। सिंहे सूर्यं, कुम्भे ब्रह्माणं, मिथुने शङ्करं स्थापयेत्। द्विस्वभावे देव्यः, चरलग्ने च योगिन्यः स्थापनीयाः। सर्वे स्थिरलग्नेषु स्थाप्याः। चन्द्रपापैः ३।६।११ स्थितैः। शुभैः १२।८ भिन्नस्थानगतैः देवादिप्रतिष्ठा शुभा। ग्रहाः पुष्ये, बुद्धः श्रवणायां, गणेशादयो रेवत्यां स्थाप्याः। भगवतो देवोत्थानैकादश्यां रामनवम्यां, कृष्णाष्टम्यां, देव्याः नवरात्रौ दीपमालिकायां, शङ्करस्य शिवरात्रौ वा शुभं प्रतिष्ठापनम्।

कूपचक्रंरोहिणीभात्			सूर्यभात्तडागचक्रम्		
स्थान	न	फलानि	स्थान	न	फलानि
मध्य	३	शीघ्रस्वादु	पूर्व	२	जलशोषः
पूर्व	३	निर्जलम्	अग्नि	३	बहुजलम्
अग्नि	३	शीघ्रजलम्	दक्षिण	२	जलहानिः
दक्षिण	३	निर्जलम्	नैऋत्य	२	अमृतजलम्
नैऋत्य	३	निर्मलजलम्	पश्चिम	३	स्वादुजलम्
पश्चिम	३	शीतलजलम्	वायु	२	निर्जलम्
वायु	३	जलहानिः	उत्तर	३	स्थिरजलम्
उत्तर	३	मधुरजलम्	ईशान	३	नष्टजलम्
ईशान	३	क्षारजलम्	मध्य	५	पूर्णजलम्
अथवा सूर्यर्क्षादप्येवमेव गणनीयम्			वाह्य	३	अमृतजलम्

रोहिणी-नक्षत्राद्वापी चक्रम्

स्थान	न	फलानि
पृष्ठे	४	शुभजलम्
नाभौ	४	बुद्धिनाशः
हृदि	४	स्थिरता
मध्ये	४	कलहः
नेत्रयोः	४	धनागमः
पादयोः	८	दुखम्

हवनचक्रं सूर्यभात्

न	ग्रह	फलानि
३	सू.	अशुभ
३	बु.	शुभ
३	शु.	शुभ
३	श.	अशुभ
३	च.	शुभ
३	म.	अशुभ
३	वृ.	शुभ
३	रा.	अशुभ
३	के	अशुभ

बीजवपने फणिचक्रं गहुनक्षत्रात्

नक्षत्र	४	३	१	३	१	३	१	३	८
फलं	अशुभं	शुभम्	अशुभं	शुभम्	अशुभं	शुभम्	अशुभं	शुभम्	अशुभं

हलचक्रमर्कभुक्तभात्

नक्षत्र	८	१	८	३
फलं	शुभम्	अशुभं	शुभम्	अशुभं

गृहारम्भ (वास्तु) मुहूर्त्तः

वैशाख, आषाढ़ (पशुगृहं त्यक्त्वा) कार्तिक, अग्रहण, फाल्गुन, श्रावण (सौरक्रमेण) मासेषु । सम्मुखकालवर्जितसमये । २।३।५।७।१०।११ ।१२।१३।१५ तिथिषु । शुक्लपक्षे । कृष्णे ५ यावत् । अश्वि. रो. मृ. पुन. पुष्य. उत्तरा ३, ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु। च. बु. वृ. शु. श. वारेषु ।। दिवा ।। शुद्धसमये ।। शुद्धे वृषवास्तुचक्रे, पृथ्वीशयननक्षत्ररहितनक्षत्रेषु । २।३।५।६।७।८।९।११।१२ लग्नेषु । लग्ने शुभदृग्युते । शुभैः १।४।५।७।९।१० स्थितैः, पापैः ३।६।११ स्थितैः, ८।१२ ग्रहरहिते शुभः । तृणकाष्टादिगृहनिर्माणमशुद्धेऽपि परञ्च इष्टिकादिगृहनिर्माणं शुद्धसमये एव । देवालयमठादिनिर्माणमप्येष्वेव मुहूर्त्तेषु शुभम् ।

देवालयगृहारम्भजलाशयारम्भे खातदिग्ज्ञानम्

खातदिक्	नैर्ऋत्यां	आग्नेय्याम्	ऐशान्यां	वायव्यां
देवालयारम्भे	ध.म.कु. सूर्ये	मी.मे.वृ. सूर्ये	मि.क.सि. सूर्ये	क.तु.वृ. सूर्ये
जलाशयारम्भे	तु.वृ.ध. सूर्ये	म.कु.मी. सूर्ये	मे.वृ.मि. सूर्ये	क.सि.कं. सूर्ये
गृहारम्भे	वृ.मि.क. सूर्ये	सिं.क.तु. सूर्ये	वृ.ध.म. सूर्ये	कु.मी.मे. सूर्ये

गृहप्रवेशे कुम्भचक्रमर्कभात्			गृहारम्भे वृषचक्रमर्कभात्		
स्थान	न०	फलानि	स्थान	न०	फलानि
मु.	१	अग्निदाहः	शीर्षे	३	अग्निभयम्
पू.	४	उद्वसनम्	अ. पा.	४	शून्यम्
द.	४	लाभः	पृ. पा.	४	स्थैर्यम्
प.	४	धनम्	पृष्ठे	३	धनम्
उ.	४	कलहः	द. कु.	४	लाभः
म.	४	विनाशः	पृ.	३	नाशः
अ.	३	स्थिरता	वा. कु.	३	धननाशः
क.	३	स्थिरता	मुखे	३	कष्टम्

अथ तिथिनन्दादिसंज्ञा

संज्ञा	नन्दा	भद्रा	जया	रिक्ता	पूर्णा	सिनीवाली	कुहुः
तिथयः	१।६।११	२।७।१२	३।८।१३	४।९।१४	५।१०।१५	दृष्टेन्दुमा	नष्टेन्दुमा

गृहप्रवेशमुहूर्त्तः

वैशाख, आषाढ, कार्तिक, अग्रहण, फाल्गुन, श्रावण (सौर) मासेषु २।३।५।७।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु, शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत् । अश्वि. रो. मृ. पुन.पुष्य.उत्तरा ३ ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु । चं. बु. वृ. शु. श. वारेषु । दिवारात्रौ, शुद्ध समये । शुद्धे कुम्भचक्रे । २।५।८।११ लग्नेषूत्तमः । ३।६।९।१२ मध्यमः॥

जन्मराशिलग्नाभ्यामुपचय-(३।६।१०।११) राश्यंशयोः, स्थिरराशौ, लग्नात् १।३।५।७।९।१०।११ स्थानेषु शुभाः, ३।६।११ स्थानेषु पापाः, ४।८ भवने ग्रहरहिते । सम्मुख-कालरहितसमये शुभःइष्टिकादिगृहप्रवेशः शुद्धसमये, तृणकाष्ठादिकगृहप्रवेशोऽशुद्ध-समयेऽपि । अग्निभयं राजकोपे दैविके प्रकोपे सति यस्मिन् कस्मिन् शुभमुहूर्त्ते गृहारंभो गृहप्रवेशश्च कार्यः ।

★ **अथ चरणिविचारः**- स्वामिहस्तप्रमाणेन दीर्घविस्तार-संयुतमष्टभिश्च हरेद् भागं शेषं चरणिरुच्यते । पशुहानिः पशो रोगः पशुलाभः पशुक्षयः । पशुनाशः पशोर्वृद्धिः पशुभेदो बहुपशुः ।

★ **पृथ्वीशयननक्षत्राणि** - सूर्यस्थनक्षत्रात् ५।७।९।१२।१९।२६ मिते चन्द्रनक्षत्रे पृथ्वीशयननक्षत्रेषु तडागवापीकूपवास्तुप्रभतिकार्यं ट्यूवबेल बोरिंग प्रभृतिस्थापनञ्च न कर्त्तव्यम् ।

★ **ट्यूवबेल, बोरिंग, टंकी प्रभृति स्थापनेशुभमुहूर्त्तः**-कृत्तिका आश्ले. मघा. पूर्वा ३, भरणी, विशा, मूल नक्षत्रेषु २।४।५।६।७।९।१३।१५ तिथिषु । शुक्लपक्षे, कृष्णपक्षे ५ यावत्, च. बु. वृ. शु. वारेषु।। पूर्वाह्णेऽपराह्णेवा, २।३।४।६।७।९।१०।११।१२। लग्नेषु, लग्ने शुभयुग्दृष्टे, शुभैः १।४।५।७।९।१० स्थितैः । पापैः ३।६।११ गतैः शुभम् ।

★ **माससनानमुहूर्त्तः**- विवाहदिनात्षोडशदिनमध्ये तंदभावे मासपर्यन्तं २।३।५।७।१०।११।१३ तिथिषु, च. बु. वृ. शु. दिनेषु, आर्द्रा, पुन पुष्य, आश्ले, म, पूफ., उफ. ह. चि. स्वा. नक्षत्रेषु, वृष मि. कन्या. तु. लग्नेषु शुभम् ।

★ **चुल्हिकास्थापनमुहूर्त्तः** -अश्वि, भ, वि. रो, मृ, उत्तरा ३ कृ, मू. पूषा, ध, आर्द्रा नक्षत्रेषु । सू. मं, श, दिनेषु शुभतिथिलग्नेषु शुभम् ।

चुल्हिकाचक्रम् सूर्यभाद्दिनभावधि

स्थान	न०	फलम्	स्थान	न०	फलम्
पृष्ठे	६	धनम्	गर्भे	५	नाशः
शीर्षे	४	मृत्युभयम्	हस्ते	२	भोगः
बाहौ	८	सुखम्	चरणे	२	स्त्रीमृतिः

मन्त्रग्रहणमुहूर्त्तः- अश्वि. रो. पुन. पुष्य उत्तरा ३, ह. चि. स्वा. अनु. मू. अभि. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु । २।३।५।७।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु । शुक्लपक्षे ।। अत्यावश्यके कृष्णपक्षे ५ यावत्, सू. च. बु. वृ. शु. वारेषु । शुद्धसमये प्रातः मध्याह्नेवा । २।३।५।७।९।१२। लग्नेषु, शुभैः १।४।५।७।९।१० गतैः, पापैः ३।६।११ स्थितैः, वै, श्रा, आश्वि, का अग्र, मा, फा, मासेषु (सौरक्रमेण) । संक्रान्तौ पूर्णिमायां नवरात्रमध्ये, ग्रहणे, सिद्धिक्षेत्रे मन्वादि-युगादिषु च मुहूर्त्तं विनाऽपि मन्त्रग्रहणं शुभम् ।

व्रतोद्यापनमुहूर्त्तः- अश्वि, रो, मृ, पुन, पुष्य, उत्तरा ३, ह. चि., स्वा. अनु. मू. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु । शुद्धसमये क्रियमाणव्रततिथिषु दिवसे वा । का, मा, फा, वै, ज्यें, आषा, मासेषु । शुभलग्नेषु । कार्तिकव्रतोद्यापनं तुलस्याकाशदीप-दानव्रतोद्यापनं च शुद्धसमये वृश्चिकसंक्रान्तिपूर्वरात्रौ । एवमेव यस्य व्रतस्य मासविशेषेण सह सम्बन्धस्तत्तस्मिन्नेव मासे शुद्धसमये कार्यम् । शुभैः १।४।५।७।९।१०। स्थितैः पापैः ३।६।११ स्थितैः, पञ्चमेशे नवमेशे गुरौ च बलाढ्ये सति शुभमन्यथा ग्रहशुद्ध्यभावेऽपि परमावश्यके शुभम् ।

यात्रामुहूर्त्तः- वामपृष्ठराहौ । मलमासक्षयमास-सौरक्रमेण चैत्रभाद्रपौषरहित मासेषु । अश्वि मृ, पुन, पुष्य, ह, ज्यें, अनु, श्र, रे, नक्षत्रेषूत्तमः । रो, पूर्वा ३, चित्रा स्वा, मू, पूषा, ध, नक्षत्रेषु मध्यमः । मृत्युयोगदग्धतिथिमासान्त-संक्रान्तिमासादिप्रभृतिदोषरहिते । अमृतसिद्ध-सर्वार्थसिद्धादिशुभयोगेषु ।। अमावास्यां विहायान्यतिथिषु योगवशेनान्यथा शुभतिथिषु ।। दिक्शूलरहितदिने ।। २।४।६।८।९ तारासु । पञ्चमतारायाः प्रथमद्वितीयावृत्तेषु च । १।२।३।५।६।७।९।१०।११। चन्द्रेषु । आवश्यके ४।१२ चन्द्रेऽपि, द्विरागमनानन्तरं पितृगहागतायाः पुनः पतिगृहगमने दक्षिणसम्मुखकालौ त्याज्यौ । तदनन्तरमावश्यके केवलं सम्मुखकालस्त्याज्यः । दक्षिणकाले च सम्मुखचन्द्रवशेन यात्रा कार्या ।

राहु (काल) बासः- सौरक्रमेणाग्रहणपौषमाघमासेषु पूर्वस्यां । फाल्गुन चैत्रवैशाखेषु दक्षिणस्याम् । ज्येष्ठाषाढश्रावणेषु पश्चिमायांम् । भाद्राश्विनकार्तिकेषूत्तरस्यां कालवासः ।

सर्वदिग्गमननक्षत्राणि

अश्विनीमृगशिरापुष्यश्रवणानक्षत्राणि सर्वदिग्गमने शुभानि ।

दिक्शूलविचारस्तत्परिहारश्च

सोमे, शनिवारे च पूर्वस्यां, वृहस्पतिवारे दक्षिणस्यां, रविवासरे शुक्रवासरे च पश्चिमायां, मंगलवासरे बुधवासरे चोत्तरस्यां दिशि दिक्शूलत्वाद् गमनं निषिद्धम् । परिहारः- रव्यादिवासरेषु क्रमेण घृतपयोगुड़तिलदधियवमाषान्नं भुक्त्वा शूलदोषोपशान्तये गच्छेत् ।

विदिक्शूलविचारः

शनौ पूर्वे, चन्द्रेऽग्निकोणे, गुरौ याम्यां,बुधे नैर्ऋत्यां, सूर्ये प्रतीच्यां, शुक्रे वायुकोणे, उत्तरस्यां मंगले बुधे, ऐशान्यां बुधमन्दयोर्न गन्तव्यम् ।

लग्नचन्द्रयोर्वासः

मेषसिंहधनुराशिषु पूर्वस्यां, वृषकन्यामकरराशिषु दक्षिणस्यां मिथुनतुलाकुम्भराशिषु पश्चिमायां, कर्कवृश्चिकमीनराशिषु चोत्तरस्यां लग्नचन्द्रयोर्वासः । सम्मुखदक्षिणस्थलग्नचन्द्रयोः यात्रा शुभा । परं सर्वदिग्गमननक्षत्रेषु वामपृष्ठचन्द्रेऽपि यात्रा शुभेति ।

चन्द्रविचारः

जन्मनामग्रामादिराशितोऽभीष्टदिनस्य चन्द्रं यावद्गणनीयम् । तत्र १।२।३।५।६।७।९।१०।११ संख्याकश्चन्द्रः शुभप्रदः । ८ चन्द्रः मृत्युप्रदः। ४ कलहदः।१२। हानिकारकः । तत्र दुष्टे चन्द्रे तद्दोषशान्त्यर्थमामतण्डुलशंखदधिश्वेत-वस्त्रादिदानं कार्यम् ।

द्वादशचन्द्रस्य विशेषः

आधाने सम्प्रदाने च विवादे राजविग्रहे । पाणिग्रहे प्रयाणे च चन्द्रो द्वादशगः शुभः । अभिषेके निषेके च गृहे पुंसवनादिषु । यात्रायुद्धे विवादे च चन्द्रो द्वादशगः शुभः !

जन्मनक्षत्रे त्याज्यविषयाः

जन्मनक्षत्रगश्चन्द्रः प्रशस्तः सर्वकर्मसु । क्षौरभैषज्यवादाध्व- कर्त्तनेषु विवर्जयेत् ।

जन्ममासे त्याज्यः- क्षौरकर्म दीर्घयात्रा कर्णवेधश्च ॥

सिद्धादियोगचक्रं तिथिदिनवशेन नक्षत्रादिवशेन च

दिनानि	रविः	सोमः	कुजः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः
सिद्धियोगाः	३।८।१३	१।६।११	३।८।१३	२।७।१२	५।१०।१५	१।६।११	४।९।१४
अमृतयोगाः	५।१०।१५	५।१०।१५	२।७।१२	१।६।११	३।८।१३	४।९।१४	१।६।११
सर्वार्थसिद्धियोगाः	अश्वि.पुष्य ह.मू.	रो.मृ.पुष्य अनु.श्र.	अश्वि.	रो.मृ. ह.अनु.	अश्वि.पुन. पुष्य.अनु.रे.	अश्वि.पुनः अनु.श्र.रे.	रो.स्वा.श्र.
मृत्युयोगाः	१।६।११	२।७।१२	१।६।११	३।८।१३	४।९।१४	२।७।१२	५।१०।१५
राज्यप्रदयोगः	x x	xx	४।९।१४	x x	xx	xx	४।९।१४
मध्यमयोगः	१२	११	१०	३	६	२	७

ताराचक्रम्

ताराः	जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेमः	प्रत्यरिः	साधकः	वधः	मित्रम्	अतिमित्रम्
नक्षत्राणि	१।१०।१९	२।११।२०	३।१२।२१	४।१३।२२	५।१४।२३	६।१५।२४	७।१६।२५	८।१७।२६	९।१८।२७
फलानि	मध्यमम्	शुभम्	अशुभम्	शुभम्	अशुभम्	शुभम्	अशुभम्	शुभम्	शुभम्
दानानि	शाकम्	x	गुडम्	x	लवणम्	x	तिलाः	x	x

जन्मनामग्रामनक्षत्राद्वाऽभीष्टदिनावधि गणयित्वा नवभिर्हरेत् । शेषं तारा स्यात् । तत्र २।४।६।८।९ ताराः शुभदाः । १।३।७ अशुभदाः । **विशेषः**— पञ्चमतारा आवृत्तिवशेन धनदा १ सुखदा २ मृत्युदा च भवेत्तेन प्रत्यरितारायाः केवलं तृतीयावृत्तेस्तारा अशुभा, तत्र दानं कार्यम् ।

कालशूलम्—उषःकाले पूर्वस्यां, मध्याह्ने दक्षिणस्यां, सायंकाले (गोधूल्यां) पश्चिमायां, निशीथे चोत्तरस्यां न गच्छेत्, कालशूलदोषत्वात् ।

॥ पञ्चक (भदवा) विचारः ॥

धनिष्ठाशतभिषापूर्वभाद्रोत्तरभाद्ररेवतीनक्षत्राणि पञ्चकसंज्ञकानि । तत्र दक्षिणदिग्गमनगृहाच्छादनप्रेतदाहतृणकाष्ठादि- संग्रहशय्यावितान-निर्माणादिकं च त्यजेत् ॥ तत्रापवादः- वस्वादौ शतभिग्मध्ये पूर्वादौ चोत्तरान्तके । पञ्च पञ्च घटी त्याज्या रेवतीं सकलां त्यजेत् ।

॥ दग्धतिथिमासान्तादिविचारः ॥

मीने धनुषि स्थिते सूर्ये द्वितीया तिथिः, वृषे कुम्भे स्थिते सूर्ये चतुर्थी, मेषे कर्के स्थिते सूर्ये षष्ठी, मिथुने कन्यायां स्थिते सूर्येऽष्टमी, सिंहे वृश्चिके स्थिते सूर्ये दशमी, तुले मकरे च स्थिते सूर्ये द्वादशी तिथिर्दग्धा भवति । तत्र शुभकार्यं निषिद्धम् । एवमेव संक्रान्तिदिनं तत्पूर्वापरदिनञ्च (मासान्तमासादिसंज्ञकम्) यात्रादिशुभकार्येषु त्याज्यम् ।

॥ पुराणादिश्रवणमुहूर्त्तः ॥

अश्वि. रो. मृ, पुन, पु, ह, चि, स्वा, अनु, मू, श्र, नक्षत्रेषु २।३।५।७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु ॥ सू, च, बु, वृ, शु, दिनेषु । शुक्लपक्षे ॥ कृष्णे ५ यावत् । शुभलग्ने । लग्ने शुभयुग्दृष्टे वलाद्ये, शुभैः १।४।५।७।९।१०। स्थितैः । पापैः ३।६।११ स्थितैः । उत्तरायणे, श्रा, आश्वि, कार्ति, अग्र मासेषु । तीर्थक्षेत्रे, देवालये, सिद्धिक्षेत्रे, पर्वविशेषे नवरात्रादौ च मुहूर्तं विनाऽपि शुभम् ।

॥ इन्धनस्थापनमुहूर्त्तः ॥

सूर्याक्रान्तनक्षत्रात् ६ नक्षत्रेषु शुभं, ततः ६ अशुभं, ततः ४ शुभं, ततः ८ अशुभं ततः ४ शुभम् ।

॥ नवान्नपार्वणमुहूर्त्तः ॥

अ. रो. मृ. पुन, पुष्य, उत्तरा३. ह. चि. स्वा. अनु. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु शुभम्। मूले नवान्नपार्वणं मध्यमम् । सू, च, बु, वृ, वारेषु । शुक्लपक्षे २।३।५।७।८।१०।१२।१५ तिथिषु । वृश्चिकस्य ३।२० अंशानन्तरं १३ अंशं यावदावश्यके २३ अंशं यावदपि । ततः मकरे ७ अंशानन्तरं कुंभस्थे सूर्ये वा कार्यम् । २।३।४।६।७।९।१२ लग्नेषु, लग्ने शुभयुग्दृष्टे स्वस्वामियुते वा शुभम् । नवान्नपार्वणे जन्मतारा-विशाखस्थसूर्य-कृष्णपक्षाष्टमचन्द्र-पूर्वात्रय-मघाभरण्याश्लेषाऽऽर्द्रानक्षत्रसौरक्रमेण कार्तिक-पौष-चैत्रहरिशयननन्दात्रयोदशीरिक्तामंगलशनिशुक्रदिनानि निषिद्धानीति । अभावे कृष्णपक्षे ५ यावत् ग्राह्यः ।

॥ कल्याणार्थ शान्तिमुहूर्त्तः ॥

अश्वि. रो. मृ. पुन. पुष्य, उत्तरा ३ ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्र ध, श. रे. नक्षत्रेषु । शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत् २।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु । सू. च. बु. वृ. शु. वारेषु, शुद्ध समये, आवश्यकेऽशुद्धेऽपि, चैत्रपौषभाद्रमलमासक्षय-मासरहिते शुभम् । शुभलग्ने, लग्नस्थे गुरौ, चतुर्थस्थे चन्द्रे, दशमस्थे सूर्ये, अष्टमे लग्ने च पापरहिते शान्तिः शुभा ।

॥ खलस्थापनमुहूर्त्तः ॥

ग्रामसमीपे शुभस्थाने शुभतिथिदिननक्षत्रेषु शुभम् ।

॥ धान्यच्छेदनमुहूर्त्तः ॥

मू. ज्ये. आश्ले. आर्द्रा. पूभा. ह. कृ. ध. श्र. मृ. स्वा. म. उत्तरा ३, पूषा, भ. चि. पुष्य. नक्षत्रेषु, सू.चं.बु.वृ.शु. दिनेषु, १।२।३।५।७।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु, २।५।८।११ लग्नेषु शुभम् । अन्यान्यपि यवगोधूमादीनि एष्वेव छेद्यानि ।

॥ मेधिरोपणमुहूर्त्तः ॥

अश्वि. रो. मृ. पुन. पुष्य, उत्तरा, ३ ह. चि. स्वा. अनु. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु शुभतिथिदिनलग्नेषु च मेधिरोपणं शुभम् ।

॥ वर्षेशवशेन मेधिविचारः ॥

वर्षेशे सूर्ये वंशः, चन्द्रे शिम्बरः, मङ्गले कदम्बकम्, बुध उदुम्बरम्, गुरौ आम्रम्, भृगुजे पलाशः, शनौ निम्बम् शुभम् ।

॥ कणमर्दनमुहूर्त्तः ॥

मघा. पूफ. उफ. रो. ज्ये. मू. अनु. श्र. रे. नक्षत्रेषु शुभतिथिदिनलग्नेषु शुभम् ।

॥ धान्यस्थापनमुहूर्त्तः ॥

अ. रो. मृ. पुन. पुष्य. उत्तरा ३ ह. चि.स्वा. अनु. मू. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु शुभतिथिदिनलग्नेषु २।३।५।८।९।१०।११।१२ लग्नेषु शुभम् ।

॥ धान्यवृद्धिमुहूर्त्तः ॥

अ. रो. पुन. पुष्य. उत्तरा ३ स्वा. वि. ज्यें. श्र. ध. श. नक्षत्रेषु, शुभतिथिदिनलग्नेषु धान्यवृद्धिः शुभा ।

॥ बीजस्थापनमुहूर्त्तः ॥

रो. मृ. म. ह. स्वा. मू. उषा. पूभा. रे. नक्षत्रेषु, च. बु. वृ. शु वारेषु । शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत् । २।३।५।७।१०।११।१२।१३।१५, तिथिषु, २।५।८।११ लग्नेषु शुभम् ।

॥ बीजवपनमुहूर्त्त.॥

अश्वि. रो. मृ. पुन. पुष्य. उत्तरा ३ ह. चि. स्वा. अनु. श्र. ध. पुष्य. रे. नक्षत्रेषु २।३।५।८।१०।११।१२।१३।१५, तिथिषु च. बु. वृ. शु. दिनेषु, शुभलग्नेषु, लग्ने शुभदृग्युते, शुभैः केन्द्रकोणगैः, पापैः त्रिषडायगैः शुभम् ।

॥ हलप्रवहणमुहूर्त्तः ॥

अ.रो.मृ.पुन.म. उत्तरा ३ ह. चि. स्वा. वि. अनु. मू. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु । च.मं. बु. वृ. शु. वारेषु, शुभतिथिषु शुभलग्नेषु, पापैः निर्बलैः । शुभैः सुबलिभिः । चन्द्रे जलचर-राशिस्थे तन्नवांशे वा । गुरौ लग्नस्थे । शुक्रे विधौ च पुष्टे शुभम् ।

॥ धान्यरोपणमुहूर्त्तः ॥

रोहिणी उफ. वि. मू. श. पूभा. नक्षत्रेषु । सू. चं. बु. वृ. शु. दिनेषु । शुभतिथिषु शुभलग्नेषु च शुभम् ।

॥ स्वामिसेवा (नौकरी) मुहूर्त्तः ॥

अश्वि, मृ, पुष्य, ह, चि, अनु, अभि, रे नक्षत्रेषु । सू, बु, वृ, शु, दिनेषु, शुभतिथिलग्नेषु । लग्ने शुभयुते ॥ सूर्ये कुजे वा १०।११ स्थे.॥ सेव्यसेवकयोर्योनिमैत्र्यां राशीशयोश्चापि मैत्र्यां सत्यां सेवारम्भः शुभः ।

कोषागारादौ द्रव्यस्थापनमुहूर्त्तः

अश्वि, मृ, पुन, पुष्य, ह, चि, स्वा, अनु, श्र, ध, श, रे, नक्षत्रेषु , सू, मं, बु, वृ, शु वारेषु, शुद्धसमये, ३।५।८।१०।१३।१५ तिथिषु, शुभग्रहयुक्तलग्नेषु शुभम् ।

ऋणप्रदानमुहूर्त्तः (द्रव्यप्रयोगमुहूर्त्तः)

स्वा, पुन, मृ, रे, चि, अनु, वि, पुष्य, श्र, ध, श, नक्षत्रेषु, शुभतिथिषु, १।४।७।१० लग्नेषु, लग्ने शुभयुग्दृष्टे, ५।८।९ ग्रहरहिते । चं, वृ, शु, श, वारेषु शुभम् ।

ऋणदाने निषिद्धसमयः- बुधवासरः, भरणी, कृ, आर्द्रा, आश्ले, मघा, पूर्वा ३, चि, ज्ये, नक्षत्राणि, भद्रा पातयोगश्च ।

ऋणग्रहणे निषिद्धसमयः-रविभौमिदिने। संक्रान्तौ । वृद्धियोगे । हस्तनक्षत्रे च । एषु ऋणार्पणं शुभम् ।

युद्धयात्रायां कुलाकुलचक्रम्

संज्ञा	नक्षत्राणि	तिथयः	दिनानि	फलानि
कुलः	पू ३ अश्वि.पुष्य.म.मृ. श्र. कृ.ज्ये. वि. चि.	४।८।१२।१४	मं.शु.	स्थायिजयदः
अकुलः	भर.स्वाआश्ले.ध.रे.ह. रो.अनु.पुन.उत्तरा३	१।३।५।७।९। ११।१३।१५	सू.चं. वृ.श	यायिजयदः
कुलाकुलः	आर्द्रा. मू. अभि. श.	२।६।१०	बुधः	उभयोः सन्धिः

नष्टवस्तुज्ञानाय चक्रम्

संज्ञा	नक्षत्राणि	लाभालाभः	नष्टवस्तुदिक्
अन्धाक्षः	रो.पुष्य.उफ.वि.पूषा.ध.रे	शीघ्रलाभः	पूर्वस्याम्
मन्दाक्षः	मृ.आश्ले.ह.अनु.उषा.श.अश्वि.	प्रयत्नाल्लाभः	दक्षिणस्याम्
मध्याक्षः	आर्द्रा.म.चि.ज्ये.अभि.पूभा.भ.	दूरे श्रवण-मलाभश्च	पश्चिमायाम्
सुलोचनः	पुन,पूफ,स्वा,मू,श्र,उभा,कृ.	अलाभः	उत्तरस्याम्

प्रथमलग्नसारिणी ॥ इष्टार्कराश्यंशतलंघटीपलं स्वाभीष्टनाडीपलसंयुतञ्च । यद्राशिभागस्य तले स्थितं भवेत्तदेव लग्नं च कलानुपातात् ॥

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
३	४७	५४	१	८	१६	२३	३०	३८	४६	५४	३	१०	१९	२८	३६	४४	५३	१	१०	१८	२६	३५	४३	५१	०	८	१६	२५	३३	[illegible]
३८	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	२२	४४	६	२८	५०	१२	३४	५६	१८	४०	२	२४	४६	८	३०	५२	१४	३६	५८	२०	४२	४
वृष	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
४	४०	४८	७	१५	२३	३२	४०	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	३०	४०	५०	००	१०	२०	३०	४०	५०	००	११	२१	३१
११	२६	४८	१०	३२	५४	१६	३८	००	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	००	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	००	६	१२
मिथुन	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
५	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५२	३	१४	२६	३७	४९	००	१२	२३	३४	४६	५७	९	२०	३३	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	३
३	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	००	२६	५२	१८	४४	१०	३६	२	२८	५४	२०	४६	१२	३८	४	३०	५६	२२	४८	१४	४०	६	३२
कर्क	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
५	१४	२५	३७	४९	००	१२	२३	३४	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९
४३	५८	२४	५०	१६	४२	०८	३४	०	३४	८	४२	१६	५०	२४	५८	३२	६	४०	१४	४८	२२	५६	३०	४	३८	१२	४६	२०	५४	२८
सिंह	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८
५	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४४	५५	७	१८	२९	४०	५२	३	१४	२५	३७	४८	५९	११	२२	३३	४४	५६	७	१८	२९
४७	२	३६	१०	४४	१८	५२	२६	००	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२
कन्या	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४
५	४१	५२	३	१४	२६	३७	४८	००	११	२२	३३	४५	५६	७	१८	३०	४१	५२	३	१५	२६	३७	४९	०	११	२२	३४	४५	५६	७
३८	८	२४	२०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	४	२०	३६	४२	४	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२
तुला	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९
५	१९	३०	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४३	५६	८	१९	३१	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२
३८	८	२४	२०	५६	१२	२८	४४	००	३४	८	४२	१६	५०	२४	५८	३२	६	४०	१४	४८	२२	५६	३०	४	३८	१२	४६	२०	५४	२८
वृश्चिक	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५
५	०४	१५	२७	३८	५०	१	१३	२५	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५०	२	१३	२५	३६
४७	२	३६	१०	४४	१८	५२	२६	००	२६	५२	१८	२४	१०	३६	२	२८	५४	२०	४६	१२	३८	४	३०	५६	२२	४८	१४	४०	६	३२
धनु	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०
५	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५६	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	३०	४०	५०
४३	५८	२४	५०	१६	४२	०८	३४	००	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	००	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	००	६	१२
मकर	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५
५	००	१०	२०	३०	४०	५०	०८	११	१९	२७	३६	४४	५२	१	९	१७	२६	३४	४३	५१	५९	८	१६	२४	३३	४१	४९	५८	६	१५
३	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	००	२२	४४	६	२८	५०	१२	३४	५६	१८	४०	०२	२४	४६	८	३०	५२	१४	३६	५८	२०	४२	४
कुम्भ	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
४	२३	३१	४०	४८	५६	५	१३	२२	२९	३६	४३	५१	५८	५	१२	२०	२७	३४	४१	४९	५६	३	११	१८	२५	३२	४०	४७	५४	१
११	२६	४८	१०	३२	५४	१६	३८	००	१६	३२	४८	०४	४०	३६	५२	८	१७	४०	५९	१२	५८	४०	००	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२
मीन	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	००	००	००	००	००	००	००	००	००	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
३	९	१६	२३	३०	३८	४५	५२	००	७	१४	२१	२९	३६	४३	५०	५८	५	१२	१९	२७	३४	४१	४९	५६	३	१०	१८	२५	३२	३९
३८	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२

उदाहरण- श्रावणकृष्ण १ शुक्र को इष्टदण्डादि ३।५ है। इस दिन सूर्य के कर्क राशि के ०५ अंश के नीचे दण्डादि १८।१२।०८ में इष्टदण्डादि ३।५ जोड़ने से २१।१७।८ हुआ। यह दण्डादि कर्क राशि के २१ अंश के आगे २२ अंश के नीचे पडा। अतः उक्त समय २२ अंश से कर्कलग्न हुआ। एवमेव सर्वत्र ज्ञातव्य है।

दशमलग्नसारिणी- यत्सूर्यराश्यंशसमानकोष्ठे घट्यादिकं पूर्वनतेन हीनम्। प्रत्यग्नतेनाढ्यमियान् विशेषो मध्यस्य (दशमलग्नस्य) सिद्ध्यै गणकैः प्रदिष्टः।।

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८
	३३	४२	५१	००	१०	१९	२८	३८	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
२७८	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६
वृष	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३
	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५८	९	२०	३०	४१	५२	३	१३	२४	३५	४६	५६	७	१८	२९	४०	५०	१	१२	२३	३३
२९९	१४	१२	१०	८	६	४	२	००	४६	३२	१८	४	५०	३६	२२	८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	२	४८	३४	२०	६	५२
मिथुन	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८
	४४	५५	६	१६	२७	३८	४९	००	१०	२१	३२	४३	५३	४	१५	२६	३६	४७	५८	९	१९	३०	४१	५२	३	१३	२४	३५	४६	५६
३२३	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	००	४६	३२	१८	४	५०	३६	२२	८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	२	४८	३४	२०	६	५२
कर्क	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४
	७	१८	२९	३९	५०	१	१२	२३	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२
३२३	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	००	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६
सिंह	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३१	४०	४९	५९	८	१७	२६	३६	४५	५४	३	१३	२२	३१	४१	५०	५९	८	१८	२८	३६	४५
२९९	१४	१२	१०	८	०६	४	२	००	१४	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	४	३०	३६	५२
कन्या	२८	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३
	५५	४	१३	२२	३२	४१	५०	००	९	१८	२७	३७	४६	५५	४	१४	२३	३२	४१	५१	०	९	१९	२८	३७	४६	५६	५	१४	२३
२७८	०८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२
तुला	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८
	३३	४२	५१	०	१०	१९	२८	३८	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
२७८	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६
वृश्चिक	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३
	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५८	९	२०	३०	४१	५२	३	१३	२४	३५	४६	५६	७	१८	२९	४०	५०	१	१२	२३	३३
२९९	१४	१२	१०	८	६	४	२	००	४६	३२	१८	४	५०	३६	२२	८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	२	४८	३४	२०	६	५२
धनु	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८
	४४	५५	६	१६	२७	३८	४९	००	१०	२१	३२	४३	५३	४	१५	२६	३६	४७	५८	९	१९	३०	४१	५२	३	१३	२४	३५	४६	५६
३२३	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	००	४६	३२	१८	०४	५०	३६	२२	८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	२	४८	३४	२०	६	५२
मकर	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४
	७	१८	२९	३९	५०	१	१२	२३	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२
३२३	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	००	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६
कुम्भ	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८
	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३१	४०	४९	५९	०८	१७	२६	३६	४५	५४	३	१३	२२	३१	४१	५०	५९	८	१८	२७	३६	४५
२९९	१४	१२	१०	८	६	४	२	००	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२
मीन	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	००	००	००	००	००	००	००	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३
	५५	४	१३	२२	३२	४१	५०	००	०९	१८	२७	३७	४६	५५	४	१४	२३	३२	४१	५१	००	९	१९	२८	३७	४६	५६	५	१४	२३
२७८	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२

नतकालसाधनम्- रात्रेः शेषमितं युतं दिनदलेनाह्नोः गतं शेषकं विश्लेष्यं खलु पूर्वपश्चिमनतं त्रिंशच्च्युतं चोन्नतम् ॥

यथा- श्रावणकृष्ण १ शुक्र को इष्टघट्यादि ३।५ के समय दिनार्ध-इष्टकाल = १६।४९ - (३।५) = १३।४४ = पूर्वनतघटी।

दशमलग्नोदाहरणम्- श्रावणकृष्ण १ शुक्र को इष्टदण्डादि ३।५ है। नतकालानयनविधि से इस काल का पूर्वनत १३।४४ हुआ। इसे सूर्य के कर्कराशि के ०५ अंश के नीचे दण्डादि २०।०१।२८ में घटाया तो (२०।०१।२८) - (१३।४४) = ६।१७।२८ दण्डादि हुआ। यह फल दशमलग्नसारिणी में मेषराशि के १६ अंश के आगे और १७ अंश के नीचे पडा। अतः उक्त समय १७ अंश से मेष दशमलग्न हुआ।

अग्निवासचक्रम्

शुक्लपक्षे				कृष्णपक्षे				र.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
१	५	९	१३	२	६	१०	१४	पृ.	पृ.	दि.	भू.	पृ.	पृ.	दि.
२	६	१०	१४	३	७	११	३०	पृ.	दि.	भू.	पृ.	पृ.	दि.	भू.
३	७	११	१५	×	४	८	१२	दि.	भू.	पृ.	पृ.	दि.	भू.	पृ.
×	४	८	१२	१	५	९	१३	भू.	पृ.	पृ.	दि.	भू.	पृ.	पृ.

फलं- भुवि सौख्यम्, दिवि प्राणनाशः, भूतले च धननाश इति ज्ञेयम्।

विधिः- (शुक्लादितिथिसं + सूर्यादिदिनसं + १) + ४ = ३, ० शेषे शुभः।१,२ अशुभः।

पार्थिवशिवपूजायां विहिततिथयः-

शुक्लपक्षे - २।५।६।९।१२।१३ कृष्णपक्षे- १।४।५।८।११।१२।३०।

विधिः - (शुक्लादितिथिसं × २ + ५) ÷ ७ = १।२।३ शेषे शुभम्। अन्यदशुभम्।

१ शेषे कैलाशे, २ शेषे गौरिसन्निधौ, ३ शेषे वृषारुढः शिवः अभीष्टदः स्यात्।

इष्टिकारम्भ मुहूर्तः- अश्वि. रो. मृग. पुष्य उत्तरा ३. ह. ज्ये. श्र. रे. नक्षत्रेषु, वृषसिंहवृश्चिककुम्भ-लग्नेषु, रविगुरुशनिदिनेषु, शुभतिथिषु, चैत्रभाद्रपौषमलमासक्षयमासभिन्नसमये शुभः।

वृक्षादिरोपणमुहूर्तः- अश्वि. रो. मृ. पुष्य. उत्तरा ३. ह. चि. वि. अनु. मू. अभि श. रे. नक्षत्रेषु, चं. बु. गु. शु. दिनेषु, शुभतिथिषु च शुभम्।

कदलीरोपणम्- पञ्चक (ध.श.पू.भा.उ.भा.रे.) रहित नक्षत्रेषु १।२।३।४।६ तिथिषु, शुभदिनेषु शुभम्।

अथ त्रिविधप्रवेशः—दिवा नृपप्रवेशः, निशि वधूप्रवेशः, दिवा च रात्री च गृहप्रवेशः शुभदः प्रोक्तः ।

विपणिमुहूर्त्तः—अश्विः, रे. पुष्य. ह. उत्तरा ३ अनु. अभि. नक्षत्रेषु १।२।३।५।६।७।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु। सू. च. बु. बृ. शु. श. वारेषु॥ शुक्लपक्षे, कृष्णे १० यावत् ॥ १।२।३।४।५।६।७।८।९।१०।१२ लग्नेषु, लग्ने चन्द्रशुक्रे, पापैः ८।१२ रहितैः। शुभैः २।१०।११ स्थितैः शुभा ।

अथ मीलचालनमुहूर्त्तः—शुभतिथिदिननक्षत्रेषु ॥ १।४।७।१० लग्नेषु॥ शुभैः १।४।५।७।९।१० स्थितैः । पापैः ३।६।११ स्थितैः, लग्नेशध-नेशसप्तमेशैकादशेशेषु बलयुक्तेषु शुभम् ।

अथ वस्तूनां विक्रयमुहूर्त्तः—भ.कृ.दि.आश्ले. वि.पूर्वा ३.नक्षत्रेषु,२।३।५।७।१०।११।१३।१५ तिथिषु, चं, बु. बृ. शु. दिनेषु, शुभैः १।२।४।५।७।९।१० स्थितैः । पापैः ३।६।११ स्थितैः, कुम्भं विना लग्नेषु शुभः ।

अथ वस्तूनां क्रयमुहूर्त्तः—शुभतिथिदिनलग्नेषु । अश्वि. चि. स्वा. श्र. श. रे. नक्षत्रेषु शुभः ।

अथ भैषज्यभक्षणमुहूर्त्तः—अश्वि. मृ. पुन. पुष्य. ह. चि. स्वा. अनु. मू. अभि. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु । शुभतिथिषु ॥ सू. च. बु. बृ. शु. दिनेषु॥ ३।६।९।१२ लग्नेषु, शुभैः ३।६।९।१२ राशिगतैः, लग्नात् ७।८।१२ ग्रहरहितेषु औषधिभक्षणं शुभम् । जन्मनक्षत्रे भैषज्यभक्षणमशुभम् ॥

अथरक्तमोक्षण (आपरेशन) मुहूर्त्तः—अश्वि. रो. मृ. पुष्य. ह. चि. स्वा. अनु: ज्ये. अभि.श्र. श. नक्षत्रेषु, सू.मं.बृ. दिनेषु ॥ शुभतिथिलग्नेषु चन्द्रतारानुकूले सति शुभम् ।

अथ चिकित्सामुहूर्त्तः—अश्वि. रो. मृ. पुष्य. ह. चि. स्वा. अनु: ज्ये. अभि.श्र.श. नक्षत्रेषु, सू. च. मं. बृ. शु. दिनेषु । शुभतिथिलग्नेषु चन्द्रतारानुकूले शुभा ।

अथोग्रकर्ममुहूर्त्तः—पूर्वा ३, भ. मघा. मू. ज्ये. आश्ले. आर्द्रा. नक्षत्रेषु, मं. श. दिनेषु ॥ १।८।१०।११ लग्नेषु ॥ १।३।४।५।९।१०।११।१४ तिथिषु शुभम् ।

अथ मोटर बस साइकिल यानादिचालनमुहूर्त्तः—अश्वि. मृ. पुन. ह. चि. स्वा. अनु. ज्ये. रे. नक्षत्रेषु, च. मं. बृ. शु. श. दिनेषु १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१३।१५ तिथिषु, चतुर्थेशे बलयुक्ते १।४।५।७।९।१० स्थिते। लग्नेशदशमेशसप्तमेश—नवमेशैरपि १।४।५।७।९।१० गतैर्बलयुक्तैः। पापैः ३।६।११ स्थानस्थितैः यानादि—चालनं शुभम्।

अथ जन्म— नामराशिवशेन विचारणीयविषया:—

विवाहे सर्वमांगल्ये यात्रायां ग्रहगोचरे।
जन्मराशिप्रधानत्वं नामराशिं न चिन्तयेत्॥
देश ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके।
नामराशिप्रधानत्वं जन्मराशिं न चिन्तयेत्॥
काकिण्यां वर्गशुद्धौ च वादे द्यूते स्वरोदये।
मन्त्रे पुनर्भूवरणे नामराशेः प्रधानता॥

॥ अथ राशीनां स्वामिचरादिसंज्ञाचक्रम् ॥

राशि	मे	वृ	मि	क	सि	क	तु	वृ	ध	म	कु	मी
पति	म	शु	बु	च	सू	बु	शु	मं	बृ	श	श	बृ
संज्ञा	चर	स्थि	द्वि	चर	स्थि	द्वि	चर	स्थि	द्वि	चर	स्थि	द्वि
प्रकृ	पित्त	वात	सम	कफ	पित्त	वा	स	क	पि	वा	सम	क
आकृ	ह्रस्व	ह	सम	सम	दीर्घ	दी	दी	दी	स	स	ह	स
जाति	क्ष	वै	शू	वि	क्ष	वै	शू	वि	क्ष	वै	शू	वि

॥ अथ ग्रहाणामुच्चादिबोधकचक्रम् ॥

ग्रह	सू	च	मं	बु	बृ	शु	श	रा	के
उच्च	मे १०	वृ ३	म २८	कं १५	क ५	मी२७	तु२०	मि	ध
नीच	तु १०	वृश्चि ३	क २८	मी १५	म ५	कं २७	मे २०	ध	मि
मूलत्रि	सि	वृष	मे	कं	ध	तु	कु	कु	सि
जातिः	क्ष	वै	क्ष	शू	ब्रा	ब्रा	चा	चा	चा
दिक्	पू	वा	द	उ	ई	अ	प	नै	नै
मान	२२वर्ष	२४व	२८व	२२व	१६व	२५व	३६व	४२व	४८व
प्रकृतिः	पित्त	कफ	पित्त	सम	सम	वात	वात	वात	वात
पुसंज्ञा	पु	स्त्री	पु	नपु	पु	स्त्री	नपु	नपु	पु
आकृति	ह	ह	ह	ह	दीर्घ	ह	दी	दी	दी

॥ होराचक्रम् ॥

राशिः	मे	वृ	मि	क	सि	कं	तु	वृ	ध	म	कु	मी
१५अं	सू	च	सू	च	सू	च	सू	च	सू	च	सू	च
३०अं	च	सू	च	सू	च	सू	च	सू	च	सू	च	सू

॥ द्रेष्काणचक्रम् ॥

राशिः	मे	वृ	मि	क	सि	कं	तु	वृ	ध	म	कु	मी
१०अं	मं	श	बु	च	सू	बु	शु	मं	बृ	श	श	बृ
२०अं	सू	बु	शु	म	बृ	श	श	बृ	मं	शु	बु	च
३०अं	बृ	श	श	बृ	मं	शु	बु	च	सू	बु	शु	मं

॥ अथ वर्षाज्ञानाय सप्तनाडीचक्रम् ॥

शनिः	रविः	भौमः	गुरुः	शुक्रः	बुधः	चन्द्रः	स्वामी
कृ.	रो.	मृ.	आ.	पुन.	पु.	आश्ले	नक्षत्र
वि.	स्वा.	चि.	ह.	उफ.	पूफ	म.	नक्षत्र
अनु.	ज्ये.	मू.	पूषा	उषा	अभि.	श्र.	नक्षत्र
भ.	अ.	रे.	उभा	पूभा.	श.	ध.	नक्षत्र
चण्डा	वाता	वह्नि	सौम्या	नीरा	जला	अमृता	संज्ञा

होरालग्नानयनम्—द्विघ्नेष्ट-नाड्यः पञ्चाप्ता यच्छेषञ्च पलीकृतम् । दशाप्तमंशास्ते योज्या रवौ होरोदयो भवेत् ॥

॥ अथ त्रिविधायुर्बोधकचक्रम् ॥

दीर्घायुः	मध्यमायुः	अल्पायुः
चरभे लग्नेशः चरभेऽष्टमेशः	चरभे लग्नेशः स्थिरभेऽष्टमेशः	चरभे लग्नेशः द्विस्वभेऽष्टमेशः
स्थिरभेलग्नेशः द्विस्वभावेऽष्टमेशः	स्थिरभेलग्नेशः चरभेऽष्टमेशः	स्थिरभेलग्नेशः स्थिरभेऽष्टमेशः
द्विस्वभावेलग्नेशः स्थिरभेऽष्टमेशः	द्विस्वभेलग्नेशः द्विस्वभेऽष्टमेशः	द्विस्वभेलग्नेशः चरभेऽष्टमेशः

लग्नेशाष्टमेशयोरिव लग्नचन्द्राभ्यां (शनिचन्द्राभ्याम्) लग्नहोरालग्नाभ्याञ्चायुर्निर्णयम् ।

॥ ग्रहाणां धारणाय मणयः ॥

ग्रहाः	मणयः		
सूर्यः	माणिक्य	गारनेट	विद्रुम
चन्द्रः	मुक्ता	मूनस्टोन	चाँदी
कुजः	विद्रुम	मूंगा	मूंगा
बुधः	पन्ना	लीली	सोना
गुरुः	पोखराज	सुनहला	मोती
शुक्रः	हीरा	स्फटिक	चाँदी
शनिः	नीलमणि	यमुनियां	लोह
राहुः	गोमेद	लाजवर्त	लाजवर्त
केतुः	लहसुनिया	लाजवर्त	लाजवर्त

॥ अथ नवमांशचक्रम् ॥

राशि	मे.सि.ध.	वृष कं.म.	मि.तु.कु.	क.वृ.मी.
३/२०	म.	श.	शु.	च.
६/४०	शु.	श.	मं.	सू.
१०/०	बु.	बृ.	बृ.	बु.
१३/२०	चं.	म.	श.	शु.
१६/४०	सू.	शु.	श.	म.
२०/०	बु.	बु.	बृ.	बृ.
२३/२०	शु.	चं.	मं.	श.
२६/४०	म.	सू.	शु.	श.
३०/०	बृ.	बु.	बु.	बृ.

विषमराशौ त्रिंशांशचक्रम्		समराशौ त्रिंशांशचक्रम्	
राशिः	मे.तु.मि. ध.सिं.कु.	राशिः	वृ.क.कं. वृ.म.मी.
५ अं	म	शु	५ अं
१० अं	श	बु	१२ अं
१८ अं	बृ	बृ.	२० अं
२५ अं	बु	श.	२५ अं
३० अं	शु	मं.	३० अं

॥ अथायुर्विचारः ॥

लग्नसप्तमयोरन्यतरस्थिते चन्द्रे लग्नचन्द्राभ्यामन्यथा शनिचन्द्राभ्यां, लग्नेशाष्टमेशाभ्यां, लग्नहोरालग्नाभ्याञ्चेति प्रकारत्रयेणायुर्निर्णयम् । प्रकारत्रयेष्वेकरूपायुष्यागतं तदेव ग्राह्यम् । विभेदे प्रकारद्वयागतायुर्ग्राह्यम् । विषमे जन्मलग्ने द्वितीयेशाष्टमेशयोर्यो बली, समे जन्मलग्ने द्वादशेशषष्ठेशयोर्यो बली तस्य केन्द्रे स्थित्या दीर्घायुः, पणफरे मध्यायुः, आपोक्लिमे चाल्पायुरेव । इत्यमेवात्मकारकवशेनापि । १,८ ईशयोः कारकेण सहैक्ये योगे वा मध्यायुरेव । विषमे जन्मलग्ने कारकस्तृतीये, समे जन्मलग्ने कारको यदि चैकादशे भवेत्तर्हि कारकायुषि केन्द्रे दीर्घायुः पणफरे मध्यमायुरापोक्लिमे चाल्पायुर्ज्ञेयः । यदि लग्नेशाष्टमेशदशमेशाः केन्द्रत्रिकोणलाभगास्तदा दीर्घायुर्योगः, यदि लग्नेशः सूर्यस्य मित्रन्तदा दीर्घायुर्योगः, समस्तदा मध्यायुर्योगः शत्रुस्तदाऽल्पायुर्योगः ॥ इति॥ पूर्वोक्तचक्रद्वारा प्रकारत्रयेण दीर्घायुयोगे प्राप्ते १२० वर्षाणि, प्रकारद्वयेन १०८ वर्षाणि, प्रकारेणैकेन ९६ वर्षाणि आयुः । एवमेव मध्यायुष्यपि प्रकारत्रयादिवशेन क्रमेण ८०, ७२, ६४, वर्षाण्यायुः । अल्पायुष्यपि ४०, ३६, ३२ वर्षाण्यायुरिति ॥ आयुः स्थानमारकादिस्थानञ्च—अष्टमञ्च तृतीयञ्च लग्नादायुरुदाहृतम् । द्वितीयं सप्तमञ्चैव मारकस्थानमुच्यते । क्वचित् षष्ठाष्टमव्ययेशदशास्वपि मारकसम्भवः । मारके मारकान्तरमशुभम्, परस्परं षष्ठाष्टमेशयोर्दशान्तर्दशा न शुभा, लग्नेशपञ्चमेशनवमेशानां दशा शुभा, त्रिडायेशानां च पापाख्या । व्ययद्वितीयेशयोर्दशा स्थानान्तरानुगुण्येन साहचर्याद्वा फलदा । चतुर्थेशसप्तमेशदशमेशानां दशा मध्यफलदा स्थानान्तरवशेन शुभाशुभफलप्रदा च । अष्टमेशदशापापफलदा, परं स्थानान्तर-शुभाशुभवशेन शुभपरमाशुभफलदेति ॥

★ **द्वादशांशज्ञानम्**:—प्रत्येकस्मिन् राशौ १२ द्वादशांशेशास्तत्र प्रतिद्वादशांशमानं २।३० अंशात्मकं भवति । द्वादशांशेशाः स्वराशित एव भवन्ति ।

अथ कारकग्रहाः:—ग्रहेषु सर्वाधिकांशवानात्मकारकस्तन्न्यूनांशक्रमेणामात्य-भातृमातृपितृपुत्रज्ञातिकारकाः ज्ञेयाः। अंशसाम्ये कलाधिक्यं, कलादिसाम्ये बलाधिक्यं ग्राह्यम् । **स्थिरकारकाः**:—तन्वादिभावानां क्रमेणसूर्य-गुरु-कुज-चन्द्रगुरु-गुरु- भौम-शुक्र-शनि-गुरु-बुध-शुक्र-शनयः स्थिरकारकाः भवन्ति ।

स्वर्णादिचरणकजन्मज्ञानम्-जन्मकाले जन्मलग्नाच्चन्द्रे १।६।११ स्थिते स्वर्णपादे, २।५।९ स्थिते रजतपादे, ३।७।१० स्थिते ताम्रपादे ४।८।१२ स्थिते च लौहपादे जन्म ज्ञेयम् ।

आर्द्रादिद्वादशनक्षत्रेषु रजतपादे, ज्येष्ठादिसप्तसु स्वर्णपादे, पूर्वभाद्रादिपञ्चसु ताम्रपादे, कृत्तिकादित्रिषु लौहपादे जन्म बोध्यम् । तेषां फलम्—स्वर्णपादेऽत्युत्कृष्टं, रजतपादे शोभनं, ताम्रपादे मध्यमं, लौहपादे च हीनफलमिति ।

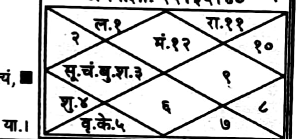
श्रावणकृष्णपक्षः

शकाब्दः १९२७, संवत् २०६२, सन् १४१३ साल, दि. २२।०७।२००५ ई. तः दि. ०५।०८।२००५ ई. या., पश्चिमेकालः। मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, शुद्धः, वर्षर्तुः, सौम्यगोलः, याम्यायनम्।

ति. दि.	तिथयः द. प.	तिथयः घं. मि.	नक्षत्राणि द. प.	नक्षत्राणि घं. मि.	योगाः द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः रा. द. प.	चन्द्रराशयः घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं द. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	दिनाङ्काः रा.	दिनाङ्काः सौ.	दिनाङ्काः अं.
१ शु.	२२।५४	दि.०२।२६	श्र.४८।४०	रा.१२।४४	प्री.३९।२५	कौ.२२।५४	मकर	अहो.	०३।०५।३७।५८	३३।३८	५।१६	६।४४	३१	०६	२२
२ श.	१५।४२	"११।३४	ध.४४।३३	"११।०६	आ.३१।५१	ग.१५।४२	म.१६।३७	दि.११।५६	०३।०६।३५।०२	३३।३५	५।१७	६।४३	०१	०७	२३
३ र.	१०।३७	"०९।३२	श.४०।४२	"०९।३५	सौ.२४।२६	वि.१०।३७	कुम्भ	अहो.	०३।०७।३२।०५	३३।३२	५।१८	६।४२	०२	०८	२४
४ चं.	०४।५८	"०७।१७	पूभा.३७।१९	"०८।१४	शो.१७।१७	बा.०४।५८	कुं.२३।१०	दि.०२।३४	०३।०८।२९।०८	३३।२९	५।१८	६।४२	०३	०९	२५
६ मं.	५५।३२	रा.०३।३२	उभा.३४।३५	सा.०७।०९	अगं.१०।४०	ग.२७।४१	मीन	अहो.	०३।०९।२६।११	३३।२६	५।१९	६।४१	०४	१०	२६
७ बु.	५२।००	"०२।०७	रे.३२।४४	"०६।२५	सु.०४।४२	वि.२३।४६	मी.३२।४४	सा.०६।२५	०३।१०।२३।१४	३३।२४	५।१९	६।४१	०५	११	२७
८ वृ.	४९।३६	"०१।१०	अ.३१।५१	"०६।०४	शु.५५।०५	बा.२०।३९	मेष	अहो.	०३।११।२०।१७	३३।२२	५।२०	६।४०	०६	१२	२८
९ शु.	४८।२२	"१२।४१	भ.३२।०६	"०६।१०	गं.५१।४१	तै.१८।५९	मे.४७।२९	रा.१२।२०	०३।१२।१७।२०	३३।२०	५।२०	६।४०	०७	१३	२९
१० श.	४८।२५	"१२।४३	कृ.३३।३६	"०६।४७	वृ.४९।१७	व.१८।२४	वृष	अहो.	०३।१३।१४।३१	३३।१७	५।२१	६।३९	०८	१४	३०
११ र.	४९।४९	"०१।१७	रो.३६।२३	रा.०७।५४	ध्रु.४७।५६	ब.२१।०७	वृष	अहो.	०३।१४।११।४२	३३।१४	५।२१	६।३९	०९	१५	३१
१२ चं.	५२।१९	"०२।१८	मृ.४०।१९	"०९।३०	व्या.४७।२६	कौ.२१।०४	वृ.०८।२१	दि.०८।४२	०३।१५।०८।५३	३३।११	५।२२	६।३८	१०	१६	०१
१३ मं.	५६।००	"०३।४६	आर्द्रा४५।२२	"११।३१	ह.४७।५१	ग.२४।३९	मिथुन	अहो.	०३।१६।०६।०४	३३।०८	५।२२	६।३८	११	१७	०२
१४ बु.	६०।००	अहो.	पुन.५१।१४	"०१।५३	व.४८।५७	वि.२८।१३	मि.३४।४६	सा.०७।१७	०३।१७।०३।१५	३३।०५	५।२३	६।३७	१२	१८	०३
१४ वृ.	००।२६	दि.०५।३४	पु.५७।३८	"०४।२७	सि.५०।२५	श.००।२६	कर्क	अहो.	०३।१८।००।२६	३३।०२	५।२४	६।३६	१३	१९	०४
३० शु.	०५।२४	"०७।३४	आ.६०।००	अहो.	व्य.५२।०३	ना.०५।२४	कर्क	अहो.	०३।१८।५७।३६	३३।००	५।२४	६।३६	१४	२०	०५

अशून्यशयनव्रतं, पश्चिमां विना यात्रा प्रतिपदि, गृहारम्भो द्वितीयायां, श्रावणे वर्जयेच्छाकं, पञ्चकारम्भो रात्रौ घं.१२ मि.४४ उ.।
गृहारम्भः, (२-३) एकोद्दिष्टं, पश्चिमयात्रा कुम्भस्थे चन्द्रे धनिष्ठायाम्।
श्रीगणाधिप ४ व्रतं, भ. ३७।४८ उ.।
पञ्चमीमानम् ५४।५२, सोमवासरव्रतं, मौनापञ्चमी, नागपञ्चमी, श्रीमनसादेव्युत्थापनं तत्पूजनञ्च, मधुश्रावणीपूजारम्भः, भ. ०४।५८ या., द.ति. ५९।५० उ., पश्चिमयात्रा पञ्चम्यां कुम्भस्थे ●
अश्विन्यां मेषे कुजः २२।०५, भ. ५५।३२ उ., द.ति. ५५।३२ या., पश्चिमयात्रा सप्तम्याम्।
●चन्द्रे तत पश्चिमोत्तरयात्रा पूर्वभाद्रे।
धृतियोगमानम् ५४।४६, पञ्चकान्तः सायं घं.०६ मि.२५ उ., भ. २३।४६ या., गं. २०।४४ उ. ३५।४४ या., पश्चिमयात्रा रेवत्यां तत उत्तरां विना यात्रा सप्तम्यामश्विन्याम्।
इन्द्रसावर्णिमन्वादिः, दक्षिणां विना यात्राश्विन्याम्।
।।००।।
भ. १८।२४ उ. ४८।२५ या., दक्षिणयात्रैकादश्याम्।
कामदा ११ व्रतं सर्वेषां, पश्चिमां विना यात्रा द्वादश्याम्।
अगस्त ०८, सोमवासरव्रतम्।
प्रदोष १३ व्रतं, भ. ५६।०० उ., पश्चिमदक्षिणयात्रा पुनर्वसौ।
आश्लेषायां रविः २२।०६ स्त्रीस्त्रीचंचंयोगो वृश्चिकलग्नं रासभवाहनं नीरानाडीपतिश्शुक्रस्तेन खण्डवृष्टिः, प्रदोष १४ व्रतं, त्र्यहो जन्मदिनकृत्यं, ■
पूर्वोदितो बुधः २७।४३।
श्रावणी ३० स्नानदानादिः, देवसावर्णिमन्वादिः, गं. ५३।१० उ.।
■भ. २८।१३ या.।

३० शुक्रे वल्ली ०८।३८।०५।२३
अयनांशाः २२।३५।४०



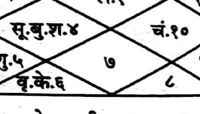
मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

ति. दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं
०१ शु.	११।२८।००।१४	०३।१८।२३।३०	०५।१९।०२।०५	०४।०६।३८।४९	०३।०७।४५।४४	०५।२५।५०।५६	४६।४९
०२ श.	११।२८।३३।३६	०३।१७।३६।४४	०५।१९।१०।०८	०४।०७।५०।३८	०३।०७।५३।४५	०५।२५।४७।४५	४६।४८
०३ र.	११।२९।०६।५८	०३।१६।४९।५८	०५।१९।१८।११	०४।०९।०२।२७	०३।०८।०१।४६	०५।२५।४४।३४	४६।४७
०४ चं.	११।२९।४०।२०	०३।१६।०३।१३	०५।१९।२६।१३	०४।१०।१४।१५	०३।०८।०९।४७	०५।२५।४१।२३	४६।४६
०६ मं.	००।००।१३।४२	०३।१५।१६।२८	०५।१९।३४।१५	०४।११।२६।०३	०३।०८।१७।४८	०५।२५।३८।१२	४६।४५
०७ बु.	००।००।४७।०३	०३।१४।२९।४३	०५।१९।४२।१७	०४।१२।३७।५१	०३।०८।२५।४८	०५।२५।३५।०१	४६।४४
०८ वृ.	००।०१।२०।२४	०३।१३।४२।५८	०५।१९।५०।१९	०४।१३।४९।३९	०३।०८।३३।४८	०५।२५।३१।५१	४६।४२
०९ शु.	००।०१।५३।४५	०३।१२।५६।१३	०५।१९।५८।२१	०४।१५।०१।२७	०३।०८।४१।४८	०५।२५।२८।४१	४६।४०
१० श.	००।०२।२५।०३	०३।१२।२६।०८	०५।२०।०७।१७	०४।१६।१२।४८	०३।०८।४९।५८	०५।२५।२५।३०	४६।३८
११ र.	००।०२।५६।२१	०३।११।५६।०३	०५।२०।१६।१३	०४।१७।२४।०९	०३।०८।५८।०८	०५।२५।२२।१९	४६।३६
१२ चं.	००।०३।२७।३९	०३।११।२५।५८	०५।२०।२५।०८	०४।१८।३५।३०	०३।०९।०६।१७	०५।२५।१९।०८	४६।३४
१३ मं.	००।०३।५८।५७	०३।१०।५५।५३	०५।२०।३४।०३	०४।१९।४६।५१	०३।०९।१४।२६	०५।२५।१५।५७	४६।३३
१४ बु.	००।०४।३०।१५	०३।१०।२५।४८	०५।२०।४२।५८	०४।२०।५८।१२	०३।०९।२२।३५	०५।२५।१२।४६	४६।३२
१४ वृ.	००।०५।०१।३३	०३।०९।५५।४३	०५।२०।५१।५३	०४।२२।०९।३३	०३।०९।३०।४४	०५।२५।०९।३६	४६।३१
३० शु.	००।०५।३२।५१	०३।०९।२५।३९	०५।२१।००।४८	०४।२३।२०।५४	०३।०९।३८।५३	०५।२५।०६।२६	४६।३०

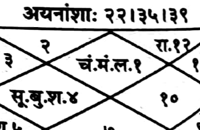
दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सिं.अं.	कं.अं.	तु.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मी.अं.
००।४५	०२।४१	०४।५४	०७।१२	०९।२८	११।४३	१४।०१	१६।१९	१८।२४	२०।१०	२१।४१	२३।०८
००।४१	०२।३७	०४।५०	०७।०८	०९।२४	११।३९	१३।५७	१६।१५	१८।२०	२०।०६	२१।३७	२३।०४
००।३७	०२।३३	०४।४६	०७।०४	०९।२०	११।३५	१३।५३	१६।११	१८।१६	२०।०२	२१।३३	२३।००
००।३३	०२।२९	०४।४२	०७।००	०९।१६	११।३१	१३।४९	१६।०७	१८।१२	१९।५८	२१।२९	२२।५६
००।२९	०२।२५	०४।३८	०६।५६	०९।१२	११।२७	१३।४५	१६।०३	१८।०८	१९।५४	२१।२५	२२।५२
००।२६	०२।२२	०४।३५	०६।५३	०९।०९	११।२४	१३।४२	१६।००	१८।०५	१९।५१	२१।२२	२२।४९
००।२२	०२।१८	०४।३१	०६।४९	०९।०५	११।२०	१३।३८	१५।५६	१८।०१	१९।४७	२१।१८	२२।४५
००।१८	०२।१४	०४।२७	०६।४५	०९।०१	११।१६	१३।३४	१५।५२	१७।५७	१९।४३	२१।१४	२२।४१
००।१४	०२।१०	०४।२३	०६।४१	०८।५७	११।१२	१३।३०	१५।४८	१७।५३	१९।३९	२१।१०	२२।३७
००।१०	०२।०६	०४।१९	०६।३७	०८।५३	११।०८	१३।२६	१५।४४	१७।४९	१९।३५	२१।०६	२२।३३
००।०७	०२।०३	०४।१६	०६।३४	०८।५०	११।०५	१३।२३	१५।४१	१७।४६	१९।३२	२१।०३	२२।३०
००।०३	०१।५९	०४।१२	०६।३०	०८।४६	११।०१	१३।१९	१५।३७	१७।४२	१९।२८	२०।५९	२२।२६
२३।५९	०१।५५	०४।०८	०६।२६	०८।४२	१०।५७	१३।१५	१५।३३	१७।३८	१९।२४	२०।५५	२२।२२
२३।५५	०१।५१	०४।०४	०६।२२	०८।३८	१०।५३	१३।११	१५।२९	१७।३४	१९।२०	२०।५१	२२।१८
२३।५१	०१।४७	०४।००	०६।१८	०८।३४	१०।४९	१३।०७	१५।२५	१७।३०	१९।१६	२०।४७	२२।१४

०१ शुक्रे वल्ली ०८।३८।०५।०९
अयनांशाः २२।३५।३८



०९ शुक्रे वल्ली ०८।३८।०५।१६
अयनांशाः २२।३५।३९



विविधविषयाः– श्रावणकृष्णपञ्चम्यां मनसादेव्या उत्थापनं पूजनञ्च कार्यम्। **सोमवासरव्रतं–** सोमवारे व्रतं कार्यं श्रावणे वै यथाविधि। शक्तावुपोषणं कार्यमथवा निशिभोजनम्। **प्रदक्षिणविधिः–** एका चण्ड्यां रवौ सप्त त्रिर्दद्याच्च विनायके। चत्वारि केशवे दद्यात् शिवस्यार्द्धप्रदक्षिणा। आसन्नप्रसवा नारी जलपूर्णघटं यथा। उद्वहन्ती शनैर्याति तथा कुर्यात्प्रदक्षिणाम्। **मांसाभक्षणफलं महाभारते–** मासि मास्यश्वमेधेन यो यजेत्तु शतं समाः। न खादति च यो मांसं सममेतद्युधिष्ठिर। यस्तु वर्षशतं पूर्णं तपस्तप्येत् सुदारुणम्। यश्च वै वर्जयेन्मांसं समौ तौ न च संशयः।। कस्यापि **कृतव्रतस्योद्यापनावश्यकता, नन्दिपुराणे–** कुर्यादुद्यापनं तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत्तु तद्व्रतं निष्फलं भवेत्। **श्रेष्ठव्रतानि–** ब्रह्मचर्यं तथा शौचं सत्यमामिषवर्जनम्। व्रतेष्वेतानि चत्वारि वरीयानीति निश्चयः। **वृक्षरोपणमन्त्रः–** वसुधेति च शीतेति पुण्यदेति धरेति च। नमस्ते सुभगे देवि द्रुमोऽयं वर्धतामिति।

ग्रहस्थितिः– मार्गिणौ पूर्वोदितौ कुजगुरू, वक्री पश्चिमास्तो बुधः १४तः पूर्वोदितः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, मार्गी पश्चिमास्तः शनिः।

वातावरणम्– प्रतिपत्तः षष्ठीं यावद्वायुमेघच्छायावृष्टयस्ततो द्वादशीं यावत्तापखण्डवृष्टिमेघचारास्ततः पक्षान्तं यावद् वायुखण्डवृष्टितापादयः।

श्रावणशुक्लपक्षः

शकाब्दः १९२७, संवत् २०६२, सन् १४१३ साल, दि.६।८।२००५ ई. तः दि.१९।८।२००५ ई. या., पश्चिमेकालः, १३तः उत्तरेकालः।
मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, शुद्धः, १२ तोऽशुद्धः, वर्षर्तुः, सौम्यगोलः, याम्यायनम्।

ति. दि.	तिथयः द. प.	तिथयः घं. मि.	नक्षत्राणि द. प.	नक्षत्राणि घं. मि.	योगाः द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः रा. द. प.	चन्द्रराशयः घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं द. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	दिनाङ्काः रा.	दिनाङ्काः सौ.	दिनाङ्काः अं.
०१ श.	१०।२९	दि.०९।३७	आ.०४।१०	दि.०७।०५	व.५३।३०	ब.१०।२९	क.०४।१०	दि.०७।०५	०३।१९।५४।५६	३२।५६	५।२५	६।३५	१५	२१	०६
०२ र.	१५।१०	"११।२९	म.१०।२५	"०९।३५	प.५४।३१	कौ.१५।१०	सिंह	अहो.	०३।२०।५२।१६	३२।५३	५।२५	६।३५	१६	२२	०७
०३ चं.	१९।१०	"०१।०६	पूफ.२५।५९	"११।५०	शि.५४।५९	ग.१९।१०	सिं.३२।०८	सा.०६।१७	०३।२१।४९।३६	३२।५०	५।२६	६।३४	१७	२३	०८
०४ मं.	२२।०६	"०२।१७	उफ.२०।३५	"०१।४१	सि.५४।१३	वि.२२।०६	कन्या	अहो.	०३।२२।४६।५६	३२।४७	५।२७	६।३३	१८	२४	०९
०५ बु.	२४।०२	"०३।०४	ह.२४।०६	"०३।०५	सा.५२।४२	बा.२४।०२	कं.५५।१३	रा.०३।३२	०३।२३।४४।१५	३२।४४	५।२७	६।३३	१९	२५	१०
०६ बृ.	२४।३३	"०३।१७	चि.२६।१९	"०४।००	शुभः.५०।११	तै.२४।३३	तुला	अहो.	०३।२४।४१।३४	३२।४१	५।२८	६।३२	२०	२६	११
०७ शु.	२३।४६	"०२।५८	स्वा.२७।१६	"०४।२२	शु.४६।३८	व.२३।४६	तुला	अहो.	०३।२५।३८।५३	३२।३८	५।२८	६।३२	२१	२७	१२
०८ श.	२१।४८	"०२।१२	वि.२७।०२	"०४।१८	ब्र.४२।०९	ब.२१।४८	तु.१२।०५	दि.१०।१९	०३।२६।३६।२५	३२।३४	५।२९	६।३१	२२	२८	१३
०९ र.	१८।४६	"०१।००	अनु.२५।४१	"०३।४६	ऐं.३६।४८	कौ.१८।४६	वृश्चिक	अहो.	०३।२७।३३।५७	३२।३१	५।३०	६।३०	२३	२९	१४
१० चं.	१४।४६	"११।२४	ज्ये.२३।३३	"०२।५५	वै.३०।४७	ग.१४।४६	वि.२३।३३	दि.०२।५५	०३।२८।३१।२९	३२।२८	५।३०	६।३०	२४	३०	१५
११ मं.	०९।५५	"०९।२९	मू.२०।३१	"०१।४३	वि.२४।०४	वि.०९।५५	धनु	अहो.	०३।२९।२९।०१	३२।२५	५।३१	६।२९	२५	३१	१६
१२ बु.	०४।२६	"०७।१८	पूषा.१६।५६	"१२।१८	प्री.१६।५३	बा.०४।२६	ध.३०।५६	सा.०५।५४	०४।००।२६।३३	३२।२२	५।३२	६।२८	२६	०१	१७
१४ बृ.	५२।२५	रा.०२।३०	उषा.१२।५६	"१०।४२	आ.०९।२५	ग.२५।२९	मकर	अहो.	०४।०१।२४।०४	३२।१९	५।३२	६।२८	२७	०२	१८
१५ शु.	४६।१५	"१२।०३	श्र.०६।४२.	"०८।१४	सौ.०१।४७	वि.१९।२०	म.३५।३७	रा.०७।४८	०४।०२।२१।३५	३२।१६	५।३३	६।२७	२८	०३	१९

चन्द्रदर्शनं मु. ३० फलं साम्यं, दोलोत्सवारम्भः, गं. ०८।१० या.।
(३) एकोद्दिष्टं, पूर्वोत्तरयात्रा पूर्वफल्गुन्याम्।
मार्गी बुधः ०२।२६, श्रीगणेश ४ व्रतं, मधुश्रावणीव्रतं, सोमवासरव्रतं, म. ५०।३८ उ., उत्तरयात्रा पूर्वफल्गुन्याम्।
म. २२।०६ या., (४) एकोद्दिष्टं, पूर्वदक्षिणयात्रा हस्ते।
नागपञ्चमी नागपूजनं, कुलिकनामा नागराजोऽसितवर्णो द्वारमुभयतो गोमयलिखितो नागो दूर्वासिन्दूरदुग्धलाजादिभिः पूज्यः, द.ति. २४।०२ उ., पूर्वदक्षिणयात्रा पञ्चम्याम्।
कन्यायां शुक्रः २२।३९, द.ति. २४।३३ या., गृहप्रवेशः पश्चिमयात्रा च सप्तम्याम्।
गोस्वामीतुलसीदासजयन्ती, शीतलासप्तमी, श्रीशीतलापूजनं, म. २३।४६ उ. ५२।४७ या., गृहप्रवेशः सप्तम्यां, दक्षिणयात्राष्टम्यां स्वात्याम्।
पश्चिमोत्तरयात्रानुराधायाम्।
पूर्वोदितः शनिः २८।१८, (९-१०) एकोद्दिष्टम्, उत्तरयात्रा दशम्याम्।
सोमवासरव्रतं, म. ४२।२१ उ., गं. १७।३३ उ. ३२।३३ या., गृहारम्भप्रवेशौ मूले, पश्चिमोत्तरयात्रा ज्येष्ठायां तत उत्तरयात्रा। ○श्रावणी फाल्गुनी तथा। श्रावणी नृपतीन् हन्ति ग्रामं दहति फाल्गुनी।।
मासान्तः, पुत्रदा ११ व्रतं सर्वेषां, म. ०९।५५ या.। ●नीरनाडीपतिश्शुक्रस्तेन खण्डवृष्टिः, प्रदोष १३ व्रतं, श्रीधर १२ दूर्वादलेनपारणम्, अशुद्धारम्भः १८।२९ उ.।
त्रयोदशीमानम् ५४।०६, मघायां सिंहे रविः १८।२९ मु. ४५ फलं समर्घं विष्णुपदीसंक्रान्तिपुण्यकालो घं. ०९ मि. ४४ उ. घं. ०४ मि. ०८ यावद्दिने, पुंस्त्रीचंचंयोगोवृश्चिकलग्नं मण्डूकवाहनं●
मासाब्दिक प्रदोष १४ व्रतं, म. ५२।२५ उ.। □श्रवणायां ततः पूर्वयात्रा मकरस्थे चन्द्रे, पञ्चकारम्भो दिवा घं. ०८ मि. १४ उपरि, म. १९।२० या.। भद्रायामकर्त्तव्यम्- भद्रायां द्वे न कर्त्तव्ये ○
शोभनयोगमानम् ५२।१६, श्रावणी १५ स्नानदानादिः, उपाकर्म, हयग्रीवावतारः, दोलोत्सवान्तः, संस्कृतदिवसमहोत्सवः, रक्षाबन्धनं घं. ०१ मि. १७ उपरि दिने, पश्चिमां विना यात्रा □

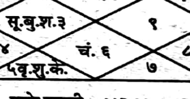
मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

ति. दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं
०१ श.	००।०६।०२।०३	०३।०९।१९।०३	०५।२१।१०।३४	०४।२४।३२।०६	०३।०९।४७।०३	०५।२५।०३।१५	४६।२८
०२ र.	००।०६।३१।१५	०३।०९।२८।५५	०५।२१।२०।२०	०४।२५।४३।१८	०३।०९।५५।१३	०५।२५।००।०४	४६।२६
०३ चं.	००।०७।००।२७	०३।०९।२५।०१	०५।२१।३०।०६	०४।२६।५४।३०	०३।१०।०३।२३	०५।२४।५६।५३	४६।२४
०४ मं.	००।०७।२९।३९	०३।०९।३७।३७	०५।२१।३९।५२	०४।२८।०५।४२	०३।१०।११।३२	०५।२४।५३।४२	४६।२२
०५ बु.	००।०७।५८।५१	०३।१०।०२।५१	०५।२१।४९।३७	०४।२९।१६।५४	०३।१०।१९।४१	०५।२४।५०।३१	४६।२१
०६ बृ.	००।०८।२८।०३	०३।१०।२८।०५	०५।२१।५९।२२	०५।००।२८।०६	०३।१०।२७।५०	०५।२४।४७।२०	४६।२०
०७ शु.	००।०८।५७।१५	०३।१०।५३।२०	०५।२२।०९।०७	०५।०१।३९।१७	०३।१०।३५।५९	०५।२४।४४।१०	४६।१९
०८ श.	००।०९।२३।३९	०३।११।४३।५५	०५।२२।१९।२६	०५।०२।४९।५९	०३।१०।४३।५०	०५।२४।४०।५९	४६।१७
०९ र.	००।०९।५०।०३	०३।१२।३४।३०	०५।२२।२९।४५	०५।०४।००।४१	०३।१०।५१।४१	०५।२४।३७।४८	४६।१५
१० चं.	००।१०।१६।२७	०३।१३।२५।०५	०५।२२।४०।०४	०५।०५।११।२३	०३।१०।५९।३२	०५।२४।३४।३७	४६।१३
११ मं.	००।१०।४२।५०	०३।१४।१५।४०	०५।२२।५०।२३	०५।०६।२२।०५	०३।११।०७।२३	०५।२४।३१।२६	४६।११
१२ बु.	००।११।०९।१३	०३।१५।०६।१५	०५।२३।००।४२	०५।०७।३२।४७	०३।११।१५।१४	०५।२४।२८।१५	४६।१०
१४ बृ.	००।११।३५।३६	०३।१५।५६।५०	०५।२३।११।०१	०५।०८।४३।२८	०३।११।२३।०५	०५।२४।२५।०५	४६।०९
१५ शु.	००।१२।०१।५९	०३।१६।४७।२४	०५।२३।२१।२०	०५।०९।५४।०९	०३।११।३०।५५	०५।२४।२१।५५	४६।०८

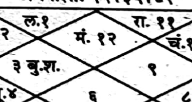
दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सिं.अं.	कं.अं.	तु.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मी.अं.
०१ श.	२३।४८	०१।४४	०३।५७	०६।१५	०८।३१	१०।४६	१३।०४	१५।२२	१७।२७	१९।१३	२०।४४	२२।११
०२ र.	२३।४४	०१।४०	०३।५३	०६।११	०८।२७	१०।४२	१३।००	१५।१८	१७।२३	१९।०९	२०।४०	२२।०७
०३ चं.	२३।४०	०१।३६	०३।४९	०६।०७	०८।२३	१०।३८	१२।५६	१५।१४	१७।१९	१९।०५	२०।३६	२२।०३
०४ मं.	२३।३६	०१।३२	०३।४५	०६।०३	०८।१९	१०।३४	१२।५२	१५।१०	१७।१५	१९।०१	२०।३२	२१।५९
०५ बु.	२३।३२	०१।२८	०३।४१	०५।५९	०८।१५	१०।३०	१२।४८	१५।०६	१७।११	१८।५७	२०।२८	२१।५५
०६ बृ.	२३।२९	०१।२५	०३।३८	०५।५६	०८।१२	१०।२७	१२।४५	१५।०३	१७।०८	१८।५४	२०।२५	२१।५२
०७ शु.	२३।२५	०१।२१	०३।३४	०५।५२	०८।०८	१०।२३	१२।४१	१४।५९	१७।०४	१८।५०	२०।२१	२१।४८
०८ श.	२३।२१	०१।१७	०३।३०	०५।४८	०८।०४	१०।१९	१२।३७	१४।५५	१७।००	१८।४६	२०।१७	२१।४४
०९ र.	२३।१७	०१।१३	०३।२६	०५।४४	०८।००	१०।१५	१२।३३	१४।५१	१६।५६	१८।४२	२०।१३	२१।४०
१० चं.	२३।१३	०१।०९	०३।२२	०५।४०	०७।५६	१०।११	१२।२९	१४।४७	१६।५२	१८।३८	२०।०९	२१।३६
११ मं.	२३।१०	०१।०६	०३।१९	०५।३७	०७।५३	१०।०८	१२।२६	१४।४४	१६।४९	१८।३५	२०।०६	२१।३३
१२ बु.	२३।०६	०१।०२	०३।१५	०५।३३	०७।४९	१०।०४	१२।२२	१४।४०	१६।४५	१८।३१	२०।०२	२१।२९
१४ बृ.	२३।०२	००।५८	०३।११	०५।२९	०७।४५	१०।००	१२।१८	१४।३६	१६।४१	१८।२७	१९।५८	२१।२५
१५ शु.	२२।५९	००।५५	०३।०८	०५।२६	०७।४२	०९।५७	१२।१५	१४।३३	१६।३८	१८।२४	१९।५५	२१।२२

७ शुक्रे वल्ली ०८।३८।०५।३०
अयनांशाः २२।३५।४१



१५ शुक्रे वल्ली ०८।३८।०५।३७
अयनांशाः २२।३५।४२



विविधविषयाः- पञ्चम्यां नागपूजनं- श्रावणे मासि पञ्चम्यां कृष्णपक्षेऽथवा सिते। द्वारस्योभयतो लेख्यो गोमयेन विषोल्वणः।। पूजयेद्विधिवद्वीर दधि दूर्वांकुरैः कुशैः। गन्धपुष्पोपहारैश्च ब्राह्मणानाञ्च तर्पणैः।। ये त्वस्यां पूजयन्तीह नागान् भक्तिपुरस्सराः। न तेषां सर्पतो वीर भयं भवति कुत्रचित्।। पञ्चम्यां तिक्ताम्लरससेवनं पुष्टिकरम्। शकुनम् - श्रावणशुक्लपञ्चम्यां दक्षिणपश्चिमवायौ दुर्भिक्षमन्यथा सुभिक्षम्। नभसि शुक्लदलेऽचलसंज्ञके रवितिथावुदयो रविचन्द्रयोः। भवति चेज्जलदैरिह संवृता वसुमती जलदा बहुतोयदाः। रक्षासूत्रबन्धनमन्त्रः- येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः। तेन त्वां प्रतिबध्नामि रक्षे माचल माचल।। ग्रहयोगेन विशिष्टवृष्टिविचारः- बुधशुक्रमहीसूनुगुरवश्चैकराशिगाः। निः संशयं तदा काले जायते वृष्टिरुत्तमा।। समागमे ज्ञसितयोस्तथा च गुरुशुक्रयोः। तथैव जीवबुधयोर्वृष्टिः स्यान्नात्र संशयः।। यदा भवन्ति सूर्यस्य ग्रहाः पृष्ठावलम्बिनः। पुरतो वा यदा यान्ति तदा त्वेकार्णवा मही।।

ग्रहस्थितिः- मार्गिणौ पूर्वोदितौ कुजगुरू, वक्री पूर्वोदितो बुधः ३तो मार्गी, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, मार्गी पश्चिमास्तः शनिः ९तः पूर्वोदितः।

वातावरणम्- पक्षादितः पञ्चमीं यावन्मेघचारवायुखण्डवृष्टयस्तत एकादशीं यावत्तापमेघचारादयस्ततः पक्षान्तं यावत् खण्डवृष्टियोगः।

भाद्रकृष्णपक्षः

शकाब्दः १९२७, संवत् २०६२, सन् १४१३ साल, दि. २०।०८।२००५ ई. तः दि. ०३।०९।२००५ ई. या., उत्तरेकालः। मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, अशुद्धः, वर्षर्तुः, सौम्यगोलः, याम्यायनम्।

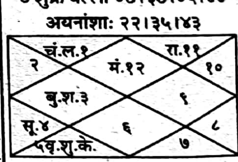
ति. दि.	तिथयः द. प.	तिथयः घं. मि.	नक्षत्राणि द. प.	नक्षत्राणि घं. मि.	योगाः द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः रा. द. प.	चन्द्रराशयः घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं द. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	दिनाङ्काः रा.	सौ.	अं.	भाद्रकृष्णपक्षः
१श.	४०।११	रा.०९।४८	ध.०४।३२	दि.०७।२३	अगं.४६।२८	बा.१३।१३	कुम्भ	अहो.	०४।०३।१९।१८	३२।१२	५।३४	६।२६	२९	०४	२०	पश्चिमयात्रा धनिष्ठायां, दधि भाद्रपदे त्यजेत्, भाद्रे स्त्रीणां यात्रा न शस्ता।
२र.	३४।३४	"०७।२४	श.००।३५	"०५।४८	सु.३९।१२	तै.०७।२३	कुं.४२।५६	रा.१०।४४	०४।०४।१७।०१	३२।०९	५।३४	६।२६	३०	०५	२१	पूर्वभाद्रमानम् ५६।२८, रविव्रतम्, उत्तरयात्रा मीनगे चन्द्रे पूर्वभाद्रे।
३चं.	२९।२४	सा.०५।२१	उभा.५४।०८	रा.०२।१४	धृ.३२।२४	व.०१।५९	मीन	अहो.	०४।०५।१४।४४	३२।०६	५।३५	६।२५	३१	०६	२२	कज्जलीतृतीया, विशालाक्षीदर्शनं, श्रीविनायक ४ व्रतं, म. ०१।५९ उ. २९।२४ या.।
४मं.	२५।०३	दि.०३।३६	रे.५२।०७	"०२।२६	शू.२६।१५	बा.२५।०३	मी.५२।०७	रा.०२।२६	०४।०६।१२।२७	३२।०३	५।३५	६।२५	०१	०७	२३	पञ्चकान्तो रात्रौ घं. ०२ मि. २६ उ., बहुलापूजा, गं.४०।०७ उ. ५५।०७ या., पश्चिमयात्रा रेवत्यां तत उत्तरां विना यात्रा।
५बु.	२१।३२	"०२।१३	अ.५०।५६	"०१।५८	गं.२०।४७	तै.२१।३२	मेष	अहो.	०४।०७।१०।१०	३२।००	५।३६	६।२४	०२	०८	२४	उत्तरां विना यात्राश्विन्याम्।
६बृ.	१९।०५	"०१।१४	भ.५०।५३	"०१।५७	वृ.१६।०९	व.१९।०५	मेष	अहो.	०४।०८।०७।५३	३१।५७	५।३७	६।२३	०३	०९	२५	हलधरषष्ठीव्रतं, म. १९।०५ उ. ४८।२८ या.।
७शु.	१७।५०	"१२।४५	कृ.५२।०१	"०२।२५	ध्रु.१२।२७	ब.१७।५०	मे.०६।१०	दि.०८।०५	०४।०९।०५।३६	३१।५४	५।३७	६।२३	०४	१०	२६	मोहरात्रिर्निशीथे शक्तिपूजनं, जयन्तीव्रतं, निशीथे श्रीकृष्णजन्मोत्सवः, पूर्वदक्षिणयात्रा रोहिण्याम्।
८श.	१७।५१	"१२।४६	रो.५४।२८	"०३।२५	व्या.०९।४७	कौ.१७।५१	वृष	अहो.	०४।१०।०३।३२	३१।५०	५।३८	६।२२	०५	११	२७	श्रीकृष्णाष्टमीव्रतं, श्रीकृष्णपूजनोत्सवः, दक्षिणयात्रा रोहिण्यां ततः पूर्वां विना यात्रा।
९र.	१९।११	"०१।१९	मृ.५८।१०	"०४।५५	ह.०८।०६	ग.१९।११	वृ.२६।१९	दि.०४।११	०४।११।०१।२८	३१।४६	५।३९	६।२१	०६	१२	२८	रविव्रतं, म. ५०।२७ उ., द.ति. १९।११ उ.।
१०चं.	२१।४२	"०२।२१	आ.६०।००	अहो.	व.०७।२३	वि.२१।४२	मिथुन	अहो.	०४।११।५९।२४	३१।४२	५।४०	६।२०	०७	१३	२९	मघायां सिंहे बुधः ३७।५७, म. २१।४२ या., द.ति. २१।४२ या.।
११मं.	२५।२०	"०३।४८	आ.०२।५६	दि.०६।५०	सि.०७।३३	बा.२५।२०	मि.५२।११	रा.०२।३२	०४।१२।५७।२०	३१।३८	५।४०	६।२०	०८	१४	३०	जया ११ व्रतं सर्वेषां, पश्चिमदक्षिणयात्रा द्वादश्यां मिथुनस्थे चन्द्रे ततः पश्चिमयात्रा।
१२बु.	२९।४७	सा.०५।३६	पुन.०८।३६	"०९।०७	व्य.०८।२५	तै.२९।४७	कर्क	अहो.	०४।१३।५५।१६	३१।३४	५।४१	६।१९	०९	१५	३१	पूर्वफल्गुन्यां रविः ०९।१८ स्त्रीस्त्रीसूर्यचंयोगस्तुलालग्नं महिषवाहनं जलानाडीपतिर्बुधस्तेन खण्डवृष्टियोगः, कुष्माण्डेन पारणं, पश्चिमयात्रा पुनर्वसौ तत उत्तरां विना यात्रा द्वादश्याम्।
१३बृ.	३४।५०	रा.०७।३८	पु.१४।५६	"११।४०	व.०९।४५	ग.०२।१९	कर्क	अहो.	०४।१४।५३।११	३१।३०	५।४२	६।१८	१०	१६	०१	सितम्बर ०९, प्रदोष १३ व्रतं, द्वापरयुगादिः, म. ३४।५० उ., दक्षिणां विना यात्रा पुष्ये।
१४शु.	३९।५६	"०९।४१	आ.२१।२७	"०२।१८	प.११।२०	वि.०७।२३	क.२१।२७	दि.०२।१८	०४।१५।५१।०६	३१।२६	५।४३	६।१७	११	१७	०२	प्रदोष १४ व्रतं, दुर्भर १४ श्रीभैरवपूजनं, म. ०७।२३ या., गं. १०।२७ उ. २५।२७ या.।
३०श.	४४।४२	"११।३७	म.२७।४७	"०४।५१	शि.१२।४७	च.१२।१९	सिंह	अहो.	०४।१६।४९।१७	३१।२२	५।४४	६।१६	१२	१८	०३	भाद्री ३० कुशी ३० स्नानदानादिः, कुशोत्पाटनं, याम्यामगस्त्योदयः, उत्तरयात्रा प्रतिपदि।

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च / दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सिं.अं.	कं.अं.	तु.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मी.अं.
०१श.	००।१२।२५।१५	०३।१८।०३।२०	०५।२३।३२।३५	०५।११।०४।५४	०३।११।३८।०६	०५।२४।१८।४४	४६।०६	२२।५५	००।५१	०३।०४	०५।२२	०७।३८	०९।५३	१२।११	१४।२९	१६।३४	१८।२०	१९।५१	२१।१८
०२र.	००।१२।४८।३१	०३।१९।१९।१६	०५।२३।४३।५०	०५।१२।१५।३९	०३।११।४५।१७	०५।२४।१५।३३	४६।०४	२२।५१	००।४७	०३।००	०५।१८	०७।३४	०९।४९	१२।०७	१४।२५	१६।३०	१८।१६	१९।४७	२१।१४
०३चं.	००।१३।११।४७	०३।२०।३५।११	०५।२३।५५।०५	०५।१३।२६।२४	०३।११।५२।२८	०५।२४।१२।२२	४६।०२	२२।४८	००।४४	०२।५७	०५।१५	०७।३१	०९।४६	१२।०४	१४।२२	१६।२७	१८।१३	१९।४४	२१।११
०४मं.	००।१३।३५।०३	०३।२१।५१।०६	०५।२४।०६।२०	०५।१४।३७।०९	०३।११।५९।३९	०५।२४।०९।११	४६।००	२२।४४	००।४०	०२।५३	०५।११	०७।२७	०९।४२	१२।००	१४।१८	१६।२३	१८।०९	१९।४०	२१।०७
०५बु.	००।१३।५८।१८	०३।२३।०७।०१	०५।२४।१७।३५	०५।१५।४७।५४	०३।१२।०६।४९	०५।२४।०६।००	४५।५९	२२।४०	००।३६	०२।४९	०५।०७	०७।२३	०९।३८	११।५६	१४।१४	१६।१९	१८।०५	१९।३६	२१।०३
०६बृ.	००।१४।२१।३३	०३।२४।२२।५६	०५।२४।२८।५०	०५।१६।५८।३९	०३।१२।१३।५९	०५।२४।०२।५०	४५।५८	२२।३७	००।३३	०२।४६	०५।०४	०७।२०	०९।३५	११।५३	१४।११	१६।१६	१८।०५	१९।३३	२१।००
०७शु.	००।१४।४४।४८	०३।२५।३८।५१	०५।२४।४०।०४	०५।१८।०९।२४	०३।१२।२१।०९	०५।२३।५९।४०	४५।५७	२२।३३	००।२९	०२।४२	०५।००	०७।१६	०९।३१	११।४९	१४।०७	१६।१२	१७।५८	१९।२९	२०।५६
०८श.	००।१५।०८।४०	०३।२७।०९।५४	०५।२४।५१।३१	०५।१९।१९।१९	०३।१२।२८।२८	०५।२३।५६।२९	४५।५५	२२।२९	००।२५	०२।३८	०४।५६	०७।१२	०९।२७	११।४५	१४।०३	१६।०८	१७।५४	१९।२५	२०।५२
०९र.	००।१५।२४।३२	०३।२८।४०।५७	०५।२५।०२।५८	०५।२०।२९।१४	०३।१२।३५।४७	०५।२३।५३।१८	४५।५३	२२।२६	००।२२	०२।३५	०४।५३	०७।०९	०९।२४	११।४२	१४।००	१६।०५	१७।५१	१९।२२	२०।४९
१०चं.	००।१५।४४।२४	०४।००।११।५९	०५।२५।१४।२५	०५।२१।३९।०९	०३।१२।४३।०५	०५।२३।५०।०७	४५।५१	२२।२२	००।१८	०२।३१	०४।४९	०७।०५	०९।२०	११।३८	१३।५६	१६।०१	१७।४७	१९।१८	२०।४५
११मं.	००।१६।०४।१६	०४।०१।४३।०१	०५।२५।२५।५१	०५।२२।४९।०४	०३।१२।५०।२३	०५।२३।४६।५६	४५।४९	२२।१८	००।१४	०२।२७	०४।४५	०७।०१	०९।१६	११।३४	१३।५२	१५।५७	१७।४३	१९।१४	२०।४१
१२बु.	००।१६।२४।०८	०४।०३।१४।०३	०५।२५।३७।१७	०५।२३।५८।५९	०३।१२।५७।४१	०५।२३।४३।४५	४५।४७	२२।१५	००।११	०२।२४	०४।४२	०६।५८	०९।१३	११।३१	१३।४९	१५।५४	१७।४०	१९।११	२०।३८
१३बृ.	००।१६।४४।००	०४।०४।४५।०५	०५।२५।४८।४३	०५।२५।०८।५३	०३।१३।०४।५९	०५।२३।४०।३५	४५।४५	२२।११	००।०७	०२।२०	०४।३८	०६।५४	०९।०९	११।२७	१३।४५	१५।५०	१७।३६	१९।०७	२०।३४
१४शु.	००।१७।०३।५१	०४।०६।१६।०७	०५।२६।००।०९	०५।२६।१८।४७	०३।१३।१२।१७	०५।२३।३७।२५	४५।४३	२२।०७	००।०३	०२।१६	०४।३४	०६।५०	०९।०५	११।२३	१३।४१	१५।४६	१७।३२	१९।०३	२०।३०
३०श.	००।१७।१९।१५	०४।०७।५६।१५	०५।२६।१२।१२	०५।२७।२८।२३	०३।१३।१९।१८	०५।२३।३४।१४	४५।४१	२२।०४	००।००	०२।१३	०४।३१	०६।४७	०९।०२	११।२०	१३।३८	१५।४३	१७।२९	१९।००	२०।२७

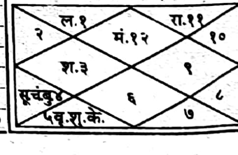
७ शुक्रे वल्ली ०८।३८।०५।४४

अयनांशाः २२।३५।४३



१४ शुक्रे वल्ली ०८।३८।०५।५१

अयनांशाः २२।३५।४४



विविधविषयाः:- भाद्रकृष्णाष्टम्यां श्रीकृष्णजन्माष्टमीव्रतम्। तत्र निशीथव्यापिन्यां जयन्तीव्रतमुदयव्यापिन्यां कृष्णाष्टमीव्रतम्। व्रतमिदं त्रिजन्मपापनाशनम्। तस्मादिदं व्रतं सर्वैरवश्यमेव कार्यमिति। **भाद्रामायां कुशोत्पाटनमन्त्रः**:- कुशाग्रे वसते रुद्रः कुशमध्ये तु केशवः। कुशमूले वसेद् ब्रह्मा कुशान्मे देहि मेदिनि।। कुशोऽसि कुशपुत्रोसि ब्रह्मणा निर्मितः पुरा। देवपितृहितार्थाय कुशमुत्पाटयाम्यहम्।। **वर्ज्यकुशाः**:- चितिदर्भाः पथिदर्भा ये दर्भा यज्ञभूमिषु। स्तरणासनपिण्डेषु षट्कुशान् परिवर्जयेत्।। **श्राद्धे निषिद्धवस्तूनि**, मात्स्ये- कुष्माण्डं महिषीक्षीरं बिल्वपत्रमगद्विजाः। श्राद्धकाले समुत्पन्ने पितरो यान्त्यनाश्रिताः।। **श्राद्धे प्रशस्तानि**- उच्छिष्टं शिवनिर्माल्यं वान्तं च मृतकर्पटम्। श्राद्धे सप्तपवित्राणि दौहित्रः कुतुपस्तिलाः। **महिष्यादिप्रसवदोषः**:- माघे बुधे च महिषी श्रावणे बडवा दिवा। सिंहे गावः प्रसूयन्ते स्वामिनो मृत्युदायकाः। अतस्तच्छान्तिर्विधेयेति।

ग्रहस्थितिः:- मार्गिणः पूर्वोदिताः कुजबुधगुरुशनयः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः।

वातावरणम्- पक्षाद्यन्तभागयोर्मेघच्छायावायुवृष्टयस्तन्मध्यभागे तापमेघचारस्वल्पखण्डवृष्टयः।

भाद्रशुक्लपक्षः

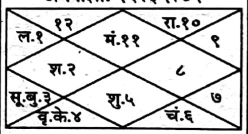
शकाब्दः १९२७, संवत् २०६२, सन् १४१३ साल, दि. ०४।०९।२००५ ई. तः दि. १८।०९।२००५ ई. या., उत्तरेकालः। मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, अशुद्धः, १४ तः शुद्धः, वर्षर्तुः, सौम्यगोलः, याम्यायनम्, १४ तः शरदृतुः।

ति. दि.	तिथयः द. प.	तिथयः घं. मि.	नक्षत्राणि द. प.	नक्षत्राणि घं. मि.	योगाः द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः रा. द. प.	चन्द्रराशयः घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं द. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	दिनाङ्काः रा.	सौ.	अं.	
१र.	४८।५१	रा.०१।१६	पूफ.३३।३०	सा.०७।०८	सि.१३।५२	किं.१६।४७	सिं.४९।४३	रा.०१।३७	०४।१७।४७।२७	३१।१८	५।४४	६।१६	१३	१९	०४	रविव्रतम्।
२चं.	५१।५३	"०२।३०	उफ.३८।२१	रा.०९।०५	सा.१४।१८	बा.२०।२२	कन्या	अहो.	०४।१८।४५।३७	३१।१४	५।४५	६।१५	१४	२०	०५	तुलायां शुक्रः ५६।१९, चन्द्रदर्शनं मु.४५ फलं समर्घं, दक्षिणयात्रा तृतीयायाम्।
३मं.	५३।५४	"०३।२०	ह.४२।०७	"१०।३७	शुभ.१३।४९	तै.२२।५४	कन्या	अहो.	०४।१९।४३।४७	३१।१०	५।४६	६।१४	१५	२१	०६	रुद्रसावर्णिमन्वादिः, वराहावतारः, हरितालिकाव्रतं (तीज), पूर्वदक्षिणयात्रा।
४बु.	५४।३४	"०३।३७	चि.४४।३९	"११।३९	शु.१२।३२	व.२४।१४	कं.१३।२३	दि.११।०८	०४।२०।४१।५७	३१।०६	५।४७	६।१३	१६	२२	०७	पूर्वास्तो बुधः २३।१०, चतुर्थीचन्द्रपूजनं (चौठचन्द्र), श्रीगणेशपूजारम्भः, म. २४।१४ उ. ५४।३४ या., पश्चिमदक्षिणयात्रा पञ्चम्याम्।
५वृ.	५३।५६	"०३।२१	स्वा.४५।५२	"१२।०८	ब्र.१०।०९	ब.२४।१५	तुला	अहो.	०४।२१।४०।०७	३१।०३	५।४७	६।१३	१७	२३	०८	ऋषिपञ्चमी, सप्तर्षिपूजनं पञ्चगव्यप्राशनञ्च, पश्चिमयात्रा स्वात्याम्।
६शु.	५२।०५	"०२।३८	वि.४५।५५	"१२।१०	ऐं.०६।४९	कौ.२३।०१	तु.३०।५४	सा.०६।१०	०४।२२।३८।१७	३१।००	५।४८	६।१२	१८	२४	०९	लोलार्कषष्ठी, श्रीसूर्यपूजनम्, उत्तरयात्रा सप्तम्याम्।
७श.	४९।०९	"०१।२९	अनु.४४।४७	"११।४४	वै.०२।२८	ग.२०।३७	वृश्चिक	अहो.	०४।२३।३६।४२	३०।५६	५।४९	६।११	१९	२५	१०	विष्कुम्भयोगमानम् ५४।४१, म. ४९।०९ उ., पश्चिमोत्तरयात्रा।
८र.	४५।१४	"११।५६	ज्ये.४२।४९	"१०।५८	प्री.५१।२०	वि.१७।१२	वृ.४२।४९	रा.१०।५८	०४।२४।३५।०७	३०।५२	५।५०	६।१०	२०	२६	११	रविव्रतं, श्रीमहालक्ष्मीव्रतारम्भः, दूर्वाष्टमी, श्रीराधाष्टमी, श्रीराधाजयन्ती, म. १७।१२ या., गं. ३६।४९ उ. ५१।४९ या., उत्तरयात्रा ज्येष्ठायां ततः पूर्वोत्तरयात्रा अष्टम्याम्।
९चं.	४०।२९	"१०।०२	मू.३९।५८	"०९।४९	आ.४४।४५	बा.१२।५२	धनु	अहो.	०४।२५।३३।३२	३०।४८	५।५०	६।१०	२१	२७	१२	द.ति. ४०।२९ उ.।
१०मं.	३५।०७	"०७।५४	पूषा.३६।२६	"०८।२५	सौ.३७।३७	तै.०७।४८	ध.५४।०५	रा.०५।२९	०४।२६।३१।५७	३०।४४	५।५१	६।०९	२२	२८	१३	उत्तरफल्गुन्यां रविः ५३।३८ पुंस्त्रीसूचंयोगः कर्कलग्नमश्ववाहनं नीरानाडीपतिश्शुक्रस्तेन वृष्टियोगः, द.ति. ३५।०७ या.।
११बु.	२९।१८	सा.०५।३५	उषा.३२।३०	सा.०६।५२	शो.३०।०२	व.०२।१३	मकर	अहो.	०४।२७।३०।२२	३०।४०	५।५२	६।०८	२३	२९	१४	कर्माधर्मा ११ व्रतं सर्वेषां, श्रीहरेः पार्श्वपरिवर्तनं, म. ०२।१३ उ. २९।१८ या., उत्तरां विना यात्रा श्रवणायाम्।
१२वृ.	२३।१५	दि.०३।११	श्र.२८।२१	दि.०५।१३	अगं.२२।२१	बा.२३।१५	म.५६।१४	रा.०४।२३	०४।२८।२८।४७	३०।३६	५।५३	६।०७	२४	३०	१५	श्रीवामन १२ श्रीवामनावतारः, कुष्माण्डेन पारणं, श्रीइन्द्रपूजारम्भः, पञ्चकारम्भो दिवा घं. ०५ मि. १३ उ., प्रदोष १३ व्रतं, दक्षिणां विना यात्रा श्रवणायां ततः पूर्वयात्रा मकरस्थे चन्द्रे।
१३शु.	१७।०६	"१२।४४	ध.२४।०८	"०३।३३	सु.१४।३१	तै.१७।०६	कुम्भ	अंहो.	०४।२९।२७।१२	३०।३२	५।५४	६।०६	२५	३१	१६	कन्यायां बुधः ३८।०२, मासान्तः, प्रदोष १४ व्रतं, (१३-१४) एकोद्दिष्टम्। ●तङ्गोरकधारणञ्च, श्रीगणेशविसर्जनं, म. ११।०९ उ. ३८।१९ या., शुद्धारम्भः १८।४७ उ.।
१४श.	११।०९	"१०।२२	श.२०।०५	"०१।५६	धृ.०६।५०	व.११।०९	कुम्भ	अहो.	०५।००।२५।५२	३०।२८	५।५४	६।०६	२६	०१	१७	शूलयोगमानम् ५२।३६, कन्यायां रविः १८।४७ मु.१५ फलं महार्घं, षडशीतिसंक्रान्तिपुण्यकालो घं.०१ मि. २५ उपरि दिने, श्रीविश्वकर्मापूजा, श्रीअनन्त १४ व्रतं, श्रीअनन्तपूजनं ●
१५र.	०५।२९	"०८।०७	पूभा.१६।२७	"१२।३०	गं.५२।२६	ब.०५।२९	कुं.०२।२२	दि.०६।५२	०५।०१।२४।३२	३०।२४	५।५५	६।०५	२७	०२	१८	मासादिः, भाद्री १५ स्नानदानादिः, अगस्त्यार्घदानं, श्रीशिवपूजनं, पितृपक्षीयपार्वणारम्भः, महालयारम्भः तर्पणारम्भश्च प्रतिपत्तः।

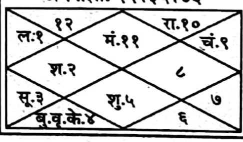
मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च — मिश्रमानं — दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सिं.अं.	कं.अं.	तु.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मी.अं.
०१र.	००।१७।३४।३९	०४।०९।३६।२२	०५।२६।२४।१५	०५।२८।३७।५९	०३।१३।२६।१९	०५।२३।३१।०३	४५।३९	२२।००	२३।५६	०२।०९	०४।२७	०६।४३	०८।५८	११।१६	१३।३४	१५।३९	१७।२५	१८।५६	२०।२३
०२चं.	००।१७।५०।०३	०४।११।१६।२९	०५।२६।३६।१८	०५।२९।४७।३५	०३।१३।३३।२०	०५।२३।२७।५२	४५।३७	२१।५६	२३।५२	०२।०५	०४।२३	०६।३९	०८।५४	११।१२	१३।३०	१५।३५	१७।२१	१८।५२	२०।१९
०३मं.	००।१८।०५।२७	०४।१२।५६।३६	०५।२६।४८।२१	०६।००।५७।११	०३।१३।४०।२०	०५।२३।२४।४१	४५।३५	२१।५३	२३।४९	०२।०२	०४।२०	०६।३६	०८।५१	११।०९	१३।२७	१५।३२	१७।१८	१८।४९	२०।१६
०४बु.	००।१८।२०।५१	०४।१४।३६।४३	०५।२७।००।२४	०६।०२।०६।४७	०३।१३।४७।२०	०५।२३।२१।३०	४५।३३	२१।४९	२३।४५	०१।५८	०४।१६	०६।३२	०८।४७	११।०५	१३।२३	१५।२८	१७।१४	१८।४५	२०।१२
०५वृ.	००।१८।३६।१४	०४।१६।१६।५०	०५।२७।१२।२७	०६।०३।१६।२३	०३।१३।५४।२०	०५।२३।१८।२०	४५।३१	२१।४५	२३।४१	०१।५४	०४।१२	०६।२८	०८।४३	११।०१	१३।१९	१५।२४	१७।१०	१८।४१	२०।०८
०६शु.	००।१८।५१।३७	०४।१७।५६।५७	०५।२७।२४।२९	०६।०४।२५।५९	०३।१४।०१।२०	०५।२३।१५।१०	४५।३०	२१।४२	२३।३८	०१।५१	०४।०९	०६।२५	०८।४०	१०।५८	१३।१६	१५।२१	१७।०७	१८।३८	२०।०५
०७श.	००।१९।०२।२३	०४।१९।४२।०४	०५।२७।३६।५०	०६।०५।३५।०७	०३।१४।०८।१३	०५।२३।११।५९	४५।२८	२१।३८	२३।३४	०१।४७	०४।०५	०६।२१	०८।३६	१०।५४	१३।१२	१५।१७	१७।०३	१८।३४	२०।०१
०८र.	००।१९।१३।०९	०४।२१।२७।११	०५।२७।४९।११	०६।०६।४४।१५	०३।१४।१५।०६	०५।२३।०८।४८	४५।२६	२१।३४	२३।३०	०१।४३	०४।०१	०६।१७	०८।३२	१०।५०	१३।०८	१५।१३	१६।५९	१८।३०	१९।५७
०९चं.	००।१९।२३।५५	०४।२३।१२।१७	०५।२८।०१।३२	०६।०७।५३।२३	०३।१४।२१।५९	०५।२३।०५।३७	४५।२४	२१।३१	२३।२७	०१।४०	०३।५८	०६।१४	०८।२९	१०।४७	१३।०५	१५।१०	१६।५६	१८।२७	१९।५४
१०मं.	००।१९।३४।४२	०४।२४।५७।२३	०५।२८।१३।५३	०६।०९।०२।३१	०३।१४।२८।५२	०५।२३।०२।२६	४५।२२	२१।२७	२३।२३	०१।३६	०३।५४	०६।१०	०८।२५	१०।४३	१३।०१	१५।०६	१६।५२	१८।२३	१९।५०
११बु.	००।१९।४५।२७	०४।२६।४२।२९	०५।२८।२६।१३	०६।१०।११।३८	०३।१४।३५।४५	०५।२२।५९।१५	४५।२०	२१।२३	२३।१९	०१।३२	०३।५०	०६।०६	०८।२१	१०।३९	१२।५७	१५।०२	१६।४८	१८।१९	१९।४६
१२वृ.	००।१९।५६।१३	०४।२८।२७।३५	०५।२८।३८।३३	०६।११।२०।४५	०३।१४।४२।३८	०५।२२।५६।०४	४५।१८	२१।२०	२३।१६	०१।२९	०३।४७	०६।०३	०८।१८	१०।३६	१२।५४	१४।५९	१६।४५	१८।१६	१९।४३
१३शु.	००।२०।०६।५८	०५।००।१२।४१	०५।२८।५०।५३	०६।१२।२९।५२	०३।१४।४९।३०	०५।२२।५२।५४	४५।१६	२१।१६	२३।१२	०१।२५	०३।४३	०५।५९	०८।१४	१०।३२	१२।५०	१४।५५	१६।४१	१८।१२	१९।३९
१४श.	००।२०।१२।२७	०५।०१।५९।४४	०५।२९।०३।३८	०६।१३।३८।१२	०३।१४।५६।०२	०५।२२।४९।४३	४५।१४	२१।१२	२३।०८	०१।२१	०३।३९	०५।५५	०८।१०	१०।२८	१२।४६	१४।५१	१६।३७	१८।०८	१९।३५
१५र.	००।२०।१७।५६	०५।०३।४६।४७	०५।२९।१६।२३	०६।१४।४६।३२	०३।१५।०२।३४	०५।२२।४६।३२	४५।१२	२१।०९	२३।०५	०१।१८	०३।३६	०५।५२	०८।०७	१०।२५	१२।४३	१४।४८	१६।३४	१८।०५	१९।३२

०६ शुक्रे वल्ली ०८।३८।०५।५८
अयनांशाः २२।३५।४५



१३ शुक्रे वल्ली ०८।३८।०६।०५
अयनांशाः २२।३५।४६



विविधविषयाः- चतुर्थ्यां सरोहिणीकचन्द्रपूजनं कुर्यात्फलादिकं गृहीत्वा चन्द्रञ्च पश्येत्तन्मन्त्रः- सिंहः प्रसेनमवधीत् सिंहो जाम्बवता हतः। सुकुमारक मा रोदीस्तव ह्येष स्यमन्तकः। प्रार्थनामन्त्रश्च- दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णवसंभवम्। नमामि शशिनं भक्त्या शम्भोर्मुकुटभूषणम्। एकादश्यां विष्णोः पार्श्वपरिवर्तनमन्त्राः- प्राप्ते भाद्रपदे मासि एकादश्यां सितेऽहनि। कटिदानं भवेद्विष्णोर्महापूजा प्रवर्त्तते। वासुदेव जगन्नाथ प्राप्तेयं द्वादशी तव। पार्श्वं संपरिवर्तस्व सुखं स्वपिहि माधव। त्वयि सुप्ते जगन्नाथ जगत्सुप्तं भवेदिदम् विबुद्धे त्वयि बुध्येत जगदेतच्चराचरम्।। देवदेव जगन्नाथ योगिगम्य निरंजन। कटिदानं कुरुष्वाद्य मासि भाद्रपद्रे शुभे।। अनन्तधारणमन्त्राः- अनन्तसंसारमहासमुद्रे मग्नं समभ्युद्धर वासुदेव। अनन्तरूपे विनियोजयस्व ह्यनन्तरूपाय नमो नमस्ते।। अगस्त्यार्घदानमन्त्राः- कुम्भयोनिसमुत्पन्न मुनीनां मुनिसत्तम। उदयन्ते लंकाद्वारे अर्घोऽयं प्रतिगृह्यताम्।। शंखं पुष्पं फलं तोयं रत्नानि विविधानि च। उदयन्ते लंकाद्वारे अर्घोऽयं प्रतिगृह्यताम्।। काशपुष्पप्रतीकाश वह्नि मारुतसंभव। उदयन्ते लंकाद्वारे अर्घोऽयं प्रतिगृह्यताम्।। प्रार्थनामन्त्रः- आतापी भक्षितो येन वातापी च महाबलः। समुद्रः शोषितो येन स मेऽगस्त्यः प्रसीदतु।।

ग्रहस्थितिः- मार्गिणः पूर्वोदिताः कुजगुरुशनयः, मार्गी पूर्वोदितो बुधः ४ तः पूर्वास्तः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः

वातावरणम्- पक्षादितस्तृतीयां यावद्वायुमेघवृष्टयस्ततो नवमीं यावत्तापमेघचारखण्डवृष्टयस्ततः पक्षान्तं यावद् वृष्टियोगः।

आश्विनकृष्णपक्षः

शकाब्दः १९२७, संवत् २०६२, सन् १४१३ साल, दि. १९।०९।२००५ ई. तः दि. ०३।१०।२००५ ई. या., उत्तरेकालः।
मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, शुद्धः, ४ तोऽशुद्धारंभः, शरदृतुः सौम्यगोलः, याम्यायनम्।

ति. दि.	तिथयः		नक्षत्राणि		योगाः	करणानि	चन्द्रराशयः		स्पष्टसूर्यः	दिनमानं	सू. उ.	सू. अ.	दिनाङ्काः		
	द. प.	घं. मि.	द. प.	घं. मि.	द. प.	द. प.	रा. द. प.	घं. मि.	राश्यादिः	द. प.	घं. मि.	घं. मि.	रा.	सौ.	अं.
०१ चं.	००।२४	दि.०६।०६	उभा.१३।१७	दि.११।१५	वृ.४६।०२	कौ.००।२४	मीन	अहो.	०५।०२।२३।१२	३०।२०	५।५६	६।०४	२८	०३	१९
०३ मं.	५२।३३	रा.०३।५८	रे.११।०२	"१०।२२	ध्रु.४०।१९	व.२४।१८	मी.११।०२	दि.१०।२२	०५।०३।२१।५२	३०।१६	५।५७	६।०३	२९	०४	२०
०४ बु.	५०।०८	"०२।०१	अ.०९।३६	"०९।४८	व्या.३५।२६	ब.२१।२१	मेष	अहो.	०५।०४।२०।३२	३०।१२	५।५८	६।०२	३०	०५	२१
०५ बृ.	४८।५७	"०१।३२	भ.०९।१४	"०९।४०	ह.३१।२५	कौ.१९।३३	मे.२४।२७	दि.०३।४५	०५।०५।१९।१२	३०।०८	५।५८	६।०२	३१	०६	२२
०६ शु.	४९।००	"०१।३५	कृ.१०।०६	"१०।०१	व.२८।२४	ग.१८।५९	वृष	अहो.	०५।०६।१७।५२	३०।०४	५।५९	६।०१	०१	०७	२३
०७ श.	५०।२२	"०२।०९	रो.१२।१४	"१०।५४	सि.२६।२२	वि.१९।४१	वृ.४३।५७	रा.११।३५	०५।०७।१६।४८	३०।००	६।००	६।००	०२	०८	२४
०८ र.	५२।५६	"०३।११	मृ.१५।४०	"१२।१७	व्य.२५।२३	बा.२१।३९	मिथुन	अहो.	०५।०८।१५।४४	२९।५६	६।०१	५।५९	०३	०९	२५
०९ चं.	५६।३७	"०४।४१	आ.२०।१४	"०२।०८	व.२५।१७	तै.२४।४६	मिथुन	अहो.	०५।०९।१४।४०	२९।५२	६।०२	५।५८	०४	१०	२६
१० मं.	६०।००	अहो.	पुन.२५।४५	"०४।२०	प.२५।५७	व.२८।५४	मि.०९।२३	दि.०९।४७	०५।१०।१३।३६	२९।४८	६।०२	५।५८	०५	११	२७
१० बु.	०१।१०	दि.०६।३१	पु.३१।५५	सा.०६।४९	शि.२७।०७	वि.०१।१०	कर्क	अहो.	०५।११।१२।३२	२९।४४	६।०३	५।५७	०६	१२	२८
११ बृ.	०६।१३	"०८।३३	आश्ले.३८।२७	रा.०९।२७	सि.२८।३७	बा.०६।१३	क.३८।२७	रा.०९।२७	०५।१२।११।२८	२९।४०	६।०४	५।५६	०७	१३	२९
१२ शु.	११।२६	"१०।३९	म.४४।५२	"१२।०२	सा.३०।०४	तै.११।२६	सिंह	अहो.	०५।१३।१०।२३	२९।३६	६।०५	५।५५	०८	१४	३०
१३ श.	१६।१७	"१२।३७	पूफ.५०।४६	"०२।२४	शुभः३१।११	व.१६।१७	सिंह	अहो.	०५।१४।०९।३५	२९।३२	६।०६	५।५४	०९	१५	०१
१४ र.	२०।३१	"०२।१८	उफ.५५।५३	"०४।२७	शु.३१।४४	श.२०।३१	सि.०७।०३	दि.०८।५५	०५।१५।०८।४७	२९।२८	६।०६	५।५४	१०	१६	०२
३० चं.	२३।४०	"०३।३५	ह.५९।५२	"०६।०४	ब्र.३१।२७	ना.२३।४०	कन्या	अहो.	०५।१६।०७।५९	२९।२४	६।०७	५।५३	११	१७	०३

द्वितीयामानम् ५५।३८, दुग्धं त्यजेदाश्विने, गं.५९।०२ उ., पश्चिमोत्तरयात्रा तृतीयायाम्।
पञ्चकान्तो दिवा घं.१० मि.२२ उ., गं. १४।०२ या., भ. २४।१८ उ. ५२।३३ या., पश्चिमयात्रा रेवत्यां तत उत्तरां विना यात्राश्विन्याम्।
क्षीणो गुरुः अशुद्धारम्भश्च ५६।१२, श्रीएकदन्त ४ व्रतम्।
तुलायां गुरुः १०।२८, श्रीइन्द्रविसर्जनम्।
पूर्वदक्षिणयात्रा रोहिण्यां षष्ठयां, भ. ४९।०० उ.।
रात्रौ सप्तम्यामेव भोजनं, रात्र्यन्ते स्त्रीणां विशिष्टभोजनं (ओठगन) नैव, भ. १९।४१ या., द.ति. ५०।२२ उ., दक्षिणयात्रा रोहिण्यां ततः पूर्वां विना यात्रा सप्तम्याम्।
श्रीमहालक्ष्मीव्रतं, श्रीजीमूतवाहनव्रतं (जितिया), द.ति. ५२।५६ या.।
वक्री कुजः ४६।३९, श्रीमहालक्ष्मीव्रत-श्रीजीमूतवाहनव्रतयोःपारणं, मातृनवमी, अन्वष्टकश्राद्धं, पश्चिमदक्षिणयात्रा दशम्याम्। ●पुनर्वसौ तत उत्तरां विना यात्रा पुष्ये।
हस्ते रविः ३१।०३ स्त्रीस्त्रीसूचंयोगो मीनलग्नं शिखिवाहनं जलानाडीपतिर्बुधस्तेन सामान्यवृष्टियोगः, त्र्यहो जन्मदिनकृत्यं, भ. २८।५४ उ., पश्चिमदक्षिणयात्रा मिथुनस्थे चन्द्रे ततः पश्चिमयात्रा ●
उत्तरां विना यात्रा पुष्ये, भ. ०१।१० या.।
इन्दिरा ११ व्रतं सर्वेषां, गं., २७।२७ उ. ४२।२७ या.।
गुडेन पारणं, प्रदोष १३ व्रतं, गजच्छायायोगो घं. १० मि.३९ उपरिदिने, मधुघृतयुतपायसेनात्र श्राद्धं, ज्येष्ठपुत्रवता पिण्डरहितमेवात्र श्राद्धं कार्यं मघायां पिण्डदानेन ज्येष्ठः पुत्रः प्रणश्यतीति ■
अक्टूबर १०, प्रदोष १४ व्रतं, भ. १६।१७ उ. ४८।२४ या., उत्तरयात्रा पूर्वफल्गुन्याम्। ■अनिष्टश्रवणात्, ज्येष्ठपदमत्र सर्वज्येष्ठ परमिति रसमाला, (१३) एकोद्दिष्टं, पूर्वोत्तरयात्रा पूर्वफल्गुन्याम्।□
वृश्चिके शुक्रः १६।४१, शस्त्रादिहतानां श्राद्धं, (१४) एकोद्दिष्टम्। □गजच्छायायोगः:- अश्वयुक्कृष्णकामे च मघास्विन्दौ करे रविः। यदा तदा गजच्छाया श्राद्धे पुण्यमवाप्यते।।
तुलायां बुधः ३७।५१, महालया ३० आश्विनी ३० स्नानदानादिः, पितृपक्षीयपार्वणान्तः, सोमवारीव्रतं घं.०३ मि.३५ यावद्दिने, सूर्यग्रहणं, पितृपक्षीयतर्पणान्तः, दक्षिणयात्रा प्रतिपदि।

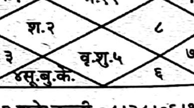
मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

ति. दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः
०१ चं.	००।२०।२३।२५	०५।०५।३३।५०	०५।२९।२९।०८	०६।१५।५४।५२	०३।१५।०९।०६	०५।२२।४३।२१
०३ मं.	००।२०।२८।५३	०५।०७।२०।५३	०५।२९।४१।४३	०६।१७।०३।११	०३।१५।१५।३८	०५।२२।४०।१०
०४ बु.	००।२०।३४।२१	०५।०९।०७।५६	०५।२९।५४।३७	०६।१८।११।३०	०३।१५।२२।१०	०५।२२।३६।५९
०५ बृ.	००।२०।३९।४९	०५।१०।५४।५९	०६।००।०७।२१	०६।१९।१९।४९	०३।१५।२८।४१	०५।२२।३३।४९
०६ शु.	००।२०।४५।१७	०५।१२।४२।०१	०६।००।२०।०५	०६।२०।२८।०८	०३।१५।३५।१२	०५।२२।३०।३९
०७ श.	००।२०।४७।२०	०५।१४।२७।४९	०६।००।३३।०२	०६।२१।३५।२०	०३।१५।४०।३८	०५।२२।२७।२८
०८ र.	००।२०।४८।१९	०५।१६।१३।३७	०६।००।४५।५८	०६।२२।४२।३२	०३।१५।४६।०४	०५।२२।२४।१७
०९ चं.	००।२०।४९।०२	०५।१७।५९।२५	०६।००।५८।५४	०६।२३।४९।४४	०३।१५।५१।३०	०५।२२।२१।०६
१० मं.	००।२०।४८।२७	०५।१९।४५।१३	०६।०१।११।५०	०६।२४।५६।५६	०३।१५।५६।५५	०५।२२।१७।५५
१० बु.	००।२०।४६।५०	०५।२१।३१।००	०६।०१।२४।४६	०६।२६।०४।०८	०३।१६।०२।२०	०५।२२।१४।४४
११ बृ.	००।२०।४५।१३	०५।२३।१६।४७	०६।०१।३७।४२	०६।२७।११।२०	०३।१६।०७।४५	०५।२२।११।३४
१२ शु.	००।२०।४३।३४	०५।२५।०२।३४	०६।०१।५०।३८	०६।२८।१८।३१	०३।१६।१३।१०	०५।२२।०८।२४
१३ श.	००।२०।३७।११	०५।२६।४५।३८	०६।०२।०३।३६	०६।२९।२४।४४	०३।१६।१८।१३	०५।२२।०५।१३
१४ र.	००।२०।३१।०४	०५।२८।२८।४२	०६।०२।१६।३४	०७।००।३०।५७	०३।१६।२३।१६	०५।२२।०२।०२
३० चं.	००।२०।२४।४९	०६।००।११।४६	०६।०२।२९।३२	०७।०१।३७।१०	०३।१६।२८।१९	०५।२१।५८।५१

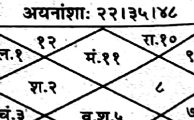
दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सिं.अं.	कं.अं.	तु.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मी.अं.
०१ चं.	४५।१०	२१।०५	२३।०१	०१।१४	०३।३२	०५।४८	०८।०३	१०।२१	१२।३९	१४।४४	१६।३०	१८।०१	१९।२८
०३ मं.	४५।०८	२१।०१	२२।५७	०१।१०	०३।२८	०५।४४	०७।५९	१०।१७	१२।३५	१४।४०	१६।२६	१७।५७	१९।२४
०४ बु.	४५।०६	२०।५८	२२।५४	०१।०७	०३।२५	०५।४१	०७।५६	१०।१४	१२।३२	१४।३७	१६।२३	१७।५४	१९।२१
०५ बृ.	४५।०४	२०।५४	२२।५०	०१।०३	०३।२१	०५।३७	०७।५२	१०।१०	१२।२८	१४।३३	१६।१९	१७।५०	१९।१७
०६ शु.	४५।०२	२०।५१	२२।४७	०१।००	०३।१८	०५।३४	०७।४९	१०।०७	१२।२५	१४।३०	१६।१६	१७।४७	१९।१४
०७ श.	४५।००	२०।४७	२२।४३	००।५६	०३।१४	०५।३०	०७।४५	१०।०३	१२।२१	१४।२६	१६।१२	१७।४३	१९।१०
०८ र.	४४।५८	२०।४३	२२।३९	००।५२	०३।१०	०५।२६	०७।४१	०९।५९	१२।१७	१४।२२	१६।०८	१७।३९	१९।०६
०९ चं.	४४।५६	२०।४०	२२।३६	००।४९	०३।०७	०५।२३	०७।३८	०९।५६	१२।१४	१४।१९	१६।०५	१७।३६	१९।०३
१० मं.	४४।५४	२०।३६	२२।३२	००।४५	०३।०३	०५।१९	०७।३४	०९।५२	१२।१०	१४।१५	१६।०१	१७।३२	१८।५९
१० बु.	४४।५२	२०।३२	२२।२८	००।४१	०२।५९	०५।१५	०७।३०	०९।४८	१२।०६	१४।११	१५।५७	१७।२८	१८।५५
११ बृ.	४४।५०	२०।२९	२२।२५	००।३८	०२।५६	०५।१२	०७।२७	०९।४५	१२।०३	१४।०८	१५।५४	१७।२५	१८।५२
१२ शु.	४४।४८	२०।२५	२२।२१	००।३४	०२।५२	०५।०८	०७।२३	०९।४१	११।५९	१४।०४	१५।५०	१७।२१	१८।४८
१३ श.	४४।४६	२०।२१	२२।१७	००।३०	०२।४८	०५।०४	०७।१९	०९।३७	११।५५	१४।००	१५।४६	१७।१७	१८।४४
१४ र.	४४।४४	२०।१८	२२।१४	००।२७	०२।४५	०५।०१	०७।१६	०९।३४	११।५२	१३।५७	१५।४३	१७।१४	१८।४१
३० चं.	४४।४२	२०।१४	२२।१०	००।२३	०२।४१	०४।५७	०७।१२	०९।३०	११।४८	१३।५३	१५।३९	१७।१०	१८।३७

०६ शुक्रे वल्ली ०८।३८।०६।१२
अयनांशाः २२।३५।४७



१२ शुक्रे वल्ली ०८।३८।०६।१९
अयनांशाः २२।३५।४८



विविधविषयाः:- आश्विनकृष्णपक्षे प्रतिदिनं श्राद्धं कुर्यादिति प्रथमकल्पः। पंचमीमारभ्यामां यावदिति द्वितीयकल्पः। अष्टमीमारभ्यामां यावदिति तृतीयकल्पः। दशमीमारभ्यामां यावदिति चतुर्थः कल्पस्तदभावे एकस्मिन्नपि दिने श्राद्धं कर्त्तव्यमेव। हेमाद्रौ- आषाढ्याः पंचमे पक्षे कन्यासंस्थे दिवाकरे। यो वै श्राद्धं नरः कुर्यादेकस्मिन्नपि वासरे।। तस्य संवत्सरं यावत्सन्तृप्ताः पितरो ध्रुवम्।। श्राद्धकालः- पूर्वाह्णे मातृकं श्राद्धमपराह्णे तु पैतृकम्। एकोद्दिष्टन्तु मध्याह्ने प्रातर्वृद्धिनिमित्तकम्।। जीतमूतवाहनव्रतं भविष्ये- इषे मास्यसिते पक्षे चाष्टमी या तिथिर्भवेत्। पुत्रसौभाग्यदा स्त्रीणां ख्याता सा जीवपुत्रिका।। शालिवाहनराजस्य पुत्रो जीमूतवाहनः। तस्यां पूज्यः स नारीभिः पुत्रसौभाग्यलिप्सया।। हस्तार्के खञ्जनदर्शनमन्त्रः:- नीलग्रीवस्वरूपेण सर्वकामफलप्रद। पृथिव्यामवतीर्णोऽसि खञ्जरीट नमोऽस्तु ते।। तद्दर्शनमाकाशपूर्वपश्चिमोत्तरवायव्यदिक्षु शुभमन्यदिक्ष्वशुभम्। पुनश्च- अब्जेषु गोषु गजवाजिमहोरगेषु राज्यप्रदः कुशलदः शुचिशाद्वलेषु। भस्मास्थिकेशतुषलोमनखेषु दृष्टो दुःखं ददाति बहुशः खलु खञ्जरीटः।

ग्रहस्थितिः:- मार्गी पूर्वोदितः कुजः ९तो वक्री, मार्गी पूर्वास्तो बुधः, मार्गिणौ पूर्वोदितौ गुरुशनी, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः

वातावरणम्- पक्षादिभागे मेघचारतापखण्डवृष्टयस्तदन्तभागे साधारणवृष्टियोगः।

आश्विनशुक्लपक्षः

शकाब्दः १९२७, संवत् २०६२, सन् १४१३ साल, दि. ०४।१०।२००५ ई. तः दि. १७।१०।२००५ ई. या., उत्तरेकालः। मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, ३तः पश्चिमास्तः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, अशुद्धः, शरदृतुः, सौम्यगोलः, याम्यायनम्।

ति. दि.	तिथयः द. प.	तिथयः घं. मि.	नक्षत्राणि द. प.	नक्षत्राणि घं. मि.	योगाः द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः रा. द. प.	चन्द्रराशयः घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं द. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	दिनाङ्काः रा.	सौ.	अं.
०१ मं.	२५।४८	दि.०४।२७	चि.६०।००	अहो.	ऐं.३०।२१	ब.२५।४८	कं.३१।१७	सा.०६।३९	०५।१७।०७।११	२९।२०	६।०८	५।५२	१२	१८	०४
०२ बु.	२६।३४	"०४।४७	चि.०२।४२	दि.०७।१४	वै.२८।११	कौ.२६।३४	तुला	अहो.	०५।१८।०६।२२	२९।१६	६।०९	५।५१	१३	१९	०५
०३ वृ.	२६।०१	"०४।३३	स्वा.०४।१७	"०७।५२	वि.२५।०१	ग.२६।०१	तु.४९।३३	रा.०१।५८	०५।१९।०५।३३	२९।१३	६।०९	५।५१	१४	२०	०६
०४ शु.	२४।१७	"०३।५३	वि.०४।३८	"०८।०१	प्री.२०।५२	वि.२४।१७	वृश्चिक	अहो.	०५।२०।०४।४४	२९।१०	६।१०	५।५०	१५	२१	०७
०५ श.	२१।२६	"०२।४५	अनु.०३।४८	"०७।४२	आ.१५।५२	बा.२१।२६	वृश्चिक	अहो.	०५।२१।०४।१२	२९।०६	६।११	५।४९	१६	२२	०८
०६ र.	१७।३७	"०१।१५	ज्ये.०१।५९	"०७।००	सौ.१०।०३	तै.१७।३७	वृ.०१।५९	दि.०७।००	०५।२२।०३।४०	२९।०२	६।१२	५।४८	१७	२३	०९
०७ चं.	१२।५८	"११।२३	पूषा.५५।४८	रा.०४।३१	शो.०३।२८	व.१२।५८	धनु	अहो.	०५।२३।०३।०८	२८।५८	६।१२	५।४८	१८	२४	१०
०८ मं.	०७।४१	"०९।१७	उषा.५२।०८	"०३।०४	सु.४८।४८	ब.०७।४१	ध.०९।५३	दि.१०।१०	०५।२४।०२।३५	२८।५४	६।१३	५।४७	१९	२५	११
०९ बु.	०१।५५	"०७।००	श्र.४८।०१	"०१।२६	धृ.४१।०३	कौ.०१।५५	मकर	अहो.	०५।२५।०२।०२	२८।५०	६।१४	५।४६	२०	२६	१२
११ वृ.	४९।५३	रा.०२।१२	ध.४३।४५	"११।४५	शू.३३।१०	व.२२।५५	म.१५।५३	दि.१२।३६	०५।२६।०१।२९	२८।४६	६।१५	५।४५	२१	२७	१३
१२ शु.	४४।०१	"११।५२	श.३९।४०	"१०।०८	गं.२५।२२	ब.१६।५७	कुम्भ	अहो.	०५।२७।००।५६	२८।४२	६।१६	५।४४	२२	२८	१४
१३ श.	३८।२६	"०९।३८	पूभा.३५।५५	"०८।३८	वृ.१७।५०	कौ.११।१४	कुं.२१।५२	दि.०३।०१	०५।२८।००।३९	२८।३८	६।१६	५।४४	२३	२९	१५
१४ र.	३३।२४	"०७।३९	उभा.३२।४१	"०७।२१	ध्रु.१०।३८	ग.०५।५५	मीन	अहो.	०५।२९।००।२२	२८।३४	६।१७	५।४३	२४	३०	१६
१५ चं.	२९।०८	सा.०५।५७	रे.३०।१४	सा.०६।२४	व्या.०३।५८	वि.०१।१६	मी.३०।१४	सा.०६।२४	०६।००।००।०५	२८।३०	६।१८	५।४२	२५	३१	१७

शारदीयनवरात्रारम्भः, कलशस्थापनं, श्रीदुर्गापूजनोत्सवः, अश्वारुढाया देव्या आगमनफलं क्षत्रभङ्गकरं, नवरात्रव्रतारम्भः, पूर्वदक्षिणयात्रा द्वितीयायां कन्यास्थे चन्द्रे ततः पश्चिमदक्षिणयात्रा।

चन्द्रदर्शनं मु. १५ फलं महार्घं, श्रीरेमन्तपूजनं, पश्चिमदक्षिणयात्रा द्वितीयायाम्।

पश्चिमास्तो गुरुः ५६।१२, श्रीगणेश ४ व्रतं, भ. ५५।०९ उ., पश्चिमयात्रा स्वात्याम्।

भ. २४।१७ या., उत्तरयात्रानुराधायाम्।

गं. ५५।५९ उ., पश्चिमोत्तर यात्रा षष्ठ्याम्।

मूलमानम् ५७।१९, पश्चिमोदितो बुधः ०३।४६, गजपूजा बिल्वाभिमन्त्रणञ्च, सरस्वत्या आवाहनं पूजनञ्च, गं. १०।५९ या., पूर्वोत्तरयात्रा सप्तम्याम्।

अतिगण्डयोगमानम् ५२।५२, पत्रिकाप्रवेशः, महारात्रिर्निशापूजा, भ. १२।५८ उ. ४०।२० या., द.ति. १२।५८ उ., (७-८) एकोद्दिष्टम्। ● उत्तरां विना यात्रा श्रवणायाम्।

चित्रायां रविः ०१।३० पुंस्त्रीसूचंयोगस्तुलालग्नं रासभवाहनं जलानाडीपतिश्शुक्रस्तेन खण्डवृष्टियोगः, महाष्टमीमहानवमीव्रतं, त्रिशूलिनीपूजा, दीक्षाग्रहणं, द.ति. ०७।४१ या., ●

दशमीमानम् ५४।०३, सरस्वतीविसर्जनं, पञ्चकारम्भो रात्रौ घं. ०१ मि. २६ उपरि, विजया १०, अपराजितापूजा, देवीविसर्जनं, जयन्तीधारणं, नीलकण्ठदर्शनं, यात्रा, सीमोल्लङ्घनं, ☐

पाशाङ्कुशा ११ व्रतं स्मार्त्तानां, भ. २२।५५ उ. ४९।५३ या., पूर्वयात्रा मकरस्थे चन्द्रे ततः पश्चिमयात्रा धनिष्ठायाम्।

पाशाङ्कुशा ११ व्रतं वैष्णवानां, श्रीपद्मनाभ १२ गुडेन पारणम्। ☐ दक्षसावर्णिमन्वादिः, गजवाहनाया देव्या गमनफलं वृष्टिप्रदं, नवरात्रव्रतपारणम्, उत्तरां विना यात्रा दशम्यां श्रवणायां ततः पूर्वयात्रा।

प्रदोष १३ व्रतं, पश्चिमयात्रा कुम्भस्थे चन्द्रे तत उत्तरयात्रा पूर्वभाद्रे।

मासान्तः प्रदोष १४ व्रतं, भ. ३३।२४ उ.।

हर्षणयोगमानम् ५४।०१, तुलायां रविः ४४।१० मु. ३० फलं साम्यं धान्यविषुवसंक्रान्तिपुण्यकालो घं. १२ मि. ०० उपरिदिने, याम्यगोलारम्भः ४४।१० उ., आश्विनी १५ स्नानदानादिः, ■

■ आदिकविवाल्मीकिजयन्ती, कौमुदीमहोत्सवः (कोजागरा) प्रदोषे घं. ०६ मि. १८ यावद्रात्रौ श्रीलक्ष्मीपूजनं, पञ्चकान्तःसायं घं. ०६ मि. २४ उपरि, कार्त्तिकस्नानारंभः, सिमरियाघट्टे कल्पवासारंभः, चन्द्रग्रहणं, भ. ०१।१६ या., गं. १८।१४ उ. ३३।१४ या.।

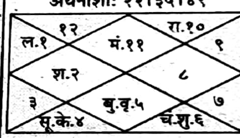
मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

ति. दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं
०१ मं.	००।२०।१८।३४	०६।०१।५४।५०	०६।०२।४२।३०	०७।०२।४३।२३	०३।१६।३३।२२	०५।२१।५५।४०	४४।४०
०२ बु.	००।२०।१२।२०	०६।०३।३७।५४	०६।०२।५५।२८	०७।०३।४९।३६	०३।१६।३८।२५	०५।२१।५२।२९	४४।३८
०३ वृ.	००।२०।०६।०६	०६।०५।२०।५७	०६।०३।०८।२६	०७।०४।५५।४९	०३।१६।४३।२८	०५।२१।४९।१९	४४।३६
०४ शु.	००।१९।५९।५२	०६।०७।०४।००	०६।०३।२१।२४	०७।०६।०२।०१	०३।१६।४८।३१	०५।२१।४६।०९	४४।३५
०५ श.	००।१९।४८।५६	०६।०८।३९।३८	०६।०३।३४।३६	०७।०७।०७।०२	०३।१६।५३।०९	०५।२१।४२।५८	४४।३३
०६ र.	००।१९।३८।००	०६।१०।१५।१६	०६।०३।४७।४८	०७।०८।१२।०३	०३।१६।५७।४७	०५।२१।३९।४७	४४।३१
०७ चं.	००।१९।२७।०५	०६।११।५०।५४	०६।०४।०१।००	०७।०९।१७।०४	०३।१७।०२।२५	०५।२१।३६।३६	४४।२९
०८ मं.	००।१९।१६।१०	०६।१३।२६।३१	०६।०४।१४।१२	०७।१०।२२।०५	०३।१७।०७।०३	०५।२१।३३।२५	४४।२७
०९ बु.	००।१९।०५।१५	०६।१५।०२।०८	०६।०४।२७।२४	०७।११।२७।०६	०३।१७।११।४०	०५।२१।३०।१४	४४।२५
११ वृ.	००।१८।५४।२०	०६।१६।३७।४५	०६।०४।४०।३६	०७।१२।३२।०७	०३।१७।१६।१७	०५।२१।२७।०३	४४।२३
१२ शु.	००।१८।४३।२५	०६।१८।१३।२२	०६।०४।५३।४८	०७।१३।३७।०८	०३।१७।२०।५४	०५।२१।२३।५३	४४।२१
१३ श.	००।१८।२७।५७	०६।१९।३७।१९	०६।०५।०६।५२	०७।१४।४०।१३	०३।१७।२४।५१	०५।२१।२०।४२	४४।१९
१४ र.	००।१८।१२।२९	०६।२१।०२।१६	०६।०५।१९।५५	०७।१५।४३।१७	०३।१७।२८।४८	०५।२१।१७।३१	४४।१७
१५ चं.	००।१७।५७।०१	०६।२२।२५।१३	०६।०५।३२।५८	०७।१६।४६।२१	०३।१७।३२।४५	०५।२१।१४।२०	४४।१५

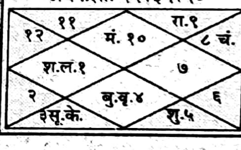
दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सिं.अं.	कं.अं.	तु.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मी.अं.
०१ मं.	२०।१०	२२।०६	००।१९	०२।३७	०४।५३	०७।०८	०९।२६	११।४४	१३।४९	१५।३५	१७।०६	१८।३३
०२ बु.	२०।०७	२२।०३	००।१६	०२।३४	०४।५०	०७।०५	०९।२३	११।४१	१३।४६	१५।३२	१७।०३	१८।३०
०३ वृ.	२०।०३	२१।५९	००।१२	०२।३०	०४।४६	०७।०१	०९।१९	११।३७	१३।४२	१५।२८	१६।५९	१८।२६
०४ शु.	१९।५९	२१।५५	००।०८	०२।२६	४०।४२	०६।५७	०९।१५	११।३३	१३।३८	१५।२४	१६।५५	१८।२२
०५ श.	१९।५६	२१।५२	००।०५	०२।२३	०४।३९	०६।५४	०९।१२	११।३०	१३।३५	१५।२१	१६।५२	१८।१९
०६ र.	१९।५२	२१।४८	००।०१	०२।१९	०४।३५	०६।५०	०९।०८	११।२६	१३।३१	१५।१७	१६।४८	१८।१५
०७ चं.	१९।४९	२१।४५	२३।५८	०२।१६	०४।३२	०६।४७	०९।०५	११।२३	१३।२८	१५।१४	१६।४५	१८।१२
०८ मं.	१९।४५	२१।४१	२३।५४	०२।१२	०४।२८	०६।४३	०९।०१	११।१९	१३।२४	१५।१०	१६।४१	१८।०८
०९ बु.	१९।४१	२१।३७	२३।५०	०२।०८	०४।२४	०६।३९	०८।५७	११।१५	१३।२०	१५।०६	१६।३७	१८।०४
११ वृ.	१९।३८	२१।३४	२३।४७	०२।०५	०४।२१	०६।३६	०८।५४	११।१२	१३।१७	१५।०३	१६।३४	१८।०१
१२ शु.	१९।३४	२१।३०	२३।४३	०२।०१	०४।१७	०६।३२	०८।५०	११।०८	१३।१३	१४।५९	१६।३०	१७।५७
१३ श.	१९।३०	२१।२६	२३।३९	०१।५७	०४।१३	०६।२८	०८।४६	११।०४	१३।०९	१४।५५	१६।२६	१७।५३
१४ र.	१९।२७	२१।२३	२३।३६	०१।५४	०४।१०	०६।२५	०८।४३	११।०१	१३।०६	१४।५२	१६।२३	१७।५०
१५ चं.	१९।२३	२१।१९	२३।३२	०१।५०	०४।०६	०६।२१	०८।३९	१०।५७	१३।०२	१४।४८	१६।१९	१७।४६

४ शुक्रे वल्ली ०८।३८।०६।२६
अयनांशाः २२।३५।४९



१२ शुक्रे वल्ली ०८।३८।०६।३३
अयनांशाः २२।३५।५०



विविधविषयाः- प्रतिपदि कलशस्थापनं ततो देवीपूजनपूर्वकनवदिनं यावच्छप्तशतीस्तोत्रपुराणादिधर्मग्रन्थपाठः मन्त्रजपश्च कर्त्तव्यः। दुर्गाऽऽगमनयानविचारः- शशिसूर्ये गजारूढा शनिभौमे तुरंगमे। गुरौ शुक्रे च दोलायां बुधे नौका प्रकीर्त्तिता॥ **तत्फलम्** - गजे च जलदा देवी क्षत्रभंगस्तुरंगमे। नौकायां सर्वसिद्धिः स्याद्दोलायां मरणं ध्रुवम्॥ विजयादशम्यां देव्या गमनयानफलं- शशिसूर्यदिने यदि सा विजया महिषागमने रुजशोककरा, शनिभौमदिने यदि सा विजया चरणायुधयानकरी विकला। बुधशुक्रदिने यदि सा विजया गजवाहनगा शुभवृष्टिकरा, सुरराजगुरौ यदि सा विजया नरवाहनगा शुभसौख्यकरा। **दुर्गापाठमहत्त्वम्**- यथाश्वमेधः क्रतुराड् देवानां च यथा हरिः। स्तवानामपि सर्वेषां तथा सप्तशतीस्तवः। चण्ड्याः शतावृत्तिपाठात् सर्वाः सिध्यन्ति सिद्धयः। **विल्वपत्रत्रोटनमन्त्रः**- अमृतोद्भव श्रीवृक्ष शंकरस्य सदा प्रिय। क्षमस्व शिवपूजार्थं तव पत्रं चिनोम्यहम् । **तुलसीपत्रत्रोटनमन्त्रः**- तुलस्यमृतजन्मा त्वं केशवस्य सदा प्रिया। क्षमस्व हरिपूजार्थं तव पत्रं चिनोम्यहम् । **नीलकण्ठदर्शनमन्त्रः**- नीलकण्ठाय भद्राय भद्ररूपाय ते नमः। भद्रत्वं देहि मे भद्रमाशां पूरय पूरय॥ **खञ्जनदर्शनमन्त्रः**- नारायणशरीरोत्थ संवत्सरशुभप्रद। शालग्रामशिलाकण्ठ खञ्जरीट नमोऽस्तुते॥

ग्रहस्थितिः- वक्री पूर्वोदितः कुजः, मार्गी पूर्वास्तो बुधः ६तः पश्चिमोदितः, मार्गी पूर्वोदितो गुरुः ३तः पश्चिमास्तः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, मार्गी पूर्वोदितः शनिः।

वातावरणम्- पक्षादिभागे वायुमेघचारस्वल्पखण्डवृष्टयस्तदन्तभागे खण्डवृष्टिवायुमेघचारादयः।

कार्त्तिककृष्णपक्षः

शकाब्दः १९२७, संवत् २०६२, सन् १४१३ साल, दि. १८।१०।२००५ ई. तः दि. ०२।११।२००५ ई. या., उत्तरेकालः। मार्गी पश्चिमास्तो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, अशुद्धः, शरदृतुः, याम्यगोलः, याम्यायनम्।

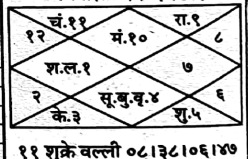
ति. दि.	तिथयः द. प.	तिथयः घं. मि.	नक्षत्राणि द. प.	नक्षत्राणि घं. मि.	योगाः द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः रा. द. प.	चन्द्रराशयः घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं द. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	दिनाङ्काः रा.	दिनाङ्काः सौ.	दिनाङ्काः अं.
०१ मं.	२५।४३	दि.०४।३६	अ.२८।३४	सा.०५।४५	व.५२।४७	कौ.२५।४३	मेष	अहो.	०६।००।५८।४८	२८।२६	६।१९	५।४१	२६	०१	१८
०२ बु.	२३।२२	"०३।४१	भ.२७।५७	"०५।३१	सि.४८।२५	ग.२३।२२	मे.४३।०६	रा.११।३४	०६।०१।५९।३१	२८।२२	६।२०	५।४०	२७	०२	१९
०३ बृ.	२२।१३	"०३।१३	कृ.२८।३२	"०५।४३	व्य.४५।०४	वि.२२।१३	वृष	अहो.	०६।०२।५९।१४	२८।१८	६।२०	५।४०	२८	०३	२०
०४ शु.	२२।२१	"०३।१७	रो.३०।२२	"०६।३०	व.४२।४३	बा.२२।२१	वृष	अहो.	०६।०३।५८।५६	२८।१४	६।२१	५।३९	२९	०४	२१
०५ श.	२३।४८	"०३।५३	मृ.३३।२८	रा.०७।४५	प.४१।२५	तै.२३।४८	वृ.०१।५५	दि.०७।०८	०६।०४।५८।५५	२८।१०	६।२२	५।३८	३०	०५	२२
०६ र.	२६।२७	"०४।५८	आ.३७।४१	"०९।२७	शि.४०।५६	व.२६।२७	मिथुन	अहो.	०६।०५।५८।५४	२८।०६	६।२३	५।३७	०१	०६	२३
०७ चं.	३०।१५	सा.०६।३०	पुन.४२।५९	"११।३६	सि.४१।२१	ब.३०।१५	मि.२६।४०	सा.०५।०४	०६।०६।५८।५२	२८।०२	६।२४	५।३६	०२	०७	२४
०८ मं.	३४।५४	रा.०८।२२	पु.४८।५९	"०२।००	सा.४२।१९	बा.०२।३५	कर्क	अहो.	०६।०७।५८।५०	२७।५८	६।२४	५।३६	०३	०८	२५
०९ बु.	४०।०२	"१०।२६	आश्ले.५५।२८	"०४।३६	शुभ.४३।४०	तै.०७।२८	क.५५।२८	रा.०४।३६	०६।०८।५८।४८	२७।५४	६।२५	५।३५	०४	०९	२६
१० बृ.	४५।२०	"१२।३४	म.६०।००	अहो.	शु.४५।०५	व.१२।४१	सिंह	अहो.	०६।०९।५८।४६	२७।५१	६।२६	५।३४	०५	१०	२७
११ शु.	५०।१९	"०२।३४	म.०१।५५	दि.०७।१२	ब्र.४६।१५	ब.१७।५०	सिंह	अहो.	०६।१०।५८।४४	२७।४८	६।२६	५।३४	०६	११	२८
१२ श.	५४।३६	"०४।१७	पूफ.०७।५९	"०९।३९	ऐं.४६।५६	कौ.२२।२८	सिं.२४।३०	दि.०४।१५	०६।११।५८।५८	२७।४४	६।२७	५।३३	०७	१२	२९
१३ र.	५७।५२	"०५।३७	उफ.१३।१९	"११।४८	वै.४६।५३	ग.२६।१४	कन्या	अहो.	०६।१२।५९।११	२७।४१	६।२८	५।३२	०८	१३	३०
१४ चं.	६०।००	अहो.	ह.१७।३६	"०१।३०	वि.४५।५७	वि.२८।५८	कं.४९।११	रा.०२।०८	०६।१३।५९।२४	२७।३८	६।२८	५।३२	०९	१४	३१
१४ मं.	००।०४	दि.०६।३१	चि.२०।४६	"०२।४७	प्री.४४।०२	श.००।०४	तुला	अहो.	०६।१४।५९।३७	२७।३५	६।२९	५।३१	१०	१५	०१
३० बु.	००।५३	"०६।५१	स्वा.२२।३९	"०३।३४	आ.४१।०७	ना.००।५३	तुला	अहो.	०६।१५।५९।५०	२७।३२	६।३०	५।३०	११	१६	०२

मासादिः, कार्त्तिके यमुनास्नानं महापुण्यप्रदं, कार्त्तिके द्विदलं त्यजेत्।
भ. ५२।४८ उ.।
श्रीकृष्णपिङ्ग ४ व्रतं, करकचतुर्थी, भ. २२।१३ या.।
पूर्वदक्षिणयात्रा रोहिण्यां ततः पश्चिमां विना यात्रा, गृहारम्भः पञ्चम्यां रोहिण्याम्।
पूर्वां विना यात्रा षष्ठ्यां मृगशिरसि। प्रमोद ठाकुर के लड़का जन्म १२।५४ मि० रात्री में
वृश्चिके बुधः ३१।३७, अशोकचन्दनषष्ठी, भ. २६।२७ उ. ५८।२१ या., दक्षिणयात्रा पुनर्वसौ।
स्वात्यां रविः २५।०८ स्त्रीस्त्रीसूचंयोगो मीनलग्नं शृगालवाहनं नीरानाडीपतिश्शुक्रस्तेन खण्डवृष्टिः, पश्चिमोत्तरयात्राष्टम्यां पुनर्वसौ ततः पूर्वां विना यात्रा पुष्ये।
उत्तरां विना यात्रा पुष्ये।
गं. ४४।२८ उ. ५९।२८ या.।
भ. १२।४१ उ. ४५।२० या.।
रम्भा ११ व्रतं सर्वेषां, द.ति. ५०।१९ उ., पूर्वोत्तरयात्रा पूर्वफल्गुन्यामेकादश्याम्।
गोवत्स १२, बिल्वदलेन तुलसीदलेन वा पारणं, द.ति. ५४।३६ या.। ●दारिद्र्यनिस्सारणम्, अकृतपितृपक्षपार्वणैरद्यावश्यमेव पार्वणं विधेयं, पश्चिमदक्षिणयात्रा चतुर्दश्यां, श्रीकालीपूजा।
मूले धनुषि शुक्रः ४३।११, धन्वन्तरिजयन्ती (धनतेरस) प्रदोष १३ व्रतं, भ. ५७।५२ उ., पूर्वदक्षिणयात्रा त्रयोदश्यां हस्ते। □ पश्चिमदक्षिणयात्रा प्रतिपदि स्वात्याम्।
प्रदोष १४ व्रतं, श्रीहनुमज्जन्मोत्सवः, हनुमद्ध्वजदानं पूजनञ्च, वायुपुराणे- कार्त्तिकस्यासिते पक्षे स्वात्यां भौमे चतुर्दशी। मेषलग्नेऽञ्जनीगर्भात् स्वयं जातो हरः शिवः।। भ. २८।५८ या.।
नवम्बर ११, कार्त्तिकी ३० स्नानदानादिः, दीपावली, सुखरात्रिः प्रदोषे घं. ०७ मि. ०६ यावद्रात्रौ श्रीलक्ष्मीपूजनमुल्काभ्रमणं पितृविसर्जनञ्च, रात्रिशेषे शूर्पवादनपुरस्सरं गृहाद् ●
गोक्रीडा, गोपूजा, गोवर्द्धनपूजनोत्सवः, अन्नकूटः, वृषभे औषधिदानम्, अग्न्यादिदेवोत्थापनं, महाकविकालिदासजयन्ती, उच्चैठग्रामे तज्जन्मस्थले उज्जयिन्यां कर्मस्थले च जयन्त्युत्सवः, □

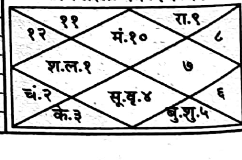
मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च / दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सिं.अं.	कं.अं.	तु.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मी.अं.
०१ मं.	००।१७।४१।३४	०६।२३।४९।१०	०६।०५।४६।०१	०७।१७।४९।२५	०३।१७।३६।४१	०५।२२।११।०९	४४।१३	१९।१९	२२।१५	२३।२८	०१।४६	०४।०२	०६।१७	०८।३५	१०।५३	१२।५८	१४।४४	१६।१५	१७।४२
०२ बु.	००।१७।२६।०७	०६।२५।१३।०७	०६।०५।५९।०४	०७।१८।५२।२९	०३।१७।४०।३७	०५।२२।०७।५८	४४।११	१९।१५	२२।११	२३।२४	०१।४२	०३।५८	०६।१३	०८।३१	१०।४९	१२।५४	१४।४०	१६।११	१७।३८
०३ बृ.	००।१७।१०।४०	०६।२६।३७।०४	०६।०६।१२।०७	०७।१९।५५।३३	०३।१७।४४।३३	०५।२२।०४।४८	४४।०९	१९।११	२२।०७	२३।२०	०१।३८	०३।५४	०६।०९	०८।२७	१०।४५	१२।५०	१४।३६	१६।०७	१७।३४
०४ शु.	००।१६।५५।१३	०६।२८।०२।०१	०६।०६।२५।१०	०७।२०।५८।३७	०३।१७।४८।२९	०५।२२।०१।३८	४४।०७	१९।०७	२२।०३	२३।१६	०१।३४	०३।५०	०६।०५	०८।२३	१०।४१	१२।४६	१४।३२	१६।०३	१७।३०
०५ श.	००।१६।३८।५७	०६।२९।०७।२३	०६।०६।३८।०७	०७।२१।५९।२५	०३।१७।५१।३९	०५।२०।५८।२७	४४।०५	१९।०३	२०।५९	२३।१२	०१।३०	०३।४६	०६।०१	०८।१९	१०।३७	१२।४२	१४।२८	१५।५९	१७।२६
०६ र.	००।१६।२२।४२	०७।००।२३।४५	०६।०६।५१।०४	०७।२३।००।१३	०३।१७।५४।४८	०५।२०।५५।१६	४४।०३	१८।५९	२०।५५	२३।०८	०१।२६	०३।४२	०५।५७	०८।१५	१०।३३	१२।३८	१४।२४	१५।५५	१७।२२
०७ चं.	००।१६।०६।२७	०७।०१।२०।०७	०६।०७।०४।०१	०७।२४।०१।०१	०३।१७।५७।५७	०५।२०।५२।०५	४४।०१	१८।५५	२०।५१	२३।०४	०१।२२	०३।३८	०५।५३	०८।११	१०।२९	१२।३४	१४।२०	१५।५१	१७।१८
०८ मं.	००।१५।५०।१२	०७।०२।२६।२९	०६।०७।१६।५७	०७।२५।०१।४९	०३।१८।०१।०६	०५।२०।४८।५४	४३।५९	१८।५२	२०।४८	२३।०१	०१।१९	०३।३५	०५।५०	०८।०८	१०।२६	१२।३१	१४।१७	१५।४८	१७।१५
०९ बु.	००।१५।३३।५७	०७।०३।३२।५१	०६।०७।२९।५३	०७।२६।०२।३६	०३।१८।०४।१५	०५।२०।४५।४३	४३।५७	१८।४८	२०।४४	२२।५७	०१।१५	०३।३१	०५।४६	०८।०४	१०।२२	१२।२७	१४।१३	१५।४४	१७।११
१० बृ.	००।१५।१७।४२	०७।०४।३९।१३	०६।०७।४२।४९	०७।२७।०३।२३	०३।१८।०७।२४	०५।२०।४२।३३	४३।५५	१८।४४	२०।४०	२२।५३	०१।११	०३।२७	०५।४२	०८।००	१०।१८	१२।२३	१४।०९	१५।४०	१७।०७
११ शु.	००।१५।०१।२७	०७।०५।४५।३४	०६।०७।५५।४५	०७।२८।०४।१०	०३।१८।१०।३३	०५।२०।३९।२३	४३।५४	१८।४०	२०।३६	२२।४९	०१।०७	०३।२३	०५।३८	०७।५६	१०।१४	१२।१९	१४।०५	१५।३६	१७।०३
१२ श.	००।१४।४४।५४	०७।०६।२२।३०	०६।०८।०९।०७	०७।२९।०२।२४	०३।१८।१२।५३	०५।२०।३६।१२	४३।५२	१८।३६	२०।३२	२२।४५	०१।०३	०३।१९	०५।३४	०७।५२	१०।१०	१२।१५	१४।०१	१५।३२	१६।५९
१३ र.	००।१४।२८।२१	०७।०६।५९।२६	०६।०८।२२।२८	०८।००।००।३८	०३।१८।१५।१३	०५।२०।३३।०१	४३।५०	१८।३२	२०।२८	२२।४१	००।५९	०३।१५	०५।३०	०७।४८	१०।०६	१२।११	१३।५७	१५।२८	१६।५५
१४ चं.	००।१४।११।४८	०७।०७।३६।२१	०६।०८।३५।४९	०८।००।५८।५२	०३।१८।१७।३३	०५।२०।२९।५०	४३।४८	१८।२८	२०।२४	२२।३७	००।५५	०३।११	०५।२६	०७।४४	१०।०२	१२।०७	१३।५३	१५।२४	१६।५१
१४ मं.	००।१३।५५।१५	०७।०८।१३।१६	०६।०८।४९।१०	०८।०१।५७।०५	०३।१८।१९।५३	०५।२०।२६।३९	४३।४६	१८।२४	२०।२०	२२।३३	००।५१	०३।०७	०५।२२	०७।४०	०९।५८	१२।०३	१३।४९	१५।२०	१६।४७
३० बु.	००।१३।३८।४३	०७।०८।५०।११	०६।०९।०२।३१	०८।०२।५५।१८	०३।१८।२२।१२	०५।२०।२३।२८	४३।४५	१८।२०	२०।१६	२२।२९	००।४७	०३।०३	०५।१८	०७।३६	०९।५४	११।५९	१३।४५	१५।१६	१६।४३

४ शुक्रे वल्ली ०८।३८।०६।४०
अयनांशाः २२।३५।५१



११ शुक्रे वल्ली ०८।३८।०६।४७
अयनांशाः २२।३५।५२



विविधविषयाः:- कार्त्तिकि सकलं मासं प्रातःस्नायी जितेन्द्रियः। जपन् हविष्यभुक् शान्तः सर्वपापैः प्रमुच्यते।। **प्रातः स्नानमन्त्रः**:- कार्त्तिकेऽहं करिष्यामि प्रातः स्नानं जनार्दन। प्रीत्यर्थं तव देवेश दामोदर मया सह।। **धात्रीमाहात्म्यम्** - धात्रीच्छायां समाश्रित्य भुंक्ते योऽन्नं हि मानवः। ब्राह्मणान् भोजयित्वा तु वार्षिकं किल्विषं हरेत्।। धात्रीफलविलिप्तांगो धात्रीफलविभूषितः। धात्रीफलकृताहारो नरो नारायणो भवेत्। **उल्काभ्रमणमन्त्रः**:- शस्त्राशस्त्रहतानां च भूतानां भूतदर्शयोः। उज्ज्वलज्योतिषा देहं निर्दहे व्योमवह्निना।। अग्निदग्धाश्च ये जीवा येऽप्यदग्धाः कुले मम। उज्ज्वलज्योतिषा दग्धास्ते यान्तु परमां गतिम्।। यमलोकं परित्यज्य आगता ये महालये। उज्ज्वलज्योतिषा वर्त्म प्रपश्यन्तो व्रजन्तु ते।। **तुलासंक्रमणे आकाशदीपदानफलम्** - तुलायां तिलतैलेन सायंकाले समागते। आकाशदीपं यो दद्यान्मासमेकं हरिं प्रति।। महतीं श्रियमवाप्नोति रूपसौभाग्यसम्पदः। **दीपदानमन्त्रः**:- दामोदराय नभसि तुलायां लोलया सह। प्रदीपं ते प्रयच्छामि नमोऽनन्ताय वेधसे।।

ग्रहस्थितिः:- वक्री पूर्वोदितः कुजः, मार्गिणौ पश्चिमोदितौ बुधशुक्रौ, मार्गी पश्चिमास्तो गुरुः, मार्गी पूर्वोदितः शनिः।

वातावरणम्- पक्षाद्यन्तभागयोस्तापवायुमेघचारच्छिन्नवृष्टयस्तन्मध्यभागे मेघचारवायुस्वल्पखण्डवृष्टयः।

कार्त्तिकशुक्लपक्षः

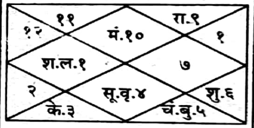
शकाब्दः १९२७, संवत् २०६२, सन् १४१३ साल, दि. ०३।११।२००५ ई. तः दि. १५।११।२००५ ई. या., उत्तरेकालः। मार्गी पश्चिमास्तो गुरुः, ५तः पूर्वोदितः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, अशुद्धः, शरदृतुः, याम्यगोलः, याम्यायनम्।

ति. दि.	तिथयः द. प.	तिथयः घं. मि.	नक्षत्राणि द. प.	नक्षत्राणि घं. मि.	योगाः द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः रा. द. प.	चन्द्रराशयः घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं द. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	दिनाङ्काः रा.	सौ.	अं.	कार्त्तिकशुक्लपक्षः
०१वृ.	००।२४	दि.०६।४०	वि.२३।१६	दि.०३।४८	सौ.३७।११	ब.००।२४	तु.०८।०७	दि.०९।४५	०६।१७।००।०३	२७।२९	६।३०	५।३०	१२	१७	०३	द्वितीयामानम् ५८।१८, चन्द्रदर्शनं मु. ३० फलं साम्यं, भ्रातृद्वितीया, भगिनीगृहे भोजनं, श्रीचित्रगुप्तपूजा, यमुनास्नानं, पश्चिमोत्तरयात्रानुराधायाम्।
०३शु.	५५।५३	रा.०४।५२	अनु.२२।४२	"०३।३६	शो.३२।१७	तै.२७।१८	वृश्चिक	अहो.	०६।१८।००।१६	२७।२६	६।३१	५।२९	१३	१८	०४	कटुमहुली तृतीया, उत्तरयात्रा। त्रयोदशदिनकपक्षफलम्- त्रयोदशदिने पक्षे तदा संहरते जगत्। अपि वर्षसहस्रेण कालयोगः प्रकीर्तितः॥
०४श.	५२।०८	"०३।२३	ज्ये.२१।०५	"०२।५८	आगं.२६।३३	व.२४।०१	वृ.२१।०५	दि.०२।५८	०६।१९।००।४१	२७।२२	६।३२	५।२८	१४	१९	०५	श्रीगणेश ४ व्रतं, गं. १५।०५ उ. ३०।०५ या., म. २४।०१ उ. ५२।०८ या., पश्चिमोत्तरयात्रा ज्येष्ठायां तत उत्तरयात्रा चतुर्थ्याम्।
०५र.	४७।३०	"०१।३२	मू.१८।४०	"०२।००	सु.२०।०९	ब.१९।४९	धनु	अहो.	०६।२०।०१।०६	२७।१९	६।३२	५।२८	१५	२०	०६	विशाखायां रविः ४२।३३, पूर्वोदितो गुरुः ३१।२६, प्रतिहारषष्ठीव्रतस्यैकभुक्तादिकं (खरना), पूर्वोत्तरयात्रा पञ्चम्याम्।
०६चं.	४२।१६	"११।२७	पूषा.१५।२९	"११।४५	धृ.१३।०८	कौ.१४।५३	ध.२९।३३	सा.०६।२२	०६।२१।०१।३१	२७।१६	६।३३	५।२७	१६	२१	०७	वक्री बुधः ४३।५४, प्रतिहारषष्ठीव्रतं, सायंकालिकप्रथमार्घदानम्, उत्तरयात्रा पूर्वाषाढे।
०७मं.	३६।३५	"०९।११	उषा.११।४३	"११।१४	शू.०५।३८	ग.०९।२६	मकर	अहो.	०६।२२।०१।५६	२७।१३	६।३३	५।२७	१७	२२	०८	गण्डयोगमानम् ५२।१५, प्रातःकालिकद्वितीयार्घदानं पारणञ्च, जगद्धात्रीपूजारम्भः, सामापूजारम्भः, म. ३६।३५ उ., उत्तरां विना यात्रा श्रवणायाम्।
०८बु.	३०।४०	सा.०६।५०	श्र.०५।२५	"०८।४४	वृ.५०।००	वि.०३।३८	म.३३।१९	रा.०७।५४	०६।२३।०२।२१	२७।१०	६।३४	५।२६	१८	२३	०९	गोपाष्टमी, पञ्चकारम्भो दिवा घं. ०८ मि.४४ उ., म. ०३।३८ या.।
०९वृ.	२४।४३	दि.०४।२८	ध.०१।१२	"०७।०४	ध्रु.४२।१०	कौ.२४।४३	कुम्भ	अहो.	०६।२४।०२।४५	२७।०७	६।३५	५।२५	१९	२४	१०	शतभिषामानम् ५५।५८, अक्षयनवमी, सत्ययुगादिः, गंगास्नानदानादिः।
१०शु.	१८।५३	"०२।०८	पूभा.५३।३१	रा.०३।५९	व्या.३४।२५	ग.१८।५३	कुं.३९।२६	रा.१०।२१	०६।२५।०३।०९	२७।०४	६।३५	५।२५	२०	२५	११	पश्चिमास्तो बुधः ०७।४४, जगद्धात्रीविसर्जनं, म. ४६।०९ उ., उत्तरयात्रा मीनगे चन्द्रे पूर्वभाद्रे।
११श.	१३।२५	"११।५८	उभा.५०।२५	"०२।४६	ह.२७।०२	वि.१३।२५	मीन	अहो.	०६।२६।[illegible]३।४८	२७।००	६।३६	५।२४	२१	२६	१२	देवोत्थान ११ व्रतं सर्वेषां, भीष्मपञ्चकव्रतारम्भः, म. १३।२५ या., द.ति. १३।२५ उ., (११-१२) एकोद्दिष्टम्।
१२र.	०८।२९	"१०।०१	रे.४८।०९	"०१।५३	व.२०।०९	बा.०८।२९	मी.४८।०९	रा.०१।५३	०६।२७।०४।२७	२६।५६	६।३७	५।२३	२२	२७	१३	दामोदर १२ बिल्वदलेन तुलसीदलेन वा पारणं, तामसमन्वादिः, पञ्चकान्तो रात्रौ घं. ०१ मि. ५३ उ., प्रदोष १३ व्रतं, विद्यापतिस्मृतिदिवसः, चातुर्मास्यव्रतपारणं, गं. ३६।०९ उ. ५१।०९ या., ●
१३चं.	०४।१९	"०८।२२	अ.४६।३९	"०१।१८	सि.१३।५६	तै.०४।१९	मेष	अहो.	०६।२८।०५।०६	२६।५२	६।३८	५।२२	२३	२८	१४	प्रदोष १४ व्रतं, वैकुण्ठ १४ श्रीकाशीविश्वनाथप्रतिष्ठादिनं, पूर्वां विना यात्रा त्रयोदश्याम्। ● द.ति. ०८।२९ या., उत्तरयात्रा रेवत्यां त्रयोदश्यां ततः पश्चिमां विना यात्रा।
१४मं	०१।०२	"०७।०३	भ.४६।१५	"०१।०८	व्य.०८।२६	व.०१।०२	मेष	अहो.	०६।२९।०५।४५	२६।४९	६।३८	५।२२	२४	२९	१५	पूर्णिमामानम् ५७।४५, मासान्तः, कार्त्तिकी १५ स्नानदानादिः औत्तममन्वादिः, सर्वदिवदेव्युत्थापनं, भीष्मपञ्चकव्रतसमाप्तिः, पुष्करस्नानं, हरिहरक्षेत्रस्नानं, श्रीहरिहरनाथदर्शनपूजनादिकं, ☐

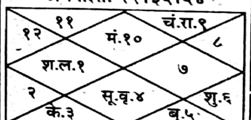
☐गोशालाघट्टे कमलायां, जीवछघट्टे जीववत्सायां च स्नानदानशिवार्चनादिकं, सोनपुरमेलारम्भः, कार्त्तिकेयावतारः श्रीकार्त्तिकेयपूजनं, सामाविसर्जनम्, श्रीगुरुनानकजयन्ती, म. ०१।०२ उ. २९।५४ या.।

ति. दि.	मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च — मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	दैनिकलग्नसारिणीचक्रम् — मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सिं.अं.	कं.अं.	तु.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मी.अं.
०१वृ.	००।१३।२२।११	०७।०९।२७।०६	०६।०९।१५।५२	०८।०३।५३।३१	०३।१८।२४।३१	०५।२०।२०।१८	४३।४४	१८।१६	२०।१२	२२।२५	००।४३	०२।५९	०५।१४	०७।३२	०९।५०	११।५५	१३।४१	१५।१२	१६।३९
०३शु.	००।१३।०५।३९	०७।१०।०४।०१	०६।०९।२९।१३	०८।०४।५१।४४	०३।१८।२६।५०	०५।२०।१७।०८	४३।४३	१८।१२	२०।०८	२२।२१	००।३९	०२।५५	०५।१०	०७।२८	०९।४६	११।५१	१३।३७	१५।०८	१६।३५
०४श.	००।१२।५१।३०	०७।१०।१९।३९	०६।०९।४२।११	०८।०५।४६।०४	०३।१८।२८।२६	०५।२०।१३।५७	४३।४१	१८।०८	२०।०४	२२।१७	००।३५	०२।५१	०५।०६	०७।२४	०९।४२	११।४७	१३।३३	१५।०४	१६।३१
०५र.	००।१२।३७।२१	०७।१०।२९।३७	०६।०९।५५।०९	०८।०६।४०।२४	०३।१८।३०।०२	०५।२०।१०।४६	४३।३९	१८।०४	२०।००	२२।१३	००।३१	०२।४७	०५।०२	०७।२०	०९।३८	११।४३	१३।२९	१५।००	१६।२७
०६चं.	००।१२।२३।१२	०७।१०।३१।५३	०६।१०।०८।०७	०८।०७।३४।४३	०३।१८।३१।३७	०५।२०।०७।३५	४३।३७	१८।००	१९।५६	२२।०९	००।२७	०२।४३	०४।५८	०७।१६	०९।३४	११।३९	१३।२५	१४।५६	१६।२३
०७मं.	००।१२।०९।०३	०७।१०।२८।२५	०६।१०।२१।०५	०८।०८।२९।०२	०३।१८।३३।१२	०५।२०।०४।२४	४३।३५	१७।५६	१९।५२	२२।०५	००।२३	०२।३९	०४।५४	०७।१२	०९।३०	११।३५	१३।२१	१४।५२	१६।१९
०८बु.	००।११।५४।५४	०७।१०।१८।१९	०६।१०।३४।०२	०८।०९।२३।२१	०३।१८।३४।४७	०५।२०।०१।१३	४३।३४	१७।५३	१९।४९	२२।०२	००।२०	०२।३६	०४।५१	०७।०९	०९।२७	११।३२	१३।१८	१४।४९	१६।१६
०९वृ.	००।११।४०।४५	०७।१०।०२।३३	०६।१०।४६।५९	०८।१०।१७।४०	०३।१८।३६।२२	०५।१९।५८।०२	४३।३३	१७।४९	१९।४५	२१।५८	००।१६	०२।३२	०४।४७	०७।०५	०९।२३	११।२८	१३।१४	१४।४५	१६।१२
१०शु.	००।११।२६।३६	०७।०९।४०।३८	०६।१०।५९।५६	०८।११।११।५९	०३।१८।३७।५७	०५।१९।५४।५२	४३।३२	१७।४५	१९।४१	२१।५४	००।१२	०२।२८	०४।४३	०७।०१	०९।१९	११।२४	१३।१०	१४।४१	१६।०८
११श.	००।११।१२।२७	०७।०८।५८।४७	०६।११।१२।५८	०८।१२।०२।००	०३।१८।३८।४४	०५।१९।५१।४१	४३।३०	१७।४१	१९।३७	२१।५०	००।०८	०२।२४	०४।३९	०६।५७	०९।१५	११।२०	१३।०६	१४।३७	१६।०४
१२र.	००।११।०५।५०	०७।०८।१६।५६	०६।११।२६।००	०८।१२।५२।०१	०३।१८।३९।३१	०५।१९।४८।३०	४३।२८	१७।३७	१९।३३	२१।४६	००।०४	०२।२०	०४।३५	०६।५३	०९।११	११।१६	१३।०२	१४।३३	१६।००
१३चं.	००।१०।५५।२७	०७।०७।३५।०५	०६।११।३९।०२	०८।१३।४२।०२	०३।१८।४०।१८	०५।१९।४५।१९	४३।२६	१७।३३	१९।२९	२१।४२	००।००	०२।१६	०४।३१	०६।४९	०९।०७	११।१२	१२।५८	१४।२९	१५।५६
१४मं	००।१०।४५।०४	०७।०६।५३।१४	०६।११।५२।०४	०८।१४।३२।०२	०३।१८।४१।०५	०५।१९।४२।०८	४३।२४	१७।२९	१९।२५	२१।३८	२३।५६	०२।१२	०४।२७	०६।४५	०९।०३	११।०८	१२।५४	१४।२५	१५।५२

०३ शुक्रे वल्ली ०८।३८।०६।५४
अयनांशा: २२।३५।५३



१० शुक्रे वल्ली ०८।३८।०७।०१
अयनांशा: २२।३५।५४



विविधविषयाः- कार्तिकशुक्लप्रतिपदि प्रातर्गोवर्द्धनपूजा कार्या। तत्र गोमयेन गोवर्द्धनमूर्तिं निर्माय पीतपुष्पाक्षतादिभिः पूजयेत्, गाश्च पूजयेत्। **गोवर्द्धनपूजनमन्त्रः**- गोवर्द्धनधराधार गोकुलत्राणकारक। कृष्णबाहुकृतच्छाय गवां कोटिप्रदो भव। **गोपूजनमन्त्रः**- लक्ष्मीर्या लोकपालानां धेनूरूपेण संस्थिता। घृतं वहति यज्ञार्थं सा मे पापं व्यपोहतु। अग्रतः सन्तु मे गावो गावो मे सन्तु पृष्ठतः। गावो मे हृदये सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम्। भ्रातृद्वितीयायां **भगिनीपठनीयमन्त्रः**- भ्रातस्तवानुजाताऽहं भुंक्ष्व भक्तमिदं शुभम्। प्रीतये यमराजस्य यमुनाया विशेषतः। कनिष्ठभ्रातरि सति- भ्रातस्तवाग्रजाताहं भुंक्ष्व भक्तमिदं शुभम्। प्रीतये यमराजस्य यमुनाया विशेषतः। **एकादश्यां विष्णूत्थापनमन्त्रः**- ब्रह्मेन्द्ररुद्रैरभिवन्द्यमानो भवानृषिर्वन्दितवन्दनीयः। प्राप्ता तवेयं किल कौमुदाख्या जागृष्व जागृष्व च लोकनाथ। मेघा गता निर्मलपूर्णचन्द्र शारद्यपुष्पाणि मनोहराणि। अहं ददानीति च पुण्यहेतोर्जागृष्व जागृष्व च लोकनाथ। उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गोविन्द त्यज निद्रां जगत्पते। त्वया चोत्थीयमानेन प्रोत्थितं भुवनत्रयम्॥

ग्रहस्थितिः- वक्री पूर्वोदितः कुजः, मार्गी पश्चिमोदितो बुधः ६ तो वक्रः १०तः पश्चिमास्तः, मार्गी पश्चिमास्तो गुरुः ५ तः पूर्वोदितः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, मार्गी पूर्वोदितः शनिः।

वातावरणम्- पक्षाद्यन्तभागयोरभ्रच्छायातापवायुचारादयस्तन्मध्यभागे वायुमेघचारशीतच्छित्रवृष्टयः।

अग्रहायणकृष्णपक्षः

शकाब्दः १९२७, संवत् २०६२, सन् १४१३ साल, दि. १६।११।२००५ ई. तः दि. ०१।१२।२००५ ई. या., पूर्वेकालः। मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, अशुद्धः, ५तः शुद्धः, हेमन्तर्तुः, याम्यगोलः, याम्यायनम्।

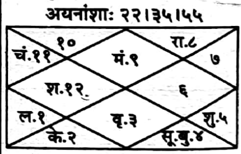
ति. दि.	तिथयः द. प.	तिथयः घं. मि.	नक्षत्राणि द. प.	नक्षत्राणि घं. मि.	योगाः द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः रा. द. प.	चन्द्रराशयः घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं द. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	दिनाङ्काः रा.	सौ.	अं.	अग्रहायणकृष्णपक्षः
०१बु.	५७।५५	रा.०५।५५	कृ.४६।५१	रा.०१।२३	व.०३।४६	बा.२८।१६	मे.०१।२४	दि.०७।१३	०७।००।०६।२४	२६।४६	६।३९	५।२१	२५	०१	१६	वृश्चिकेरविः ३७।०२ मु.३० फलं साम्यं विष्णुपदीसंक्रान्तिपुण्यकालो घं.१२ मि. ०० उपरिदिने, कार्त्तिकस्नानसमाप्तिः, सिमरियाघट्टे कल्पवाससमाप्तिः।
०२वृ.	५८।००	"०५।५१	रो.४८।२१	"०१।५९	प.००।०२	तै.२७।५३	वृष	अहो.	०७।०१।०७।०३	२६।४३	६।३९	५।२१	२६	०२	१७	शिवयोगमानम् ५७।१८, मासादिः।
०३शु.	५९।३५	"०६।३०	मृ.५१।०९	"०३।०८	सि.५५।३९	व.२८।४८	वृ.१९।५५	दि.०२।३४	०७।०२।०७।४१	२६।४०	६।४०	५।२०	२७	०३	१८	म. २८।४८ उ. ५९।३५ या., गृहारम्भः, द्विरागमनं पश्चिमां विना यात्रा च मृगशिरसि, मुण्डनम्।
०४श.	६०।००	अहो.	आ.५५।०६	"०४।४३	सा.५४।४८	ब.३०।५८	मिथुन	अहो.	०७।०३।०८।३२	२६।३७	६।४१	५।१९	२८	०४	१९	अनुराधायां रविः ५४।३६, श्रीगजानन ४ व्रतं, त्र्यहो जन्मदिनकृत्यं, पश्चिमदक्षिणयात्रा पुनर्वसौ।
०४र.	०२।२०	दि.०७।३७	पुन.६०।००	अहो.	शुभ.५४।५५	बा.०२।२०	मि.४३।५४	रा.१२।१५	०७।०४।०९।२२	२६।३४	६।४१	५।१९	२९	०५	२०	चतुर्थ्यां पञ्चम्यां वा मेघदर्शनं वर्षर्तौ वृष्टिप्रदं, द्विरागमनं पञ्चम्यां, दक्षिणयात्रा पञ्चम्यां मिथुनस्थे चन्द्रे तत उत्तरयात्रा।
०५चं.	०६।१६	"०९।१२	पुन.००।०९	दि.०६।४६	शु.५५।४१	तै.०६।१६	कर्क	अहो.	०७।०५।१०।१२	२६।३१	६।४२	५।१८	३०	०६	२१	पुष्टो गुरुः शुद्धारम्भश्च ३१।२६, वीडपञ्चमी श्रीमनसादेवीशयनं, श्रीविषहरापूजनं, पश्चिमोत्तरयात्रा पुनर्वसौ ततः पूर्वां विना यात्रा पुष्ये, मुण्डनं द्विरागमनञ्च पञ्चम्यां, गृहारम्भः पुनर्वसौ।
०६मं.	११।००	"११।०६	पुष्य.०६।०१	"०८।०६	ब्र.५६।५४	व.११।००	कर्क	अहो.	०७।०६।११।०२	२६।२८	६।४२	५।१८	०१	०७	२२	म. ११।०० उ. ४३।३९ या., (७) एकोद्दिष्टम्, वक्री शनिः ५३।१५।
०७बु.	१६।१८	"०१।१४	आश्ले.१२।२७	"११।४२	ऐं.५८।१६	ब.१६।१८	क.१२।२७	दि.११।४२	०७।०७।११।५२	२६।२६	६।४३	५।१७	०२	०८	२३	कालभैरवाष्टमी निशीथे श्रीकालभैरवावतारः, गं. ०१।२७ उ. १६।२७ या., विवाहो मघायाम्।
०८वृ.	२१।४०	"०३।२३	म.१८।५८	"०२।१८	वै.५९।३०	कौ.२१।४०	सिंह	अहो.	०७।०८।१२।४२	२६।२४	६।४३	५।१७	०३	०९	२४	महाराजाधिराजकामेश्वरसिंहजयन्ती, शाकाष्टका, (८) एकोद्दिष्टं, विवाहोऽष्टम्यां, पूर्वोत्तरयात्रा पूर्वफल्गुन्यामष्टम्याम्।
०९शु.	२६।४२	सा.०५।२५	पूफ.२५।०८	सा.०४।४७	वि.६०।००	ग.२६।४२	सिं.४१।३१	रा.११।२०	०७।०९।१३।३२	२६।२२	६।४४	५।१६	०४	१०	२५	वक्रगत्या तुलायां बुधः २६।३८, अन्वष्टकानवमी, पूर्वोत्तरयात्रा पूर्वफल्गुन्यां, म. ५८।५२ उ., द.ति. २६।४२ उ.।
१०श.	३१।०२	रा.०७।०९	उफ.३०।४०	रा.०७।००	वि.००।१९	वि.३१।०२	कन्या	अहो.	०७।१०।१४।३४	२६।२०	६।४४	५।१६	०५	११	२६	म. ३१।०२ या., द.ति. ३१।०२ या., दक्षिणयात्रैकादश्याम्।
११र.	३४।१८	"०८।२७	ह.३५।१३	"०८।४९	प्री.००।२७	ब.०२।४०	कन्या	अहो.	०७।११।१५।३५	२६।१८	६।४४	५।१६	०६	१२	२७	आयुष्मानयोगमानम् ५९।१६, पूर्वोदितो बुधः ०६।३८, उत्पन्ना ११ व्रतं सर्वेषां, विवाहो दिवारात्रौ, पूर्वदक्षिणयात्रा द्वादश्याम्।
१२चं.	३६।३१	"०९।२१	चि.३८।४२	"१०।१४	सौ.५८।०८	कौ.०५।२५	कं.०६।५८	दि.०९।३०	०७।१२।१६।३६	२६।१६	६।४५	५।१५	०७	१३	२८	गोमूत्रेण पारणं, विवाहो दिवारात्रौ, पश्चिमदक्षिणयात्रा त्रयोदश्याम्।
१३मं.	३७।१९	"०९।४१	स्वा.४०।५२	"११।०६	शो.५५।२७	ग.०६।५५	तुला	अहो.	०७।१३।१७।३७	२६।१५	६।४५	५।१५	०८	१४	२९	मार्गी कुजः ४६।०७, म. ३७।१९ उ., प्रदोष १३ व्रतं, पश्चिमदक्षिणयात्रा स्वात्याम्।
१४बु.	३६।४९	"०९।२९	वि.४१।४७	"११।२८	अगं.५१।४८	वि.०७।०४	•तु.२६।३४	सा.०५।२३	०७।१४।१८।३८	२६।१४	६।४५	५।१५	०९	१५	३०	मार्गी बुधः ४३।२७, म. ०७।०४ या., प्रदोष १४ व्रतम्।
३०वृ.	३५।०७	"०८।४८	अनु.४१।३०	"११।२१	सु.४७।०९	च.०५।५८	वृश्चिक	अहो.	०७।१५।१९।३९	२६।१३	६।४५	५।१५	१०	१६	०१	दिसम्बर १२, मार्गी ३० स्नानदानादिः, विवाहो द्विरागमनञ्च प्रतिपद्यनुराधायां, पश्चिमोत्तरयात्रा प्रतिपदि।

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च / दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सिं.अं.	कं.अं.	तु.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मी.अं.
०१बु.	००।१०।३४।४१	०७।०६।११।२३	०६।१२।०५।०५	०८।२५।२२।०२	०३।१८।४१।५२	०५।१९।३८।५७	४३।२२	१७।२५	१९।२१	२१।३४	२३।५२	०२।०८	०४।२३	०६।४१	०८।५९	११।०४	१२।५०	१४।२१	१५।४८
०२वृ.	००।१०।२४।१८	०७।०५।२९।३२	०६।१२।१८।०६	०८।२६।१२।०२	०३।१८।४२।३८	०५।१९।३५।४७	४३।२१	१७।२१	१९।१७	२१।३०	२३।४८	०२।०४	०४।१९	०६।३७	०८।५५	११।००	१२।४६	१४।१७	१५।४४
०३शु.	००।१०।१३।५५	०७।०४।४७।४२	०६।१२।३१।०७	०८।२७।०२।०२	०३।१८।४३।२४	०५।१९।३२।३७	४३।२०	१७।१७	१९।१३	२१।२६	२३।४४	०२।००	०४।१५	०६।३३	०८।५१	१०।५६	१२।४२	१४।१३	१५।४०
०४श.	००।१०।०८।२७	०७।०४।०४।५४	०६।१२।४३।५५	०८।२७।४५।४५	०३।१८।४३।३८	०५।१९।२९।२६	४३।१८	१७।१२	१९।०८	२१।२१	२३।३९	०१।५५	०४।१०	०६।२८	०८।४६	१०।५१	१२।३७	१४।०८	१५।३५
०४र.	००।१०।०२।५९	०७।०३।२२।०६	०६।१२।५६।४३	०८।२८।२९।२७	०३।१८।४३।५०	०५।१९।२६।१५	४३।१६	१७।०८	१९।०४	२१।१७	२३।३५	०१।५१	०४।०६	०६।२४	०८।४२	१०।४७	१२।३३	१४।०४	१५।३१
०५चं.	००।०९।५७।३१	०७।०२।३९।१९	०६।१३।०९।३१	०८।२९।१३।०९	०३।१८।४४।०५	०५।१९।२३।०४	४३।१५	१७।०४	१९।००	२१।१३	२३।३१	०१।४७	०४।०२	०६।२०	०८।३८	१०।४३	१२।२९	१४।००	१५।२७
०६मं.	००।०९।५२।०३	०७।०१।५६।३२	०६।१३।२२।१९	०८।२९।५६।५१	०३।१८।४४।१५	०५।१९।१९।५३	४३।१४	१६।५९	१८।५५	२१।०८	२३।२६	०१।४२	०३।५७	०६।१५	०८।३३	१०।३८	१२।२४	१३।५५	१५।२२
०७बु.	००।०९।४६।३५	०७।०१।१३।४५	०६।१३।३५।०७	०८।२०।४०।३३	०३।१८।४३।३५	०५।१९।१६।४२	४३।१३	१६।५५	१८।५१	२१।०४	२३।२२	०१।३८	०३।५३	०६।११	०८।२९	१०।३४	१२।२०	१३।५१	१५।१८
०८वृ.	००।०९।४१।०८	०७।००।३०।५८	०६।१३।४७।५४	०८।२१।२४।१५	०३।१८।४२।४७	०५।१९।१३।३२	४३।१२	१६।५१	१८।४७	२१।००	२३।१८	०१।३४	०३।४९	०६।०७	०८।२५	१०।३०	१२।१६	१३।४७	१५।१४
०९शु.	००।०९।३५।४१	०६।२९।४८।११	०६।१४।००।४१	०८।२२।०७।५७	०३।१८।४२।४१	०५।१९।१०।२२	४३।११	१६।४६	१८।४२	२०।५५	२३।१३	०१।२९	०३।४४	०६।०२	०८।२०	१०।२५	१२।११	१३।४२	१५।०९
१०श.	००।०९।३२।४०	०६।२९।२२।१८	०६।१४।१३।०६	०८।२२।४३।३३	०३।१८।४१।५३	०५।१९।०७।११	४३।१०	१६।४२	१८।३८	२०।५१	२३।०९	०१।२५	०३।४०	०५।५८	०८।१६	१०।२१	१२।०७	१३।३८	१५।०५
११र.	००।०९।३०।३७	०६।२९।०२।२५	०६।१४।२५।३१	०८।२३।१९।०९	०३।१८।४१।०५	०५।१९।०४।००	४३।०९	१६।३८	१८।३४	२०।४७	२३।०५	०१।२१	०३।३६	०५।५४	०८।१२	१०।१७	१२।०३	१३।३४	१५।०१
१२चं.	००।०९।२९।२४	०६।२८।४७।३१	०६।१४।३७।५६	०८।२३।५४।४५	०३।१८।४०।१८	०५।१९।००।४९	४३।०८	१६।३३	१८।२९	२०।४२	२३।००	०१।१६	०३।३१	०५।४९	०८।०७	१०।१२	११।५८	१३।२९	१४।५६
१३मं.	००।०९।२८।१८	०६।२८।३७।३७	०६।१४।५०।२०	०८।२४।३०।२१	०३।१८।३९।३१	०५।१८।५७।३८	४३।०७	१६।२९	१८।२५	२०।३८	२२।५६	०१।१२	०३।२७	०५।४५	०८।०३	१०।०८	११।५४	१३।२५	१४।५२
१४बु.	००।०९।२८।३९	०६।२८।३४।४७	०६।१५।०२।४४	०८।२५।०५।५७	०३।१८।३८।४४	०५।१८।५४।२७	४३।०६	१६।२५	१८।२१	२०।३४	२२।५२	०१।०८	०३।२३	०५।४१	०७।५९	१०।०४	११।५०	१३।२१	१४।४८
३०वृ.	००।०९।२९।२८	०६।२८।३७।३७	०६।१५।१५।०८	०८।२५।४१।३३	०३।१८।३७।५७	०५।१८।५१।१७	४३।०६	१६।२०	१८।१६	२०।२९	२२।४७	०१।०३	०३।१८	०५।३६	०७।५४	०९।५९	११।४५	१३।१६	१४।४३

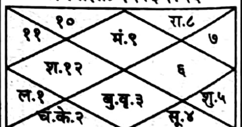
०३ शुक्रे वल्ली ०८।३८।०७।०८

अयनांशाः २२।३५।५५



०९ शुक्रे वल्ली ०८।३८।०७।१५

अयनांशाः २२।३५।५६



विविधविषयाः– मार्गकृष्णाष्टम्यां श्रीकालभैरवोत्पत्तिदिनमतस्तद्दिने तत्पूजनमुपवासश्च कार्यः। **पंचोपचारपूजा**– गन्धः पुष्पं च धूपश्च दीपो नैवेद्यमेव च। पंचोपचाराः कथिता देवानां प्रीतिहेतवः। **षोडशोपचारपूजा**– आसनं स्वागतं चार्घ्यं पाद्यमाचमनं तथा। मधुपर्काचमनस्नानवसनाभरणानि च। गन्धपुष्पधूपदीपनैवेद्यं चन्दनं तथा। **पंचगव्यम्** – गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधि सर्पिः कुशोदकम्। पञ्चगव्यमिदं प्रोक्तं महापातकनाशनम्। **पञ्चामृतम्** – शर्करा मधु दुग्धं च घृतं दधि समांशकम्। पंचामृतमिदं प्रोक्तं देहशुद्धौ विधीयते। **पंचरत्नानि**– वज्रमौक्तिकवैदूर्यपुष्परागेन्द्रनीलकम्। पंचरत्नमिदं प्रोक्तं मन्त्रैः कुम्भेषु निःक्षिपेत्। **सप्तमृत्तिका**– गजाश्वरथवल्मीकसंगमाद्ध्रद्गोकुलात्। राजद्वारप्रवेशाच्च मृदमानीय निःक्षिपेत्। **पंचपल्लवाः**– अश्वत्थोदुम्बरप्लक्षचूतन्यग्रोधपल्लवाः। पंचपल्लव इत्युक्तः सर्वकर्मसु शोभनः। **सप्तधान्यम्**– यवगोधूमधान्यानि तिलाः कंकुस्तथैव च। श्यामकं चणकं चैव सप्तधान्यमुदाहृतम्। **सर्वौषधिः**– मुरा मांसी वचा कुष्ठं शैलेयं रजनीद्वयम्। शुण्ठी चम्पकमुस्तं च सर्वौषधिगणः स्मृतः। सर्वौषधीनामभावे तु दद्यादेकां शतावरीम्।

ग्रहस्थितिः– वक्री पूर्वोदितः कुजः १३तो मार्गी, वक्री पश्चिमास्तो बुधः ११तः पूर्वोदितः १४ तो मार्गी, मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, मार्गी पूर्वोदितः शनिः ६तो वक्री।

वातावरणम्– पक्षाद्यन्तभागयोरभ्रच्छायावायुतापादयस्तन्मध्यभागे शीतवायुचारछिन्नवृष्टयः।

अग्रहायणशुक्लपक्षः

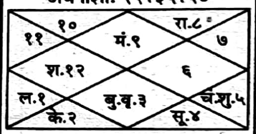
शकाब्दः १९२७, संवत् २०६२, सन् १४१३ साल, दि. ०२।१२।२००५ ई. तः दि. १५।१२।२००५ ई. या., पूर्वेकालः। मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, शुद्धः, हेमन्तर्तुः, याम्यगोलः, याम्यायनम्।

ति. दि.	तिथयः द. प.	तिथयः घं. मि.	नक्षत्राणि द. प.	नक्षत्राणि घं. मि.	योगाः द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः रा. द. प.	चन्द्रराशयः घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं द. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	दिनाङ्काः रा.	दिनाङ्काः सौ.	दिनाङ्काः अं.	
०१ शु.	३२।१९	रा.०७।४२	ज्ये.४०।०७	रा.१०।४९	धृ.४१।४१	किं.०३।४३	वृ.४०।०७	रा.१०।४९	०७।१६।२०।४०	२६।१२	६।४६	५।१४	११	१७	०२	श्रीहरिशो व्रतं, विवाहो मूले, उत्तरयात्रा प्रतिपदि, गं. ३४।०७ उ. ४९।०७ या.।
०२ श.	२८।३५	सा.०६।१२	मू.३७।५६	"०९।५६	शू.३५।३०	बा.००।२७	धनु	अहो.	०७।१७।२१।४९	२६।१०	६।४६	५।१४	१२	१८	०३	ज्येष्ठायां रविः ०२।०४, चन्द्रदर्शनं मु. ३० फलं साम्यम्, उत्तरयात्रा।
०३ र.	२३।५९	दि.०४।२२	पूषा.३४।५२	"०८।४३	गं.२८।३९	ग.२३।५९	ध.४८।५८	रा.०२।२१	०७।१८।२२।५८	२६।०८	६।४६	५।१४	१३	१९	०४	वृश्चिके बुधः ५३।३९, म. ५१।२३ उ., श्रीगणेश ४ व्रतं, षाण्मासिकरविव्रतारम्भः, पूर्वोत्तरयात्रा तृतीयायाम्।
०४ चं.	१८।४६	"०२।१७	उषा.३१।१६	"०७।१७	वृ.२१।१६	वि.१८।४६	मकर	अहो.	०७।१९।२४।०७	२६।०६	६।४७	५।१३	१४	२०	०५	म. १८।४६ या., नवान्नपार्वणं विवाहः द्विरागमनञ्च पञ्चम्यां, पूर्वां विना यात्रा श्रवणायाम्।
०५ मं.	१३।०८	"१२।०२	श्र.२७।१५	सा.०५।४१	ध्रु.१३।३६	बा.१३।०८	म.५५।०८	रा.०४।५०	०७।२०।२५।१६	२६।०५	६।४७	५।१३	१५	२१	०६	विवाहपञ्चमी, श्रीसीतारामविवाहोत्सवः, जनकपुरे श्रीसीतारामदर्शनं, स्कन्दषष्ठीव्रतं, चम्पकषष्ठी, उत्तरां विना यात्रा पञ्चम्यां, पञ्चकारंभः सायं घं.०५ मि.४१ उ., (५-६) एकोद्दिष्टम्।
०६ बु.	०७।१७	"०९।४२	ध.२३।०१	दि.०३।५९	व्या.०५।४४	तै.०७।१७	कुम्भ	अहो.	०७।२१।२६।२५	२६।०४	६।४७	५।१३	१६	२२	०७	हर्षणयोगमानम् ५२।०३, गृहप्रवेशः नवान्नपार्वणं मुण्डनञ्च सप्तम्यां, कर्णवेधः पश्चिमयात्रा च धनिष्ठायां, द्विरागमनं, शनिवेधाद्विवाहो नैव धनिष्ठायाम्।
०७ बृ.	०१।२२	"०७।२०	श.१८।५१	"०२।१९	व.५०।०१	व.०१।२२	कुम्भ	अहो.	०७।२२।२७।३३	२६।०३	६।४७	५।१३	१७	२३	०८	अष्टमीमानम् ५४।१५, म. ०१।२२ उ.३४।२५ या., गृहप्रवेशः मुण्डनञ्च सप्तम्यां, द्विरागमनं शतभिषायां, पश्चिमयात्रा पूर्वभाद्रेऽष्टम्याम्।
०९ शु.	५०।१७	रा.०२।५५	पूभा.१४।५४	"१२।४६	सि.४५।२९	बा.२२।५७	कुं.००।५४	दि.०७।१०	०७।२३।२८।४१	२६।०२	६।४८	५।१२	१८	२४	०९	द.ति. ५०।१७ उ., उत्तरयात्रा मीनस्थे चन्द्रे पूर्वभाद्रे।
१० श.	४५।२७	"१२।५९	उभा.११।२३	"११।२१	व्य.३५।२४	तै.१७।५२	मीन	अहो.	०७।२४।२९।५८	२६।००	६।४८	५।१२	१९	२५	१०	द.ति. ४५।२७ या., गं. ५६।३० उ., गृहप्रवेशः पश्चिमोत्तरयात्रा च एकादश्याम्।
११ र.	४१।२९	"११।२४	रे.०८।३०	"१०।१२	व.२८।५५	व.१३।३३	मी.०८।३०	दि.१०।१२	०७।२५।३१।१५	२५।५९	६।४८	५।१२	२०	२६	११	मोक्षदा ११ व्रतं सर्वेषां, गीताजयन्ती, विवाहो दिवारात्रौ, पश्चिमां विना यात्रा द्विरागमनञ्च द्वादश्यां, पञ्चकान्तो दिवा घं. १० मि. १२ उ., गं. ११।३० या., म. १३।३३ उ. ४१।२९ या.।
१२ चं.	३८।१९	"१०।०८	अ.०६।२९	"०९।२४	प.२३।०६	ब.०९।५४	मेष	अहो.	०७।२६।३२।३१	२५।५८	६।४८	५।१२	२१	२७	१२	केशव १२, गोमूत्रेण पारणं, कर्णवेधः विवाहः गृहारंभः गृहप्रवेशश्च अश्विन्याम्।
१३ मं.	३६।१५	"०९।१९	भ.०५।१९	"०८।५७	शि.१८।०७	कौ.०७।१७	मे.२०।१९	दि.०२।५७	०७।२७।३३।४७	२५।५७	६।४९	५।११	२२	२८	१३	प्रदोष १३ व्रतम्।
१४ बु.	३५।२२	"०८।५८	कृ.०५।१८	"०८।५६	सि.१४।०१	ग.०५।४९	वृष	अहो.	०७।२८।३५।०३	२५।५६	६।४९	५।११	२३	२९	१४	मकरे शुक्रः १०।२०, म. ३५।२२ उ., प्रदोष १४ व्रतं, पूर्वदक्षिणयात्रा द्विरागमनं विवाहश्च पूर्णिमायाम्।
१५ बृ.	३५।४७	"०९।०८	रो.०६।२८	"०९।२४	सा.१०।५५	वि.०५।३५	वृ.३७।४४	रा.०९।५५	०७।२९।३६।१९	२५।५५	६।४९	५।११	२४	३०	१५	मासान्तः, मार्गी १५ स्नानदानादिः, हरिहरक्षेत्रस्नानं, श्रीहरिहरनाथपूजनदर्शनादिकं, श्रीदत्तात्रेयावतारः, म. ०५।३५ या.।

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च / **दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्**

ति. दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सिं.अं.	कं.अं.	तु.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मी.अं.
०१ शु.	००।०९।३०।३८	०६।२८।४९।०३	०६।१५।२७।३२	०८।२६।१७।०८	०३।१८।३७।१०	०५।१८।४८।०७	४३।०६	१६।२६	१८।१२	२०।२५	२२।४३	००।५९	०३।१४	०५।३२	०७।५०	०९।५५	११।४१	१३।२२	१४।३९
०२ श.	००।०९।३४।१०	०६।२९।२१।३९	०६।१५।३९।३९	०८।२६।४१।३९	०३।१८।३५।२६	०५।१८।४४।५६	४३।०५	१६।२२	१८।०८	२०।२१	२२।३९	००।५५	०३।१०	०५।२८	०७।४६	०९।५१	११।३७	१३।०८	१४।३५
०३ र.	००।०९।३७।४१	०६।२९।५४।१५	०६।१५।५१।४६	०८।२७।०६।१०	०३।१८।३३।४२	०५।१८।४१।४५	४३।०४	१६।०७	१८।०३	२०।१६	२२।३४	००।५०	०३।०५	०५।२३	०७।४१	०९।४६	११।३२	१३।०३	१४।३०
०४ चं.	००।०९।४१।१२	०७।००।२६।५१	०६।१६।०३।५२	०८।२७।३०।४१	०३।१८।३१।५८	०५।१८।३८।३४	४३।०३	१६।०३	१७।५९	२०।१२	२२।३०	००।४६	०३।०१	०५।१९	०७।३७	०९।४२	११।२८	१२।५९	१४।२६
०५ मं.	००।०९।४४।४३	०७।००।५९।२७	०६।१६।१५।५८	०८।२७।५५।११	०३।१८।३०।१४	०५।१८।३५।२३	४३।०२	१५।५९	१७।५५	२०।०८	२२।२६	००।४२	०२।५७	०५।१५	०७।३३	०९।३८	११।२४	१२।५५	१४।२२
०६ बु.	००।०९।४८।१४	०७।०१।३२।०३	०६।१६।२८।०४	०८।२८।१९।४१	०३।१८।२८।३०	०५।१८।३२।१२	४३।०१	१५।५४	१७।५०	२०।०३	२२।२१	००।३७	०२।५२	०५।१०	०७।२८	०९।३३	११।१९	१२।५०	१४।१७
०७ बृ.	००।०९।५१।४५	०७।०२।०४।३९	०६।१६।४०।१०	०८।२८।४४।११	०३।१८।२६।४६	०५।१८।२९।०२	४३।०१	१५।५०	१७।४६	१९।५९	२२।१७	००।३३	०२।४८	०५।०६	०७।२४	०९।२९	११।१५	१२।४६	१४।१३
०९ शु.	००।०९।५५।१६	०७।०२।३७।१४	०६।१६।५२।१६	०८।२९।०८।४१	०३।१८।२५।०३	०५।१८।२५।५२	४३।०१	१५।४६	१७।४२	१९।५५	२२।१३	००।२९	०२।४४	०५।०२	०७।२०	०९।२५	११।११	१२।४२	१४।०९
१० श.	००।१०।०३।२७	०७।०३।४०।२४	०६।१७।०३।५२	०८।२९।२०।१२	०३।१८।२२।३१	०५।१८।२२।४१	४३।००	१५।४१	१७।३७	१९।५०	२२।०८	००।२४	०२।३९	०४।५७	०७।१५	०९।२०	११।०६	१२।३७	१४।०४
११ र.	००।१०।११।३८	०७।०४।४३।३३	०६।१७।२५।२८	०८।२९।३१।४३	०३।१८।१९।५९	०५।१८।१९।३०	४२।५९	१५।३७	१७।३३	१९।४६	२२।०४	००।२०	०२।३५	०४।५३	०७।११	०९।१६	११।०२	१२।३३	१४।००
१२ चं.	००।१०।१९।४८	०७।०५।४६।४२	०६।१७।२७।०४	०८।२९।४३।१४	०३।१८।१७।२७	०५।१८।१६।१९	४२।५८	१५।३३	१७।२९	१९।४२	२२।००	००।१६	०२।३१	०४।४९	०७।०७	०९।१२	१०।५८	१२।२९	१३।५६
१३ मं.	००।१०।२७।५८	०७।०६।४९।५१	०६।१७।३८।४०	०८।२९।५४।४५	०३।१८।१४।५५	०५।१८।१३।०८	४२।५७	१५।२८	१७।२४	१९।३७	२१।५५	००।११	०२।२६	०४।४४	०७।०२	०९।०७	१०।५३	१२।२४	१३।५१
१४ बु.	००।१०।३६।०८	०७।०७।५३।००	०६।१७।५०।१६	०९।००।०६।१५	०३।१८।१२।२३	०५।१८।०९।५७	४२।५७	१५।२४	१७।२०	१९।३३	२१।५१	००।०७	०२।२२	०४।४०	०६।५८	०९।०३	१०।४९	१२।२०	१३।४७
१५ बृ.	००।१०।४४।१८	०७।०८।५६।०९	०६।१८।०१।५१	०९।००।१७।४५	०३।१८।०९।५१	०५।१८।०६।४६	४२।५७	१५।२०	१७।१६	१९।२९	२१।४७	००।०३	०२।१८	०४।३६	०६।५४	०८।५९	१०।४५	१२।१६	१३।४३

०१ शुक्रे वल्ली ०८।३८।०७।२२
अयनांशाः २२।३५।५७



०९ शुक्रे वल्ली ०८।३८।०७।२९
अयनांशाः २२।३५।५८



विविधविषयाः– रविवासरे त्याज्यवस्तूनि– क्षौरं तैलं जलं चोष्णमामिषं निशि भोजनम्। रतिः स्नानं च मध्याह्ने रवौ सप्त विवर्जयेत्। मार्गादिमासे रविव्रतभक्ष्याणि– पत्रत्रित्वं तुलस्यास्त्रि-पलमथ घृतं मार्गशीर्षादिमक्ष्यं मुष्टीनां त्रिस्तिलानां त्रिपलदधि तथा दुग्धकं गोमयं च। त्रित्वं तोयांजलीनां त्रिमरीचकमथो त्रिःपलाः शक्तवः स्युर्गोमूत्रं शर्करा सद्भिरिति विधिना भानुवारे क्रमेण। रात्रौ लग्नज्ञानम्– ध्रुवं परितो रक्तवर्णा शूलिनी श्वेतवर्णा चैकान्या तारा मेषान्मीनं यावद्भ्रमति। तत्र ध्रुवात्पश्चिमे मेषवृषौ, वायुकोणे मिथुनं, उत्तरस्यां कर्कसिंहौ, ईशाने कन्या, पूर्वस्यां तुलवृश्चिकौ, अग्निकोणे धनुः, दक्षिणस्यां मकरकुम्भौ, नैर्ऋत्यां च मीनराशिर्वर्तते। यदा यत्र रक्तवर्णा शूलिनी तारका तदेव लग्नं तदानीमिति। चन्द्रोदयास्तसाधनम् – तिथिगुणितं रजनीपरिमाणं यमरहितं सहितं सितपक्षे। बाणशशाङ्कविभाजितलब्धं भवति विधूदयमस्तमयं च। यथा–मार्गशुक्लपञ्चम्यां कुजवासरे रात्रिमानं ३३।५५ तदोक्त रीत्या (३३।५५)× ५=१६९।३५, १६९।३५+२।००=१७१।३५, १७१।३५÷१५=११।२६ दण्डादि। सूर्यास्तमाने (५।१३) यथोक्त (११।२६) फलस्य घण्टामिण्टात्मक (४।३४) मानयोजनेन घं. ९ मि. ४७ चन्द्रास्तमानमेवं कृष्णपक्षे चन्द्रोदयमानमिति।

ग्रहस्थितिः– मार्गिणः पूर्वोदिताः कुजबुधगुरवः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, वक्री पूर्वोदितः शनिः।
वातावरणम्– पक्षादिभागे शीतवायुच्छिन्नवृष्टयस्तदन्तभागे वायुशीतवृद्धिहिमपातादयः।

पौषकृष्णपक्षः

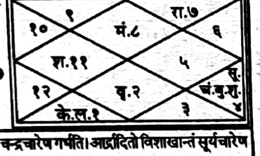
शकाब्दः १९२७, संवत् २०६२, सन् १४१३ साल, दि. १६।१२।२००५ ई. तः दि. ३१।१२।२००५ ई. या., पूर्वेकालः। मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः ३ तो वक्री, अशुद्धः, हेमन्तर्तुः, याम्यगोलः, याम्यायनम्।

ति. दि.	तिथयः द. प.	तिथयः घं. मि.	नक्षत्राणि द. प.	नक्षत्राणि घं. मि.	योगाः द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः रा. द. प.	चन्द्रराशयः घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं द. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	दिनाङ्काः रा.	दिनाङ्काः सौ.	दिनाङ्काः अं.
०१ शु.	३७।३४	रा.०९।५१	मू.०८।५९	दि.१०।२५	शुभः.०८।४९	बा.०६।४१	मिथुन	अहो.	०८।००।३७।३५	२५।५४	६।४९	५।११	२५	०१	१६
०२ श.	४०।२७	"११।०१	आ.१२।४४	"११।५६	शु.०७।४१	तै.०९।०१	मिथुन	अहो.	०८।०१।३८।५७	२५।५२	६।५०	५।१०	२६	०२	१७
०३ र.	४४।३१	"१२।३८	पुन.१७।३४	"०१।५२	ब्र.०७।२९	व.१२।२९	मि.०१।२२	दि.०७।२३	०८।०२।४०।१९	२५।५१	६।५०	५।१०	२७	०३	१८
०४ चं.	४९।२१	"०२।३४	पु.२३।१६	"०४।०८	ऐं.०८।०१	ब.१७।२६	कर्क	अहो.	०८।०३।४१।४०	२५।५०	६।५०	५।१०	२८	०४	१९
०५ मं.	५४।४१	"०४।४२	आश्ले.२९।३८	सा.०६।४१	वै.०९।०२	कौ.२२।०१	क.२९।३८	सा.०६।४१	०८।०४।४३।०१	२५।४९	६।५०	५।१०	२९	०५	२०
०६ बु.	६०।००	अहो.	म.३६।१२	रा.०९।१९	वि.१०।२३	ग.२७।२३	सिंह	अहो.	०८।०५।४४।२२	२५।४८	६।५०	५।१०	३०	०६	२१
०६ बृ.	००।०५	दि.०६।५३	पूफ.४२।३३	"११।५२	प्री.११।४१	व.००।०५	सिं.५८।५९	रा.०६।२७	०८।०६।४५।४३	२५।४७	६।५१	५।०९	०१	०७	२२
०७ शु.	०५।०६	"०८।५३	उफ.४८।१७	"०२।१०	आ.१२।३६	ब.०५।०६	कन्या	अहो.	०८।०७।४७।०४	२५।४६	६।५१	५।०९	०२	०८	२३
०८ श.	०९।२४	"१०।३७	ह.५३।१०	"०४।०७	सौ.१२।५८	कौ.०९।२४	कन्या	अहो.	०८।०८।४८।२९	२५।४७	६।५१	५।०९	०३	०९	२४
०९ र.	१२।३७	"११।५३	चि.५६।५७	"०५।३७	शो.१२।३१	ग.१२।३७	कं.२५।०३	दि.०४।५१	०८।०९।४९।५४	२५।४८	६।५०	५।१०	०४	१०	२५
१० चं.	१४।४६	"१२।४४	स्वा.५९।२८	"०६।३७	अगं.११।१३	वि.१४।४६	तुला	अहो.	०८।१०।५१।१९	२५।४९	६।५०	५।१०	०५	११	२६
११ मं.	१५।३१	"०१।०२	वि.६०।००	अहो.	सु.०८।५४	बा.१५।३१	तु.३५।२३	रा.१२।५९	०८।११।५२।४४	२५।५०	६।५०	५।१०	०६	१२	२७
१२ बु.	१४।५८	"१२।४९	वि.००।४१	दि.०७।०६	धृ.०५।३४	तै.१४।५८	वृश्चिक	अहो.	०८।१२।५४।०९	२५।५१	६।५०	५।१०	०७	१३	२८
१३ बृ.	१३।११	"१२।०६	अनु.००।४४	"०७।०८	शू.०१।१६	व.१३।११	वृ.५९।३६	रा.०६।४०	०८।१३।५५।३४	२५।५२	६।५०	५।१०	०८	१४	२९
१४ शु.	१०।२१	"१०।५७	मू.५७।३८	रा.०५।५२	वृ.५०।०६	श.१०।२१	धनु	अहो.	०८।१४।५६।५८	२५।५४	६।४९	५।११	०९	१५	३०
३० श.	०६।३३	"०९।२६	पूषा.५४।४८	"०४।४४	ध्रु.४३।२९	ना.०६।३३	धनु	अहो.	०८।१५।५८।२४	२५।५६	६।४९	५।११	१०	१६	३१

मूले धनुषि रविः ०६।०९ मु.३० फलं साम्यं, षडशीतिसंक्रान्तिपुण्यकालो घं.०९ मि.१७ उ.घं.०३ मि.४१ यावद्दिने, पौषे कौशिकीस्नानं महापुण्यप्रदं, द.ति. ३७।३४ उ., अशुद्धारम्भश्च ६।१९ उ.।
मासादिः, द.ति. ४०।२७ या.।
वक्रः शुक्रः ४३।०३, म. १२।२९ उ. ४४।३१ या., दक्षिणयात्रा मिथुनस्थे चन्द्रे तत उत्तरयात्रा पुनर्वसौ ततः पश्चिमां विना यात्रा तृतीयायाम्।
श्रीलम्बोदर ४ व्रतम्।
गं. १८।३८ उ. ३३।३८ या., शकुनम् – पौषादितो मासचतुष्टयेषु यस्यां तिथौ तोयधरो हि दृश्यः। तत्सप्तमे मासि तिथौ च तस्यां वृष्टिः प्रवाच्या नियमेन विज्ञैः।।
पूर्वयात्रा पूर्वफल्गुन्याम्।
वक्रगत्या मूले धनुषि शुक्रः १२।१७, म. ००।०५ उ. ३२।३६ या., पूर्वोत्तरयात्रा पूर्वफल्गुन्याम्।
अपूपाष्टका, पूर्वदक्षिणयात्रा हस्ते, सप्तम्यां मेघदर्शने सति श्रावण्यामार्द्रायाञ्च सुवृष्टिः।
अन्वष्टकानवमी; दक्षिणयात्रा।
म. ४३।४२ उ., (१०) एकोद्दिष्टं, पूर्वदक्षिणयात्रा दशम्यां कन्यास्थे चन्द्रे ततो दक्षिणयात्रा।
म. १४।४६ या., पश्चिमदक्षिणयात्रा स्वात्याम्।
सफला ११ व्रतं सर्वेषां, (११) एकोद्दिष्टम्।
क्षीणः शुक्रः २९।१७, गोमयेन पारणं, प्रदोष १३ व्रतं, (१२) एकोद्दिष्टं, पश्चिमयात्रानुराधायां द्वादश्याम्।
ज्येष्ठामानम् ५८।५२, गण्डयोगमानम् ५४।४९, पूर्वाषाढे रविः ०८।१२, प्रदोष १४ व्रतं, गं. ५३।३६ उ., म. १३।११ उ. ४१।४६ या., (१३-१४)●
पूर्वास्तो बुधः ०७।५८, मूले धनुषि बुधः २२।४६, गं. ०८।३६ या., पूर्वोत्तरयात्रा चतुर्दश्याम्।
पौषी ३० स्नानदानादि, उत्तरयात्रा प्रतिपदि पूर्वाषाढे।

●एकोद्दिष्टं, पश्चिमोत्तरयात्रा त्रयोदश्यां, दशतारकारम्भो रात्रौ घं.०६ मि. ४० उ., दशतारकेषु वाताभ्रगर्जनविद्युदुदक-शीतादिभिरग्रिमवर्षस्य वृष्टिज्ञानाय शकुनं परीक्ष्यम्।

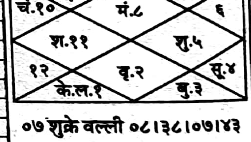
१४ शुक्रे वल्ली ०८।३८।०७।५०
अयनांशाः २२।३६।०१



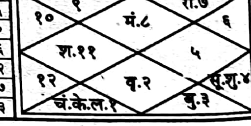
● मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च / दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सिं.अं.	कं.अं.	तु.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मी.अं.
०१ शु.	००।१०।५२।२८	०७।०९।५९।१८	०६।१८।१३।२६	०९।००।२९।१५	०३।१८।०७।१८	०५।१८।०३।३६	४२।५७	१५।१५	१७।११	१९।२४	२१।४२	२३।५८	०२।१३	०४।३१	०६।४९	०८।५४	१०।४०	१२।११	१३।३८
०२ श.	००।११।०४।३४	०७।११।२२।१६	०६।१८।२४।४३	०९।००।३०।३६	०३।१८।०४।०७	०५।१८।००।२५	४२।५६	१५।११	१७।०७	१९।२०	२१।३८	२३।५४	०२।०९	०४।२७	०६।४५	०८।५०	१०।३६	१२।०७	१३।३४
०३ र.	००।११।१६।४०	०७।१२।४३।१३	०६।१८।३६।००	०९।००।३०।५६	०३।१८।००।५६	०५।१७।५७।१४	४२।५५	१५।०६	१७।०२	१९।१५	२१।३३	२३।४९	०२।०४	०४।२२	०६।४०	०८।४५	१०।३१	१२।०२	१३।२९
०४ चं.	००।११।२८।४६	०७।१४।०५।१०	०६।१८।४७।१७	०९।००।२३।०३	०३।१७।५७।४५	०५।१७।५४।०३	४२।५४	१५।०२	१६।५८	१९।११	२१।२९	२३।४५	०२।००	०४।१८	०६।३६	०८।४१	१०।२७	११।५८	१३।२५
०५ मं.	००।११।४०।५२	०७।१५।२७।०७	०६।१८।५८।३४	०९।००।१३।४७	०३।१७।५४।३५	०५।१७।५०।५२	४२।५३	१४।५८	१६।५४	१९।०७	२१।२५	२३।४१	०१।५६	०४।१४	०६।३२	०८।३७	१०।२३	११।५४	१३।२१
०६ बु.	००।११।५२।५८	०७।१६।४९।०४	०६।१९।०९।५०	०९।००।०४।३२	०३।१७।५१।२५	०५।१७।४७।४१	४२।५३	१४।५३	१६।४९	१९।०२	२१।२०	२३।३६	०१।५१	०४।०९	०६।२७	०८।३२	१०।१८	११।४९	१३।१६
०६ बृ.	००।१२।०५।०३	०७।१८।११।०१	०६।१९।२१।०६	०८।२९।५५।१७	०३।१७।४८।१५	०५।१७।४४।३१	४२।५३	१४।४९	१६।४५	१८।५८	२१।१६	२३।३२	०१।४७	०४।०५	०६।२३	०८।२८	१०।१४	११।४५	१३।१२
०७ शु.	००।१२।१७।०८	०७।१९।३२।५८	०६।१९।३२।२२	०८।२९।४६।०२	०३।१७।४५।०५	०५।१७।४१।२१	४२।५३	१४।४५	१६।४१	१८।५४	२१।१२	२३।२८	०१।४३	०४।०१	०६।१९	०८।२४	१०।१०	११।४१	१३।०८
०८ श.	००।१२।३३।००	०७।२१।०७।०४	०६।१९।४२।५४	०८।२९।२३।४०	०३।१७।४१।२३	०५।१७।३८।१०	४२।५४	१४।४०	१६।३६	१८।४९	२१।०७	२३।२३	०१।३८	०३।५६	०६।१४	०८।१९	१०।०५	११।३६	१३।०३
०९ र.	००।१२।४८।५२	०७।२२।४१।१०	०६।१९।५३।२६	०८।२९।१०।१८	०३।१७।३७।४१	०५।१७।३४।५९	४२।५५	१४।३६	१६।३२	१८।४५	२१।०३	२३।१९	०१।३४	०३।५२	०६।१०	०८।१५	१०।०१	११।३२	१२।५९
१० चं.	००।१३।०४।४४	०७।२४।१५।१६	०६।२०।०३।५८	०८।२८।३८।५६	०३।१७।३३।५९	०५।१७।३१।४८	४२।५६	१४।३२	१६।२८	१८।४१	२०।५९	२३।१५	०१।३०	०३।४८	०६।०६	०८।११	०९।५७	११।२८	१२।५५
११ मं.	००।१३।२०।३५	०७।२५।४९।२२	०६।२०।१४।२९	०८।२८।१६।३५	०३।१७।३०।१८	०५।१७।२८।३७	४२।५७	१४।२७	१६।२३	१८।३६	२०।५४	२३।१०	०१।२५	०३।४३	०६।०१	०८।०६	०९।५२	११।२३	१२।५०
१२ बु.	००।१३।३६।२६	०७।२७।२३।२८	०६।२०।२५।००	०८।२७।५४।१४	०३।१७।२६।३७	०५।१७।२५।२६	४२।५७	१४।२३	१६।१९	१८।३२	२०।५०	२३।०६	०१।२१	०३।३९	०५।५७	०८।०२	०९।४८	११।१९	१२।४६
१३ बृ.	००।१३।५२।१७	०७।२८।५७।३४	०६।२०।३५।३१	०८।२७।३१।५३	०३।१७।२२।५६	०५।१७।२२।१६	४२।५७	१४।१९	१६।१५	१८।२८	२०।४६	२३।०२	०१।१७	०३।३५	०५।५३	०७।५८	०९।४४	११।१५	१२।४२
१४ शु.	००।१४।०८।०८	०८।००।३१।३९	०६।२०।४६।०२	०८।२७।०९।३२	०३।१७।१९।१५	०५।१७।१९।०६	४२।५७	१४।१४	१६।१०	१८।२३	२०।४१	२२।५७	०१।१२	०३।३०	०५।४८	०७।५३	०९।३९	११।१०	१२।३७
३० श.	००।१४।२६।३३	०८।०२।१३।०५	०६।२०।५५।५६	०८।२६।३३।१९	०३।१७।१४।५३	०५।१७।१५।५५	४२।५८	१४।१०	१६।०६	१८।१९	२०।३७	२२।५३	०१।०८	०३।२६	०५।४४	०७।४९	०९।३५	११।०६	१२।३३

०१ शुक्रे वल्ली ०८।३८।०७।३६
अयनांशाः २२।३५।५९



०७ शुक्रे वल्ली ०८।३८।०७।४३
अयनांशाः २२।३६।००



विविधविषयाः:– दशतारकविचारः:– पौषे मूलभरण्यन्तं चन्द्रचारेण गर्भिताः। आर्द्रादितो विशाखान्तं सूर्यचारेण वर्षति। एवं चैत्रे तथा ज्येष्ठे शुक्लपक्षे प्रयत्नतः। आर्द्रादिदशताराणां ज्ञात्वा गर्भं वदेत्फलम्। गर्भपुष्टिविचारः:– वाताभ्रगर्जत्तडितोदकानि हिमप्रपातः करकावघातः। अकालसन्ध्यापरिवेषणश्च नवप्रकारैः प्रभवन्ति गर्भाः। तत्र पुष्टे गर्भे सुवृष्टिः समे मध्यमा वृष्टिर्हीने चाल्पा वृष्टिरिति। गोचरशन्यादिविचारः:– द्विजन्मनि पंचमसप्तमगाश्चतुराष्टकद्वादशधर्मयुताः। धनधान्यहिरण्यविनाशकरा रविराहुशनैश्चरभूमिसुताः। शनेर्विशेषः:– यदि स्वजन्मराशितः शनिराशिसंचारकाले चन्द्रो निम्नलिखितस्थानेषु भवेत्तदा तस्य निम्नलिखितानि पदानि भवेयुः:– जन्माङ्करुद्रेषु सुवर्णपादं द्विपञ्चनन्दैः रजतस्य पादम्। त्रिसप्तदिक् ताम्रपदं वदन्ति वेदाष्टचार्केष्विह लौहपादम्। तत्फलम् – लौहे वित्तविनाशः स्यात्सर्वसौख्यञ्च काञ्चने। ताम्रे च समता ज्ञेया सौभाग्यं राजते भवेत्।। अनिष्टफलदायकशनेर्जपः कार्यः, लौहञ्च धार्यम्। शनावश्वत्थमूले जलादिभिः पूजनं शनिस्तवञ्च पठितव्यः। शनिस्तवः:– पिप्पलाद उवाच–नमस्ते कोणसंस्थाय पिङ्गलाक्षाय ते नमः। नमस्ते बभ्रुरूपाय कृष्णाय च नमोस्तु ते। नमस्ते यमसंज्ञाय नमस्ते सौरये विभो। नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते चान्तकाय च। नमस्ते मन्दसंज्ञाय शनैश्चर नमोऽस्तुते। प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य मे।

ग्रहस्थितिः:– मार्गिणौ पूर्वोदितो कुजगुरू, मार्गी पूर्वोदितो बुधः १४ तः पूर्वास्तः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः ३ तो वक्री, वक्री पूर्वोदितः शनिः।
वातावरणम्– पक्षेऽस्मिन् छिन्नवृष्टिशीतवृद्धिहिमपातवाय्वप्रचारादयः।

पौषशुक्लपक्षः

शकाब्दः १९२७, संवत् २०६२, सन् १४१३ साल, दि. ०१।०१।२००६ ई. तः दि. १४।०१।२००६ ई. या., पूर्वेकालः। मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, वक्री पश्चिमोदितः शुक्रः ३ तः पश्चिमास्तः १३ तः पूर्वोदितः, अशुद्धः, हेमन्तर्तुः, याम्यगोलायने।

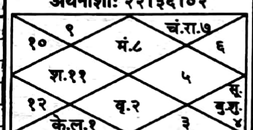
ति. दि.	तिथयः द. प.	तिथयः घं. मि.	नक्षत्राणि द. प.	नक्षत्राणि घं. मि.	योगाः द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः रा. द. प.	चन्द्रराशयः घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं द. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	दिनाङ्काः रा.	दिनाङ्काः सौ.	दिनाङ्काः अं.	
०१र.	०१।५५	दि.०७।३४	उषा.५१।१९	रा.०३।२०	व्या.३६।१६	ब.०१।५५	घ.०८।१०	दि.१०।०४	०८।१६।५९।५०	२५।५८	६।४८	५।१२	११	१७	०१	जनवरी २००६ ई., द्वितीयामानम् ५४।४६, चन्द्रदर्शनं मु. ४५ फलं समर्घं, द.ति. ०१।५५ उ. ५६।४१ या., पश्चिमां विना यात्रा तृतीयायाम्।
०३चं.	५१।०३	रा.०३।१३	श्र.४७।२५	"०१।४६	ह.२८।४०	तै.२३।५२	मकर	अहो.	०८।१८।०१।१६	२६।००	६।४८	५।१२	१२	१८	०२	पश्चिमास्तः शुक्रः २९।१७, पूर्वां विना यात्रा श्रवणायां, पञ्चकारंभो रात्रौ घं.०१मि.४६उ.।
०४मं.	४५।११	"१२।५२	ध.४३।१५	"१२।०६	व.२०।५१	व.१८।०७	म.१५।२०	दि.१२।५६	०८।१९।०२।४२	२६।०१	६।४८	५।१२	१३	१९	०३	श्रीगणेश ४ व्रतं, भ.१८।०७ उ. ४५।११ या., पूर्वयात्रा मकरस्थे चन्द्रे ततः पश्चिमयात्रा धनिष्ठायाम्।
०५बु.	३९।११	"१०।३२	श.३९।०५	"१०।२६	सि.१२।५६	ब.१२।१५	कुम्भ	अहो.	०८।२०।०४।०८	२६।०२	६।४८	५।१२	१४	२०	०४	पश्चिमयात्रा पूर्वभाद्रे।
०६बृ.	३३।३७	"०८।१४	पूभा.३५।०५	"०८।४९	व्य.०५।०४	कौ.०६।२८	कुं.२१।०५	दि.०३।१३	०८।२१।०५।३४	२६।०३	६।४७	५।१३	१५	२१	०५	वरीयानयोगमानम् ५२।२२, पश्चिमयात्रा कुम्भस्थे चन्द्रे ततः पश्चिमोत्तरयात्रा पूर्वभाद्रे।
~~०७शु.~~	~~२८।२०~~	~~सा.०६।०७~~	~~उभा.३१।३०~~	~~"०७।२३~~	~~प.५०।१२~~	~~ग.००।५१~~	~~मीन~~	~~अहो.~~	~~०८।२२।०६।५१~~	~~२६।०४~~	~~६।४७~~	~~५।१३~~	~~१६~~	~~२२~~	~~०६~~	गुरुगोविन्दसिंहजयन्ती, भ. २८।२० उ. ५५।५७ या., उत्तरयात्रा रेवत्याम्।
०८श.	२३।३४	दि.०४।१३	रे.२८।२९	सा.०६।११	शि.४३।२८	ब.२३।३४	मी.२८।२९	सा.०६।११	०८।२३।०८।२३	२६।०६	६।४७	५।१३	१७	२३	०७	पश्चिमोत्तरयात्रा रेवत्यां ततः पूर्वां विना यात्राश्विन्यां, पञ्चकान्तः सायं घं.०६ मि.११ उ., गं. १६।२९ उ. ३१।२९ या.।
०९र.	१९।३९	"०२।३८	अ.२६।१८	"०५।१७	सि.३७।२५	कौ.१९।३९	मेष	अहो.	०८।२४।०९।४७	२६।०८	६।४६	५।१४	१८	२४	०८	पश्चिमां विना यात्रा दशम्यामश्विन्यां, दशतारकान्तः सायं घं. ०५ मि.१७ उ.।
१०चं.	१६।३७	"०१।२५	भ.२४।५६	"०४।४४	सा.३२।०९	ग.१६।३७	मे.३९।५२	रा.१०।४३	०८।२५।११।११	२६।१०	६।४६	५।१४	१९	२५	०९	कर्म १० श्रीविश्वकर्मपूजा, भ. ४५।३९ उ.।
११मं.	१४।४०	"१२।३८	कृ.२४।३९	"०४।३८	शुभ.२७।४३	वि.१४।४०	वृष	अहो.	०८।२६।१२।३५	२६।११	६।४६	५।१४	२०	२६	१०	पुत्रदा ११ व्रतं सर्वेषां, धर्मसावर्णिमन्वादिः, पूर्वदक्षिणयात्रा रोहिण्यां, भ. १४।४० या.।
१२बु.	१३।५५	"१२।२०	रो.२५।३४	"०५।००	शु.२४।१८	बा.१३।५५	वृ.५६।४०	रा.०५।२६	०८।२७।१३।५८	२६।१२	६।४६	५।१४	२१	२७	११	उत्तराषाढे रविः ०९।५३, श्रीनारायण १२ गोमयेन पारणं, प्रदोष १३ व्रतं, पूर्वदक्षिणयात्रा द्वादश्याम्।
१३बृ.	१४।२८	"१२।३२	मृ.२७।४६	"०५।५१	ब्र.२१।५२	तै.१४।२८	मिथुन	अहो.	०८।२८।१५।२२	२६।१३	६।४५	५।१५	२२	२८	१२	पूर्वोदितः शुक्रः ०६।०६, प्रदोष १४ व्रतं, दक्षिणां विना यात्रा त्रयोदश्याम्।
१४शु.	१६।२३	"०१।१८	आ.३१।१८	रा.०७।१६	ऐं.२०।२९	व.१६।२३	मिथुन	अहो.	०८।२९।१६।४५	२६।१४	६।४५	५।१५	२३	२९	१३	मासान्तः, भ. १६।२३ उ. ४७।५३ या.। ●सौम्यायनारंभः २५।२७ उ., कौशिकीस्नानं तन्मन्त्रश्च-गाधिराजसुते देवि विश्वामित्र मुनेः स्वसः। ऋचीकभार्ये सत्यार्ये पापं मे हर कौशिकि॥
१५श.	१९।२४	"०२।३१	पुन.३५।५४	"०९।०७	वै.१९।५६	ब.१९।२४	मि.१९।४५	दि.०२।३९	०९।००।१८।०५	२६।१६	६।४५	५।१५	२४	०१	१४	मकरे रविः २५।२७, पौषी १५ स्नानदानादिः, माघस्नानारंभः, कल्पवासारंभः प्रयागे, तिलसंक्रान्तिः, मु.४५ फलं समर्घं सौम्यायनसंक्रान्तिपुण्यकालो घं.०४ मि. ५६ उपरिदिने, ●

● मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च ● | दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सिं.अं.	कं.अं.	तु.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मी.अं.
०१र.	००।२४।४४।५७	०८।०३।५४।३१	०६।२१।०५।५०	०८।२५।५७।०७	०३।१७।१०।३१	०५।१७।१२।४४	४२।५९	१४।०६	१६।०२	१८।१५	२०।३३	२२।४९	०१।०४	०३।२२	०५।४०	०७।४५	०९।३१	११।०२	१२।२९
०३चं.	००।२५।०३।२१	०८।०५।३५।५७	०६।२१।१५।४४	०८।२५।२०।५५	०३।१७।०६।०९	०५।१७।०९।३३	४३।००	१४।०१	१५।५७	१८।१०	२०।२८	२२।४४	००।५९	०३।१७	०५।३५	०७।४०	०९।२६	१०।५७	१२।२४
०४मं.	००।२५।२१।४५	०८।०७।१७।२३	०६।२१।२५।३८	०८।२४।४४।४३	०३।१७।०१।४७	०५।१७।०६।२२	४३।०१	१३।५७	१५।५३	१८।०६	२०।२४	२२।४०	००।५५	०३।१३	०५।३१	०७।३६	०९।२२	१०।५३	१२।२०
०५बु.	००।२५।४०।०९	०८।०८।५८।४९	०६।२१।३५।३२	०८।२४।०८।३१	०३।१६।५७।२५	०५।१७।०३।११	४३।०२	१३।५३	१५।४९	१८।०२	२०।२०	२२।३६	००।५१	०३।०९	०५।२७	०७।३२	०९।१८	१०।४९	१२।१६
०६बृ.	००।२५।५८।३३	०८।१०।४०।१५	०६।२१।४५।२५	०८।२३।३२।१९	०३।१६।५३।०४	०५।१७।००।०१	४३।०२	१३।४८	१५।४४	१७।५७	२०।१५	२२।३१	००।४६	०३।०४	०५।२२	०७।२७	०९।१३	१०।४४	१२।११
०७शु.	००।२६।१६।५७	०८।१२।२१।४०	०६।२१।५५।१८	०८।२२।५६।०७	०३।१६।४८।४३	०५।१६।५६।५१	४३।०२	१३।४४	१५।४०	१७।५३	२०।११	२२।२७	००।४२	०३।००	०५।१८	०७।२३	०९।०९	१०।४०	१२।०७
०८श.	००।२६।३८।२५	०८।१४।०६।५३	०६।२२।०४।२८	०८।२२।१७।४४	०३।१६।४४।१०	०५।१६।५३।४०	४३।०३	१३।४०	१५।३६	१७।४९	२०।०७	२२।२३	००।३८	०२।५६	०५।१४	०७।१९	०९।०५	१०।३६	१२।०३
०९र.	००।२६।५९।३३	०८।१५।५२।०६	०६।२२।१३।३८	०८।२१।३९।२१	०३।१६।३९।३८	०५।१६।५०।२९	४३।०४	१३।३५	१५।३१	१७।४४	२०।०२	२२।१८	००।३३	०२।५१	०५।०९	०७।१४	०९।००	१०।३१	११।५८
१०चं.	००।२७।२०।५१	०८।१७।३७।१९	०६।२२।२२।४७	०८।२१।००।५८	०३।१६।३५।०६	०५।१६।४७।१८	४३।०५	१३।३१	१५।२७	१७।४०	१९।५८	२२।१४	००।२९	०२।४७	०५।०५	०७।१०	०८।५६	१०।२७	११।५४
११मं.	००।२७।४२।०९	०८।१९।२२।३२	०६।२२।३१।५६	०८।२०।२२।३५	०३।१६।३०।३४	०५।१६।४४।०७	४३।०६	१३।२६	१५।२२	१७।३५	१९।५३	२२।०९	००।२४	०२।४२	०५।००	०७।०५	०८।५१	१०।२२	११।४९
१२बु.	००।२८।०३।२७	०८।२१।०७।४५	०६।२२।४१।०५	०८।१९।४४।१२	०३।१६।२६।०२	०५।१६।४०।५६	४३।०७	१३।२२	१५।१८	१७।३१	१९।४९	२२।०५	००।२०	०२।३८	०४।५६	०७।०१	०८।४७	१०।१८	११।४५
१३बृ.	००।२८।२४।४५	०८।२२।५२।५७	०६।२२।५०।१४	०८।१९।०५।५०	०३।१६।२१।३०	०५।१६।३७।४५	४३।०७	१३।१७	१५।१३	१७।२६	१९।४४	२२।००	००।१५	०२।३३	०४।५१	०६।५६	०८।४२	१०।१३	११।४०
१४शु.	००।२८।४६।०२	०८।२४।३८।०९	०६।२२।५९।२३	०८।१८।२७।२८	०३।१६।१६।५८	०५।१६।३४।३५	४३।०७	१३।१३	१५।०९	१७।२२	१९।४०	२१।५६	००।११	०२।२९	०४।४७	०६।५२	०८।३८	१०।०९	११।३६
१५श.	००।२९।०९।४१	०८।२६।२४।२९	०६।२३।०७।४४	०८।१८।०३।२९	०३।१६।११।५२	०५।१६।३१।२४	४३।०८	१३।०८	१५।०४	१७।१७	१९।३५	२१।५१	००।०६	०२।२४	०४।४२	०६।४७	०८।३३	१०।०४	११।३१

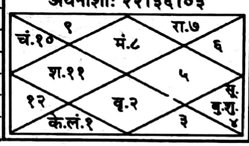
०७ शुक्रे वल्ली ०८।३८।०७।५७

अयनांशा: २२।३६।०२



१४ शुक्रे वल्ली ०८।३८।०८।०४

अयनांशा: २२।३६।०३



विविधविषयाः- वैष्णवानामेकादशीव्रतनिर्णयः- दशमी पञ्चपंचाशद् घटिका चेत्प्रदृश्यते। तर्हि चैकादशी त्याज्या द्वादशीं समुपोषयेत् ॥ दशमीपलमात्रेण त्याज्या चैकादशी तिथिः। मदिराविन्दुपातेन त्याज्यो गंगाघटो यथा॥ नारदपुराणे- क्षये वाप्यथवा वृद्धौ सम्प्राप्ते वा दिनत्रये। उपोष्या द्वादशी तत्र त्रयोदश्यान्तु पारणम् ॥ कौर्मे- तिथिक्षये तु सम्प्राप्ते उपोष्या द्वादशी भवेत्। दशमीशेषसंयुक्तां न कुर्वीत कदाचन॥ भविष्ये- दशमीशेषसंयुक्तो यदि स्यादरुणोदयः। वैष्णवेन न कर्त्तव्यं तद्दिनैकादशीव्रतम्। अरुणोदयवेधस्तु वैष्णवेषु प्रकीर्तितः॥ अरुणोदयकालो ब्रह्मवैवर्त्ते- चतस्रो घटिकाः प्रातररुणोदय उच्यते। यतीनां स्नानकालोऽयं गंगाम्भः सदृशं फलम् ॥ एकादश्यां त्याज्यवस्तूनि- कांस्यं मांसं मसूरान्नं चणकं कोद्रवं तथा। शाकं मधु परान्नञ्च पुनर्भोजनमैथुने॥ केषामन्नं परान्नं नेत्याह- गुर्वन्नं मातुलान्नं च श्वसुरान्नं तथैव च। पितुः पौत्रस्य चैवान्नं न परान्नमिति स्मृतिः॥ स्वपवित्रवस्तूनि- आसनं वसनं शय्या जायाऽपत्यं कमण्डलुः। आत्मनः शुचिरेतानि न परेषां कदाचन॥

ग्रहस्थितिः- मार्गिणौ पूर्वोदितौ कुजगुरू, मार्गी पूर्वास्तो बुधः, वक्री पश्चिमोदितः शुक्रः ३तः पश्चिमास्तः १३ तः पूर्वोदितः, वक्री पूर्वोदितः शनिः।

वातावरणम्- पक्षेऽस्मिन् शीतवृद्धिहिमपातोपलपातवायुचारमेघच्छायाच्छिन्नवृष्टयः।

माघकृष्णपक्षः

शकाब्दः १९२७, संवत् २०६२, सन् १४१३ साल, दि. १५।०१।२००६ ई. तः दि. २९।०१।२००६ ई. या., पूर्वेकालः। मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, वक्री पूर्वोदितः शुक्रः १३ तो मार्गी, शुद्धः, शिशिरर्तुः, याम्यगोलः, सौम्यायनम्।

ति. दि.	तिथयः द. प.	तिथयः घं. मि.	नक्षत्राणि द. प.	नक्षत्राणि घं. मि.	योगाः द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः रा. द. प.	चन्द्रराशयः घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं द. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	दिनाङ्काः रा.	दिनाङ्काः सौ.	दिनाङ्काः अं.
०१र.	२३।३६	दि.०४।१०	पु.४१।२८	रा.११।१९	वि.२०।१४	कौ.२३।३६	कर्क	अहो.	०९।०१।१९।२५	२६।१८	६।४४	५।१६	२५	०२	१५
०२चं.	२८।३०	सा.०६।०८	आ.४७।४२	"०१।४९	प्री.२१।०९	ग.२८।३०	क.४७।४२	रा.०१।४९	०९।०२।२०।४५	२६।२०	६।४४	५।१६	२६	०३	१६
०३मं.	३३।५४	रा.०८।१८	म.५४।१८	"०४।२७	आ.२२।२६	ब.०१।१२	सिंह	अहो.	०९।०३।२२।०५	२६।२१	६।४४	५।१६	२७	०४	१७
०४बु.	३९।१८	"१०।२७	पूफ.६०।००	अहो.	सौ.२३।४६	ब.०६।३६	सिंह	अहो.	०९।०४।२३।२५	२६।२२	६।४४	५।१६	२८	०५	१८
०५बृ.	४४।१७	"१२।२६	पूफ.००।४४	दि.०७।०१	शो.२४।५३	कौ.११।४९	सिं.१७।१३	दि.०१।३६	०९।०५।२४।४५	२६।२३	६।४३	५।१७	२९	०६	१९
०६शु.	४८।३१	"०२।०७	उफ.०६।४०	"०९।२३	अगं.२५।३२	ग.१६।२४	कन्या	अहो.	०९।०६।२६।०४	२६।२४	६।४३	५।१७	३०	०७	२०
०७श.	५१।३९	"०३।२३	ह.११।४६	"११।२५	सु.२५।२७	वि.२०।०५	कं.४३।४७	रा.१२।१४	०९।०७।२७।१८	२६।२७	६।४३	५।१७	०१	०८	२१
०८र.	५३।४०	"०४।१०	चि.१५।४८	"०१।०१	घृ.२४।२७	बा.२२।४०	तुला	अहो.	०९।०८।२८।३२	२६।३०	६।४२	५।१८	०२	०९	२२
०९चं.	५४।१९	"०४।२५	स्वा.१८।३८	"०२।०८	शू.२२।३१	तै.२४।००	तुला	अहो.	०९।०९।२९।४६	२६।३३	६।४१	५।१९	०३	१०	२३
१०मं.	५३।४१	"०४।०९	वि.२०।१२	"०२।४६	गं.१९।३४	व.२४।००	तु.०४।४९	दि.०८।३७	०९।१०।३१।००	२६।३६	६।४१	५।१९	०४	११	२४
११बु.	५१।४८	"०३।२३	अनु.२०।३२	"०२।५३	वृ.१५।३७	ब.२२।४५	वृश्चिक	अहो.	०९।११।३२।१४	२६।३९	६।४०	५।२०	०५	१२	२५
१२बृ.	४८।५३	"०२।१३	ज्ये.१९।४३	"०२।३३	ध्रु.१०।४५	कौ.२०।२१	वृ.१९।४३	दि.०२।३३	०९।१२।३३।२८	२६।४२	६।४०	५।२०	०६	१३	२६
१३शु.	४५।००	"१२।३९	मू.१७।५४	"०१।४९	व्या.०५।०३	ग.१६।५७	धनु	अहो.	०९।१३।३४।४१	२६।४४	६।३९	५।२१	०७	१४	२७
१४श.	४०।१७	"१०।४६	पूषा.१५।१४	"१२।४५	व.५१।४१	वि.१२।३८	ध.२९।२४	सा.०६।२५	०९।१४।३५।४८	२६।४७	६।३९	५।२१	०८	१५	२८
३०र.	३५।०१	"०८।३८	उषा.११।५४	"११।२४	सि.४४।१२	च.०७।३९	मकर	अहो.	०९।१५।३६।५५	२६।५०	६।३८	५।२२	०९	१६	२९

- १५ पुष्टः शुक्रः शुद्धारंभश्च ०६।०६ उपरि, मासादिः, लक्ष्मणसंवत् ८९७ प्रारंभः, माघे कमलास्नानं महापुण्यप्रदं, मकरार्केऽर्कवासरे शिवार्चनं महापुण्यप्रदम्।
- १६ मकरे बुधः ४४।४७, गं. ३६।४२ उ. ५१।४२ या., विवाहो मघायाम्।
- १७ भ. ०१।१२ उ. ३३।५४ या., पूर्वयात्रा पूर्वफल्गुन्याम्।
- १८ श्रीभालचन्द्र ४ व्रतं, श्रीगणेशावतारः, श्रीगणेशपूजनं, पूर्वयात्रा पञ्चम्याम्।
- १९ पूर्वोत्तरयात्रा पूर्वफल्गुन्यां, विवाह उत्तरफल्गुन्याम्।
- २० भ. ४८।३१ उ., पूर्वदक्षिणयात्रा हस्ते षष्ठ्यां, विवाह उत्तरफल्गुन्यां, राहुवेधाद्विवाहो मध्यमो हस्ते।
- २१ भ. २०।०५ या., दक्षिणयात्रा कन्यास्थे चन्द्रे ततः पश्चिमदक्षिणयात्रा।
- २२ अपूपाष्टका, मकरार्के ऽर्कवासरे शिवार्चनं महापुण्यप्रदं, दक्षिणयात्रा विवाहश्चाष्टम्याम्।
- २३ अन्वष्टकानवमी, सुभाषजयन्ती।
- २४ श्रवणायां रविः १३।११, भ. २४।०० उ. ५३।४१ या., पश्चिमयात्रानुराधायां दशम्याम्।
- २५ द.ति. ५१।४८ उ., षट्तिला ११ व्रतं सर्वेषां, पश्चिमयात्रैकादश्यां, कुजवेधाद्विवाहो नैवानुराधायाम्।
- २६ द.ति. ४८।५३ या., गं. १३।४३ उ. २८।४३ या., गोदुग्धेन पारणं, सप्तपञ्चाशद्गणतन्त्रदिवसः राष्ट्रियध्वजोत्तोलनपूर्वकराष्ट्रगानं, विवाहः पूर्वोत्तरयात्रा च त्रयोदश्याम्।
- २७ हर्षणयोगमानम् ५३।३७, मार्गी शुक्रः ४४।०८, भ. ४५।०० उ., प्रदोष १३ व्रतं, पूर्वोत्तरयात्रा, विवाहो मूले।
- २८ भ. १२।३८ या., प्रदोष १४ व्रतं, नक्तव्रतं, नरकनिवारणचतुर्दशीव्रतं प्रदोषः घं. ०६ मि. ५७ यावद्रात्रौ शिवार्चनं सहस्राश्वमेधसमफलदं, उत्तरयात्रा पूर्वाषाढे।
- २९ माघी ३० मौनी ३० स्नानदानादिः, मकरार्केऽर्कवासरे शिवार्चनं महापुण्यप्रदं, महोदययोगो घं.११ मि. २४ उपरिदिने अत्र गंगायामन्यत्रापि वा स्नानदानादिकमतीव फलदं, विवाहः प्रतिपदि, ●

●कलियुगादिः, कलिगताब्दाः ५१०७, कलिभोग्याब्दाः ४२६८९९३, सृष्टिगताब्दाः १९७२९४९१०७, सृष्टिभोग्याब्दाश्च २३४७०५०८९३, महोदययोगः- श्रवणार्कव्यतीपातैरमा चेत्पौषमाघयोः। अर्द्धोदयः स विज्ञेयः किञ्चित्न्यूने महोदयः।। अत्र किञ्चित्न्यूनपदेन श्रवणव्यतीपातयोरन्यतरस्याभावोऽवगन्तव्यः।

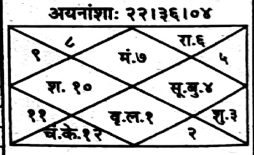
● मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च ●

ति. दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं
०१र.	००।१९।३३।२०	०८।२८।१०।४९	०६।२३।१६।०४	०८।१७।३९।३१	०३।१६।०६।४६	०५।१६।२८।१३	४३।०९
०२चं.	००।१९।५६।५९	०८।२९।५७।०९	०६।२३।२४।२४	०८।१७।१५।३३	०३।१६।०१।४०	०५।१६।२५।०२	४३।१०
०३मं.	००।२०।२०।३८	०९।०१।४३।२८	०६।२३।३२।४४	०८।१६।५१।३५	०३।१५।५६।३४	०५।१६।२१।५१	४३।११
०४बु.	००।२०।४४।१७	०९।०३।२९।४७	०६।२३।४१।०४	०८।१६।२५।३७	०३।१५।५१।२८	०५।१६।१८।४०	४३।१२
०५बृ.	००।२१।०७।५५	०९।०५।१६।०६	०६।२३।४९।२४	०८।१५।४१।३९	०३।१५।४६।२२	०५।१६।१५।३०	४३।१२
०६शु.	००।२१।३१।३३	०९।०७।०२।२५	०६।२३।५७।४४	०८।१५।३९।४१	०३।१५।४१।१५	०५।१६।१२।२०	४३।१२
०७श.	००।२१।५६।५७	०९।०८।४६।४८	०६।२४।०४।५८	०८।१५।३०।०९	०३।१५।३६।१६	०५।१६।०९।०९	४३।१४
०८र.	००।२२।२२।२१	०९।१०।३१।११	०६।२४।१२।१२	०८।१५।२०।४१	०३।१५।३१।१७	०५।१६।०५।५८	४३।१६
०९चं.	००।२२।४७।४५	०९।१२।१५।३३	०६।२४।१९।२६	०८।१५।११।१३	०३।१५।२६।१८	०५।१६।०२।४७	४३।१८
१०मं.	००।२३।१३।०९	०९।१३।५९।५५	०६।२४।२६।४०	०८।१५।०१।४५	०३।१५।२१।१९	०५।१५।५९।५६	४३।१९
११बु.	००।२३।३८।३३	०९।१५।४४।१७	०६।२४।३३।५४	०८।१४।५२।१७	०३।१५।१६।२०	०५।१५।५६।२५	४३।२०
१२बृ.	००।२४।०३।५७	०९।१७।२८।३९	०६।२४।४१।०८	०८।१४।४२।४९	०३।१५।११।२१	०५।१५।५३।१५	४३।२१
१३शु.	००।२४।२९।२०	०९।१९।१३।०१	०६।२४।४८।२२	०८।१४।३८।१६	०३।१५।०६।२२	०५।१५।५०।०५	४३।२२
१४श.	००।२४।५६।२५	०९।२०।५२।३६	०६।२४।५४।४२	०८।१४।३९।३५	०३।१५।०१।२७	०५।१५।४६।५४	४३।२४
३०र.	००।२५।२३।३०	०९।२२।३२।१०	०६।२५।०१।०२	०८।१४।४९।४४	०३।१४।५६।२२	०५।१५।४३।४३	४३।२६

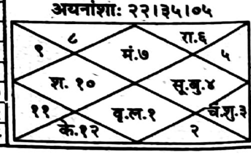
दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सिं.अं.	कं.अं.	तु.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मी.अं.
०१र.	१३।०४	१५।००	१७।१३	१९।३१	२१।४७	००।०२	०२।२०	०४।३८	०६।४३	०८।२९	१०।००	११।२७
०२चं.	१३।००	१४।५६	१७।०९	१९।२७	२१।४३	२३।५८	०२।१६	०४।३४	०६।३९	०८।२५	०९।५६	११।२३
०३मं.	१२।५६	१४।५२	१७।०५	१९।२३	२१।३९	२३।५४	०२।१२	०४।३०	०६।३५	०८।२१	०९।५२	११।१९
०४बु.	१२।५२	१४।४८	१७।०१	१९।१९	२१।३५	२३।५०	०२।०८	०४।२६	०६।३१	०८।१७	०९।४८	११।१५
०५बृ.	१२।४७	१४।४३	१६।५६	१९।१४	२१।३०	२३।४५	०२।०३	०४।२१	०६।२६	०८।१२	०९।४३	११।१०
०६शु.	१२।४३	१४।३९	१६।५२	१९।१०	२१।२६	२३।४१	०१।५९	०४।१७	०६।२२	०८।०८	०९।३९	११।०६
०७श.	१२।३९	१४।३५	१६।४८	१९।०६	२१।२२	२३।३७	०१।५५	०४।१३	०६।१८	०८।०४	०९।३५	११।०२
०८र.	१२।३५	१४।३१	१६।४४	१९।०२	२१।१८	२३।३३	०१।५१	०४।०९	०६।१४	०८।००	०९।३१	१०।५८
०९चं.	१२।३१	१४।२७	१६।४०	१८।५८	२१।१४	२३।२९	०१।४७	०४।०५	०६।१०	०७।५६	०९।२७	१०।५४
१०मं.	१२।२६	१४।२२	१६।३५	१८।५३	२१।०९	२३।२४	०१।४२	०४।००	०६।०५	०७।५१	०९।२२	१०।४९
११बु.	१२।२२	१४।१८	१६।३१	१८।४९	२१।०५	२३।२०	०१।३८	०३।५६	०६।०१	०७।४७	०९।१८	१०।४५
१२बृ.	१२।१८	१४।१४	१६।२७	१८।४५	२१।०१	२३।१६	०१।३४	०३।५२	०५।५७	०७।४३	०९।१४	१०।४१
१३शु.	१२।१४	१४।१०	१६।२३	१८।४१	२०।५७	२३।१२	०१।३०	०३।४८	०५।५३	०७।३९	०९।१०	१०।३७
१४श.	१२।०९	१४।०५	१६।१८	१८।३६	२०।५२	२३।०७	०१।२५	०३।४३	०५।४८	०७।३४	०९।०५	१०।३२
३०र.	१२।०५	१४।०१	१६।१४	१८।३२	२०।४८	२३।०३	०१।२१	०३।३९	०५।४४	०७।३०	-०९।०१	१०।२८

०६ शुक्रे वल्ली ०८।३८।०८।११
अयनांशाः २२।३६।०४



१३ शुक्रे वल्ली ०८।३८।०८।१८
अयनांशाः २२।३५।०५



विविधविषयाः:- माघे प्रातःस्नानफलम् - यो माघमास्युषसि सूर्यकरान्विताग्रे स्नानं समाचरति चारुनदीप्रवाहे। उद्धृत्य सप्तपुरुषान् पितृमातृवंश्यान् स्वर्गं प्रयात्यमरदेहधरो नरोऽसौ।। **मकरार्के प्रातः स्नानमन्त्राः**:- मकरस्थे रवौ माघे गोविन्दाच्युत माधव। प्रातः स्नानेन मे देव यथोक्तफलदो भव।। दुःखदारिद्र्यनाशाय श्रीविष्णोस्तोषणाय च। प्रातः स्नानं करोम्यद्य माघे पापविनाशनम्।। **माघे कुत्रापि स्नानफलम्**- स्वर्गलोके चिरं वासो येषां मनसि वर्तते। यत्र क्वापि जले तैस्तु स्नातव्यं मृगभास्करे। **चतुर्थ्यां गणेशोत्पत्तिः**:- सर्वदेवमयः साक्षात्सर्वमंगलकारकः। माघकृष्णचतुर्थ्यां तु प्रादुर्भूतो गणाधिपः।। तत्र गणेशं यथोपचारैः संपूज्य रात्रौ व्रतपूर्वकं जागरणं कृत्वा प्रातर्ब्राह्मणान् भोजयेत्, मोदकादिकं च दद्यात्। **चतुर्दश्यां नरकनिवारणचतुर्दशीव्रतम्** - चतुर्दशीसमं नास्ति व्रतं पापक्षयापहम्। यत्कृत्वा सर्वपापेभ्यो मुच्यते नात्र संशयः।। अश्वमेधसहस्राणि वाजपेयशतानि च। प्राप्नोति तत्फलं सर्वं नात्र कार्या विचारणा।।

ग्रहस्थितिः:- मार्गिणौ पूर्वोदितौ कुजगुरू, मार्गी पूर्वास्तो बुधः, वक्री पूर्वोदितः शुक्रः १३तो मार्गी, वक्री, पूर्वोदितः शनिः।

वातावरणम्- पक्षाद्यन्तभागयोः शीतवृद्धिहिमपातच्छिन्नस्वल्पवृष्टयस्तन्मध्यभागे मेघचारवायुशीतादयः।

माघशुक्लपक्षः

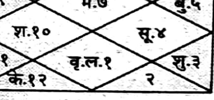
शकाब्दः १९२७, संवत् २०६२, सन् १४१३ साल, दि. ३०।१।२००६ ई. तः दि. १३।२।२००६ ई. या., पूर्वेकालः १४तो दक्षिणेकालः। मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पूर्वोदितः शुक्रः, शुद्धः, शिशिरर्तुः, याम्यगोलः, सौम्यायनम्।

ति. दि.	तिथयः द. प.	तिथयः घं. मि.	नक्षत्राणि द. प.	नक्षत्राणि घं. मि.	योगाः द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः रा. द. प.	चन्द्रराशयः घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं द. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	दिनाङ्काः रा.	दिनाङ्काः सौ.	दिनाङ्काः अं.	माघशुक्लपक्षः
०१ चं.	२९।२३	सा.०६।२२	श्र.०८।०५	दि.०९।५१	व्य.३७।३०	किं.०२।१२	म.३६।०१	रा.०९।०१	०९।१६।३८।०१	२६।५३	६।३७	५।२३	१०	१७	३०	पश्चिमोदितो बुधः ३९।१६, शिशिरनवरात्रारम्भः, कलशस्थापनं, श्रीदुर्गापूजनोत्सवः, श्रीवल्लभाचार्यजयन्ती, पञ्चकारंभो दिवा घं. ०९ मि.५१ उ., विवाहो दिवारात्रौ, कर्णवेधः, पूर्वां विना●
०२ मं.	२३।३१	दि.०४।०१	ध.०३।५८	"०८।१२	व.२८।३६	कौ.२३।३१	कुम्भ	अहो.	०९।१७।३९।०७	२६।५६	६।३७	५।२३	११	१८	३१	शतभिषामानम् ५५।४८, चन्द्रदर्शनं मु. १५ फलं महार्घं, पश्चिमयात्रा धनिष्ठायाम्। ●यात्रा श्रवणायाम्।
०३ बु.	१७।३९	"०१।४०	पूभा.५५।४३	रा.०४।५३	प.२०।४६	ग.१७।३९	कुं.४१।४४	रा.११।१८	०९।१८।४०।१३	२६।५९	६।३६	५।२४	१२	१९	०१	फरवरी ०२, म. ४४।४९ उ., बदरी ३ कुन्दकुसुमैः पार्वतीपूजनं, कुन्द ४ श्रीगणेश ४ व्रतम्।
०४ बृ.	११।५८	"११।२३	उभा.५२।०१	"०३।२४	शि.१३।०४	वि.११।५८	मीन	अहो.	०९।१९।४१।१९	२७।०२	६।३६	५।२४	१३	२०	०२	म. ११।५८ या., पश्चिमोत्तरयात्रा रेवत्यां, केतुवेधाद्विवाहो मध्यम उत्तरभाद्रे पञ्चम्यां, विवाहो रेवत्यां, देवादिप्रतिष्ठोपनयनञ्च पञ्चम्यां, (४-५) एको.।
०५ शु.	०६।४१	"०९।१५	रे.४८।४९	"०२।०७	सि.०५।४४	बा.०६।४१	मी.४८।४९	रा.०२।०७	०९।२०।४२।२५	२७।०६	६।३५	५।२५	१४	२१	०३	साध्ययोगमानम् ५३।०७, कुंभे बुधः १३।२४, वसन्तपञ्चमी, श्रीसरस्वतीपूजनं, पञ्चकान्तो रात्रौ घं. ०२ मि.०७ उ., उत्तराभिमुखहलप्रवाहः, विवाहो दिवारात्रौ, देवादिप्रतिष्ठा, गं. ३६।४९ उ.☐
०६ श.	०१।५७	"०७।२१	अ.४६।२८	"०१।०९	शुभ.५२।३९	तै.०१।५७	मेष	अहो.	०९।२१।४३।२३	२७।१०	६।३४	५।२६	१५	२२	०४	सप्तमीमानम् ५६।०८, अचला ७, ब्रह्मसावर्णिमन्वादिः, अरुणोदये स्नानं सूर्यग्रहणसमं, गंगायां शतसूर्यग्रहणसमं, प्रयागे च कोटिसूर्यग्रहणसमं फलदं, भ.५८।०५ उ., पूर्वां विना यात्राश्विन्याम्।
०८ र.	५५।०७	रा.०४।३६	भ.४४।५३	"१२।३०	शु.४७।०८	वि.२५।४०	मे.५९।४५	रा.०६।२७	०९।२२।४४।२१	२७।१४	६।३३	५।२७	१६	२३	०५	भ. २५।४० या., भीष्माष्टमी, श्रीभीष्मतर्पणम्। ☐ ५१।४९ या., उपनयनं मुण्डनं कर्णवेधश्च पञ्चम्यां, उत्तरयात्रा रेवत्यांततः पश्चिमां विना यात्रा।
०९ चं.	५३।१४	"०३।५०	कृ.४४।२२	"१२।१७	ब्र.४२।२८	बा.२४।११	वृष	अहो.	०९।२३।४५।१९	२७।१८	६।३२	५।२८	१७	२४	०६	धनिष्ठायां रविः १८।४४, दक्षिणयात्रा विवाहश्च दशम्याम्।
१० मं.	५२।३३	"०३।३३	रो.४५।०१	"१२।३२	ऐं.३८।४५	तै.२२।५४	वृष	अहो.	०९।२४।४६।१७	२७।२१	६।३२	५।२८	१८	२५	०७	पूर्वदक्षिणयात्रा रोहिण्यां तत उत्तरां विना यात्रा मृगशिरसि दशम्यां, छन्दोगानामुपनयनम्।
११ बु.	५३।११	"०३।४७	मृ.४७।००	"०१।१९	वै.३६।०२	व.२२।५२	वृ.१६।०१	दि.१२।५५	०९।२५।४७।१४	२७।२४	६।३१	५।२९	१९	२६	०८	वृषे कुजः ४३।१८, भ. २२।५२ उ. ५३।११ या., द.ति. ५३।११ उ., भैमी ११ व्रतं सर्वेषान्, उपनयनं, रात्रौ ११ व्रतोद्यापनं, मुण्डनं, कर्णवेधः, विवाहो मृगशिरसि, देवादिप्रतिष्ठा, ○
१२ बृ.	५५।१२	"०४।३६	आ.५०।१४	"०२।३७	वि.३४।२२	ब.२४।१२	मिथुन	अहो.	०९।२६।४८।११	२७।२७	६।३१	५।२९	२०	२७	०९	द.ति. ५५।१२ या., श्रीमाधव १२ गोदुग्धेन पारणं, पश्चिमयात्रा त्रयोदश्याम्। ○वापीकूपतडागादिखननम्, उत्तरां विना यात्रा मृगशिरसि।
१३ शु.	५८।१७	"०५।४९	पुन.५४।३५	"०४।२०	प्री.३३।३१	कौ.२६।४५	मि.३८।३०	रा.०९।५४	०९।२७।४९।०८	२७।३०	६।३०	५।३०	२१	२८	१०	प्रदोष १३ व्रतं, मुण्डनं, कर्णवेधः, देवादिप्रतिष्ठा, दक्षिणयात्रा मिथुनस्थे चन्द्रे तत उत्तरयात्रा पुनर्वसौ ततः पश्चिमां विना यात्रा पुष्ये।
१४ श.	६०।००	अहो.	पु.६०।००	अहो.	आ.३३।३८	ग.३०।२४	कर्क	अहो.	०९।२८।४९।५४	२७।३४	६।२९	५।३१	२२	२९	११	प्रदोष १४ व्रतं, त्र्यहो जन्मदिनकृत्यं, पूर्वां विना यात्रा पुष्ये।
१४ र.	०२।३१	दि.०७।२९	पु.००।०२	दि.०६।३०	सौ.३४।२४	व.०२।३१	कर्क	अहो.	०९।२९।५०।४०	२७।३७	६।२९	५।३१	२३	३०	१२	कुम्भे रविः ५३।०२, मु. १५ फलं महार्घं, मासान्तः, गं. ५५।०८ उ., भ. ०२।३१ उ. ३५।०१ या.। ❖कमलायां, जीवछघट्टे जीववत्सायाञ्च स्नानदानशिवार्चनादिकम्।
१५ चं.	०७।३०	"०९।२८	आश्ले.०६।०८	"०८।५५	शो.३५।४०	ब.०७।३०	क.०६।०८	दि.०८।५५	१०।००।५१।२६	२७।४०	६।२८	५।३२	२४	०१	१३	विष्णुपदीसंक्रान्तिपुण्यकालो घं.१२ मि. ०० यावद्दिने, माघस्नानसमाप्तिः, प्रयागे कल्पवाससमाप्तिः, माघी १५ स्नानदानादिः, श्रीरविदासजयन्ती, गं. १०।०८ या., गोशालाघट्टे ❖

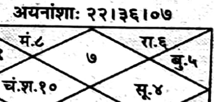
मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च / दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सिं.अं.	कं.अं.	तु.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मी.अं.
०१ चं.	००।२५।५०।३५	०९।२४।११।४४	०६।२५।०७।२२	०८।१४।५९।५३	०३।१४।५१।०७	०५।१५।४०।३२	४३।२८	१२।०१	१३।५७	१६।१०	१८।२८	२०।४४	२२।५९	०१।१७	०३।३५	०५।४०	०७।२६	०८।५७	१०।२४
०२ मं.	००।२६।१७।४०	०९।२५।५१।१८	०६।२५।१३।४१	०८।१५।१०।०२	०३।१४।४६।०२	०५।१५।३७।२१	४३।३०	११।५७	१३।५३	१६।०६	१८।२४	२०।४०	२२।५५	०१।१३	०३।३१	०५।३६	०७।२२	०८।५३	१०।२०
०३ बु.	००।२६।४४।४४	०९।२७।३०।५२	०६।२५।२०।००	०८।१५।२०।११	०३।१४।४०।५७	०५।१५।३४।१०	४३।३१	११।५३	१३।४९	१६।०२	१८।२०	२०।३६	२२।५१	०१।०९	०३।२७	०५।३२	०७।१८	०८।४९	१०।१६
०४ बृ.	००।२७।११।४८	०९।२९।१०।२६	०६।२५।२६।१९	०८।१५।३०।२०	०३।१४।३५।५३	०५।१५।३१।००	४३।३२	११।४९	१३।४५	१५।५८	१८।१६	२०।३२	२२।४७	०१।०५	०३।२३	०५।२८	०७।१४	०८।४५	१०।१२
०५ शु.	००।२७।३८।५२	१०।००।५०।००	०६।२५।३२।३८	०८।१५।४०।३०	०३।१४।३०।३९	०५।१५।२७।५०	४३।३३	११।४४	१३।४०	१५।५३	१८।११	२०।२७	२२।४२	०१।००	०३।१८	०५।२३	०७।०९	०८।४०	१०।०७
०६ श.	००।२८।०७।०८	१०।०२।२०।५५	०६।२५।३७।३३	०८।१६।०२।५०	०३।१४।२५।५०	०५।१५।२४।३९	४३।३५	११।४०	१३।३६	१५।४९	१८।०७	२०।२३	२२।३८	००।५६	०३।१४	०५।१९	०७।०५	०८।३६	१०।०३
०८ र.	००।२८।३५।२४	१०।०३।५१।५०	०६।२५।४२।२८	०८।१६।२५।१०	०३।१४।२०।५१	०५।१५।२१।२८	४३।३७	११।३६	१३।३२	१५।४५	१८।०३	२०।१९	२२।३४	००।५२	०३।१०	०५।१५	०७।०१	०८।३२	०९।५९
०९ चं.	००।२९।०३।४०	१०।०५।२२।४५	०६।२५।४७।२३	०८।१६।४७।३०	०३।१४।१५।५२	०५।१५।१८।१७	४३।३९	११।३२	१३।२८	१५।४१	१७।५९	२०।१५	२२।३०	००।४८	०३।०६	०५।११	०६।५७	०८।२८	०९।५५
१० मं.	००।२९।३१।५६	१०।०६।५३।४०	०६।२५।५२।१८	०८।१७।०९।४९	०३।१४।१०।५३	०५।१५।१५।०६	४३।४१	११।२८	१३।२४	१५।३७	१७।५५	२०।११	२२।२६	००।४४	०३।०२	०५।०७	०६।५३	०८।२४	०९।५१
११ बु.	०१।००।००।१२	१०।०८।२४।३५	०६।२५।५७।१३	०८।१७।३२।०८	०३।१४।०५।५४	०५।१५।११।५५	४३।४३	११।२४	१३।२०	१५।३३	१७।५१	२०।०७	२२।२२	००।४०	०२।५८	०५।०३	०६।४९	०८।२०	०९।४७
१२ बृ.	०१।००।२८।२७	१०।०९।५५।३०	०६।२६।०२।०८	०८।१७।५४।२७	०३।१४।००।५५	०५।१५।०८।४४	४३।४४	११।१९	१३।१५	१५।२८	१७।४६	२०।०२	२२।१७	००।३५	०२।५३	०४।५८	०६।४४	०८।१५	०९।४२
१३ शु.	०१।००।५६।४२	१०।११।२६।२५	०६।२६।०७।०२	०८।१८।१६।४६	०३।१३।५५।५५	०५।१५।०५।३४	४३।४५	११।१५	१३।११	१५।२४	१७।४२	१९।५८	२२।१३	००।३१	०२।४९	०४।५४	०६।४०	०८।११	०९।३८
१४ श.	०१।०१।२६।२३	१०।१२।४२।२४	०६।२६।१०।५४	०८।१८।५०।५६	०३।१३।५१।००	०५।१५।०२।२३	४३।४७	११।११	१३।०७	१५।२०	१७।३८	१९।५४	२२।०९	००।२७	०२।४५	०४।५०	०६।३६	०८।०७	०९।३४
१४ र.	०१।०१।५६।०४	१०।१३।५८।२३	०६।२६।१४।४५	०८।१९।२५।०६	०३।१३।४६।०५	०५।१४।५९।१२	४३।४९	११।०७	१३।०३	१५।१६	१७।३४	१९।५०	२२।०५	००।२३	०२।४१	०४।४६	०६।३२	०८।०३	०९।३०
१५ चं.	०१।०२।२५।४५	१०।१५।१४।२२	०६।२६।१८।३६	०८।१९।५९।१५	०३।१३।४१।१०	०५।१४।५६।०१	४३।५१	११।०३	१२।५९	१५।१२	१७।३०	१९।४६	२२।०१	००।१९	०२।३७	०४।४२	०६।२८	०७।५९	०९।२६

०५ शुक्रे वल्ली ०८।३८।०८।२५
अयनांशाः २२।३६।०६



१३ शुक्रे वल्ली ०८।३८।०८।३२
अयनांशाः २२।३६।०७



विविधविषयाः:- अचलासप्तम्यां सप्तार्कवदरीपत्राणि शिरसि निधाय मौनी सन् स्नायात्तत्र स्नानमन्त्रः:- यद्यज्जन्मकृतं पापं मया सप्तसु जन्मसु। तन्मे रोगञ्च शोकञ्च माकरी हन्तु सप्तमी।। एतज्जन्मकृतं पापं यच्च जन्मान्तरार्जितम् । मनोवाक्कायजं यच्च ज्ञाताज्ञातञ्च यत्पुनः।। इति सप्तविधं पापं स्नानान्मे सप्तसप्तिके। सप्तव्याहृतिके देवि हर माकरि सप्तमि।। ततः सूर्यार्घ्यं दद्यात्तन्मन्त्रः:- सप्तसप्तेरहः प्रीते सप्तलोकप्रदीपन। सप्तमीसहितो देव गृहाणार्घ्यं दिवाकर।। ततः प्रणमेच्च तन्मन्त्रः:- जननी सर्वलोकानां सप्तमी सप्तसप्तिके। सप्तव्याहृतिके देवि नमस्ते सूर्यमूर्त्तये।। ततो दानादिकं कुर्यात्। अष्टम्यां भीष्मतर्पणमन्त्रः:- वैयाघ्रपादगोत्राय सांकृतिप्रवराय च। अपुत्राय ददाम्येतत्सलिलं भीष्मवर्मणे। वसूनामवताराय शन्तनोरात्मजाय च। अर्घ्यं ददामि भीष्माय आबालब्रह्मचारिणे।। भीष्मः शान्तनवो वीरः सत्यवादी जितेन्द्रियः। आभिरद्भिरवाप्नोतु पुत्रपौत्रोचितां क्रियाम् ।। अनेन सन्ततिलाभः संवत्सरकृतपापक्षयश्च। इदं जीवत्पित्रापि कर्त्तव्यम्।

ग्रहस्थितिः:- मार्गिणः पूर्वोदिताः कुजगुरुशुक्राः, मार्गी पूर्वास्तो बुधः १ तः पश्चिमोदितः, वक्री पूर्वोदितः शनिः

वातावरणम्- पक्षाद्यन्तभागयोः शीतमेघवायुचारच्छिन्नवृष्टयस्तन्मध्यभागे वायुमेघचारतापादयः।

फाल्गुनकृष्णपक्षः

शकाब्दः १९२७, संवत् २०६२, सन् १४१३ साल, दि. १४।०२।२००६ ई. तः दि. २८।०२।२००६ ई. या., दक्षिणेकालः। मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पूर्वोदितः शुक्रः, शुद्धः, शिशिरर्तुः, याम्यगोलः, सौम्यायनम्।

ति. दि.	तिथयः द. प.	तिथयः घं. मि.	नक्षत्राणि द. प.	नक्षत्राणि घं. मि.	योगाः द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः रा. द. प.	चन्द्रराशयः घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं द. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	दिनाङ्काः रा.	दिनाङ्काः सौ.	दिनाङ्काः अं.	
०१मं.	१२।५४	दि.११।३७	म.१२।४१	दि.११।३१	अगं.३७।०७	कौ.१२।५४	सिंह	अहो.	१०।०१।५२।१२	२७।४३	६।२७	५।३३	२५	०२	१४	मासादिः, फाल्गुने वाङ्मतीस्नानं महापुण्यप्रदं, (२) एकोद्दिष्टम्।
०२बु.	१८।१७	"०१।४६	पूफ.१९।१२	"०२।२८	सु.३८।२२	ग.१८।१७	सिं.३५।४८	रा.०८।४६	१०।०२।५२।५८	२७।४६	६।२७	५।३३	२६	०३	१५	पूर्वयात्रा द्वितीयायां, विवाह उत्तरफल्गुन्यां, भ. ५०।४५ उ.।
०३बृ.	२३।१२	"०३।४३	उफ.२५।१९	"०४।३४	धृ.३९।१५	वि.२३।१२	कन्या	अहो.	१०।०३।५३।४४	२७।४९	६।२६	५।३४	२७	०४	१६	श्रीहेरम्ब ४ व्रतं, विवाहो द्विरागमनञ्च तृतीयायां, (३) एकोद्दिष्टं, भ. २३।१२ या., द.ति. २३।१२ उ.।
०४शु.	२७।१८	सा.०५।२७	ह.३०।४१	सा.०६।४२	शू.३९।२८	बा.२७।१८	कन्या	अहो.	१०।०४।५४।२९	२७।५२	६।२६	५।३४	२८	०५	१७	पूर्वदक्षिणयात्रा पञ्चम्यां, बुधकेतुवेधाद्विवाहो मध्यमः पञ्चम्यां, द्विरागमनं पञ्चम्यां, द.ति. २७।१८ या.।
०५श.	३०।१५	रा.०६।३१	चि.३४।५५	रा.०८।२३	गं.३८।२८	तै.३०।१५	कं.०२।४८	दि.०७।३२	१०।०५।५५।०४	२७।५६	६।२५	५।३५	२९	०६	१८	पश्चिमदक्षिणयात्रा षष्ठ्याम्।
०६र.	३२।०९	"०७।१६	स्वा.३८।०४	"०९।३८	वृ.३७।१६	ग.०१।१२	तुला	अहो.	१०।०६।५५।३९	२८।००	६।२४	५।३६	३०	०७	१९	शतभिषायां रविः २८।३०, भ. ३२।०९ उ., विवाहो घं. ०५ मि. ४८ सायं यावत्तदुपरि स्वात्यां सूर्यवेधाद्विवाहो नैव, दक्षिणयात्रा सप्तम्यां स्वात्याम्।
०७चं.	३२।४०	"०७।२७	वि.३९।५६	"१०।२१	ध्रु.३४।४१	वि.०२।२५	तु.२४।२८	दि.०४।१०	१०।०७।५६।१४	२८।०४	६।२३	५।३७	०१	०८	२०	विवाहः पश्चिमोत्तरयात्रा चानुराधायां, भ. ०२।२५ या.।
०८मं.	३१।५३	"०७।०७	अनु.४०।३३	"१०।३५	व्या.३१।०७	बा.०२।१७	वृश्चिक	अहो.	१०।०८।५६।४९	२८।०८	६।२२	५।३८	०२	०९	२१	शाकाष्टका, पश्चिमयात्रा।
०९बु.	२९।५४	सा.०६।२०	ज्ये.३९।५७	"१०।२१	ह.२६।३५	तै.००।५४	वृ.३९।५७	रा.१०।२१	१०।०९।५७।२३	२८।१२	६।२२	५।३८	०३	१०	२२	अन्वष्टकानवमी, पश्चिमयात्रा दशम्यां ज्येष्ठायां ततः पूर्वयात्रा मूले, विवाहो मूले, गं. २८।५७ उ. ४३।५७ या., भ. ५८।२२ उ.।
१०बृ.	२६।५०	दि.०५।०५	मू.३८।२०	"०९।४१	व.२१।१३	वि.२६।५०	धनु	अहो.	१०।१०।५७।५७	२८।१५	६।२१	५।३९	०४	११	२३	पूर्वोत्तरयात्रा, विवाहो मूले, भ. २६।५० या.।
११शु.	२२।५२	"०३।२९	पूषा.३५।५२	"०८।४१	सि.१५।०७	बा.२२।५२	ध.५०।०४	रा.०२।२२	१०।११।५८।३१	२८।१८	६।२०	५।४०	०५	१२	२४	विजया ११ व्रतं सर्वेषां, पूर्वोत्तरयात्रैकादश्यां, विवाह उत्तराषाढे।
१२श.	१८।०४	"०१।३४	उषा.३२।४०	"०७।२४	व्य.०८।२२	तै.१८।०४	मकर	अहो.	१०।१२।५८।५३	२८।२२	६।२०	५।४०	०६	१३	२५	गोदघ्ना पारणं, प्रदोष १३ व्रतं, पूर्वां विना यात्रा श्रवणायाम्।
१३र.	१२।४४	"११।२५	श्र.२८।५८	सा.०५।५४	व.०१।०५	व.१२।४४	म.५६।५६	रा.०५।०५	१०।१३।५९।१५	२८।२६	६।१९	५।४१	०७	१४	२६	परिघयोगमानम् ५२।२४, प्रदोष १४ व्रतं, नक्तव्रतं, महाशिवरात्रिव्रतं प्रदोषे घं. ०७ मि. १७ यावद्रात्रौ श्रीशिवपूजनं सहस्राश्वमेधसमफलदं, श्रीगौरीशङ्करविवाहोत्सवः, श्रीरावणेश्वर ●
१४चं.	०७।००	"०९।०६	ध.२४।५४	दि.०४।१६	शि.४५।४३	श.०७।००	कुम्भ	अहो.	१०।१४।५९।३७	२८।३०	६।१८	५।४२	०८	१५	२७	श्रीशिवदर्शनं, सोमवारीव्रतं घं.०९ मि.०६ उपरि दिने।
३०मं.	०१।०५	"०६।४३	श.२०।४३	"०२।३४	सि.३७।५४	ना.०१।०५	कुम्भ	अहो.	१०।१५।५९।५८	२८।३४	६।१७	५।४३	०९	१६	२८	प्रतिपन्मानम् ५४।०५, मकरे शुक्रः ०९।३१, फाल्गुनी ३० गोसहस्रिका ३० स्नानदानादिः, पश्चिमयात्रा द्वितीयायाम्।

●वैद्यनाथ- सिंहे (शृङ्गे) श्वरनाथयोः प्रतिष्ठादिनं, श्रीसिंहेश्वरमेलापकः, पश्चिमां विना यात्रा त्रयोदश्यां, पञ्चकारंभः सायं घं. ०५ मि.५४ उ., भ. १२।४४ उ. ३९।५२ या., विवाहस्त्रयोदश्यां, (१३-१४) एको.।

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

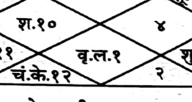
ति. दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं
०१मं.	०१।०२।५५।२६	१०।१६।३०।२०	०६।२६।२२।२७	०८।२०।३३।२४	०३।१३।३६।१५	०५।१४।५२।५०	४३।५३
०२बु.	०१।०३।२५।०७	१०।१७।४६।१८	०६।२६।२६।१८	०८।२१।०७।३३	०३।१३।३१।२०	०५।१४।४९।३९	४३।५४
०३बृ.	०१।०३।५४।४७	१०।१९।०२।१६	०६।२६।३०।०९	०८।२१।४१।४२	०३।१३।२६।२६	०५।१४।४६।२९	४३।५५
०४शु.	०१।०४।२४।२७	१०।२०।१८।१४	०६।२६।३४।००	०८।२२।१५।५१	०३।१३।२१।३२	०५।१४।४३।१९	४३।५६
०५श.	०१।०४।५५।१०	१०।२१।०९।३१	०६।२६।३६।३९	०८।२२।५८।०८	०३।१३।१७।०२	०५।१४।४०।०८	४३।५८
०६र.	०१।०५।२५।५३	१०।२२।००।४८	०६।२६।३९।१८	०८।२३।४०।२५	०३।१३।१२।३२	०५।१४।३६।५७	४४।००
०७चं.	०१।०५।५६।३६	१०।२२।५२।०५	०६।२६।४१।५६	०८।२४।२२।४२	०३।१३।०८।०२	०५।१४।३३।४६	४४।०२
०८मं.	०१।०६।२७।१९	१०।२३।४३।२२	०६।२६।४४।३४	०८।२५।०४।५९	०३।१३।०३।३३	०५।१४।३०।३५	४४।०४
०९बु.	०१।०६।५८।०१	१०।२४।३४।३९	०६।२६।४७।१२	०८।२५।४७।१५	०३।१२।५९।०४	०५।१४।२७।२४	४४।०६
१०बृ.	०१।०७।२८।४३	१०।२५।२५।५५	०६।२६।४९।५०	०८।२६।२९।३१	०३।१२।५४।३५	०५।१४।२४।१४	४४।०८
११शु.	०१।०७।५९।२५	१०।२६।१७।११	०६।२६।५२।२८	०८।२७।११।४७	०३।१२।५०।०६	०५।१४।२१।०४	४४।०९
१२श.	०१।०८।३०।५७	१०।२६।४०।१६	०६।२६।५३।४१	०८।२८।००।५८	०३।१२।४५।५७	०५।१४।१७।५३	४४।११
१३र.	०१।०९।०२।२९	१०।२७।०३।२१	०६।२६।५४।५३	०८।२८।५०।०९	०३।१२।४१।४८	०५।१४।१४।४२	४४।१३
१४चं.	०१।०९।३४।०१	१०।२७।२६।२६	०६।२६।५६।०५	०८।२९।३९।१९	०३।१२।३७।३९	०५।१४।११।३१	४४।१५
३०मं.	०१।१०।०५।३३	१०।२७।४९।३१	०६।२६।५७।१७	०९।००।२८।२९	०३।१२।३३।३०	०५।१४।०८।२०	४४।१७

दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सिं.अं.	कं.अं.	तु.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मी.अं.
०१मं.	१०।५९	१२।५५	१५।०८	१७।२६	१९।४२	२१।५७	००।१५	०२।३३	०४।३८	०६।२४	०७।५५	०९।२२
०२बु.	१०।५५	१२।५१	१५।०४	१७।२२	१९।३८	२१।५३	००।११	०२।२९	०४।३४	०६।२०	०७।५१	०९।१८
०३बृ.	१०।५१	१२।४७	१५।००	१७।१८	१९।३४	२१।४९	००।०७	०२।२५	०४।३०	०६।१६	०७।४७	०९।१४
०४शु.	१०।४८	१२।४४	१४।५७	१७।१५	१९।३१	२१।४६	००।०४	०२।२२	०४।२७	०६।१३	०७।४४	०९।११
०५श.	१०।४४	१२।४०	१४।५३	१७।११	१९।२७	२१।४२	००।००	०२।१८	०४।२३	०६।०९	०७।४०	०९।०७
०६र.	१०।४०	१२।३६	१४।४९	१७।०७	१९।२३	२१।३८	२३।५६	०२।१४	०४।१९	०६।०५	०७।३६	०९।०३
०७चं.	१०।३६	१२।३२	१४।४५	१७।०३	१९।१९	२१।३४	२३।५२	०२।१०	०४।१५	०६।०१	०७।३२	०८।५९
०८मं.	१०।३२	१२।२८	१४।४१	१६।५९	१९।१५	२१।३०	२३।४८	०२।०६	०४।११	०५।५७	०७।२८	०८।५५
०९बु.	१०।२९	१२।२५	१४।३८	१६।५६	१९।१२	२१।२७	२३।४५	०२।०३	०४।०८	०५।५४	०७।२५	०८।५२
१०बृ.	१०।२५	१२।२१	१४।३४	१६।५२	१९।०८	२१।२३	२३।४१	०१।५९	०४।०४	०५।५०	०७।२१	०८।४८
११शु.	१०।२१	१२।१७	१४।३०	१६।४८	१९।०४	२१।१९	२३।३७	०१।५५	०४।००	०५।४६	०७।१७	०८।४४
१२श.	१०।१७	१२।१३	१४।२६	१६।४४	१९।००	२१।१५	२३।३३	०१।५१	०३।५६	०५।४२	०७।१३	०८।४०
१३र.	१०।१३	१२।०९	१४।२२	१६।४०	१८।५६	२१।११	२३।२९	०१।४७	०३।५२	०५।३८	०७।०९	०८।३६
१४चं.	१०।१०	१२।०६	१४।१९	१६।३७	१८।५३	२१।०८	२३।२६	०१।४४	०३।४९	०५।३५	०७।०६	०८।३३
३०मं.	१०।०६	१२।०२	१४।१५	१६।३३	१८।४९	२१।०४	२३।२२	०१।४०	०३।४५	०५।३१	०७।०२	०८।२९

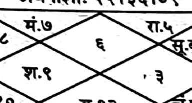
०४ शुक्रे वल्ली ०८।३८।०८।३९

अयनांशाः २२।३६।०८



११ शुक्रे वल्ली ०८।३८।०८।४६

अयनांशाः २२।३६।०९



विविधविषयाः- फाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यां शिवरात्रिव्रतं तन्माहात्म्यञ्च ब्रह्मादिखण्डे- माघफाल्गुनयोर्मध्ये कृष्णा या च चतुर्दशी। दत्ते शिवः फलं यस्मात्तेन सर्वसुरासुरैः।। शिवरात्रिरिति ख्याता मत्कलेव पृथक् स्थिता।। **तथा च-** उपवासं करिष्यन्ति जागरणेन समन्वितम्। यथोक्तशास्त्रमार्गेण तेषां मोक्षो न संशयः।। वर्षे वर्षे महादेवि नित्यं भक्त्या प्रपूजयेत्। अर्णवो यदि वा सूर्यश्छाद्यते हिमवानपि।। चलन्त्येते कदाचिद्वै निश्चलं च शिवव्रतम्।। **गङ्गासागरसङ्गमस्नानमन्त्रः-** त्वमग्निर्द्विपदां नाथ रेतोधाः कामदीपन। प्रधानः सर्वभूतानां जीवानां प्रभुरव्ययः। अमृतस्यारणिस्त्वं हि देवयोनिरपांपते। वृजिनं हर मे सर्वं तीर्थराज नमोऽस्तुते। **गङ्गास्नानमन्त्रः-** ब्रह्मस्वरूपे हे गङ्गे स्नानमाचर्यते मया। त्वदीये निर्मले तोये यथोक्तफलदा भव। **गङ्गामाहात्म्यं, विष्णुपुराणे-** गङ्गा गङ्गेति यन्नाम योजनानां शतैरपि। स्थितैरुच्चरितं हन्ति पापं जन्मत्रयार्जितम्।

ग्रहस्थितिः- मार्गिणः पूर्वोदिताः कुजगुरुशुक्राः, मार्गी पश्चिमोदितो बुधः, वक्री पूर्वोदितः शनिः।

वातावरणम्- पक्षादितश्चतुर्थीं यावद्वायुमेघचारझंझावातोपलपातादयस्ततो दशमीं यावत्तापवायुचार-मेघच्छायादयस्ततः पक्षान्तं यावद्वायुस्वल्पवृष्टिमेघचारादयः।

फाल्गुनशुक्लपक्षः

शकाब्दः १९२७, संवत् २०६२, सन् १४१३ साल, दि. ०१।०३।२००६ ई.तः दि. १४।०३।२००६ ई. या., दक्षिणेकालः। मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, ७तो वक्री, मार्गी पूर्वोदितः शुक्रः, शुद्धः, शिशिरर्तुः, याम्यगोलः, सौम्यायनम्।

ति. दि.	तिथयः द. प.	तिथयः घं. मि.	नक्षत्राणि द. प.	नक्षत्राणि घं. मि.	योगाः द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः रा. द. प.	चन्द्रराशयः घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं द. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	दिनाङ्काः रा.	दिनाङ्काः सौ.	दिनाङ्काः अं.
०२ बु.	४९।३०	रा.०२।०४	पूभा.१६।३९	दि.१२।५६	सा.३०।१२	बा.२२।२०	कुं.०२।४६	दि.०७।२२	१०।१७।००।१९	२८।३८	६।१६	५।४४	१०	१७	०१
०३ बृ.	४४।१६	"११।५८	उभा.१२।५२	"११।२५	शुभ.२२।४६	तै.१६।५३	मीन	अहो.	१०।१८।००।४०	२८।४२	६।१६	५।४४	११	१८	०२
०४ शु.	३९।३२	"१०।०४	रे.०९।३४	"१०।०५	शु.१५।४७	व.११।५४	मी.०९।३४	दि.१०।०५	१०।१९।०१।०१	२८।४६	६।१५	५।४५	१२	१९	०३
०५ श.	३५।३६	"०८।२८	अ.०६।५९	"०९।०२	ब्र.०९।२४	ब.०७।३४	मेष	अहो.	१०।२०।०१।०९	२८।५०	६।१४	५।४६	१३	२०	०४
०६ र.	३२।४२	"०७।१८	भ.०५।१५	"०८।१९	ऐं.०३।४२	कौ.०४।०९	मे.२०।०४	दि.०२।१५	१०।२१।०१।१७	२८।५४	६।१३	५।४७	१४	२१	०५
०७ चं.	३०।४९	सा.०६।३२	कृ.०४।३१	"०८।००	वि.५४।५०	ग.०१।४६	वृष	अहो.	१०।२२।०१।२५	२८।५८	६।१२	५।४८	१५	२२	०६
०८ मं.	३०।१०	"०६।१६	रो.०४।५७	"०८।११	प्री.५१।५१	वि.००।२९	वृ.३५।४८	रा.०८।३१	१०।२३।०१।३३	२९।०२	६।१२	५।४८	१६	२३	०७
०९ बु.	३०।४६	"०६।२९	मृ.०६।३६	"०८।५१	आ.४९।५१	बा.००।२८	मिथुन	अहो.	१०।२४।०१।४१	२९।०६	६।११	५।४९	१७	२४	०८
१० बृ.	३२।५१	रा.०७।१८	आ.०९।३६	"१०।००	सौ.४८।५२	तै.०१।४९	मि.५७।४०	रा.०५।१४	१०।२५।०१।४८	२९।१०	६।१०	५।५०	१८	२५	०९
११ शु.	३५।५७	"०८।३२	पुन.१३।४१	"११।३७	शो.४८।५०	व.०४।२४	कर्क	अहो.	१०।२६।०१।५५	२९।१४	६।०९	५।५१	१९	२६	१०
१२ श.	४०।०९	"१०।१२	पु.१८।५६	"०१।४२	अगं.४९।३३	ब.०८।०३	कर्क	अहो.	१०।२७।०१।४८	२९।१८	६।०८	५।५२	२०	२७	११
१३ र.	४५।०५	"१२।१०	आश्ले.२४।५५	"०४।०६	सु.५०।४६	कौ.१२।३७	क.२४।५५	दि.०४।०६	१०।२८।०१।४१	२९।२२	६।०८	५।५२	२१	२८	१२
१४ चं.	५०।२२	"०२।१६	म.३१।२४	सा.०६।४१	घृ.५२।१६	ग.१७।४४	सिंह	अहो.	१०।२९।०१।३४	२९।२६	६।०७	५।५३	२२	२९	१३
१५ मं.	५५।३९	"०४।२२	पूफ.३८।०१	रा.०९।१८	शू.५३।४२	वि.२३।०१	सिं.५४।३५	रा.०३।५६	११।००।०१।२७	२९।३०	६।०६	५।५४	२३	०१	१४

मार्च ०३, चन्द्रदर्शनं मु.४५ फलं समर्घं, कल्याणेश्वराज्जनकपुरपरिक्रमारंभः, श्रीरामकृष्णजयन्ती, द्विरागमनमुत्तरभाद्रे द्वितीयायां, केतुवेधाद्विवाहोमध्यम उत्तरभाद्रे, पश्चिमयात्रा पूर्वभाद्रे।

वक्री बुधः ४४।२८, गं, ५७।३४ उ., द.ति. ४४।१६ उ., उपनयनं, मुण्डनं कर्णवेधश्च रेवत्यां, द्विरागमनं तृतीयायां, पश्चिमोत्तरयात्रा विवाहश्च रेवत्यां तृतीयायां, देवादिप्रतिष्ठा, कूपतडागखननम्।

श्रीगणेश ४ व्रतं, भ. ११।५४ उ. ३९।३२ या., गं. १२।३४ या., द.ति. ३९।३२ या., पञ्चकान्तो दिवा घं.१० मि. ०५ उ., विवाहःपश्चिमां विना यात्रा द्विरागमनञ्च पञ्चम्याम्।

पूर्वभाद्रे रविः ४३।१९।

वैधृतियोगमानम् ५५।०७, पश्चिमास्तो बुधः २४।१५, फाल्गुने शोभनो वायुः।

वक्री गुरुः ४८।०४, भ. ३०।४९ उ., दक्षिणयात्रा द्विरागमनञ्चाष्टम्यां, विवाहः देवादिप्रतिष्ठा च रोहिण्याम्।

भ. ००।२९ या., पूर्वदक्षिणयात्रा रोहिण्यां तत उत्तरां विना यात्रा मृगशिरसि।

॥००॥

○(प्रातर्दिनं), जनकपुरपरिक्रमासमाप्तिः, श्रीचैतन्यमहाप्रभुजयन्ती, होलिकादाहो रात्रौ पूर्णिमायां, होलिकादाहे पूर्ववायौ राजाप्रजासुखं अग्निकोणेऽग्निभयं, दक्षिणनैर्ऋत्ययोर्दुर्भिक्षं, पश्चिमे वृष्टिः, वायव्ये वायुवृद्धिः, उत्तरैशानयोः सुभिक्षं, निर्वातसमयो हानिकरः।

उपनयनमार्द्रायां, क्षत्रियवैश्ययोःपुनर्वसावप्युपनयनं, मुण्डनं कर्णवेधः द्विरागमनं देवादिप्रतिष्ठा गृहारंभप्रवेशौ पश्चिमयात्रा च पुनर्वसौ।

आमलकी ११ व्रतं सर्वेषां, जनकपुरस्यान्तर्गृहीयपरिक्रमारंभः, भ ०४।२४ उ. ३५।५७ या., क्षत्रियवैश्ययोरुपनयनं, ब्राह्मणोपनयनं पुष्ये, रात्रौ ११ व्रतोद्यापनं, मुण्डनं कर्णवेधश्च, ●

गोविन्द १२, गोदघ्ना पारणं, समुद्रस्नानं श्रीजगन्नाथदर्शनञ्च, गृहारंभप्रवेशौ पुष्ये, पूर्वां विना यात्रा पुष्ये।

प्रदोष १३ व्रतं, शुक्रवेधाद्विवाहो मध्यमस्त्रयोदश्यां मघायां, गं. १३।५५ उ. २८।५५ या.।

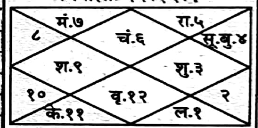
मासान्तः, प्रदोष १४ व्रतं, भ. ५०।२२ उ.। ●द्विरागमनमेकादश्यां, देवादिप्रतिष्ठा, तडागखननं पुष्ये, गृहारंभप्रवेशौ, उत्तरयात्रा पुनर्वसौ ततः पश्चिमां विना यात्रैकादश्याम्।

मीने रविः ४३।१८ मु.४५ फलं समर्घं, षडशीतिसंक्रान्तिपुण्यकालो घं.१२ मि. ०० उपरिदिने, भ.२३।०१ या., फाल्गुनी १५ स्नानदानादिः, सावर्णिमन्वादिः, कुलदेवताभ्यःसिन्दूरार्पणं○

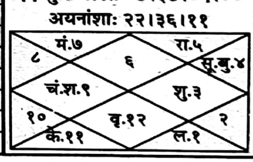
मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च / दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सिं.अं.	कं.अं.	तु.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मी.अं.
०२ बु.	०१।२०।३७।०५	१०।२८।००।१५	०६।२६।५८।२९	०९।०१।१७।३९	०३।१२।२९।२२	०५।१४।०५।०९	४४।१९	१०।०२	११।५८	१४।११	१६।२९	१८।४५	२१।००	२३।१८	०१।३६	०३।४१	०५।२७	०६।५८	०८।२५
०३ बृ.	०१।२१।०८।३६	१०।२८।०१।१०	०६।२६।५९।४१	०९।०२।०६।४९	०३।१२।२५।१४	०५।१४।०१।५९	४४।२१	०९।५८	११।५४	१४।०७	१६।२५	१८।४१	२०।५६	२३।१४	०१।३२	०३।३७	०५।२३	०६।५४	०८।२१
०४ शु.	०१।२१।४०।०९	१०।२७।५५।३०	०६।२७।००।५३	०९।०२।५५।५९	०३।१२।२१।०६	०५।१३।५८।४९	४४।२३	०९।५४	११।५०	१४।०३	१६।२१	१८।३७	२०।५२	२३।१०	०१।२८	०३।३३	०५।१९	०६।५०	०८।१७
०५ श.	०१।२२।११।४८	१०।२७।२७।०९	०६।२७।०१।०५	०९।०३।४९।४१	०३।१२।१७।३७	०५।१३।५५।३८	४४।२५	०९।५१	११।४७	१४।००	१६।१८	१८।३४	२०।४९	२३।०७	०१।२५	०३।३०	०५।१६	०६।४७	०८।१४
०६ र.	०१।२२।४४।२७	१०।२६।५८।४८	०६।२७।०१।१६	०९।०४।४३।२३	०३।१२।१४।०८	०५।१३।५२।२७	४४।२७	०९।४७	११।४३	१३।५६	१६।१४	१८।३०	२०।४५	२३।०३	०१।२१	०३।२६	०५।१२	०६।४३	०८।१०
०७ चं.	०१।२३।१६।३६	१०।२६।३०।२७	०६।२७।०१।२९	०९।०५।३७।०४	०३।१२।१०।३९	०५।१३।४९।१६	४४।२९	०९।४३	११।३९	१३।५२	१६।१०	१८।२६	२०।४१	२२।५९	०१।१७	०३।२२	०५।०८	०६।३९	०८।०६
०८ मं.	०१।२३।४८।४४	१०।२६।०२।०६	०६।२७।०१।१२	०९।०६।३०।४५	०३।१२।०७।१०	०५।१३।४६।०५	४४।३१	०९।३९	११।३५	१३।४८	१६।०६	१८।२२	२०।३७	२२।५५	०१।१३	०३।१८	०५।०४	०६।३५	०८।०२
०९ बु.	०१।२४।२०।५२	१०।२५।३३।४५	०६।२७।००।३०	०९।०७।२४।२६	०३।१२।०३।४१	०५।१३।४२।५४	४४।३३	०९।३५	११।३१	१३।४४	१६।०२	१८।१८	२०।३३	२२।५१	०१।०९	०३।१४	०५।००	०६।३१	०७।५८
१० बृ.	०१।२४।५३।००	१०।२५।०५।२४	०६।२६।५९।५०	०९।०८।१८।०७	०३।१२।००।१३	०५।१३।३९।४३	४४।३५	०९।३२	११।२८	१३।४१	१५।५९	१८।१५	२०।३०	२२।४८	०१।०६	०३।११	०४।५७	०६।२८	०७।५५
११ शु.	०१।२५।२५।०८	१०।२४।३७।०३	०६।२६।५९।१०	०९।०९।११।४८	०३।११।५६।४५	०५।१३।३६।३३	४४।३७	०९।२८	११।२४	१३।३७	१५।५५	१८।११	२०।२६	२२।४४	०१।०२	०३।०७	०४।५३	०६।२४	०७।५१
१२ श.	०१।२५।५८।२०	१०।२३।४९।४७	०६।२६।५७।३६	०९।१०।०९।१८	०३।११।५३।४९	०५।१३।३३।२२	४४।३९	०९।२४	११।२०	१३।३३	१५।५१	१८।०७	२०।२२	२२।४०	००।५८	०३।०३	०४।४९	०६।२०	०७।४७
१३ र.	०१।२६।३१।१२	१०।२३।०२।३१	०६।२६।५६।०२	०९।११।०६।४८	०३।११।५०।५३	०५।१३।३०।११	४४।४१	०९।२०	११।१६	१३।२९	१५।४७	१८।०३	२०।१८	२२।३६	००।५४	०२।५९	०४।४५	०६।१६	०७।४३
१४ चं.	०१।२७।०४।१४	१०।२२।१५।१५	०६।२६।५४।२८	०९।१२।०४।१८	०३।११।४७।५७	०५।१३।२७।००	४४।४३	०९।१६	११।१२	१३।२५	१५।४३	१७।५९	२०।१४	२२।३२	००।५०	०२।५५	०४।४१	०६।१२	०७।३९
१५ मं.	०१।२७।३७।१६	१०।२१।२७।५९	०६।२६।५२।५४	०९।१३।०१।४८	०३।११।४५।०१	०५।१३।२३।४९	४४।४५	०९।१२	११।०८	१३।२१	१५।३९	१७।५५	२०।१०	२२।२८	००।४६	०२।५१	०४।३७	०६।०८	०७।३५

०४ शुक्रे वल्ली ०८।३८।०८।५३
अयनांशाः २२।३६।१०



११ शुक्रे वल्ली ०८।३८।०९।००
अयनांशाः २२।३६।११



विविधविषयाः– फाल्गुनपूर्णिमायां होलिकादाहः– तत्राग्नौ विधिवद्धुत्वा काममन्त्रं विवर्जयेत्। घृतैः किलकिलाशब्दैस्तालशब्दैर्मनोरमैः। तमग्निं त्रिः परिक्रम्य गायन्ति च हसन्ति च। जल्पन्ति स्वेच्छया लोके होलिकाख्यातमागतः। अस्यां काष्ठादिकमेकत्रीकृत्य होलिकां **ध्यायेत्तन्मन्त्रः–** असृमयावसन्तप्तेः कृत्वा त्वं होलि बालिश। अतस्त्वां पूजयिष्यामि भूते भूतिप्रदा भव। ततो होलिकायै नमः इति पञ्चोपचारैः सम्पूज्य प्रदीपयेत्। **तत्प्रदीपनमन्त्रः–** दीपयाम्यत्र ते घोरां चिति राक्षसि ते नमः। हिताय सर्वजगतः प्रीतये पार्वतीपतेः। ततः परदिने **होलिकाभस्मधारणमन्त्रः–** वन्दितासि सुरेन्द्रेण ब्रह्माच्युतशिवादिभिः। अतस्त्वं पाहि नो भीतेर्भूषिता भूतिदा भव। **प्रयागे केशवपनफलम्–** किं गयापिण्डदानेन काश्यां वा मरणेन किम्। किं कुरुक्षेत्रदानेन प्रयागे मुण्डनं यदि। केशानां यावतीसंख्या छिन्नानां जाह्नवीजले। तावद्वर्षसहस्राणि स्वर्गलोके महीयते। **स्थानविशेषमहत्त्वम्–** प्रयागे वपनं कुर्याद् गयायां पिण्डपातनम्। दानं दद्यात् कुरुक्षेत्रे वाराणस्यां तनुं त्यजेत्।

ग्रहस्थितिः– मार्गिणौ पूर्वोदितौ कुजशुक्रौ, मार्गी पश्चिमोदितो बुधः ३तो वक्री ६तः पश्चिमास्तः, मार्गी पूर्वोदितो गुरुः ७तो वक्री, वक्री पूर्वोदितः शनिः।

वातावरणम्– पक्षादिभागे तापवाष्पप्रच्छायादयस्तदन्तभागे झंझावातमेघचारवाष्पादयः।

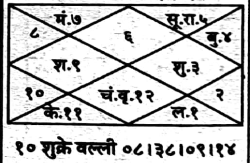
चैत्रकृष्णपक्षः

शकाब्दः १९२७, संवत् २०६२, सन् १४१३ साल, दि. १५।०३।२००६ ई. तः दि. २९।०३।२००६ ई. या., दक्षिणेकालः।
वक्री पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पूर्वोदितः शुक्रः, शुद्धः, वसन्तर्तुः, याम्यगोलः सौम्यायनम्।

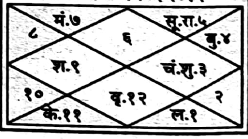
ति. दि.	तिथयः द. प.	तिथयः घं. मि.	नक्षत्राणि द. प.	नक्षत्राणि घं. मि.	योगाः द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः रा. द. प.	चन्द्रराशयः घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं द. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	दिनाङ्काः रा.	दिनाङ्काः सौ.	दिनाङ्काः अं.	
०१ बु.	६०।००	अहो.	उफ.४४।२५	रा.११।४७	ग.५४।४६	बा.२८।०३	कन्या	अहो.	११।०१।०१।२०	२९।३४	६।०५	५।५५	२४	०२	१५	मासादिः, सप्तडोरकबन्धनं, होलिकाभस्मधारणं सचैलस्नानं, होली।
०१ वृ.	००।२७	दि.०६।१५	ह.४९।४४	"०१।५८	वृ.५५।१७	कौ.००।२७	कन्या	अहो.	११।०२।०१।१२	२९।३८	६।०४	५।५६	२५	०३	१६	पूर्वयात्रा प्रतिपदि, द.ति. ००।२७ उ.।
०२ शु.	०४।३०	"०७।५२	चि.५४।१५	"०६।४६	ध्रु.५४।५७	ग.०४।३०	कं.२२।३०	दि.०३।०४	११।०३।०१।०४	२९।४२	६।०४	५।५६	२६	०४	१७	पूर्वदक्षिणयात्रा तृतीयायां कन्यास्थे चन्द्रे ततो दक्षिणयात्रा, द.ति. ०४।३० या., म. ३५।५६ उ.।
०३ श.	०७।२१	"०८।५९	स्वा.५७।४२	"०५।०८	व्या.५३।४६	वि०७।२१	तुला	अहो.	११।०४।००।४२	२९।४६	६।०३	५।५७	२७	०५	१८	उत्तरभाद्रे रविः ०३।५४, श्रीविकट ४ व्रतं, पश्चिमदक्षिणयात्रा स्वात्यां, म. ०७।२१ या.।
०४ र.	०९।०४	"०९।४०	वि.५९।४९	"०५।५८	ह.५१।३३	बा.०९।०४	तु.४४।१८	रा.११।४५	११।०५।००।२०	२९।५०	६।०२	५।५८	२८	०६	१९	उत्तरयात्रानुराधायाम्।
०५ चं.	०९।२६	"०९।४७	अनु.६०।००	अहो.	व.४८।२०	तै.०९।२६	वृश्चिक	अहो.	११।०५।५९।५८	२९।५४	६।०१	५।५९	२९	०७	२०	पश्चिमोत्तरयात्रा।
०६ मं.	०८।३१	"०९।२४	अनु.००।४१	दि.०६।२६	सि.४४।०८	ब.०८।३१	वृश्चिक	अहो.	११।०६।५९।३६	२९।५८	६।००	६।००	३०	०८	२१	पूर्वोदितो बुधः ३१।२१, म. ०८।३१ उ. ३७।२६ या., गं. ५४।२२ उ., पश्चिमयात्रा सप्तम्याम्।
०७ बु.	०६।२१	"०८।३२	ज्ये.००।२२	"०६।०९	व्य.३९।०२	ब.०६।२१	वृ.००।२२	दि.०६।०९	११।०७।५९।१३	३०।०२	६।००	६।००	०१	०९	२२	मूलमानम् ५८।३४, गं. ०९।२२ या., पश्चिमयात्रा ज्येष्ठायां ततः पूर्वयात्रा सप्तम्याम्।
०८ वृ.	०३।१०	"०७।१५	पूषा.५६।४४	रा.०४।४१	व.३३।१०	कौ.०३।१०	धनु	अहो.	११।०८।५८।५०	३०।०६	५।५९	६।०१	०२	१०	२३	नवमीमानम् ५५।५४, पूर्वोत्तरयात्राष्टम्याम्।
१० शु.	५४।०८	रा.०३।३७	उषा.५३।४०	"०३।२६	प.२६।३९	व.२६।३६	ध.१०।५८	दि.१०।२१	११।०९।५८।२७	३०।१०	५।५८	६।०२	०३	११	२४	पश्चिमां विना यात्रा श्रवणायां, म. २६।३६ उ. ५४।०८ या.।
११ श.	४८।४२	"०१।२६	श्र.५०।०३	"०१।५८	शि.१९।३४	ब.२१।२५	मकर	अहो.	११।१०।५७।४९	३०।१४	५।५७	६।०३	०४	१२	२५	मार्गी बुधः ०४।५५, पापमोचिनी ११ व्रतं सर्वेषां, पञ्चकारंभो घं.०१ मि.५८ उ. रात्रौ, पूर्वां विना यात्रा श्रवणायाम्।
१२ र.	४२।५५	"११।०६	ध.४६।०४	"१२।२२	सि.१२।०७	कौ.१५।४९	म.१८।०४	दि.०१।१०	११।११।५७।११	३०।१८	५।५६	६।०४	०५	१३	२६	गोघृतेन पारणं, चैत्रे मेघाच्छन्नत्वं शोभनं, पूर्वयात्रा मकरस्थे चन्द्रे।
१३ चं.	३६।५५	"०८।४२	शत.४१।५५	"१०।४२	सा.०४।२७	ग.०९।५५	कुम्भ	अहो.	११।१२।५६।३३	३०।२२	५।५६	६।०४	०६	१४	२७	शुभयोगमानम् ५२।१२, प्रदोष १३ व्रतं, म. ३६।५५ उ., वारुणीयोगो दिनं यावत् , अत्र गंगास्नानं शतसूर्यग्रहणसमफलदं, वारुणीयोगः- वारुणेन समायुक्ता मधौ कृष्णा त्रयोदशी।●
१४ मं.	३०।५६	सा.०६।१७	पूभा.३७।५०	"०९।०३	शु.४८।५९	वि.०३।५६	कुं.२३।५२	दि.०३।२८	११।१३।५५।५५	३०।२६	५।५५	६।०५	०७	१५	२८	प्रदोष १४ व्रतं, पश्चिमयात्रा चतुर्दश्याम्, म. ०३।५६ या.। ●गंगायां यदि लभ्येत सूर्यग्रहशतैः समा।।
३० बु.	२५।१४	दि.०४।००	उभा.३३।५७	"०७।२९	ब्र.४१।३३	ना.२५।१४	मीन	अहो.	११।१४।५५।१७	३०।३०	५।५४	६।०६	०८	१६	२९	चैत्री ३०स्नानदानादिः, विक्रमसंवत् २०६३ प्रारंभोऽमान्तात्, पश्चिमयात्रा रेवत्याम्, सूर्यग्रहणम्।

ति. दि.	मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	दैनिकलग्नसारिणीचक्रम् मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सिं.अं.	कं.अं.	तु.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मी.अं.
०१ बु.	०१।१८।२०।१८	१०।२०।४१।४४	०६।२६।५१।२०	०९।२३।५९।१८	०३।११।४२।०५	०५।१३।२०।३८	४४।४७	०९।०८	११।०४	१३।१७	१५।३५	१७।५१	२०।०६	२२।२४	००।४२	०२।४७	०४।३३	०६।०४	०७।३१
०१ वृ.	०१।१८।४३।२०	१०।१९।५४।२९	०६।२६।४९।४६	०९।२४।५६।४८	०३।११।३९।०९	०५।१३।१७।२८	४४।४९	०९।०५	११।०१	१३।१४	१५।३२	१७।४८	२०।०३	२२।२१	००।३९	०२।४४	०४।३०	०६।०१	०७।२८
०२ शु.	०१।१९।१६।२२	१०।१९।०६।१४	०६।२६।४८।१३	०९।२५।५४।१७	०३।११।३६।१३	०५।१३।१४।१८	४४।५१	०९।०१	१०।५७	१३।१०	१५।२८	१७।४४	१९।५९	२२।१७	००।३५	०२।४०	०४।२६	०५।५७	०७।२४
०३ श.	०१।१९।४९।४२	१०।१८।४६।०९	०६।२६।४५।२१	०९।२६।५४।३२	०३।११।३४।१०	०५।१३।११।०७	४४।५३	०८।५७	१०।५३	१३।०६	१५।२४	१७।४०	१९।५५	२२।१३	००।३१	०२।३६	०४।२२	०५।५३	०७।२०
०४ र.	०१।२०।२३।०२	१०।१८।२६।०५	०६।२६।४२।२९	०९।२७।५४।४७	०३।११।३२।०७	०५।१३।०७।५६	४४।५५	०८।५४	१०।५०	१३।०३	१५।२१	१७।३७	१९।५२	२२।१०	००।२८	०२।३३	०४।१९	०५।५०	०७।१७
०५ चं.	०१।२०।५६।२२	१०।१८।०६।०१	०६।२६।३९।३७	०९।२८।५५।०२	०३।११।३०।०४	०५।१३।०४।४५	४४।५७	०८।५०	१०।४६	१२।५९	१५।१७	१७।३३	१९।४८	२२।०६	००।२४	०२।२९	०४।१५	०५।४६	०७।१३
०६ मं.	०१।२१।२९।४१	१०।१७।४५।५७	०६।२६।३६।४५	०९।२९।५५।१७	०३।११।२८।०१	०५।१३।०१।३४	४४।५९	०८।४६	१०।४२	१२।५५	१५।१३	१७।२९	१९।४४	२२।०२	००।२०	०२।२५	०४।११	०५।४२	०७।०९
०७ बु.	०१।२२।०३।००	१०।१७।२५।५३	०६।२६।३३।५३	०९।२०।५५।३१	०३।११।२५।५९	०५।१२।५८।२३	४५।०१	०८।४३	१०।३९	१२।५२	१५।१०	१७।२६	१९।४१	२१।५९	००।१७	०२।२२	०४।०८	०५।३९	०७।०६
०८ वृ.	०१।२२।३६।१९	१०।१७।०५।४९	०६।२६।३१।०२	०९।२१।५५।४५	०३।११।२३।५७	०५।१२।५५।१३	४५।०३	०८।३९	१०।३५	१२।४८	१५।०६	१७।२२	१९।३७	२१।५५	००।१३	०२।१८	०४।०४	०५।३५	०७।०२
१० शु.	०१।२३।०९।३८	१०।१६।४५।४५	०६।२६।२८।११	०९।२२।५५।५९	०३।११।२१।५५	०५।१२।५२।०३	४५।०५	०८।३५	१०।३१	१२।४४	१५।०२	१७।१८	१९।३३	२१।५१	००।०९	०२।१४	०४।००	०५।३१	०६।५८
११ श.	०१।२३।४३।४५	१०।१६।५०।४६	०६।२६।२३।५३	०९।२३।५८।३७	०३।११।२०।२१	०५।१२।४८।५२	४५।०७	०८।३२	१०।२८	१२।४१	१४।५९	१७।१५	१९।३०	२१।४८	००।०६	०२।११	०३।५७	०५।२८	०६।५५
१२ र.	०१।२४।१७।५२	१०।१७।००।५७	०६।२६।१९।३५	०९।२५।०२।१५	०३।११।१८।४७	०५।१२।४५।४१	४५।०९	०८।२८	१०।२४	१२।३७	१४।५५	१७।११	१९।२६	२१।४४	००।०२	०२।०७	०३।५३	०५।२४	०६।५१
१३ चं.	०१।२४।५१।५९	१०।१७।३१।२९	०६।२६।१५।१७	०९।२६।०३।५२	०३।११।१७।१३	०५।१२।४२।३०	४५।११	०८।२४	१०।२०	१२।३३	१४।५१	१७।०७	१९।२२	२१।४०	२३।५८	०२।०३	०३।४९	०५।२०	०६।४७
१४ मं.	०१।२५।३६।०५	१०।१८।०२।०१	०६।२६।११।००	०९।२७।०६।२९	०३।११।१५।३९	०५।१२।३९।१९	४५।१३	०८।२१	१०।१७	१२।३०	१४।४८	१७।०४	१९।१९	२१।३७	२३।५५	०२।००	०३।४६	०५।१७	०६।४४
३० बु.	०१।२६।००।११	१०।१८।३२।३२	०६।२६।०६।४३	०९।२८।०९।०६	०३।११।१४।०६	०५।१२।३६।०८	४५।१५	०८।१७	१०।१३	१२।२६	१४।४४	१७।००	१९।१५	२१।३३	२३।५१	०१।५६	०३।४२	०५।१३	०६।४०

०२ शुक्रे वल्ली ०८।३८।०९।०७
अयनांशाः २२।३६।१२



१० शुक्रे वल्ली ०८।३८।०९।१४
अयनांशाः २२।३६।१३



विविधविषयाः- दिक्क्रमेण प्रहरार्द्धवशेन च छिक्काफलं, मुहूर्त्तगणपतौ- मृत्युर्वह्निभयं हानिस्तुष्टिर्द्रव्यागमः सुखम्। क्लेशोऽर्थागमनं प्रोक्तं दिक्षु छिक्काफलं क्रमात्।। गोक्षुतस्य दोषाधिक्यमुक्तं नारदेन- सर्वदिक्षु क्षुतं नेष्टं गोक्षुतं मरणप्रदम्। अफलं तत्क्षुतं वाच्यमन्धपीनसकेतवः।। केतवः- कपटः, पीनसो- मुहुर्नासास्रावी। रत्नावली रत्नकलापयोः- प्रागन्यपुंसः पुरतोऽपरस्तात् पुनः पुनर्वा तत एव जातम्। वृद्धाच्छिशोर्वा कफतो हठाद्वा जातं क्षुतं केऽपि वदन्त्यसत्यम्।। यात्रायां क्षुतमवश्यं वर्जनीयम्। यथा रत्नकलापे- अग्रे क्षुतं चेच्छकुनैः किमन्यैः पश्चात्क्षुतं चेच्छकुनैः किमन्यैः। जातानजाताञ्छकुनानि हन्ति क्षुतप्रदेनात्र वदन्ति तज्ज्ञाः।। शुभक्षुतम्, सर्वशाकुने- औषधे च नवारोहे विवादे शयनेऽशने। विद्यारम्भे बीजवापे क्षुतं सप्तसु शोभनम्।।

ग्रहस्थितिः- मार्गिणौ पूर्वोदितौ कुजशुक्रौ, वक्री पश्चिमास्तो बुधः ६ तः पूर्वोदितः ११तो मार्गी, वक्रिणौ पूर्वोदितौ गुरुशनी।

वातावरणम्- पक्षादिभागे वायुमेघचारतापादयस्तदन्तभागे झंझावातवायुमेघचारादयः।

चैत्रशुक्लपक्षः

शकाब्दः १९२७, संवत् २०६३, सन् १४१३ साल, दि. ३०।०३।२००६ ई.तः दि. १३।०४।२००६ ई. या., दक्षिणेकालः। वक्री पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पूर्वोदितः शुक्रः, शुद्धः, वसन्तर्तुः, याम्यगोलः, सौम्यायनम्।

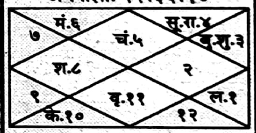
ति. दि.	तिथयः द. प.	तिथयः घं. मि.	नक्षत्राणि द. प.	नक्षत्राणि घं. मि.	योगाः द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः रा. द. प.	चन्द्रराशयः घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं द. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	दिनाङ्काः रा.	दिनाङ्काः सौ.	दिनाङ्काः अं.
०१ बृ.	११।५३	दि.०१।५०	रे.३०।३२	सा.०६।०६	ऐं.३४।२८	ब.११।५३	मी.३०।३२	सा.०६।०६	११।१५।५४।३९	३०।३४	५।५३	६।०७	०९	१७	३०
०२ शु.	१५।०९	"११।५७	अ.२७।४७	दि.०५।००	वै.२७।५८	कौ.१५।०९	मेष	अहो.	११।१६।५४।०१	३०।३८	५।५३	६।०७	१०	१८	३१
०३ श.	११।१६	"१०।२२	भ.२५।५४	"०४।१४	वि.२२।०८	ग.११।१६	मे.४०।३८	रा.१०।०७	११।१७।५३।०८	३०।४२	५।५२	६।०८	११	१९	०१
०४ र.	०८।१८	"०९।२०	कृ.२४।५३	"०३।४८	प्री.१७।०६	वि.०८।१८	वृष	अहो.	११।१८।५२।१४	३०।४६	५।५१	६।०९	१२	२०	०२
०५ चं.	०६।२३	"०८।२३	रो.२५।०३	"०३।५१	आ.१३।५५	बा.०६।२३	वृ.५५।३९	रा.०४।०६	११।१९।५१।२०	३०।५०	५।५०	६।१०	१३	२१	०३
०६ मं.	०५।४१	"०८।०५	मृ.२६।२७	"०४।२४	सौ.०९।४४	तै.०५।४१	मिथुन	अहो.	११।२०।५०।२६	३०।५४	५।४९	६।११	१४	२२	०४
०७ बु.	०६।१७	"०८।१९	आ.२९।०८	"०५।२७	शो.०७।३५	व.०६।१७	मिथुन	अहो.	११।२१।४९।३२	३०।५८	५।४८	६।१२	१५	२३	०५
०८ बृ.	०८।१९	"०९।०८	पुन.३३।०२	सा.०७।०१	अगं.०६।२९	ब.०८।१९	मि.१७।०३	दि.१२।३७	११।२२।४८।३८	३१।०२	५।४८	६।१२	१६	२४	०६
०९ शु.	११।२०	"१०।१९	पु.३८।०१	रा.०८।५९	सु.०६।१५	कौ.११।२०	कर्क	अहो.	११।२३।४७।४४	३१।०६	५।४७	६।१३	१७	२५	०७
१० श.	१५।३०	"११।५८	आश्ले.४३।५१	"११।१८	धृ.०६।५०	ग.१५।३०	क.४३।५१	रा.११।१८	११।२४।४६।३५	३१।१०	५।४६	६।१४	१८	२६	०८
११ र.	२०।२१	"०१।५३	म.५०।१९	"०१।५३	शू.०७।५८	वि.२०।२१	सिंह	अहो.	११।२५।४५।२६	३१।१४	५।४५	६।१५	१९	२७	०९
१२ चं.	२५।३४	"०३।५८	पूफ.५६।५४	"०४।३०	गं.०९।२८	बा.२५।३४	सिंह	अहो.	११।२६।४४।१७	३१।१८	५।४४	६।१६	२०	२८	१०
१३ मं.	३०।४५	सा.०६।०४	उफ.६०।००	अहो.	वृ.११।००	तै.३०।४५	सिं.१३।२९	दि.११।०८	११।२७।४३।०७	३१।२२	५।४४	६।१६	२१	२९	११
१४ बु.	३५।२७	रा.०७।५४	उफ.०३।१४	दि.०७।०१	ध्रु.१२।१६	ग.०३।०६	कन्या	अहो.	११।२८।४१।५७	३१।२६	५।४३	६।१७	२२	३०	१२
१५ बृ.	३९।२१	"०९।२६	ह.०८।५५	"०९।१६	व्या.१३।०१	वि.०७।२४	कं.४१।१९	रा.१०।१४	११।२९।४०।४७	३१।३०	५।४२	६।१८	२३	३१	१३

सृष्ट्यादिः, वासन्तनवरात्रारंभः, कलशस्थापनं, श्रीदुर्गापूजनोत्सवः, पश्चिमोत्तरयात्रा प्रतिपदि, पञ्चकान्तः सायं घं.०६ मि.०६ उ., गं. १८।३२ उ. ३३।३२ या., द.ति. ११।५३ उ.।
रेवत्यां रविः ३१।०९, कुंभे शुक्रः ३१।३५, चन्द्रदर्शनं मु. १५ फलं महार्घं, श्रीरेमन्तपूजा, पश्चिमां विना यात्रा तृतीयायामश्विन्यां, द.ति. १५।०९ या., (२-३) एको.।
अप्रैल ०४, स्वायंभुवमन्वादिः, श्रीगौरी ३ व्रतं, श्रीगणेश ४ व्रतं, भ. ३९।४७ उ.।
पूर्वदक्षियात्रा रोहिण्यां, भ. ०८।१८ या.।
मीनावतारः, श्रीरामराज्याभिषेकोत्सवः, श्रीसूर्यषष्ठीव्रतस्यैकभुक्तादिकं (खरना), उपनयनं पञ्चम्यां, दक्षिणयात्रा रोहिण्यां ततः पूर्वां विना यात्रा।
सूर्यषष्ठीव्रतं, सायंकालिकप्रथमार्घदानं, गजपूजा बिल्वाभिमन्त्रणञ्च, उत्तरां विना यात्रा सप्तम्यां मृगशिरसि।
मिथुने कुजः ४५।२७, प्रातः कालिकद्वितीयार्घदानं पारणञ्च, पत्रिकाप्रवेशः, महारात्रिर्निशापूजा, भ.०६।१७ उ. ३७।१८ या.।
महाष्टमीव्रतम्, अशोकाष्टमी अशोककलिकापानं ब्रह्मपुत्रस्नानञ्च, पश्चिमयात्राष्टम्याम्।
महानवमीव्रतं, त्रिशूलिनीपूजा, श्रीरामावतारः, श्रीरामनवमीव्रतं, श्रीसीतारामदर्शनं, हनुमद्ध्वजदानम्, उपनयनं दशम्यां, पश्चिमां विना यात्रा पुष्ये।
मार्गी शनिः ४९।५२, विजया १० अपराजितापूजा, देवीविसर्जनं, जयन्तीधारणं, नीलकण्ठदर्शनं यात्रा, गं. ३२।५१ उ. ४७।५१ या., भ. ४७।५६ उ., (११) एको.।
कामदा ११ व्रतं सर्वेषां, पूर्वोत्तरयात्रा पूर्वफल्गुन्यां, भ. २०।२१ या.।
मीने बुधः २०।३९, श्रीविष्णु १२, गोघृतेन पारणं, प्रदोष १३ व्रतम्, उत्तरयात्रा त्रयोदश्यां पूर्वफल्गुन्यां, (१२) एको.।
चैत्रावली मदन १३ श्रीमदनपूजनं, श्रीमहावीरजयन्ती।
प्रदोष १४ व्रतं, मदनभञ्जिका १४, गोष्ठे सत्सङ्गः, पूर्वदक्षिणयात्रा पूर्णिमायां, भ. ३५।२७ उ.।
मासान्तः, चैत्री १५ स्नानदानादिः, स्वारोचिषमन्वादिः, भ. ०७।२४ या.।

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च — दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सिं.अं.		तु.अं.					
०१ बृ.	०१।२६।३४।१७	१०।१९।०३।०३	०६।२६।०२।२६	०९।२९।११।४३	०३।११।१२।३३	०५।१२।३२।५८	४५।१७	०८।१३	१०।०९	१२।२२	१४।४०	१६।५६	१९।११	२१।२९	२३।४७	०१।५२	०३।३८	०५।०९	०६।३६
०२ शु.	०१।२७।०८।२३	१०।१९।३३।३४	०६।२५।५८।०९	१०।००।१४।२०	०३।११।११।००	०५।१२।२९।४८	४५।१९	०८।१०	१०।०६	१२।१९	१४।३७	१६।५३	१९।०८	२१।२६	२३।४४	०१।४९	०३।३५	०५।०६	०६।३३
०३ श.	०१।२७।४२।४३	१०।२०।३२।३९	०६।२५।५२।४७	१०।०१।१९।०४	०३।११।१०।३१	०५।१२।२६।३७	४५।२१	०८।०६	१०।०२	१२।१५	१४।३३	१६।४९	१९।०४	२१।२२	२३।४०	०१।४५	०३।३१	०५।०२	०६।२९
०४ र.	०१।२८।१७।०३	१०।२१।३१।४४	०६।२५।४७।२५	१०।०२।२३।४८	०३।११।१०।०२	०५।१२।२३।२६	४५।२३	०८।०२	०९।५८	१२।११	१४।२९	१६।४५	१९।००	२१।१८	२३।३६	०१।४१	०३।२७	०४।५८	०६।२५
०५ चं.	०१।२८।५१।२३	१०।२२।३०।४८	०६।२५।४२।०३	१०।०३।२८।३२	०३।११।०९।३३	०५।१२।२०।१५	४५।२५	०७।५९	०९।५५	१२।०८	१४।२६	१६।४२	१८।५७	२१।१५	२३।३३	०१।३८	०३।२४	०४।५५	०६।२२
०६ मं.	०१।२९।२५।४२	१०।२३।२९।५२	०६।२५।३६।४१	१०।०४।३३।१५	०३।११।०९।०५	०५।१२।१७।०४	४५।२७	०७।५५	०९।५१	१२।०४	१४।२२	१६।३८	१८।५३	२१।११	२३।२९	०१।३४	०३।२०	०४।५१	०६।१८
०७ बु.	०२।००।००।०१	१०।२४।२८।५६	०६।२५।३१।१९	१०।०५।३७।५८	०३।११।०८।३७	०५।१२।१३।५३	४५।२९	०७।५१	०९।४७	१२।००	१४।१८	१६।३४	१८।४९	२१।०७	२३।२५	०१।३०	०३।१६	०४।४७	०६।१४
०८ बृ.	०२।[illegible]०।३४।२०	१०।२५।२८।००	०६।२५।२५।५८	१०।०६।४२।४१	०३।११।०८।०९	०५।१२।१०।४३	४५।३१	०७।४८	०९।४४	११।५७	१४।१५	१६।३१	१८।४६	२१।०४	२३।२२	०१।२७	०३।१३	०४।४४	०६।११
०९ शु.	०२।०१।०८।३९	१०।२६।२७।०४	०६।२५।२०।३७	१०।०७।४७।२४	०३।११।०७।४१	०५।१२।०७।३३	४५।३३	०७।४४	०९।४०	११।५३	१४।११	१६।२७	१८।४२	२१।००	२३।१८	०१।२३	०३।०९	०४।४०	०६।०७
१० श.	०२।०१।४३।१९	१०।२७।४९।३०	०६।२५।१४।२०	१०।०८।५३।२४	०३।११।०७।२४	०५।१२।०४।२२	४५।३५	०७।४०	०९।३६	११।४९	१४।०७	१६।२३	१८।३८	२०।५६	२३।१४	०१।१९	०३।०५	०४।३६	०६।०३
११ र.	०२।०२।१७।५९	१०।२९।११।५५	०६।२५।०८।०३	१०।०९।५९।२४	०३।११।०७।२८	०५।१२।०१।११	४५।३७	०७।३७	०९।३३	११।४६	१४।०४	१६।२०	१८।३५	२०।५३	२३।११	०१।१६	०३।०२	०४।३३	०६।००
१२ चं.	०२।०२।५२।३९	११।००।३४।२०	०६।२५।०१।४६	१०।११।०५।२४	०३।११।०७।३६	०५।११।५८।००	४५।३९	०७।३३	०९।२९	११।४२	१४।००	१६।१६	१८।३१	२०।४९	२३।०७	०१।१२	०२।५८	०४।२९	०५।५६
१३ मं.	०२।०३।२७।१९	११।०१।५६।४५	०६।२४।५५।२९	१०।१२।११।२४	०३।११।०७।४४	०५।११।५४।४९	४५।४१	०७।२९	०९।२५	११।३८	१३।५६	१६।१२	१८।२७	२०।४५	२३।०३	०१।०८	०२।५४	०४।२५	०५।५२
१४ बु.	०२।०४।०१।५९	११।०३।१९।१०	०६।२४।४९।१२	१०।१३।१७।२४	०३।११।०७।५२	०५।११।५१।३८	४५।४३	०७।२६	०९।२२	११।३५	१३।५३	१६।०९	१८।२४	२०।४२	२३।००	०१।०५	०२।५१	०४।२२	०५।४९
१५ बृ.	०२।०४।३६।३९	११।०४।४२।३५	०६।२४।४२।५५	१०।१४।२३।२३	०३।११।०८।०१	०५।११।४८।२७	४५।४५	०७।२२	०९।१८	११।३१	१३।४९	१६।०५	१८।२०	२०।३८	२२।५६	०१।०१	०२।४७	०४।१८	०५।४५

०२ शुक्रे वल्ली ०८।३८।०९।२१
अयनांशाः २२।३६।१४



०९ शुक्रे वल्ली ०८।३८।०९।२८
अयनांशाः २२।३६।१५



विविधविषयाः- चैत्रशुक्लप्रतिपत्तो नवमीं यावद् दुर्गापूजनोत्सवस्तत्र देवीप्रतिमां निर्माय पूजयेत्सप्तशतीपाठादिकं च कुर्यात्। चैत्रशुक्लाष्टम्यामशोककलिकापानमन्त्रः- त्वामशोककराभीष्ट मधुमाससमुद्भव। पिबामि शोकसन्तप्तो मामशोकं सदा कुरु।। एतत्पानफलं, लिंगपुराणे- अशोककलिका ह्यष्टौ ये पिबन्ति पुनर्वसौ। चैत्रे मासि सिताष्टम्यां न ते शोकमवाप्नुयुः। ब्रह्मपुत्रस्नानमन्त्रः- ब्रह्मपुत्र महाभाग शन्तनोः कुलसम्भव। अमोघागर्भसंभूत पापं लौहित्य मे हर।। चैत्रशुक्लनवम्यां रामनवमीव्रतन्त्राङ्गदेवतापूजनपूर्वकं श्रीरामं सम्पूज्यार्घ्यं दद्यात्तन्मन्त्रः- दशाननवधार्थाय धर्मसंस्थापनाय च। राक्षसानां विनाशाय दैत्यानां निधनाय च।। परित्राणाय साधूनां जातो रामः स्वयं हरिः। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं भ्रातृभिः सहितोऽनघ।। ततः परदिने इदं विष्णुरिति मन्त्रेण जुहुयाद् ब्राह्मणांश्च भोजयेत्। मिथिलामाहात्म्यं, बृहद्विष्णुपुराणे- मिथिलां ये नमस्यन्ति देशान्तरगता अपि। तेषां भुक्तिश्च मुक्तिश्च जायते नात्र संशयः।। मिथिलावासमासाद्य जीवन्मुक्तो भवेन्नरः। देहान्ते राघवं प्राप्य तद्भक्तैः सह मोदते।।

ग्रहस्थितिः- मार्गिणः पूर्वोदिताः कुजबुधशुक्राः, वक्री पूर्वोदितो गुरुः, वक्री पूर्वोदितः शनिः १०तो मार्गी। वातावरणम्- पक्षादिभागे तापवायुचारमेघच्छायादयस्तदन्तभागे वायुमेघचारस्वल्पछिन्नवृष्टिहिमखण्डपातादयः।

वैशाखकृष्णपक्षः

शकाब्दः १९२८, संवत् २०६३, सन् १४१३ साल, दि. १४।०४।२००६ ई. तः दि. २७।०४।२००६ ई. या., दक्षिणेकालः। वक्री पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पूर्वोदितः शुक्रः, शुद्धः, वसन्तर्तुः, सौम्यगोलः, सौम्यायनम्।

ति. दि.	तिथयः द. प.	तिथयः घं. मि.	नक्षत्राणि द. प.	नक्षत्राणि घं. मि.	योगाः द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः रा. द. प.	चन्द्रराशयः घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं द. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	दिनाङ्काः रा.	दिनाङ्काः सौ.	दिनाङ्काः अं.
०१ शु.	४२।०६	रा.१०।३१	चि.१३।४२	दि.११।१०	ह.१३।००	बा.१०।४४	तुला	अहो	००।००।३९।३७	३१।३४	५।४१	६।१९	२४	०१	१४
०२ श.	४३।४५	रा.११।११	स्वा.१७।२२	दि.१२।३८	व.१२।०८	तै.१४।५६	तुला	अहो	००।०१।३८।१२	३१।३८	५।४१	६।१९	२५	०२	१५
०३ र.	४४।००	रा.११।१६	वि.१९।४७	दि.०१।३५	सि.१०।१५	व.१३।५३	तु.०४।११	दि.०७।२०	००।०२।३६।४७	३१।४२	५।४०	६।२०	२६	०३	१६
०४ चं.	४२।५९	रा.१०।५१	अनु.२०।५३	दि.०२।००	व्य.०७।२२	ब.१३।३०	वृश्चिक	अहो	००।०३।३५।२२	३१।४६	५।३९	६।२१	२७	०४	१७
०५ मं.	४०।४३	रा.०९।५५	ज्ये.२०।४९	दि.०१।५८	व.०३।२९	कौ.११।५१	वृ.२०।४९	दि.०१।५८	००।०४।३३।५७	३१।५०	५।३८	६।२२	२८	०५	१८
०६ बु.	३७।२५	रा.०८।३५	मू.१९।३७	दि.०१।२८	शि.५३।०५	ग.०९।०४	धनु	अहो	००।०५।३२।३२	३१।५४	५।३७	६।२३	२९	०६	१९
०७ बृ.	३३।१४	सा.०६।५५	पूषा.१७।३७	दि.१२।४०	सि.४६।४७	वि.०५।२०	ध.३१।५३	रा.०६।२२	००।०६।३१।०७	३१।५७	५।३७	६।२३	३०	०७	२०
०८ शु.	२८।१३	दि.०४।५३	उषा.१४।४१	दि.११।२८	सा.३९।५३	बा.००।४४	मकर	अहो	००।०७।२९।४२	३२।००	५।३६	६।२४	०१	०८	२१
०९ श.	२२।४४	दि.०२।४१	श्र.११।१०	दि.१०।०३	शुभः३२।३५	ग.२२।४४	म.३९।१३	रा.०९।१६	००।०८।२८।०२	३२।०४	५।३५	६।२५	०२	०९	२२
१० र.	१६।५०	दि.१२।१८	ध.०७।१५	दि.०८।२८	शु.२४।५९	वि.१६।५०	कुम्भ	अहो	००।०९।२६।२२	३२।०७	५।३४	६।२६	०३	१०	२३
११ चं.	१०।४६	दि.०९।५२	श.०३।०७	दि.०६।४९	ब्र.१७।१७	बा.१०।४६	कुं.४५।०१	रा.११।३४	००।१०।२४।४२	३२।१०	५।३४	६।२६	०४	११	२४
१२ मं.	०४।४५	दि.०७।२७	उभा.५५।०४	रा.०३।३५	ऐं.०९।३९	तै.०४।४५	मीन	अहो	००।११।२३।०१	३२।१३	५।३३	६।२७	०५	१२	२५
१४ बु.	५३।३५	रा.०२।५९	रे.५१।३५	रा.०२।११	वै.०२।१०	वि.२६।१६	मी.५१।३५	रा.०२।११	००।१२।२१।२०	३२।१६	५।३३	६।२७	०६	१३	२६
३० बृ.	४८।४७	रा.०१।०३	अ.४८।३९	रा.०१।००	प्री.४८।२९	च.२१।११	मेष	अहो	००।१३।१९।३९	३२।१९	५।३२	६।२८	०७	१४	२७

अश्विन्यां मेषे रविः ०५।२१, मु.३० फलं साम्यं, यवविषुवसंक्रान्तिपुण्यकालो घं.०७ मि. ४९उ. घं.०२ मि.१३ यावद्दिने (सतुआइन), सोपकरणवारिपूर्णघटदानं, प्रपागलन्तिकादानं,● मासादिः, जूडिशीतल, पर्युषितान्नपानादिभक्षणं, तुलस्यश्वत्थाम्रादिवृक्षसेचनम्।

द्विरागमनं विवाह उत्तरयात्रा चानुराधायां तृतीयायां, भ.१३।५३ उ. ४४।०० या.।

श्रीवक्रतुण्ड ४ व्रतं, पश्चिमोत्तरयात्रा पञ्चम्याम्।

परिघयोगमानम् ५५।१२, गं.१४।४९ उ. २९।४९ या., द.ति. ४०।४३ उ., पश्चिमयात्रा ज्येष्ठायां ततः पूर्वयात्रा पञ्चम्याम्।

कोकिलाषष्ठी, पूर्वयात्रा सप्तम्यां, द.ति. ३७।२५ या., भ. ३७।२५ उ.।

शर्करासप्तमी, विवाहः उत्तराषाढे, पूर्वोत्तरयात्रा पूर्वाषाढे, भ. ०५।२० या.।

विवाहोऽष्टम्यां, पश्चिमां विना यात्रा श्रवणायाम्।

पूर्वां विना यात्रा श्रवणायां, पञ्चकारंभो दिवा घं. १० मि. ०३ उपरि, भ. ४९।४७ उ.।

विवाहो धनिष्ठायां, भ. १६।५० या., (१०-११) एको.।

पूर्वभाद्रमानम् ५५।५३, पूर्वास्तो बुधः ४५।५५, वरुथिनी ११ व्रतं सर्वेषां, पश्चिमयात्रैकादश्यां पूर्वभाद्रे।

त्रयोदशीमानम् ५४।१२, कुशोदकेन पारणं, प्रदोष १३ व्रतं, भ. ५८।५७ उ., पश्चिमयात्रा रेवत्याम्।

विष्कुम्भयोगमानम् ५२।५३, प्रदोष १४ व्रतं, पञ्चकान्तो रात्रौ घं. ०२ मि.११ उ., भ.२६।१६ या., गं. ३९।३५ उ. ५४।३५ या.।

भरण्यां रविः ४६।३२, मीने शुक्रः ४०।५१, वैशाखी ३० स्नानदानादिः।

● हनुमद्ध्वजदानं, वैशाखस्नानारंभः, हरिद्वारे कल्पवासारंभः, नववर्षारंभः, आर्यभटजयन्ती, १९२८ शकाब्दारंभः सौम्यगोलारंभश्च ०५।२१ उ., वैशाखे कौशिकीस्नानं महापुण्यप्रदं, वैशाखे तैलं त्यजेत्।

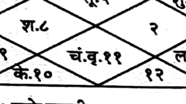
मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

ति. दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं
०१ शु.	०२।०५।११।१८	११।०६।०४।००	०६।२४।३६।३९	१०।१५।२९।२२	०३।११।०८।१०	०५।११।४५।१७	४५।४७
०२ श.	०२।०५।४६।२४	११।०७।४१।०६	०६।२४।२९।३२	१०।१६।३६।१८	०३।११।०९।३३	०५।११।४२।०६	४५।४९
०३ र.	०२।०६।२१।३०	११।०९।१८।१२	०६।२४।२२।२५	१०।१७।४३।१४	०३।११।१०।५६	०५।११।३८।५५	४५।५१
०४ चं.	०२।०६।५६।३६	११।१०।५५।१८	०६।२४।१५।१९	१०।१८।५०।१०	०३।११।१२।१९	०५।११।३५।४४	४५।५३
०५ मं.	०२।०७।३१।४२	११।१२।३२।२४	०६।२४।०८।१३	१०।१९।५७।०६	०३।११।१३।४२	०५।११।३२।३३	४५।५५
०६ बु.	०२।०८।०६।४७	११।१४।०९।३०	०६।२४।०१।०७	१०।२१।०४।०२	०३।११।१५।०४	०५।११।२९।२२	४५।५७
०७ बृ.	०२।०८।४१।५२	११।१५।४६।३६	०६।२३।५४।०१	१०।२२।१०।५८	०३।११।१६।२६	०५।११।२६।१२	४५।५९
०८ शु.	०२।०९।१६।५७	११।१७।२३।४२	०६।२३।४६।५५	१०।२३।१७।५३	०३।११।१७।४८	०५।११।२३।०२	४६।००
०९ श.	०२।०९।५२।२३	११।१९।०९।४९	०६।२३।३९।२०	१०।२४।२५।५५	०३।११।१९।४३	०५।११।१९।५१	४६।०२
१० र.	०२।१०।२७।४९	११।२०।५५।५६	०६।२३।३१।४५	१०।२५।३३।५७	०३।११।२१।३८	०५।११।१६।४०	४६।०४
११ चं.	०२।११।०३।१५	११।२२।४२।०३	०६।२३।२४।१०	१०।२६।४१।५९	०३।११।२३।३२	०५।११।१३।२९	४६।०६
१२ मं.	०२।११।३८।४१	११।२४।२८।१०	०६।२३।१६।३५	१०।२७।५०।००	०३।११।२५।२६	०५।११।१०।१८	४६।०८
१४ बु.	०२।१२।१४।०६	११।२६।१४।१६	०६।२३।०९।००	१०।२८।५८।०१	०३।११।२७।२०	०५।११।०७।०७	४६।०९
३० बृ.	०२।१२।४९।३१	११।२८।००।२२	०६।२३।०१।२५	११।००।०६।०२	०३।११।२९।१४	०५।११।०३।५७	४६।१०

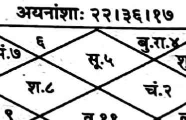
दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सिं.अं.	कं.अं.	तु.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मी.अं.
०१ शु.	०७।१८	०९।१४	११।२७	१३।४५	१६।०१	१८।१६	२०।३४	२२।५२	००।५७	०२।४३	०४।१४	०५।४१
०२ श.	०७।१५	०९।११	११।२४	१३।४२	१५।५८	१८।१३	२०।३१	२२।४९	००।५४	०२।४०	०४।११	०५।३८
०३ र.	०७।११	०९।०७	११।२०	१३।३८	१५।५४	१८।०९	२०।२७	२२।४५	००।५०	०२।३६	०४।०७	०५।३४
०४ चं.	०७।०७	०९।०३	११।१६	१३।३४	१५।५०	१८।०५	२०।२३	२२।४१	००।४६	०२।३२	०४।०३	०५।३०
०५ मं.	०७।०३	०८।५९	११।१२	१३।३०	१५।४६	१८।०१	२०।१९	२२।३७	००।४२	०२।२८	०३।५९	०५।२६
०६ बु.	०७।००	०८।५६	११।०९	१३।२७	१५।४३	१७।५८	२०।१६	२२।३४	००।३९	०२।२५	०३।५६	०५।२३
०७ बृ.	०६।५६	०८।५२	११।०५	१३।२३	१५।३९	१७।५४	२०।१२	२२।३०	००।३५	०२।२१	०३।५२	०५।१९
०८ शु.	०६।५२	०८।४८	११।०१	१३।१९	१५।३५	१७।५०	२०।०८	२२।२६	००।३१	०२।१७	०३।४८	०५।१५
०९ श.	०६।४८	०८।४४	१०।५७	१३।१५	१५।३१	१७।४६	२०।०४	२२।२२	००।२७	०२।१३	०३।४४	०५।११
१० र.	०६।४४	०८।४०	१०।५३	१३।११	१५।२७	१७।४२	२०।००	२२।१८	००।२३	०२।०९	०३।४०	०५।०७
११ चं.	०६।४१	०८।३७	१०।५०	१३।०८	१५।२४	१७।३९	१९।५७	२२।१५	००।२०	०२।०६	०३।३७	०५।०४
१२ मं.	०६।३७	०८।३३	१०।४६	१३।०४	१५।२०	१७।३५	१९।५३	२२।११	००।१६	०२।०२	०३।३३	०५।००
१४ बु.	०६।३३	०८।२९	१०।४२	१३।००	१५।१६	१७।३१	१९।४९	२२।०७	००।१२	०१।५८	०३।२९	०४।५६
३० बृ.	०६।२९	०८।२५	१०।३८	१२।५६	१५।१२	१७।२७	१९।४५	२२।०३	००।०८	०१।५४	०३।२५	०४।५२

०१ शुक्रे वल्ली ०८।३८।०९।३५
अयनांशाः २२।३६।१६



०८ शुक्रे वल्ली ०८।३८।०९।४२
अयनांशाः २२।३६।१७



विविधविषयाः- **वैशाखे प्रातः स्नानमन्त्रः-** वैशाखे सकलं मासं मेषसंक्रमणे रवेः। प्रातः सनियमं स्नास्ये प्रीयतां मधुसूदन।। मधुहन्तुः प्रसादेन ब्राह्मणानामनुग्रहात्। निर्विघ्नमस्तु मे पुण्यं वैशाखस्नानमन्वहम्।। माधवे मेषगे भानौ मुरारे मधुसूदन। प्रातः स्नानेन मे देव फलदो भव पापहन्।। **प्रातःस्नानस्य समयः-** उत्तमं तु सनक्षत्रं मध्यमं लुप्ततारकम् । सवितर्युदिते भूप ततो हीनं प्रकीर्त्तितम्। **वैशाखे त्याज्यवस्तूनि-** कांस्यं मांसं मसूरान्नं चणकं कोद्रवन्तथा। शाकं मधु परान्नं च पुनर्भोजनमैथुने। **वैशाखे दानवस्तूनि, स्कान्दे-** प्रपा कार्या च वैशाखे देवे देया गलन्तिका। उपानद्व्यजनं छत्रं सूक्ष्मवासांसि चन्दनम्। जलपात्राणि देयानि तथापूपगृहाणि च। **तिथितत्त्वे-** ददाति यो हि मेषादौ सक्तूनम्बुघटान्वितान्। पितृनुद्दिश्य विप्रेभ्यः सर्वपापैः प्रमुच्यते। **मासविशेषे नदीविशेषस्नानम्-** कौशिकीं माधवे स्नायान्माघे वै कमलान्तथा। दुग्धां विल्ववर्ती मार्गे कार्तिके यामुनीं तथा।। भूयसी गैरिका चैत्र आश्विने फलदा मता। इच्छावती तथा पौषे चैत्रे वै लक्ष्मणा शुभा।। वाङ्मती फाल्गुने शस्ता गण्डकी चापि कार्त्तिके। मलमासे विशेषेण गैरिका फलदायिनी।। गंगा तु सर्वदेति।

ग्रहस्थितिः- मार्गिणः पूर्वोदिताः कुजशुक्रशनयः, मार्गी पूर्वोदितो बुधः ११तः पूर्वास्तः, वक्री पूर्वोदितो गुरुः।

वातावरणम्- पक्षाद्यन्तभागयोस्तापमेघवायुचारादयस्तन्मध्यभागे मेघचारवायुछिन्नवृष्टितापवृद्धयः।

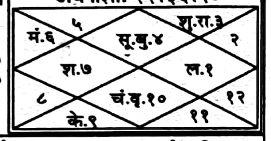
वैशाखशुक्लपक्षः

शकाब्दः १९२८, संवत् २०६३, सन् १४१३ साल, दि. २८|०४|२००६ ई.तः दि. १३|०५|२००६ ई. या., दक्षिणेकालः। वक्री पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पूर्वोदितः शुक्रः, शुद्धः, वसन्तर्तुः, सौम्यगोलः, सौम्यायनम्।

ति. दि.	तिथयः द. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि द. प.	घं. मि.	योगाः द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः रा. द. प.	घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं द. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	दिनाङ्काः रा.	सौ.	अं.
०१ शु.	४४|४८	रा.११|२७	भ.४६|३८	रा.१२|११	आ.४२|३३	किं.१६|४८	मेष	अहो.	००|१४|१७|५८	३२|२२	५|३२	६|२८	०८	१५	२८
०२ श.	४१|४४	"१०|१३	कृ.४५|२५	"११|४०	सौ.३७|२५	बा.१३|१६	मे.०१|२०	दि.०६|०३	००|१५|१६|०३	३२|२६	५|३१	६|२९	०९	१६	२९
०३ र.	३९|४५	"०९|२४	रो.४५|२०	"११|३८	शो.३३|०३	तै.१०|४५	वृष	अहो.	००|१६|१४|०८	३२|२९	५|३०	६|३०	१०	१७	३०
०४ चं.	३८|५९	"०९|०६	मृ.४६|२६	"१२|०४	अगं.२९|४३	व.०९|२२	वृ.१५|५३	दि.११|५१	००|१७|१२|१२	३२|३२	५|३०	६|३०	११	१८	०१
०५ मं.	३९|३०	"०९|१७	आ.४८|५१	"०१|०१	सु.२७|२२	ब.०९|१४	मिथुन	अहो.	००|१८|१०|१६	३२|३५	५|२९	६|३१	१२	१९	०२
०६ बु.	४१|२८	"१०|०३	पुन.५२|३०	"०२|२८	धृ.२६|०६	कौ.१०|५९	मि.३६|३५	रा.०८|०६	००|१९|०८|२०	३२|३८	५|२८	६|३२	१३	२०	०३
०७ वृ.	४४|२५	"११|१४	पु.५७|१८	"०४|२३	शू.२५|३९	ग.१२|५७	कर्क	अहो.	००|२०|०६|२४	३२|४१	५|२८	६|३२	१४	२१	०४
०८ शु.	४८|२८	"१२|५०	आश्ले.६०|००	अहो.	गं.२६|०७	वि.१६|२७	कर्क	अहो.	००|२१|०४|२८	३२|४४	५|२७	६|३३	१५	२२	०५
०९ श.	५३|१५	"०२|४४	आश्ले.०२|५८	दि.०६|३७	वृ.२७|१४	बा.२०|५२	क.०२|५८	दि.०६|३७	००|२२|०२|२१	३२|४८	५|२६	६|३४	१६	२३	०६
१० र.	५८|२४	"०४|४८	म.०९|१६	"०९|०८	ध्रु.२८|४३	तै.२५|५०	सिंह	अहो.	००|२३|००|१४	३२|५१	५|२६	६|३४	१७	२४	०७
११ चं.	६०|००	अहो.	पूफ.१५|५१	"११|४५	व्या.३०|२०	व.३०|५८	सिं.३२|२८	सा.०६|२४	००|२३|५८|०७	३२|५४	५|२५	६|३५	१८	२५	०८
११ मं.	०३|३२	दि.०६|५०	उफ.२२|१७	"०२|२०	ह.३१|४३	वि.०३|३२	कन्या	अहो.	००|२४|५६|००	३२|५७	५|२५	६|३५	१९	२६	०९
१२ बु.	०८|०६	"०८|३८	ह.२८|०७	"०४|३९	व.३२|४१	बा.०८|०६	कन्या	अहो.	००|२५|५३|५३	३३|००	५|२४	६|३६	२०	२७	१०
१३ वृ.	११|५८	"१०|१०	चि.३३|०६	सा.०६|३७	सि.३२|५७	तै.११|५८	कं.००|३७	दि.०५|३८	००|२६|५१|४५	३३|०३	५|२३	६|३७	२१	२८	११
१४ शु.	१४|३७	"११|१४	स्वा.३७|००	रा.०८|११	व्य.३२|११	व.१४|३७	तुला	अहो.	००|२७|४९|३७	३३|०६	५|२३	६|३७	२२	२९	१२
१५ श.	१६|१२	"११|५१	वि.३९|४१	"०९|१४	व.३०|४३	ब.१६|१२	तु.२४|०१	दि.०२|५८	००|२८|४७|१६	३३|०९	५|२२	६|३८	२३	३०	१३

अश्विन्यां मेषे बुधः ५३|२९, श्रीशिवाजीजयन्ती।
चन्द्रदर्शनं मु.३० फलं साम्यं, दक्षिणयात्रा रोहिण्याम्। ● पूर्वयात्रा कन्यास्थे चन्द्रे ततः पश्चिमयात्रा त्रयोदश्यां, गृहारंभप्रवेशौ मुण्डनं कर्णवेधः विवाहः द्विरागमनं देवादिप्रतिष्ठा च त्रयोदश्याम्।
अक्षय ३ स्नानदानादिः, त्रेतायुगादिः, श्रीपरशुरामावतारः, श्रीपरशुरामजयन्ती, देवादिप्रतिष्ठा, पूर्वदक्षिणयात्रा विवाहो द्विरागमनञ्च तृतीयायाम्।
मई ०५, श्रीगणेश ४ व्रतं, म. ०९|२२उ. ३८|५९ या., पूर्वां विना यात्रा विवाहो द्विरागमनञ्च पञ्चम्यां मृगशिरसि।
श्रीशङ्कराचार्यस्य २५१३ जयन्तीमहोत्सवः, छन्दोगानामुपनयनं, द.ति. ३९|३० उ.।
गृहप्रवेशः द्विरागमनञ्च सप्तम्यां, पश्चिमयात्रा सप्तम्यां पुनर्वसौ तत उत्तरां विना यात्रा पुष्ये, द.ति. ४१|२८ या.।
जाह्नवीसप्तमी, जह्नुमुनेः कर्णरन्ध्राद् गंगायाः प्रादुर्भावः, गंगास्नानदानादिः, मुण्डनं कर्णवेधश्च, देवादिप्रतिष्ठा, गृहप्रवेशः सप्तम्यां, दक्षिणां विना यात्रा द्विरागमनञ्च पुष्ये, म. ४४|२५ उ.।
म. १६|२७ या., गं. ५१|५८ उ.। ○द्विवाहो मध्यमः), देवादिप्रतिष्ठा, गृहप्रवेशः, विवाहो गृहारंभश्च चित्रायाम्।
श्रीजानकीनवमीव्रतं, धरणितो जगज्जनन्या जानक्याःप्रादुर्भावः, सीतामढ्यां तदाविर्भावस्थले पुण्यारण्ये (पुनौरायां) श्रीसीतारामदर्शनं, मैथिलीदिवसः, ■
उपनयनं पूर्वफल्गुन्यां, विवाहो मघायां, पूर्वोत्तरयात्रा दशम्यां पूर्वफल्गुन्यां, षाण्मासिकरविव्रतविसर्गः। ■हनुमद्ध्वजदानं, गं. ०६|५८ या.।
उपनयनं, म. ३०|५८ उ., द्विरागमनं विवाहः वापीकूपतडागखननं गृहारंभो गृहप्रवेशश्च उत्तरफल्गुन्यां, उत्तरयात्रा पूर्वफल्गुन्याम्।
विजया ११ व्रतं सर्वेषां, म. ०३|३२ या., छन्दोगानामुपनयनं, रात्रौ ११ व्रतोद्यापनं, पूर्वदक्षिणयात्रा हस्ते।
मधुसूदन १२ कुशोदकेन पारणं, प्रदोष १३ व्रतं, कर्णवेधः, मुण्डनं त्रयोदश्यां, द्विरागमनं पूर्वदक्षिणयात्रा च द्वादश्यां (हस्ते शुक्रराहुवेधा○
कृत्तिकायां रविः ३४|२१, प्रदोष १४ व्रतं, नरसिंह १४ व्रतं प्रदोषः घं. ०८ मि. १३ यावद्रात्रौ, श्रीनरसिंहावतारः, श्रीनरहरिपूजनदर्शनादिकं,●
म. १४|३७ उ. ४५|२४ या., गृहारंभः देवादिप्रतिष्ठा कर्णवेधश्च पूर्णिमायां, विवाहोद्विरागमनञ्च पूर्णिमायांस्वात्यां, दक्षिणयात्रास्वात्याम्।
वैशाखी १५ स्नानदानादिः, कच्छपावतारः, बुद्धावतारः, श्रीबुद्धजयन्ती, पश्चिमोत्तरयात्रानुराधायाम्।

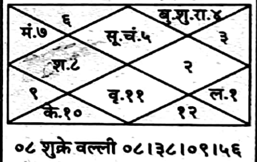
१४ शुक्रे वल्ली ०८|३८|१०|०३
अयनांशाः २२|३६|२०



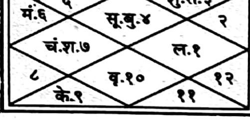
मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च / दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सिं.अं.	कं.अं.	तु.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मी.अं.
०१ शु.	०२|१३|२४|५६	११|२९|४६|२८	०६|२२|५३|५०	११|०१|१४|०३	०३|११|३१|०८	०५|११|००|४७	४६|११	०६|२६	०८|२२	१०|३५	१२|५३	१५|०९	१७|२४	१९|४२	२२|००	००|०५	०१|५१	०३|२२	०४|४९
०२ श.	०२|१४|००|२८	००|०१|३७|४४	०६|२२|४५|५९	११|०२|२३|००	०३|११|३३|५०	०५|१०|५७|३६	४६|१३	०६|२२	०८|१८	१०|३१	१२|४९	१५|०५	१७|२०	१९|३८	२१|५६	००|०१	०१|४७	०३|१८	०४|४५
०३ र.	०२|१४|३६|००	००|०३|२९|००	०६|२२|३८|०९	११|०३|३१|५७	०३|११|३६|३२	०५|१०|५४|२५	४६|१५	०६|१८	०८|१४	१०|२७	१२|४५	१५|०१	१७|१६	१९|३४	२१|५२	२३|५७	०१|४३	०३|१४	०४|४१
०४ चं.	०२|१५|११|३२	००|०५|२०|१५	०६|२२|३०|१९	११|०४|४०|५४	०३|११|३९|१४	०५|१०|५१|१४	४६|१७	०६|१४	०८|१०	१०|२३	१२|४१	१४|५७	१७|१२	१९|३०	२१|४८	२३|५३	०१|३९	०३|१०	०४|३७
०५ मं.	०२|१५|४७|०४	००|०७|११|३०	०६|२२|२२|२९	११|०५|४९|५१	०३|११|४१|५६	०५|१०|४८|०३	४६|१९	०६|१०	०८|०६	१०|१९	१२|३७	१४|५३	१७|०८	१९|२६	२१|४४	२३|४९	०१|३५	०३|०६	०४|३३
०६ बु.	०२|१६|२२|३६	००|०९|०२|४५	०६|२२|१४|३९	११|०६|५८|४८	०३|११|४४|३८	०५|१०|४४|५२	४६|२०	०६|०७	०८|०३	१०|१६	१२|३४	१४|५०	१७|०५	१९|२३	२१|४१	२३|४६	०१|३२	०३|०३	०४|३०
०७ वृ.	०२|१६|५८|०७	००|१०|५४|००	०६|२२|०६|४९	११|०८|०७|४५	०३|११|४७|१९	०५|१०|४१|४२	४६|२१	०६|०३	०७|५९	१०|१२	१२|३०	१४|४६	१७|०१	१९|१९	२१|३७	२३|४२	०१|२८	०२|५९	०४|२६
०८ शु.	०२|१७|३३|३८	००|१२|४५|१५	०६|२१|५८|५९	११|०९|१६|४१	०३|११|५०|००	०५|१०|३८|३२	४६|२२	०५|५९	०७|५५	१०|०८	१२|२६	१४|४२	१६|५७	१९|१५	२१|३३	२३|३८	०१|२४	०२|५५	०४|२२
०९ श.	०२|१८|०९|३३	००|१४|३९|१६	०६|२१|५०|५४	११|१०|२६|०५	०३|११|५३|२१	०५|१०|३५|२१	४६|२४	०५|५५	०७|५१	१०|०४	१२|२२	१४|३८	१६|५३	१९|११	२१|२९	२३|३४	०१|२०	०२|५१	०४|१८
१० र.	०२|१८|४५|२७	००|१६|३३|१७	०६|२१|४२|४९	११|११|३५|२९	०३|११|५६|४२	०५|१०|३२|१०	४६|२६	०५|५१	०७|४७	१०|००	१२|१८	१४|३४	१६|४९	१९|०७	२१|२५	२३|३०	०१|१६	०२|४७	०४|१४
११ चं.	०२|१९|२१|२१	००|१८|२७|१८	०६|२१|३४|४४	११|१२|४४|५२	०३|१२|००|०३	०५|१०|२८|५९	४६|२८	०५|४७	०७|४३	०९|५६	१२|१४	१४|३०	१६|४५	१९|०३	२१|२१	२३|२६	०१|१२	०२|४३	०४|१०
११ मं.	०२|१९|५७|१५	००|२०|२१|१९	०६|२१|२६|३९	११|१३|५४|१५	०३|१२|०३|२४	०५|१०|२५|४८	४६|३०	०५|४४	०७|४०	०९|५३	१२|११	१४|२७	१६|४२	१९|००	२१|१८	२३|२३	०१|०९	०२|४०	०४|०७
१२ बु.	०२|२०|३३|०९	००|२२|१५|२०	०६|२१|१८|३४	११|१५|०३|३८	०३|१२|०६|४५	०५|१०|२२|३७	४६|३१	०५|४०	०७|३६	०९|४९	१२|०७	१४|२३	१६|३८	१८|५६	२१|१४	२३|१९	०१|०५	०२|३६	०४|०३
१३ वृ.	०२|२१|०९|०३	००|२४|०९|२१	०६|२१|१०|२९	११|१६|१३|०१	०३|१२|१०|०६	०५|१०|१९|२६	४६|३२	०५|३६	०७|३२	०९|४५	१२|०३	१४|१९	१६|३४	१८|५२	२१|१०	२३|१५	०१|०१	०२|३२	०३|५९
१४ शु.	०२|२१|४४|५७	००|२६|०३|२२	०६|२१|०२|२४	११|१७|२२|२४	०३|१२|१३|२७	०५|१०|१६|१६	४६|३३	०५|३२	०७|२८	०९|४१	११|५९	१४|१५	१६|३०	१८|४८	२१|०६	२३|११	००|५७	०२|२८	०३|५५
१५ श.	०२|२२|२१|००	००|२७|५७|०४	०६|२०|५४|४५	११|१८|३२|१२	०३|१२|१७|४०	०५|१०|१३|०५	४६|३५	०५|२८	०७|२४	०९|३७	११|५५	१४|११	१६|२६	१८|४४	२१|०२	२३|०७	००|५३	०२|२४	०३|५१

०१ शुक्रे वल्ली ०८|३८|०९|४९
अयनांशाः २२|३६|१८



०८ शुक्रे वल्ली ०८|३८|०९|५६
अयनांशाः २२|३६|१९



विविधविषयाः– वैशाखशुक्लतृतीयायां परशुरामार्घ्यदानमन्त्रः– जामदग्न्य महावीर क्षत्रियान्तकर प्रभो। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं कृपया परमेश्वर। वैशाखशुक्लनवम्यां जानकीनवमीव्रतं– वैशाखस्य सिते पक्षे नवम्यां सोमवासरे। प्रादुर्बभूव लोकानां हिताय जनकात्मजा। **मूलवासः**– स्वर्गे शुचिप्रौष्ठपदेषमाघे भूमौ नभः कार्त्तिकचैत्रपौषे। मूलं ह्यधस्तात्तु तपस्यमार्गवैशाखशुक्रेष्वशुभं च तत्र। **अभुक्तमूलविचारः**– अश्विनीमघमूलादौ त्रिवेदनवनाडिकाः। रेवतीसर्पशक्रान्ते मासरुद्ररसाः क्रमात् ।। तस्मादेषूत्पन्नानां शान्तिः कार्या। मूलोत्पन्नानां विशेषेण, यतो हि– मूलाद्यपादजो हन्ति पितरञ्च द्वितीयजम्। मातरञ्च तृतीयेऽर्थं शुभदस्तु तुरीयजः। सा शान्तिः जन्मानन्तरमग्रिममूलादिनक्षत्रेषु कार्या। **मूलवृक्षविचारः**– मूलस्तम्भस्त्वचा शाखा पत्रं पुष्पं फलं शिखा। मुनयोऽष्टौ दिशा रुद्राः सूर्याः पञ्चाब्धयोऽग्नयः। मूले मूलविनाशः स्यात्स्तम्भे वंशविनाशनम्। त्वचि मातुर्भवेत्क्लेशः शाखायां मातुलस्य च। पत्रे राज्यं विजानीयात्पुष्पे मन्त्रिपदं स्मृतम्। फले च विपुला लक्ष्मीः शिखायामल्पजीवितम्। श्रीतरशान्तिरपि विधेया। तत्र सजातीयापत्यत्रयानन्तरं विजातीयापत्यप्रसवस्त्रीतरः।

ग्रहस्थितिः– मार्गिणः पूर्वोदिताः कुजशुक्रशनयः, मार्गी पूर्वास्तो बुधः, वक्री पूर्वोदितो गुरुः।
वातावरणम्– पक्षाद्यन्तभागयोः स्वल्पछिन्नवृष्टितापवायुचारादयस्तन्मध्यभागे झंझावातोपलपात-मेघचारादयः।

ज्येष्ठकृष्णपक्षः

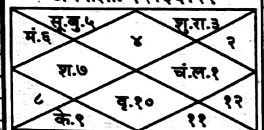
शकाब्दः १९२८, संवत् २०६३, सन् १४१३ साल, दि. १४।५।२००६ ई. तः दि. २७।५।२००६ ई. या., दक्षिणेकालः, रतः पश्चिमेकालः। वक्री पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पूर्वोदितः शुक्रः, शुद्धः, वसन्तर्तुः, सौम्यगोलायने, रतो ग्रीष्मर्तुः।

ति. दि.	तिथयः द. प.	तिथयः घं. मि.	नक्षत्राणि द. प.	नक्षत्राणि घं. मि.	योगाः द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः रा. द. प.	चन्द्रराशयः घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं द. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	दिनाङ्काः रा.	दिनाङ्काः सौ.	दिनाङ्काः अं.	
०१र.	१६।२३	दि.११।५५	अनु.४१।०६	रा.०९।४८	प.२८।०८	कौ.१६।२३	वृश्चिक	अहो.	००।२९।४४।५५	३३।१२	५।२२	६।३८	२४	३१	१४	वृषे बुधः ५१।२९, मासान्तः, ज्येष्ठे वृन्ताकं त्यजेत्।
०२चं.	१५।१७	दि.११।२८	ज्ये.४१।१८	रा.०९।५२	शि.२४।३२	ग.१५।१७	वृ.४१।१८	रा.०९।५२	०१।००।४२।३४	३३।१५	५।२१	६।३९	२५	०१	१५	वृषे रविः ०२।१९ मु.१५ फलं महार्घं, विष्णुपदीसंक्रान्तिपुण्यकालो घं.११ मि.४५ यावद्दिने, वैशाखस्नानसमाप्तिः, हरिद्वारे कल्पवाससमाप्तिः, म.४४।०८ उ., गं. ३५।१८ उ. ५०।१८ या.।
०३मं.	१२।५८	दि.१०।३१	मू.४०।१८	रा.०९।२७	सि.१९।५९	वि.१२।५८	धनु	अहो.	०१।०१।४०।१२	३३।१८	५।२०	६।४०	२६	०२	१६	मासादिः, श्रीआखुरथ ४ व्रतं, म. १२।५८ या., द.ति. १२।५८ उ.।
०४बु.	०९।३७	दि.०९।११	पूषा.३८।२७	रा.०८।४३	सा.१४।३५	बा.०९।३७	ध.५२।४६	रा.०२।२६	०१।०२।३७।५०	३३।२१	५।२०	६।४०	२७	०३	१७	पूर्वयात्रा पञ्चम्यां पूर्वाषाढे, विवाह उत्तराषाढे, द.ति. ०९।३७ या.।
०५बृ.	०५।२१	दि.०७।२७	उषा.३५।४३	सा.०७।३६	शुभः०८।३२	तै.०५।२१	मकर	अहो.	०१।०३।३५।२८	३३।२४	५।१९	६।४१	२८	०४	१८	विवाहो दिवारात्रौ, दक्षिणां विना यात्रा श्रवणायाम्।
०६शु.	००।१८	दि.०५।२६	श्र.३२।१९	सा.०६।१५	शु.०१।५०	व.००।१८	मकर	अहो.	०१।०४।३३।०६	३३।२६	५।१९	६।४१	२९	०५	१९	सप्तमीमानम् ५४।२७, ब्रह्मयोगमानम् ५२।४७, म. २७।३२ उ. ५४।२७ या., पञ्चकारंभः सायं घं.०६ मि. १५ उ., विवाहो दिवारात्रौ, पश्चिमां विना यात्रा षष्ठ्याम्।
०८श.	४८।४७	रा.१२।४९	ध.२८।२७	दि.०४।४१	ऐं.४७।०९	बा.२१।४६	म.००।२३	दि.०५।२७	०१।०५।३०।३४	३३।२९	५।१८	६।४२	३०	०६	२०	पश्चिमयात्रा धनिष्ठायाम्।
०९र.	४२।३९	रा.१०।२२	श.२४।२३	दि.०३।०३	वै.३९।३२	तै.१५।४३	कुम्भ	अहो.	०१।०६।२८।०२	३३।३२	५।१८	६।४२	३१	०७	२१	॥००॥
१०चं.	३६।३१	रा.०७।५३	पूभा.२०।१३	दि.०१।२२	वि.३१।५४	व.०९।३५	कुं.०६।१५	दि.०७।४७	०१।०७।२५।२९	३३।३४	५।१७	६।४३	०१	०८	२२	विवाह उत्तरभाद्रे, पश्चिमयात्रा कुंभस्थे चन्द्रे ततः पश्चिमोत्तरयात्रा पूर्वभाद्रे, म. ०९।३५ उ. ३६।३१या.।
११मं.	३०।४०	सा.०५।३३	उभा.१६।१२	दि.११।४६	प्री.२४।२८	ब.०३।३६	मीन	अहो.	०१।०८।२२।५६	३३।३६	५।१७	६।४३	०२	०९	२३	अश्विन्यां मेषे शुक्रः ३५।०१, अपरा ११ व्रतं सर्वेषां, पश्चिमयात्रा द्वादश्याम्।
१२बु.	२५।१२	दि.०३।२१	रे.१२।३६	दि.१०।१८	आ.१७।२०	तै.२५।१२	मी.१२।३६	दि.१०।१८	०१।०९।२०।२३	३३।३८	५।१६	६।४४	०३	१०	२४	तिलेन पारणं, विवाह इन्धनस्थापनञ्चाश्विन्यां, रेवत्यां केतुवेधाद्विवाहोमध्यमः, पश्चिमयात्रा रेवत्यां तत उत्तरां विना यात्रा द्वादश्यां, पञ्चकान्तो दिवा घं. १० मि. १८ उ., प्रदोष १३ व्रतं,●
१३बृ.	२०।१८	दि.०१।२३	अ.०९।३३	दि.०९।०५	सौ.१०।४१	व.२०।१८	मेष	अहो.	०१।१०।१७।५०	३३।४०	५।१६	६।४४	०४	११	२५	रोहिण्यां रविः २८।१३, प्रदोष १४ व्रतं, विवाह इन्धनस्थापनं दक्षिणां विना यात्रा चाश्विन्यां, म. २०।१८ उ. ४८।१६ या.। ● गं.००।३६ उ. १५।३६ या.।
१४शु.	१६।१४	दि.११।४६	भ.०७।२१	दि.०८।१२	शो.०४।४१	श.१६।१४	मे.२१।५९	दि.०२।०४	०१।११।१५।२७	३३।४२	५।१६	६।४४	०५	१२	२६	अतिगण्डयोगमानम् ५४।४४, कर्के कुजः २८।५२, वटसावित्रीव्रतं, (१४-३०) एकोद्दिष्टम्।
३०श.	१३।१०	दि.१०।३१	कृ.०५।५४	दि.०७।३७	सु.५४।५८	ना.१३।१०	वृष	अहो.	०१।१२।१२।३४	३३।४४	५।१५	६।४५	०६	१३	२७	ज्यैष्ठी ३० स्नानदानादिः, दक्षिणयात्रा प्रतिपदि।

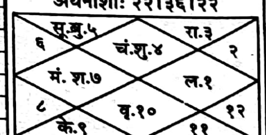
ति. दि.	मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं
०१र.	०२।२२।५७।०३	००।२९।५०।४६	०६।२०।४७।०६	११।२९।४२।००	०३।१२।२१।५३	०५।१०।०९।५४	४६।३७
०२चं.	०२।२३।३३।०६	०१।०१।४४।२७	०६।२०।३९।२७	११।२०।५१।४८	०३।१२।२६।०६	०५।१०।०६।४३	४६।३९
०३मं.	०२।२४।०९।०९	०१।०३।३८।०८	०६।२०।३१।४८	११।२२।०१।३६	०३।१२।३०।१९	०५।१०।०३।३२	४६।४०
०४बु.	०२।२४।४५।११	०१।०५।३१।४९	०६।२०।२४।१०	११।२३।११।२४	०३।१२।३४।३२	०५।१०।००।२१	४६।४१
०५बृ.	०२।२५।२१।१३	०१।०७।२५।३०	०६।२०।१६।३२	११।२४।२१।११	०३।१२।३८।४५	०५।०९।५७।११	४६।४२
०६शु.	०२।२५।५७।१५	०१।०९।१९।११	०६।२०।०८।५४	११।२५।३०।५८	०३।१२।४२।५८	०५।०९।५४।०१	४६।४३
०८श.	०२।२६।३३।२९	०१।११।१०।१७	०६।२०।०१।२२	११।२६।४१।४२	०३।१२।४७।४७	०५।०९।५०।५०	४६।४५
०९र.	०२।२७।०९।४३	०१।१३।०१।२३	०६।१९।५३।५०	११।२७।५२।२६	०३।१२।५२।३६	०५।०९।४७।३९	४६।४६
१०चं.	०२।२७।४५।५७	०१।१४।५२।२९	०६।१९।४६।१८	११।२९।०३।१०	०३।१२।५७।२५	०५।०९।४४।२८	४६।४७
११मं.	०२।२८।२२।११	०१।१६।४३।३५	०६।१९।३८।४६	००।००।१३।५४	०३।१३।०२।१४	०५।०९।४१।१७	४६।४८
१२बु.	०२।२८।५८।२५	०१।१८।३४।४१	०६।१९।३१।१५	००।०१।२४।३८	०३।१३।०७।०३	०५।०९।३८।०६	४६।४९
१३बृ.	०२।२९।३४।३८	०१।२०।२५।४७	०६।१९।२३।४४	००।०२।३५।२२	०३।१३।११।५२	०५।०९।३४।५६	४६।५०
१४शु.	०३।००।१०।५१	०१।२२।१६।५३	०६।१९।१६।१३	००।०३।४६।०६	०३।१३।१६।४१	०५।०९।३१।४६	४६।५१
३०श.	०३।००।४७।११	०१।२४।०१।२२	०६।१९।०९।२२	००।०४।५६।३३	०३।१३।२२।१०	०५।०९।२८।३५	४६।५२

ति. दि.	दैनिकलग्नसारिणीचक्रम् मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सिं.अं.	कं.अं.	तु.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मी.अं.
०१र.	०५।२५	०७।२१	०९।३४	११।५२	१४।०८	१६।२३	१८।४१	२०।५९	२३।०४	००।५०	०२।२१	०३।४८
०२चं.	०५।२१	०७।१७	०९।३०	११।४८	१४।०४	१६।१९	१८।३७	२०।५५	२३।००	००।४६	०२।१७	०३।४४
०३मं.	०५।१७	०७।१३	०९।२६	११।४४	१४।००	१६।१५	१८।३३	२०।५१	२२।५६	००।४२	०२।१३	०३।४०
०४बु.	०५।१३	०७।०९	०९।२२	११।४०	१३।५६	१६।११	१८।२९	२०।४७	२२।५२	००।३८	०२।०९	०३।३६
०५बृ.	०५।०९	०७।०५	०९।१८	११।३६	१३।५२	१६।०७	१८।२५	२०।४३	२२।४८	००।३४	०२।०५	०३।३२
०६शु.	०५।०५	०७।०१	०९।१४	११।३२	१३।४८	१६।०३	१८।२१	२०।३९	२२।४४	००।३०	०२।०१	०३।२८
०८श.	०५।०१	०६।५७	०९।१०	११।२८	१३।४४	१५।५९	१८।१७	२०।३५	२२।४०	००।२६	०१।५७	०३।२४
०९र.	०४।५७	०६।५३	०९।०६	११।२४	१३।४०	१५।५५	१८।१३	२०।३१	२२।३६	००।२२	०१।५३	०३।२०
१०चं.	०४।५३	०६।४९	०९।०२	११।२०	१३।३६	१५।५१	१८।०९	२०।२७	२२।३२	००।१८	०१।४९	०३।१६
११मं.	०४।४९	०६।४५	०८।५८	११।१६	१३।३२	१५।४७	१८।०५	२०।२३	२२।२८	००।१४	०१।४५	०३।१२
१२बु.	०४।४५	०६।४१	०८।५४	११।१२	१३।२८	१५।४३	१८।०१	२०।१९	२२।२४	००।१०	०१।४१	०३।०८
१३बृ.	०४।४१	०६।३७	०८।५०	११।०८	१३।२४	१५।३९	१७।५७	२०।१५	२२।२०	००।०६	०१।३७	०३।०४
१४शु.	०४।३७	०६।३३	०८।४६	११।०४	१३।२०	१५।३५	१७।५३	२०।११	२२।१६	००।०२	०१।३३	०३।००
३०श.	०४।३३	०६।२९	०८।४२	११।००	१३।१६	१५।३१	१७।४९	२०।०७	२२।१२	२३।५८	०१।२९	०२।५६

०६ शुक्रे वल्ली ०८।३८।१०।१०
अयनांशाः २२।३६।२१



१४ शुक्रे वल्ली ०८।३८।१०।१७
अयनांशाः २२।३६।२२



विविधविषयाः- अमायां वटसावित्रीव्रतम् - अमायाञ्च तथा ज्येष्ठे वटमूले महासती। त्रिरात्रोपोषिता नारी विधानेन प्रपूजयेत्॥ सावित्रीप्रतिमां कुर्यात्सौवर्णीं वापि मृण्मयीम्। सप्तधान्येन संयुक्तां सावित्रीप्रतिमां शुभाम्॥ सार्द्धं सत्यवता साध्वीं फलनैवेद्यदीपकैः। सावित्र्याख्यानकञ्चापि वाचयित्वा द्विजोत्तमैरिति विधिपूर्वकं सम्पूज्य ब्राह्मणाय दद्यात्तन्मन्त्रः- सावित्रीयं मया दत्ता सहिरण्या महासती। ब्रह्मणः प्रीणनार्थाय ब्राह्मणः प्रतिगृह्यताम्॥ कतिचिन्नियमाः- समित्पुष्पकुशादीनि ब्राह्मणः स्वयमाहरेत्। शूद्रानीतैः क्रयक्रीतैः कर्म कुर्वन् पतत्यधः॥ सन्तानप्रदसन्तानगोपालमन्त्रः- देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते। देहि मे तनयं कृष्ण! त्वामहं शरणं गतः॥ इति मन्त्रस्य सपादलक्षसंख्यकजपः, तिलपायसघृतैस्तद्दशांशहोमः, तद्दशांशतर्पणं, तद्दशांशमार्जनं, तद्दशांशब्राह्मणभोजनञ्च कारयेत्। काशीमाहात्म्यं, काशीखण्डे- कैलाशादधिका काशी काशी सर्वप्रकाशिका। कैलाशे शंकरोऽप्येकः काश्यां सर्वेऽपि शंकराः॥ अन्यानि मुक्तिक्षेत्राणि काशीप्राप्तकराणि च। काशीं प्राप्य विमुच्येत नान्यथा तीर्थकोटिभिः॥

ग्रहस्थितिः- मार्गिणः पूर्वोदिताः कुजशुक्रशनयः, मार्गी पूर्वास्तो बुधः, वक्री पूर्वोदितो गुरुः।
वातावरणम्- पक्षादिभागे मेघवायुचारछिन्नवृष्टयस्तदन्तभागे तापवृद्धिवायुमेघचारादयः।

ज्येष्ठशुक्लपक्षः

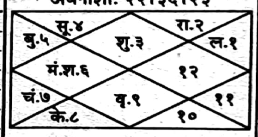
शकाब्दः १९२८, संवत् २०६३, सन् १४१३ साल, दि. २८।०५।२००६ ई. तः दि. ११।०६।२००६ ई. या., पश्चिमेकालः। वक्री पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पूर्वोदितः शुक्रः, शुद्धः, ग्रीष्मर्तुः, सौम्यगोलः, सौम्यायनम्।

ति. दि.	तिथयः द. प.	तिथयः घं. मि.	नक्षत्राणि द. प.	नक्षत्राणि घं. मि.	योगाः द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः रा. द. प.	चन्द्रराशयः घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं द. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	दिनाङ्काः रा.	सौ.	अं.	
०१ र.	११।०४	दि.०९।४१	रो.०५।३४	दि.०७।२९	धृ.५१।२९	ब.११।०४	वृ.३६।००	रा.०७।३९	०१।१३।०९।५०	३३।४५	५।१५	६।४५	०७	१४	२८	पश्चिमोदितो बुधः ०७।०१, चन्द्रदर्शनं मु. ३०फलं साम्यं, विवाहो दिवारात्रौ, देवादिप्रतिष्ठा, पश्चिमां विना यात्रा इन्धनस्थापनञ्च द्वितीयायाम्।
०२ चं.	१०।११	"०९।१९	मृ.०६।२६	"०७।४९	शू.४९।०१	कौ.१०।११	मिथुन	अहो.	०१।१४।०७।०६	३३।४६	५।१५	६।४५	०८	१५	२९	नैर्ऋत्यामगस्त्यास्तः, रंभातृतीया पञ्चाग्निव्रतं, मुण्डनं, कर्णवेधः, विवाहः देवादिप्रतिष्ठा वापीकूपखननम् इन्धनस्थापनञ्च मृगशिरसि।
०३ मं.	१०।३३	"०९।२८	आ.०८।३२	"०८।४०	गं.४७।३४	ग.१०।३३	मि.५६।०७	रा.०३।४२	०१।१५।०४।२२	३३।४७	५।१५	६।४५	०९	१६	३०	महाराणाप्रतापजयन्ती, श्रीगणेश ४ व्रतं, पश्चिमदक्षिणयात्रा तृतीयायां पुनर्वसौ, म. ४१।२८ उ., द.ति. १०।३३ उ.।
०४ बु.	१२।२४	"१०।१२	पुन.११।५८	"१०।०१	वृ.४७।०२	वि.१२।२४	कर्क	अहो.	०१।१६।०१।३८	३३।४८	५।१४	६।४६	१०	१७	३१	मिथुने बुधः १२।५२, उत्तरां विना यात्रा उपनयनं मुण्डनं कर्णवेधः देवादिप्रतिष्ठा इन्धनस्थापनञ्च पञ्चम्यां, म.१२।२४ या., द.ति. १२।२४ या.।
०५ बृ.	१५।१४	"११।२०	पु.१६।२८	"११।४९	ध्रु.४७।२४	बा.१५।१४	कर्क	अहो.	०१।१६।५८।५४	३३।४९	५।१४	६।४६	११	१८	०१	जून ०६, दक्षिणां विना यात्रा पुष्ये, (६) एको., उपनयनं मुण्डनं कर्णवेधः देवादिप्रतिष्ठा इन्धनस्थापनञ्च पञ्चम्याम्।
०६ शु.	१९।०९	"१२।५४	आश्ले.२१।५८	"०२।०१	व्या.४८।२६	तै.१९।०९	क.२१।५८	दि.०२।०१	०१।१७।५६।१०	३३।५०	५।१४	६।४६	१२	१९	०२	विवाहो मघायां, गं. १०।५८ उ. २५।५८ या.।
०७ श.	२३।५०	"०२।४६	म.२८।११	"०४।३०	ह.४९।५७	व.२३।५०	सिंह	अहो.	०१।१८।५३।१९	३३।५२	५।१४	६।४६	१३	२०	०३	उत्तरयात्रा पूर्वफल्गुन्यां, म. २३।५० उ. ५६।२२ या., (७) एको.।
०८ र.	२८।५३	"०४।४६	पूफ.३४।४४	सा.०७।०७	व.५१।३७	ब.२८।५३	सिं.५१।२१	रा.०१।४५	०१।१९।५०।२८	३३।५३	५।१३	६।४७	१४	२१	०४	पूर्वोत्तरयात्राष्टम्याम्।
०९ चं.	३३।५४	सा.०६।४७	उफ.४१।१२	रा.०९।४२	सि.५३।०७	बा.०१।२४	कन्या	अहो.	०१।२०।४७।३६	३३।५४	५।१३	६।४७	१५	२२	०५	विवाहो दशम्यामुत्तरफल्गुन्यां (हस्ते राहुवेधाद्विवाहोमध्यमः), दक्षिणयात्रा हस्ते।
१० मं.	३८।२५	रा.०८।३५	ह.४७।११	"१२।०५	व्य.५४।१५	तै.०६।२०	कन्या	अहो.	०१।२१।४४।४४	३३।५५	५।१३	६।४७	१६	२३	०६	गंगादशहरा, पृथिव्यां गंगाया अवतरणं, गंगास्नानदानादिः, श्रीरामेश्वरप्रतिष्ठादिनं, तद्दर्शनपूजनादिकं, छन्दोगानामुपनयनं, पूर्वदक्षिणयात्रा दशम्याम्।
११ बु.	४२।१५	"१०।०७	चि.५२।२५	"०२।११	व.५४।४१	व.१०।२०	कं.१९।४८	दि.०१।०८	०१।२२।४१।५२	३३।५६	५।१३	६।४७	१७	२४	०७	निर्जला ११ व्रतं सर्वेषाम्, उपनयनं, रात्रौ ११ व्रतोद्यापनं, मुण्डनं कर्णवेधश्च, विवाहो दिवारात्रौ, देवादिप्रतिष्ठा, पूर्वदक्षिणयात्रा कन्यास्थे चन्द्रे ततः पश्चिमदक्षिणयात्रा, म.१०।२० उ. ४२।१५ या.।
१२ बृ.	४४।५२	"११।१०	स्वा.५६।३०	"०३।४९	प.५४।१३	ब.१३।३४	तुला	अहो.	०१।२३।३९।००	३३।५७	५।१३	६।४७	१८	२५	०८	मृगशिरायां रविः २७।०२, त्रिविक्रम १२, तिलेन पारणं, कर्णवेधः, देवादिप्रतिष्ठा, विवाहः पश्चिमयात्रा च स्वात्याम्।
१३ शु.	४६।२६	"११।४६	वि.५९।२८	"०४।५९	शि.५०।५३	कौ.१५।३९	तु.४३।४३	रा.१०।४१	०१।२४।३६।०८	३३।५८	५।१२	६।४८	१९	२६	०९	प्रदोष १३ व्रतम्, उत्तरयात्रानुराधायाम्।
१४ श.	४६।३९	"११।५२	अनु.६०।००	अहो.	सि.५०।३१	ग.१६।३३	वृश्चिक	अहो.	०१।२५।३३।०९	३४।००	५।१२	६।४८	२०	२७	१०	चम्पक १४, प्रदोष १४ व्रतं, पश्चिमोत्तरयात्रा चतुर्दश्यां, म. ४६।३९ उ.।
१५ र.	४५।३६	"११।२६	अनु.०१।०८	दि.०५।३९	सा.४७।०७	वि.१६।०८	वृश्चिक	अहो.	०१।२६।३०।१०	३४।०२	५।१२	६।४८	२१	२८	११	ज्यैष्ठी १५ स्नानदानादिः, सांप्रतिकवैवस्वतमन्वादिः, इन्धनस्थापनमनुराधायाम्, उत्तरयात्रा पूर्णिमायां, म. १६।०८ या., गं. ५५।३५ उ.।

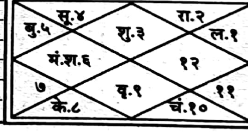
मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च / **दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्**

ति. दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सिं.अं.	कं.अं.	तु.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मी.अं.
०१ र.	०३।०१।२३।३१	०१।२५।४५।५१	०६।१९।०२।३१	००।०६।०७।००	०३।१३।२७।३९	०५।०९।२५।२४	४६।५३	०४।२९	०६।२५	०८।३८	१०।५६	१३।१२	१५।२७	१७।४५	२०।०३	२२।०८	२३।५४	०१।२५	०२।५२
०२ चं.	०३।०१।५९।५१	०१।२७।३०।२०	०६।१८।५५।४१	००।०७।१७।२६	०३।१३।३३।०८	०५।०९।२२।१३	४६।५४	०४।२५	०६।२१	०८।३४	१०।५२	१३।०८	१५।२३	१७।४१	१९।५९	२२।०४	२३।५०	०१।२१	०२।४८
०३ मं.	०३।०२।३६।११	०१।२९।१४।४९	०६।१८।४८।५१	००।०८।२७।५२	०३।१३।३८।३७	०५।०९।१९।०२	४६।५५	०४।२१	०६।१७	०८।३०	१०।४८	१३।०४	१५।१९	१७।३७	१९।५५	२२।००	२३।४६	०१।१७	०२।४४
०४ बु.	०३।०३।१२।३१	०२।००।५९।१७	०६।१८।४२।०१	००।०९।३८।१८	०३।१३।४४।०६	०५।०९।१५।५१	४६।५५	०४।१७	०६।१३	०८।२६	१०।४४	१३।००	१५।१५	१७।३३	१९।५१	२१।५६	२३।४२	०१।१३	०२।४०
०५ बृ.	०३।०३।४८।५०	०२।०२।४३।४५	०६।१८।३५।११	००।१०।४८।४४	०३।१३।४९।३५	०५।०९।१२।४१	४६।५५	०४।१३	०६।०९	०८।२२	१०।४०	१२।५६	१५।११	१७।२९	१९।४७	२१।५२	२३।३८	०१।०९	०२।३६
०६ शु.	०३।०४।२५।०९	०२।०४।२८।१३	०६।१८।२८।२१	००।११।५९।१०	०३।१३।५५।०३	०५।०९।०९।३१	४६।५५	०४।०९	०६।०५	०८।१८	१०।३६	१२।५२	१५।०७	१७।२५	१९।४३	२१।४८	२३।३४	०१।०५	०२।३२
०७ श.	०३।०५।०१।४३	०२।०६।०२।४९	०६।१८।२२।१६	००।१३।१०।१९	०३।१४।००।३२	०५।०९।०६।२०	४६।५६	०४।०५	०६।०१	०८।१४	१०।३२	१२।४८	१५।०३	१७।२१	१९।३९	२१।४४	२३।३०	०१।०१	०२।२८
०८ र.	०३।०५।३८।१७	०२।०७।३७।२५	०६।१८।१६।११	००।१४।२१।२७	०३।१४।०६।०१	०५।०९।०३।०९	४६।५७	०४।०१	०५।५७	०८।१०	१०।२८	१२।४४	१४।५९	१७।१७	१९।३५	२१।४०	२३।२६	००।५७	०२।२४
०९ चं.	०३।०६।१४।५१	०२।०९।१२।०१	०६।१८।१०।०७	००।१५।३२।३५	०३।१४।११।२९	०५।०८।५९।५८	४६।५८	०३।५७	०५।५३	०८।०६	१०।२४	१२।४०	१४।५५	१७।१३	१९।३१	२१।३६	२३।२२	००।५३	०२।२०
१० मं.	०३।०६।५१।२४	०२।१०।४६।३७	०६।१८।०४।०३	००।१६।४३।४३	०३।१४।१६।५७	०५।०८।५६।४७	४६।५९	०३।५३	०५।४९	०८।०२	१०।२०	१२।३६	१४।५१	१७।०९	१९।२७	२१।३२	२३।१८	००।४९	०२।१६
११ बु.	०३।०७।२७।५७	०२।१२।२१।१३	०६।१७।५७।५९	००।१७।५४।५१	०३।१४।२२।२५	०५।०८।५३।३६	४६।५९	०३।४९	०५।४५	०७।५८	१०।१६	१२।३२	१४।४७	१७।०५	१९।२३	२१।२८	२३।१४	००।४५	०२।१२
१२ बृ.	०३।०८।०४।३०	०२।१३।५५।४९	०६।१७।५१।५५	००।१९।०५।५९	०३।१४।२७।५३	०५।०८।५०।२५	४६।५९	०३।४५	०५।४१	०७।५४	१०।१२	१२।२८	१४।४३	१७।०१	१९।१९	२१।२४	२३।१०	००।४१	०२।०८
१३ शु.	०३।०८।४१।०३	०२।१५।३०।२५	०६।१७।४५।५१	००।२०।१७।०७	०३।१४।३३।२१	०५।०८।४७।१५	४६।५९	०३।४१	०५।३७	०७।५०	१०।०८	१२।२४	१४।३९	१६।५७	१९।१५	२१।२०	२३।०६	००।३७	०२।०४
१४ श.	०३।०९।१७।४६	०२।१६।४८।०४	०६।१७।४०।५५	००।२१।२८।२२	०३।१४।४०।२३	०५।०८।४४।०४	४७।००	०३।३७	०५।३३	०७।४६	१०।०४	१२।२०	१४।३५	१६।५३	१९।११	२१।१६	२३।०२	००।३३	०२।००
१५ र.	०३।०९।५४।२९	०२।१८।०५।४३	०६।१७।३५।५९	००।२२।३९।३७	०३।१४।४७।२५	०५।०८।४०।५३	४७।०१	०३।३३	०५।२९	०७।४२	१०।००	१२।१६	१४।३१	१६।४९	१९।०७	२१।१२	२२।५८	००।२९	०१।५६

०६ शुक्रे वल्ली ०८।३८।१०।२४
अयनांशाः २२।३६।२३



१३ शुक्रे वल्ली ०८।३८।१०।३१
अयनांशाः २२।३६।२४



विविधविषयाः– ज्येष्ठमासे दानवस्तूनि, वामनपुराणे– उदक्कुम्भं जलं धेनुस्तालवृन्तं सचन्दनम्। त्रिविक्रमस्य प्रीत्यर्थं प्रदद्यात् ज्येष्ठमासि च।। गंगादशहरा, वाराहे– दशमीशुक्लपक्षे तु ज्येष्ठे मासि कुजेऽहनि। अवतीर्णा ह्यतः स्वर्गाद्धस्तर्क्षे च सरिद्वरा।। हरते दशपापानि तस्माद्दशहरा स्मृता। दशहरायां दशयोगाः, स्कान्दे– ज्येष्ठे मासि सिते पक्षे दशमी बुधहस्तयोः। व्यतीपाते गरानन्दे कन्याचन्द्रे वृषे रवौ। दशयोगे नरः स्नात्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते। कुजबुधयोरत्र कल्पभेदेन व्यवस्था ज्ञेया। योगाधिक्ये फलाधिक्याद्यत्रैव योगबाहुल्यं तत्रैवेयं ग्राह्या। ज्येष्ठस्य मलमासत्वे द्वितीयज्येष्ठ-शुक्लदशम्यामेव गंगादशहरा। दशपापानि– अदत्तानामुपादानं हिंसा चैवाविधानतः। परदारोपसेवा च कायिकं त्रिविधं तथा।। परद्रव्येष्वभिध्यानं मनसानिष्टचिन्तनम्। वितथाभिनिवेशश्च मानसं त्रिविधं स्मृतम्।। एतानि दशपापानि हर त्वं मम जाह्नवि। दशपापहरा यस्मात्तस्माद्दशहरा स्मृता।।

ग्रहस्थितिः– मार्गिणः पूर्वोदिताः कुजशुक्रशनयः, मार्गी पूर्वास्तो बुधः १तः पश्चिमोदितः, वक्री पूर्वोदितो गुरुः।

वातावरणम्– पक्षस्य पूर्वार्द्धे वायुमेघच्छायाझंझावातादयस्तदुत्तरार्द्धे तापवृद्धिवायुमेघचारादयः।

आषाढकृष्णपक्षः

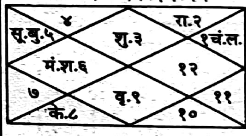
शकाब्दः १९२८, संवत् २०६३, सन् १४१३ साल, दि. १२।०६।२००६ ई. तः दि. २५।०६।२००६ ई. या., पश्चिमेकालः। वक्री पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पूर्वोदितः शुक्रः, शुद्धः, ग्रीष्मर्तुः, सौम्यगोलः, सौम्यायनम्। **३३**

ति. दि.	तिथयः द. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि द. प.	घं. मि.	योगाः द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः रा. द. प.	घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं द. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	दिनाङ्काः रा.	सौ.	अं.	
०१ चं.	४३।१८	रा.१०।३०	ज्ये.०१।३५	दि.०५।४९	शुभः४२।४५	बा.१४।२७	वृ.०१।३५	दि.०५।४९	०१।२७।२७।११	३४।०४	५।११	६।४९	२२	२९	१२	पश्चिमोत्तरयात्रा ज्येष्ठायां तत उत्तरयात्रा प्रतिपदि, विवाहो मूले, बिल्वमाषाढके त्यजेत्, गं. १०।३५ या.।
०२ मं.	३९।५७	रा.०९।१०	मू.००।५१	दि.०५।३१	शु.३७।३३	तै.११।३८	धनु	अहो.	०१।२८।२४।१२	३४।०५	५।११	६।४९	२३	३०	१३	पूर्वाषाढमानम् ५८।१६, पूर्वयात्रा मूलपूर्वाषाढयोः।
०३ बु.	३५।४१	सा.०७।२७	उषा.५६।३२	रा.०३।४८	ब्र.३१।३८	व.०७।४८	ध.१३।२८	दि.१०।३४	०१।२९।२१।१३	३४।०६	५।११	६।४९	२४	३१	१४	मासान्तः, श्रीविघ्नराज ४ व्रतं, म. ०७।४८ उ. ३५।४१ या., द.ति. ३५।४१ उ.।
०४ बृ.	३०।३७	दि.०५।२६	श्र.५३।१७	रा.०२।३०	ऐं.२५।०२	ब.०३।०९	मकर	अहो.	०२।००।१८।१४	३४।०७	५।११	६।४९	२५	०१	१५	मिथुनेरविः २७।५३ मु. ३० फलं साम्यं षडशीतिसंक्रान्तिपुण्यकालो घं.०४ मि.२० उ. दिने, पञ्चकारंभो रात्रौ घं. ०२ मि. ३० उ., द.ति. २७।५३ या.।
०५ शु.	२५।०१	दि.०३।१०	ध.४९।२९	रा.१२।५८	वै.१७।५७	तै.२५।०१	म.२१।२३	दि.०१।४३	०२।०१।१५।१४	३४।०८	५।१०	६।५०	२६	०२	१६	मासादिः।
०६ श.	१९।०२	दि.१२।४६	श.४५।२५	रा.११।२०	वि.१०।३१	व.१९।०२	कुम्भ	अहो.	०२।०२।१२।१०	३४।१०	५।१०	६।५०	२७	०३	१७	वृषे शुक्रः ५७।३०, म. १०।०२ उ. ४५।५५ या., (६-७) एकोद्दिष्टं, पश्चिमयात्रा पूर्वभाद्रे।
०७ र.	१२।४९	दि.१०।१८	पूभा.४१।१२	रा.०९।३९	प्री.०२।५७	ब.१२।४९	कुं.२७।१५	दि.०४।०४	०२।०३।०९।०५	३४।११	५।१०	६।५०	२८	०४	१८	आयुष्मानयोगमानम् ५२।२२, द.ति. १२।४९ उ.।
०८ चं.	०६।३९	दि.०७।५०	उभा.३७।०९	रा.०८।०२	सौ.४७।५०	कौ.०६।३९	मीन	अहो.	०२।०४।०६।००	३४।१२	५।१०	६।५०	२९	०५	१९	द.ति. ०६।३९ या.।
०९ मं.	००।४२	दि.०५।२६	रे.३३।२४	सा.०६।३१	शो.४०।३९	ग.००।४२	मी.३३।२४	सा.०६।३१	०२।०५।०२।५५	३४।१३	५।०९	६।५१	३०	०६	२०	दशमीमानम् ५४।२७, पञ्चकान्तः सायं घं.०६ मि.३१ उ., म. २७।५६ उ. ५४।२७ या., गं. २१।२४ उ. ३६।२४ या., पश्चिमयात्रा रेवत्यां तत उत्तरां विना यात्रा दशम्याम्।
११ बु.	५०।०७	रा.०१।२२	अ.३०।११	दि.०५।२३	अगं.३३।५६	व.२२।३८	मेष	अहो.	०२।०५।५९।५०	३४।१४	५।०९	६।५१	३१	०७	२१	योगिनी ११ व्रतं स्मार्तानां, विवाह उत्तरां विना यात्रा इन्धनस्थापनञ्चाश्विन्याम्।
१२ बृ.	४५।५९	रा.११।३३	भ.२७।४३	दि.०४।१४	सु.२७।४८	कौ.१८।०३	मे.४२।१८	रा.१०।०४	०२।०६।५६।४५	३४।१५	५।०९	६।५१	०१	०८	२२	आर्द्रायां रविः २९।२९ पुंस्त्रीचंचंयोगो वृश्चिकलग्नं महिषवाहनं चण्डानाडीपतिश्शनिस्तेन वायुतापझंझावातादयः, यवचूर्णेन पारणं, योगिनी ११ व्रतं वैष्णवानाम्।
१३ शु.	४२।४५	रा.१०।१५	कृ.२६।०४	दि.०३।३५	धृ.२२।२३	ग.१४।२२	वृष	अहो.	०२।०७।५३।४०	३४।१६	५।०९	६।५१	०२	०९	२३	कर्के बुधः १२।०२, प्रदोष १३ व्रतं, म. ४२।४५ उ., विवाहो रोहिण्यां त्रयोदश्यां, पूर्वदक्षिणयात्रा रोहिण्याम्।
१४ श.	४०।३३	रा.०९।२२	रो.२५।२६	दि.०३।१९	शू.१७।४८	वि.११।३९	वृ.५५।४४	रा.०३।२७	०२।०८।५०।३२	३४।१५	५।०९	६।५१	०३	१०	२४	प्रदोष १४ व्रतं, दक्षिणयात्रा रोहिण्यां ततः पूर्वां विना यात्रा चतुर्दश्याम्, म. ११।३९ या.।
३० र.	३९।३६	रा.०८।५९	मृ.२६।०१	दि.०३।३३	गं.१४।०८	च.१०।०५	मिथुन	अहो.	०२।०९।४७।२४	३४।१४	५।०९	६।५१	०४	११	२५	आषाढी ३० स्नानदानादिः।

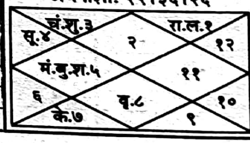
मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च / **दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्**

ति. दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सिं.अं.	कं.अं.	तु.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मी.अं.
०१ चं.	०३।१०।३२।११	०२।१९।२३।२२	०६।१७।३१।०३	००।२३।५०।५२	०३।१४।५४।२७	०५।०८।३७।४२	४७।०२	०३।२९	०५।२५	०७।३८	०९।५६	१२।१२	१४।२७	१६।४५	१९।०३	२१।०८	२२।५४	००।२५	०१।५२
०२ मं.	०३।११।०७।५३	०२।२०।४१।०१	०६।१७।२६।०७	००।२५।०२।०७	०३।१५।०१।२९	०५।०८।३४।३१	४७।०३	०३।२५	०५।२१	०७।३४	०९।५२	१२।०८	१४।२३	१६।४१	१८।५९	२१।०४	२२।५०	००।२१	०१।४८
०३ बु.	०३।११।४४।३५	०२।२१।५८।४०	०६।१७।२१।११	००।२६।१३।२१	०३।१५।०८।३१	०५।०८।३१।२०	४७।०४	०३।२१	०५।१७	०७।३०	०९।४८	१२।०४	१४।१९	१६।३७	१८।५५	२१।००	२२।४६	००।१७	०१।४४
०४ बृ.	०३।१२।२१।१७	०२।२३।१६।१९	०६।१७।१६।१५	००।२७।२४।३५	०३।१५।१५।३३	०५।०८।२८।१०	४७।०४	०३।१७	०५।१३	०७।२६	०९।४४	१२।००	१४।१५	१६।३३	१८।५१	२०।५६	२२।४२	००।१३	०१।४०
०५ शु.	०३।१२।५७।५९	०२।२४।३३।५६	०६।१७।११।१९	००।२८।३५।४९	०३।१५।२२।३५	०५।०८।२५।००	४७।०४	०३।१२	०५।०८	०७।२१	०९।३९	११।५५	१४।१०	१६।२८	१८।४६	२०।५१	२२।३७	००।०८	०१।३५
०६ श.	०३।१३।३४।४४	०२।२५।२४।४६	०६।१७।०७।३१	००।२९।४७।३१	०३।१५।२९।२३	०५।०८।२१।४९	४७।०५	०३।०८	०५।०४	०७।१७	०९।३५	११।५१	१४।०६	१६।२४	१८।४२	२०।४७	२२।३३	००।०४	०१।३१
०७ र.	०३।१४।११।२९	०२।२६।१५।३६	०६।१७।०३।४३	०१।००।५९।१२	०३।१५।३६।११	०५।०८।१८।३८	४७।०६	०३।०४	०५।००	०७।१३	०९।३१	११।४७	१४।०२	१६।२०	१८।३८	२०।४३	२२।२९	००।००	०१।२७
०८ चं.	०३।१४।४८।१४	०२।२७।०६।२६	०६।१६।५९।५६	०१।०२।१०।५३	०३।१५।४२।५९	०५।०८।१५।२७	४७।०७	०३।००	०४।५६	०७।०९	०९।२७	११।४३	१३।५८	१६।१६	१८।३४	२०।३९	२२।२५	२३।५६	०१।२३
०९ मं.	०३।१५।२४।५९	०२।२७।५७।१६	०६।१६।५६।०९	०१।०३।२२।३४	०३।१५।४९।४६	०५।०८।१२।१६	४७।०८	०२।५६	०४।५२	०७।०५	०९।२३	११।३९	१३।५४	१६।१२	१८।३०	२०।३५	२२।२१	२३।५२	०१।१९
११ बु.	०३।१६।०१।४४	०२।२८।४८।०६	०६।१६।५२।२२	०१।०४।३४।१५	०३।१५।५६।३३	०५।०८।०९।०५	४७।०८	०२।५१	०४।४७	०७।००	०९।१८	११।३४	१३।४९	१६।०७	१८।२५	२०।३०	२२।१६	२३।४७	०१।१४
१२ बृ.	०३।१६।३८।२९	०२।२९।३८।५५	०६।१६।४८।३५	०१।०५।४५।५६	०३।१६।०३।२०	०५।०८।०५।५५	४७।०८	०२।४७	०४।४३	०६।५६	०९।१४	११।३०	१३।४५	१६।०३	१८।२१	२०।२६	२२।१२	२३।४३	०१।१०
१३ शु.	०३।१७।१५।१४	०३।००।२९।४४	०६।१६।४४।४८	०१।०६।५७।३७	०३।१६।१०।०७	०५।०८।०२।४५	४७।०८	०२।४३	०४।३९	०६।५२	०९।१०	११।२६	१३।४१	१५।५९	१८।१७	२०।२२	२२।०८	२३।३९	०१।०६
१४ श.	०३।१७।५२।२०	०३।००।५२।१८	०६।१६।४२।२०	०१।०८।०९।२५	०३।१६।१७।०९	०५।०७।५९।३४	४७।०८	०२।३९	०४।३५	०६।४८	०९।०६	११।२२	१३।३७	१५।५५	१८।१३	२०।१८	२२।०४	२३।३५	०१।०२
३० र.	०३।१८।२९।२६	०३।०१।१४।५२	०६।१६।३९।५२	०१।०९।२१।१३	०३।१६।२४।११	०५।०७।५६।२३	४७।०८	०२।३५	०४।३१	०६।४४	०९।०२	११।१८	१३।३३	१५।५१	१८।०९	२०।१४	२२।००	२३।३१	००।५८

०५ शुक्रे वल्ली ०८।३८।१०।३८
अयनांशाः २२।३६।२५



१३ शुक्रे वल्ली ०८।३८।१०।४५
अयनांशाः २२।३६।२६



विविधविषयाः:- ग्रहस्थितिवशेन वृष्टिविचारः:- बुधः शुक्रसमीपस्थः करोत्येकार्णवां महीम्। तयोरन्तर्गतो भानुः समुद्रमपि शोषयेत्। पुरतः पृष्ठतो भानुः शुभा यदि समीपगाः। तदा वृष्टिं प्रकुर्वन्ति न चेत्ते प्रतिलोमगाः। ग्रहाणामुदये चास्ते राश्यन्तरगतेऽयने। संयोगे वापि पक्षान्ते प्रायो वृष्टिः प्रजायते। उदयास्तगतः शुक्रः बुधश्च वृष्टिकारकः। चलत्यंगारके वृष्टिः ध्रुवा वृष्टिश्शनैश्चरे। वारिपूर्णां महीं कृत्वा पश्चात्सञ्चरते गुरुः। शुक्रे वास्तमिते मन्दे त्रिविधोऽपि प्रजायते। सूर्यनक्षत्राणि- रोहिणी-मृगशिरा-पूर्वोत्तरफल्गुनी-हस्त-चित्रा-स्वाती-विशाखाऽनुराधा-ज्येष्ठा-मूल-शतभिषोत्तरभाद्रपदानीति त्रयोदशर्क्षाणि, शेषाणि चन्द्रनक्षत्राणि ज्ञेयानि। एतत्फलम् - चन्द्रे सूर्यर्क्षगे वृष्टिः सूर्ये चन्द्रर्क्षगे सति। उभौ चन्द्रर्क्षगौ स्यातां स्वल्पवृष्टिस्तदा भवेत्। तावेव यदि सूयर्क्षे तदा वृष्टिर्न जायते। नक्षत्राणां पुरुषादिसंज्ञा- मूलादीनि चतुर्दशर्क्षाणि पुरुषसंज्ञकानि, आर्द्रादिदश स्त्रीसंज्ञकानि, विशाखादि त्रीणि नपुंसकानि। तत्र पुंस्त्रीयोगे सुवृष्टिः, स्त्रीनपुंसकयोगे स्वल्पवृष्टिरन्यथा वृष्टेरभावः।

ग्रहस्थितिः:- मार्गिणः पूर्वोदिताः कुजशुक्रशनयः, मार्गी पश्चिमोदितो बुधः, वक्री पूर्वोदितो गुरुः।

वातावरणम्- पक्षपूर्वार्द्धे वायुमेघचारझंझावातादयस्तदुत्तरार्द्धे तापवृद्धिमेघच्छायावातादयः।

आषाढशुक्लपक्षः

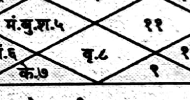
शकाब्दः १९२८, संवत् २०६३, सन् १४१३ साल, दि. २६।०६।२००६ ई. तः दि. ११।०७।२००६ ई. या., पश्चिमेकालः।
वक्री पूर्वोदितो गुरुः, १३तो मार्गी, मार्गी पूर्वोदितः शुक्रः, शुद्धः, ग्रीष्मर्तुः, सौम्यगोलः, सौम्यायनम्।

ति. दि.	तिथयः द. प.	तिथयः घं. मि.	नक्षत्राणि द. प.	नक्षत्राणि घं. मि.	योगाः द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः रा. द. प.	चन्द्रराशयः घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं द. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	दिनाङ्काः रा.	दिनाङ्काः सौ.	दिनाङ्काः अं.	
०१ चं.	३९।५२	रा.०९।०६	आ.२७।४९	दि.०४।१७	वृ.११।३०	किं.०९।५४	मिथुन	अहो.	०२।१०।५४।१६	३४।१३	५।०९	६।५१	०५	१२	२६	ग्रीष्मनवरात्रारंभः, कलशस्थापनं श्रीदुर्गापूजनोत्सवः, पश्चिमदक्षिणयात्रा प्रतिपदि पुनर्वसौ।
०२ मं.	४१।३२	"०६।५७	पुन.३०।४५	"०५।२८	ध्रु.०९।५१	बा.१०।५२	मि.१५।०१	दि.११।१०	०२।११।५१।०८	३४।१२	५।१०	६।५०	०६	१३	२७	चन्द्रदर्शनं मु.३० फलं साम्यं, श्रीजगन्नाथरथयात्रा, समुद्र स्नानं श्रीजगन्नाथदर्शनञ्च, पश्चिमदक्षिणयात्रा मिथुनस्थे चन्द्रे ततः पश्चिमयात्रा पुनर्वसौ तत उत्तरां विना यात्रा पुष्ये।
०३ बु.	४४।१३	"१०।५१	पु.३५।०७	सा.०७।१३	व्या.०९।१२	तै.१३।५३	कर्क	अहो.	०२।१२।३८।००	३४।१०	५।१०	६।५०	०७	१४	२८	वक्री बुधः ४७।३०, उपनयनं, मुण्डनं कर्णवेधश्च, देवादिप्रतिष्ठा, तडागखननम्।
०४ बृ.	४८।०५	"१२।२४	आश्ले.४०।२७	रा.०९।२१	ह.०९।२५	व.१६।०९	क.४०।२७	रा.०९।२१	०२।१३।३४।५२	३४।०८	५।१०	६।५०	०८	१५	२९	श्रीगणेश ४ व्रतं, विवाहः पञ्चम्यां, म. १६।०९ उ. ४८।०५ या., गं. २९।२७ उ. ४४।२७ या.।
०५ शु.	५२।३८	"०२।१४	म.४६।२८	"११।५६	व.१०।२१	ब.२०।२२	सिंह	अहो.	०२।१४।३१।४३	३४।०६	५।११	६।४९	०९	१६	३०	विवाहो मघायां, पूर्वोत्तरयात्रा पूर्वफल्गुन्यां, मैथिलवैवाहिकसभारंभः (सौराठससौलयोः)।
०६ श.	५७।३८	"०४।१४	पूफ.५२।५८	"०२।२२	सि.११।५८	कौ.२५।०८	सिंह	अहो.	०२।१५।२८।३४	३४।०४	५।११	६।४९	१०	१७	०१	जुलाई ०७, पश्चिमास्तो बुधः ४३।५७, उत्तरयात्रा पूर्वफल्गुन्याम्।
०७ र.	६०।००	अहो.	उफ.५९।२८	"०४।५८	व्य.१३।२८	ग.३०।०८	सिं.०९।३६	दि.०९।०१	०२।१६।२५।२५	३४।०३	५।११	६।४९	११	१८	०२	करमूले पुलिकमूल (इसरगत) बन्धनं, विवाहो दिवारात्रौ, देवादिप्रतिष्ठा, पूर्वदक्षिणयात्रा हस्ते।
०७ चं.	०२।३७	दि.०६।१५	ह.६०।००	अहो.	व.१५।०१	व.०२।३७	कन्या	अहो.	०२।१७।२२।१६	३४।०२	५।१२	६।४८	१२	१९	०३	वक्रगत्या मिथुने बुधः २७।३४, म. ०२।३७ उ. ३४।५४ या., द.ति. ०२।३७ उ., मुण्डनं कर्णवेधः वापीतडागखननं गृहारंभप्रवेशौ च सप्तम्याम्।
०८ मं.	०७।११	"०८।०४	ह.०५।३५	दि.०७।२६	प.१६।१४	ब.०७।११	कं.३८।१८	रा.०८।३१	०२।१८।१९।०६	३४।०१	५।१२	६।४८	१३	२०	०४	द.ति. ०७।११ या., पूर्वदक्षिणयात्रा नवम्यां कन्यास्थे चन्द्रे ततः पश्चिमदक्षिणयात्रा।
०९ बु.	११।०१	"०९।३६	चि.११।००	"०९।३६	शि.१६।४७	कौ.११।०१	तुला	अहो.	०२।१९।१५।५६	३४।००	५।१२	६।४८	१४	२१	०५	कर्णवेधो दशम्यां चित्रायां, मुण्डनं विवाहः गृहारंभप्रवेशौ पश्चिमदक्षिणयात्रा च दशम्याम्।
१० बृ.	१३।४२	"१०।४१	स्वा.१५।२०	"११।२०	सि.१६।२८	ग.१३।४२	तुला	अहो.	०२।२०।१२।४६	३३।५९	५।१२	६।४८	१५	२२	०६	मैथिलवैवाहिकसभासमाप्तिः, रैवतमन्वादिः, मुण्डनं विवाहः देवादिप्रतिष्ठा गृहारंभप्रवेशौ पश्चिमयात्रा च स्वात्यां, म.४४।३१ उ., पुनर्वसौ रविः ३३।३० स्त्रीनपुंसुचंयोगो ●
११ शु.	१५।१९	"११।२०	वि.१८।३४	"१२।३८	सा.१५।११	वि.१५।१९	तु.०२।४६	दि.०६।१८	०२।२१।०९।३६	३३।५८	५।१२	६।४८	१६	२३	०७	हरिशयन ११ व्रतं सर्वेषां, चातुर्मास्यव्रतारंभः, गृहारंभप्रवेशावनुराधायां, म.१५।१९ या.। ●धनुर्लग्नमश्ववाहनखण्डानाडीपतिश्शनिस्तेन वायुतापखण्डवृष्टयः।
१२ श.	१५।३४	"११।२७	अनु.२०।३१	"०१।२५	शुभः.१३।०६	बा.१५।३४	वृश्चिक	अहो.	०२।२२।०६।२१	३३।५६	५।१३	६।४७	१७	२४	०८	श्रीवासुदेव १२ यवचूर्णेन पारणं, प्रदोष १३ व्रतं, गृहारंभप्रवेशावनुराधायां, पश्चिमोत्तरयात्रा।
१३ र.	१४।३३	"११।०२	ज्ये.२१।१२	"०१।४२	शु.०९।५४	तै.१४।३३	वृ.२१।१२	दि.०१।४२	०२।२३।०३।२२	३३।५४	५।१३	६।४७	१८	२५	०९	मार्गी गुरुः ५[illegible]।५७, गं. १५।१२ उ. ३०।१२ या., प्रदोष १४ व्रतं, करमूले पुलिकमूलबन्धनम्, उत्तरयात्रा त्रयोदश्याम्।
१४ चं.	१२।१९	"१०।१०	मू.२०।४१	"०१।३०	ब्र.०५।४०	व.१२।१९	धनु	अहो.	०२।२४।००।१५	३३।५२	५।१४	६।४६	१९	२६	१०	गृहारंभप्रवेशौ पूर्णिमायां मूले, उत्तरयात्रा पूर्णिमायां, म. १२।१९ उ. ४०।४१ या.।
१५ मं.	०९।०२	"०८।५१	पूषा.१९।०८	"१२।५३	ऐं.००।३७	व.०९।०२	ध.३३।३२	सा.०६।३९	०२।२४।५७।०७	३३।५१	५।१४	६।४६	२०	२७	११	वैधृतियोगमानम् ५४।११, आषाढी १५ गुरुपूर्णिमा, गुरुव्यासयोः पूजनं, चाक्षुषमन्वादिः, सन् १४१४ सालसंज्ञकवर्षारंभः पूर्णान्तात्, पूर्वयात्रा पूर्णिमायाम्।

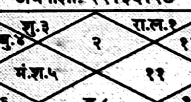
मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च — **दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्**

ति. दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सिं.अं.	कं.अं.	तु.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मी.अं.
०१ चं.	०३।१९।०६।३१	०३।०१।३७।२६	०६।१६।३७।२४	०२।१०।३३।०१	०३।१६।३१।१३	०५।०७।५३।१२	४७।०७	०२।३०	०४।२६	०६।३९	०८।५७	११।१३	१३।२८	१५।४६	१८।०४	२०।०९	२१।५५	२३।२६	००।५३
०२ मं.	०३।१९।४३।३६	०३।०१।५२।३८	०६।१६।३४।५६	०२।११।४४।४९	०३।१६।३८।१५	०५।०७।५०।०१	४७।०६	०२।२६	०४।२२	०६।३५	०८।५३	११।०९	१३।२४	१५।४२	१८।००	२०।०५	२१।५१	२३।२२	००।४९
०३ बु.	०३।२०।२०।४१	०३।०१।५६।५०	०६।१६।३२।२९	०२।१२।५६।३७	०३।१६।४५।१७	०५।०७।४६।५०	४७।०५	०२।२२	०४।१८	०६।३१	०८।४९	११।०५	१३।२०	१५।३८	१७।५६	२०।०१	२१।४७	२३।१८	००।४५
०४ बृ.	०३।२०।५७।४६	०३।०१।५४।३६	०६।१६।३०।०२	०२।१४।०८।२५	०३।१६।५२।१९	०५।०७।४३।४०	४७।०४	०२।१८	०४।१४	०६।२७	०८।४५	११।०१	१३।१६	१५।३४	१७।५२	१९।५७	२१।४३	२३।१४	००।४१
०५ शु.	०३।२१।३४।५१	०३।०१।४६।१५	०६।१६।२७।३५	०२।१५।२०।१२	०३।१६।५९।२२	०५।०७।४०।३०	४७।०३	०२।१३	०४।०९	०६।२२	०८।४०	१०।५६	१३।११	१५।२९	१७।४७	१९।५२	२१।३८	२३।०९	००।३६
०६ श.	०३।२२।११।५८	०३।०१।१४।१७	०६।१६।२६।३२	०२।१६।३२।०६	०३।१७।०६।३६	०५।०७।३७।१९	४७।०२	०२।०९	०४।०५	०६।१८	०८।३६	१०।५२	१३।०७	१५।२५	१७।४३	१९।४८	२१।३४	२३।०५	००।३२
०७ र.	०३।२२।४८।०५	०३।००।४२।११	०६।१६।२५।२९	०२।१७।४४।००	०३।१७।१३।५१	०५।०७।३४।०८	४७।०१	०२।०५	०४।०१	०६।१४	०८।३२	१०।४८	१३।०३	१५।२१	१७।३९	१९।४४	२१।३०	२३।०१	००।२८
०७ चं.	०३।२३।२५।४२	०३।००।१०।२१	०६।१६।२४।२६	०२।१८।५५।५४	०३।१७।२१।०६	०५।०७।३०।५७	४७।००	०२।०१	०३।५७	०६।१०	०८।२८	१०।४४	१२।५९	१५।१७	१७।३५	१९।४०	२१।२६	२२।५७	००।२४
०८ मं.	०३।२४।०२।३९	०२।२९।३८।२३	०६।१६।२३।२३	०२।२०।०७।४८	०३।१७।२८।२१	०५।०७।२७।४६	४६।५९	०१।५७	०३।५३	०६।०६	०८।२४	१०।४०	१२।५५	१५।१३	१७।३१	१९।३६	२१।२२	२२।५३	००।२०
०९ बु.	०३।२४।३९।३५	०२।२९।०६।२५	०६।१६।२२।२०	०२।२१।१९।४२	०३।१७।३५।३६	०५।०७।२४।३५	४६।५९	०१।५३	०३।४८	०६।०१	०८।१९	१०।३५	१२।५०	१५।०८	१७।२६	१९।३१	२१।१७	२२।४८	००।१५
१० बृ.	०३।२५।१६।३१	०२।२८।३४।२७	०६।१६।२२।१७	०२।२२।३०।३६	०३।१७।४२।५०	०५।०७।२१।२५	४६।५९	०१।४८	०३।४४	०५।५७	०८।१५	१०।३१	१२।४६	१५।०४	१७।२२	१९।२७	२१।१३	२२।४४	००।११
११ शु.	०३।२५।५३।२७	०२।२८।०२।३०	०६।१६।२०।१४	०२।२३।४३।३१	०३।१७।५०।०४	०५।०७।१८।१५	४६।५९	०१।४४	०३।४०	०५।५३	०८।११	१०।२७	१२।४२	१५।००	१७।१८	१९।२३	२१।०९	२२।४०	००।०७
१२ श.	०३।२६।३०।५२	०२।२७।३६।४५	०६।१६।१९।३८	०२।२४।५५।४२	०३।१७।५७।१५	०५।०७।१५।०४	४६।५८	०१।४०	०३।३६	०५।४९	०८।०७	१०।२३	१२।३८	१४।५६	१७।१४	१९।१९	२१।०५	२२।३६	००।०३
१३ र.	०३।२७।०८।१५	०२।२६।३१।००	०६।१६।१९।२५	०२।२६।०७।५३	०३।१८।०४।२६	०५।०७।११।५३	४६।५७	०१।३६	०३।३२	०५।४५	०८।०३	१०।१९	१२।३४	१४।५२	१७।१०	१९।१५	२१।०१	२२।३२	२३।५९
१४ चं.	०३।२७।४५।३९	०२।२५।४५।१५	०६।१६।१९।३७	०२।२७।२०।०४	०३।१८।११।३७	०५।०७।०८।४२	४६।५६	०१।३१	०३।२७	०५।४०	०७।५८	१०।१४	१२।२९	१४।४७	१७।०५	१९।१०	२०।५६	२२।२७	२३।५४
१५ मं.	०३।२८।२३।०३	०२।२४।५९।३०	०६।१६।१९।५७	०२।२८।३२।१५	०३।१८।१८।४८	०५।०७।०५।३१	४६।५५	०१।२७	०३।२३	०५।३६	०७।५४	१०।१०	१२।२५	१४।४३	१७।०१	१९।०६	२०।५२	२२।२३	२३।५०

०५ शुक्रे वल्ली ०८।३८।१०।५२
अयनांशाः २२।३६।२७



११ शुक्रे वल्ली ०८।३८।१०।५९
अयनांशाः २२।३६।२८



विविधविषयाः- आषाढे शकुनविचारः- आषाढकृष्णाष्टम्यां चन्द्रोदये मेघे वृष्टिरुत्तमा सुभिक्षं चान्यथा दुर्भिक्षं, तथैव कृष्णनवम्यां मेघे विद्युति सत्यां सुवृष्टिः। आषाढशुक्लद्वितीयायां नवम्याञ्च शुभग्रहवारो वृष्टिकारकः समर्घकारकश्च। पूर्णिमायामाषाढे पूर्वाषाढे सति सुभिक्षं, प्रजापीडा चोत्तराषाढे। आषाढशुक्लद्वितीयायां जगन्नाथरथयात्रा- तद्दिने रथस्थरामावलोकिनो नैव विपद्यते। पूर्णिमायां वायुपरीक्षणम् - तत्र पूर्वपश्चिमवायुकोणोत्तरैशानवायौ धान्योत्पत्तिः सुवृष्टिः प्रजासुखञ्च जायते, तदितरवायौ भीतिः दुर्भिक्षादिकञ्चेति। आषाढशुक्लपक्षे रविवासरे करमूले पुलिकमूलबन्धनमन्त्रः- शुचिसितदिनकरवारे करमूले बद्धपुलिकमूलस्य। नागारेरिव नागाः प्रयान्ति किल दूरतस्तस्य। एवं कृते सर्पभयं न जायते। चातुर्मास्यव्यतीते तु मुक्तिस्तस्य करात् भवेदित्यनेन कार्त्तिकशुक्लद्वादश्यां तस्य करान्मुक्तिः। आर्द्रानक्षत्रस्थे सूर्ये पायसभोजनमहत्त्वम् - आर्द्रायाः प्रथमे पादे क्षीरमश्नाति यो नरः। अपि रोषयुतस्तस्य तक्षकः किं करिष्यति। क्षीरमत्र पायसमिति।

ग्रहस्थितिः- मार्गिणः पूर्वोदिताः कुजशुक्रशनयः, मार्गी पश्चिमोदितो बुधः ३तो वक्री ६तः पश्चिमास्तः, वक्री पूर्वोदितो गुरुः १३तो मार्गी।

वातावरणम्- पक्षस्य पूर्वार्द्धभागे वायुवृष्टिमेघचारझंझावातादयस्तदुत्तरार्द्धभागे तापवृद्धिमेघच्छाया- वायुचारादयः।